हिन्दी भूषण प्रश्नपत्र-संग्रह

(उत्तर सहित)

१९३७

संपादक

रामप्रसाद मिश्र

हिन्दी भवन

लाहौर

Printed and published by D C Narang
at the H B Press, Lahore

हिन्दी भूषण १९३७

प्रश्नपत्र १

१ (क) वर्ण किसे कहते हैं? हिन्दी भाषा में कितने वर्ण होते हैं? १+१

(ख) आभ्यन्तर प्रयत्न किसे कहते हैं? इसके अनुसार वर्णों के चार मुख्य भेद कौनसे हैं? १+४

(क) वर्ण उस मूल ध्वनि को कहते हैं, जिसके खण्ड न हो सकें। जैसे अ, क्, म्,।

हिन्दी (वर्णमाला) में कुल ४४ वर्ण हैं।

(ख) ध्वनि उत्पन्न होने के पहले वागिन्द्रिय की क्रिया को आभ्यन्तर प्रयत्न कहते हैं। इसके अनुसार वर्णों के नीचे लिखे चार भेद हैं—

(१) विवृत—इनके उच्चारण में वागिन्द्रिय खुली रहती है। स्वरों का आभ्यन्तर प्रयत्न विवृत है।

(२) स्पृष्ट—इनके उच्चारण में वागिन्द्रिय का द्वार बन्द रहता है। क से म तक वर्णों का यही प्रयत्न है।

(३) ईषत् विवृत—इनके उच्चारण में वागिन्द्रिय कुछ खुली रहती है। य, र, ल, व का यही प्रयत्न है।

(४) ईषत्-स्पृष्ट—इनके उच्चारण में वागिन्द्रिय कुछ बन्द रहती है। श, ष, स, ह का यही प्रयत्न है।

२. (क) [illegible]

अभिषेक। दुरुपयोग। यशोदा—इन शब्दों में सन्धिच्छेद करो और इनके सन्धि करने वाले नियमों को लिखो। १६

(ख) निम्नलिखित शब्दों में सन्धि करो—

वधू + उत्सव।

सखी + उचित।

सु + आगत।

षट + आनन। ४

(क) गिरीन्द्र—गिरि + इन्द्र। यदि दो सवर्ण सजातीय स्वर पास-पास आवें तो दोनों के स्थान पर सवर्ण दीर्घस्वर हो जाता है।

महैश्वर्य—महा + ऐश्वर्य। अ या आ के आगे ए या ऐ आवे तो दोनों को मिलकर 'ऐ' और ओ, औ, आवे तो 'औ' हो जाता है।

मन्वन्तर—मनु + अन्तर—ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ के आगे कोई असमान (विजातीय) स्वर आवे तो इ, ई को य्, उ, ऊ को व् और ऋ को र् हो जाता है।

षण्मास—षट् + मास। किसी वर्ग के प्रथम अक्षर से परे यदि कोई अनुनासिक (ङ, ञ, ण, न, म) वर्ण हो तो पहले वर्ण को अपने वर्ग का पाँचवाँ वर्ण हो जाता है।

सन्तोष—सम् + तोष। म् के आगे कोई स्पर्श (क से म् तक) वर्ण हो तो म् को विकल्प से अनुस्वार या उसी वर्ग का अनुनासिक वर्ण हो जाता है।

अभिषेक—अभि + सेक। यदि किसी शब्द (के) आदि

के स् से पहले अ, आ को छोड कर कोई और स्वर आवे तो स के स्थान में ष होता है।

दुरुपयोग—दुः+उपयोग। यदि विसर्ग के पहले अ, आ को छोड कोई और स्वर हो और आगे कोई घोष वर्ण हो तो विसर्ग को र् हो जाता है।

यशोदा—यशः+दा। यदि विसर्ग से पहले अ हो और आगे कोई घोष व्यञ्जन हो तो अ के स्थान में ओ हो जाता है।

(ख) वधू+उत्सव=वधूत्सव। सती+उचित=सत्युचित। सु+आगत=स्वागत। षट्+आनन=षडानन।

३ (क) निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखो—
बेटा। नाती। लाला। ३

(ख) निम्नलिखित शब्दों के बहुवचन में रूप लिखो —
शक्ति, लुटिया, बहू। ३

(ग) निम्नलिखित शब्दों के साथ लगे हुए प्रत्येक उपसर्ग को पृथक् लिख कर उसका अर्थ करो—
निराकरण, प्रत्युपकार, समालोचना, सुव्यवस्थित। ४

(क) बेटा - बेटी। नाती—नातिन। लाला—ललाइन।
(ख) शक्ति—शक्तियाँ। लुटिया—लुटियाँ। बहू—बहुएँ।
(ग) निराकरण=निर्+आकरण। निर्=बाहर, निषेध।
प्रत्युपकार=प्रति+उपकार। प्रति=बदला, विरुद्ध, एक-एक, सामने।
समालोचना=सम्+आलोचना। सम्=अच्छा, साथ, पूर्ण।
सुव्यवस्थित=सु+व्यवस्थित। सु=अच्छा, सहज, अधिक।

४ निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखो—

(क) चोर को रस्सी से बाँधता है।

(ख) गङ्गा हिमालय से निकलती है। ५

(क) चोर को=कर्म कारक। रस्सी से=करण कारक।

(ख) गंगा=कर्ता कारक। हिमालय से=अपादान कारक।

५ निम्नलिखित पदों में जो समास हैं, उनके नाम और लक्षण लिखो—

ऋणमुक्त। त्रिभुवन। जात-कुजात। कनफटा। ८

ऋणमुक्त—अपादान तत्पुरुष। जिस समास मे दूसरा शब्द प्रधान हो और पहले शब्द मे अपादान कारक की विभक्ति का लोप हुआ हो, वह अपादान तत्पुरुष कहाता है।

त्रिभुवन—द्विगु (कर्मधारय)। जिस समास में दूसरा पद प्रधान हो, विग्रह करने पर दोनों पदों में कर्ता कारक की विभक्ति लगे और पहला शब्द संख्या वाचक हो वह द्विगु है।

जात कुजात—वैकल्पिक द्वन्द्व। जिस समास में दोनों पद प्रधान हों तथा विग्रह करते समय जिसमे 'वा', 'अथवा' आदि विकल्पसूचक समुच्चयबोधक लगाने पडे और बहुधा विरोधी शब्दों का मेल हो, उस समास को वैकल्पिक द्वन्द्व कहते हैं।

कनफटा—सम्बन्ध बहुव्रीहि। जिस समास में कोई पद प्रधान न हो और जो अपने पदों से भिन्न किसी संज्ञा का विशेषण हो, जिसके विग्रह मे संबंध कारक की विभक्ति लगे उसे संबंध बहुव्रीहि कहते हैं।

६ (क) निम्नलिखित में रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्दों से करो। एक रेखा के स्थान में एक ही शब्द लिखो।

प्राचीन भारत—इतिहास के साथ घोर अन्याय—है। हमारे

स्कूलो और कालेजों—इसका अत्यन्त घृणित—पढ़ाया—है। अध्यापक—भी संस्कृत—अनभिज्ञ होने के—यथार्थ बात नहीं जानते। ४

(ख) निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखो—

विद्वान। उत्साह। सुशिक्षित। अन्तरिङ्ग सभा। ४

(ग) निम्नलिखित वचनों को शुद्ध करके लिखो—

(१) हतभाग स्त्री चिल्लाई।

(२) राम न कहा, हे सीता। २

(क) प्राचीन भारत के इतिहास के साथ घोर अन्याय होता है। हमारे स्कूलों और कालिजों में इसका अत्यन्त घृणित पाठ पढ़ाया जाता है। अध्यापक लोग भी संस्कृत से अनभिज्ञ होने के कारण यथार्थ बात नहीं जानते।

(ख) विद्वान—विद्वान्। उतसाह—उत्साह। सुशिक्षित—सुशिक्षित। अन्तरिङ्गसभा—अन्तरङ्गसभा।

(ग) (१) हतभागिनी स्त्री चिल्लाई।

(२) राम ने कहा—हे सीते।

'हे सीता'' संस्कृत व्याकरण के अनुसार अशुद्ध है, संस्कृत में 'हे सीते' रूप होता है, परन्तु हिन्दी में अधिक 'हे सीता' का ही प्रयोग होता है इसलिए यह अशुद्ध नहीं।

७ (क) निम्नलिखित पद्य में कौनसा अलङ्कार है? उसका लक्षण लिखो—

बहुरि गरम मम बिनवो तेही, सपना मुरारीक हित जेही। ८

(ख) प्रतीप के कितने भेद हैं? उनके लक्षण सोदाहरण लिखो। १०

(ख) पाँच प्रकार की विभावना के पाचों उदाहरण लिखो। ५

(क) स्थायी भाव दस हैं—प्रेम, हास, शोक, उत्साह, क्रोध, भय, घृणा, विस्मय, निर्वेद और स्नेह।

विभाव—दो प्रकार का होता है, आलम्बन और उद्दीपन।

जिसके कारण स्थायीभाव की उत्पत्ति होती है, उसे आलम्बन कहते हैं, जैसे, शृंगार रस मे प्रेमपात्र, करुण में मृत व्यक्ति आदि।

जिस से उत्पन्न हुए स्थायीभाव उद्दीप्त या तीव्र हों उसे उद्दीपन कहते हैं, जैसे, शृङ्गार में सुदर प्राकृतिक दृश्य, वसंत और सगीत, हास्य में हास्योत्पादक व्यक्ति की चेष्टाएँ आदि।

(ख) पहली विभावना—

मुनि-तापस जिनते दुःख लहहिं, ते नरेश बिनु पावक दहहिं।

दूसरी विभावना—

काम कुसुम-धनु-सायक लीन्हें, सकल भुवन अपने बस कीन्हें।

तीसरी विभावना—

विपदा हू में होय के पर-दुख हरत महान।

चतुर्थ विभावना—

निकसी नीरज नाल ते चपक कलिका पाँच।

पचम विभावना—

सखी! करत सन्ताप मोहि सीतल किरन मयक।

९ (क) उपमा और रूपक में, उत्प्रेक्षा और प्रतीप में तथा श्लेष और समासोक्ति मे क्या क्या भेद है? ६

(ख) व्यतिरेक, विरोधाभास और काव्यलिङ्ग अलङ्कारों के लक्षण लिखो। ६

(क) उपमा में उपमेय और उपमान [illegible] अलग [illegible] समान धर्म एक कहा [illegible] मे [illegible]

उपमेय में अभेद कहा जाता है, यही दोनों में भेद है। जैसे—उपमा में कहा जाता है, 'मुख चन्द्र सा सुन्दर है', किन्तु रूपक में 'मुख चन्द्र है'—यह कहा जाता है।

उत्प्रेक्षा में उपमेय में उपमान की संभावना की जाती है, और प्रतीप में उपमेय को उपमान तथा उपमान को उपमेय माना जाता है।

लता भवन ते प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ।
निकसे जनु जुग विमल विधु सरद पटल बिलगाइ॥

इसमें रामचन्द्र और लक्ष्मण (उपमेय) में दो चन्द्रमाओं (उपमान) की संभावना की गई है, इसलिए यहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार है। और

विदा किये बटु विनय करि फिरे पाइ मन काम।
उतरि नहाये जमुन जल जो सरीर सम स्याम॥

श्रीराम का शरीर उपमेय और यमुना का जल उपमान है, परन्तु यहाँ श्रीराम के शरीर को उपमान बनाया गया है और यमुना के जल को उपमेय, और फिर यमुना के जल की श्रीराम के शरीर से उपमा दी गई है। यहाँ प्रतीप अलंकार है।

अर्थ श्लेष और समासोक्ति अलंकार आपकी पूर्व परीक्षा के कोर्स में नहीं है, इसलिए श्लेष और समासोक्ति का भेद नहीं बताया गया।

(ख) व्यतिरेक—जब उपमेय को उपमान की अपेक्षा बढ़ाकर बताया जाय तब व्यतिरेक अलंकार होता है, चाहे यह बढ़कर उपमेय में कोई विशेषता बताकर हो, या उपमान में हीनता बताकर।

उपमेय में विशेषता बताकर, जैसे—

मुख मयंक सा है सही, मधुर वचन सविशेष।

मुख उपमेय में चन्द्रमा उपमान से मीठे वचन बोलना विशेषता बताई गई है।

उपमान में हीनता बताकर, जैसे—

सीता का मुख शरद ऋतु के कमल के समान है, परन्तु कमल तो रात में कुम्हला जाता है, और यह दिन रात खिला रहता है।

इसमें पहले दोनों की समता करके कमल को इस बात में हीन बताया गया है कि वह रात को कुम्हला जाता है।

विरोधाभास और काव्यलिंग अलकार आजकल भूषण परीक्षा की पाठविधि में नही हैं।

प्रश्नपत्र २

१—सरल हिन्दी में अर्थ लिखो —

(अ) सूख हाड़ लेइ भाग सठ स्वान निरखि मृगराज।
छीनि लेइ जनि जानि जड़ तिमि सुरपतिहि न लाज॥

(ब) कन्हैया, तू नहिं मोहिं डरात।
षट रस धरे छाड़ि, कत पर घर चोरी करि करि खात॥
बकति झकति तोसों पचिहारी, नेकहु लाज न आई।
ब्रज परगन सरदार महर, तू ताकी करत नन्हाई॥
पूत सपूत भयौ कुल मेरे, अब मैं जानी बात।
सूर, स्याम अबलौं तोहि बकस्यौ, जानी तेरी घात॥ १२

(अ) भगवान् की भक्ति में लीन नारद जी से ईर्ष्या करने वाले इन्द्र के विषय में तुलसीदास जी कहते हैं —

मूर्ख कुत्ता सिंह को देख कर सूखी हड्डी लेकर भाग जाता है। वह समझता है कि कहीं सिंह मेरी इस सूखी हड्डी को छीन न ले। यही दशा इन्द्र की भी है। उसे भी लज्जा नहीं है। सिंह को भला सूखी हड्डी की क्या जरूरत? भगवद्भक्तों के लिए इन्द्रपद का क्या मूल्य?

(ब) यशोदा कृष्ण से कहती है—"कन्हैया! तू मुझसे तनिक भी नहीं डरता। घर में नाना प्रकार के भोजन रक्खे हैं उन्हें छोड़कर तू पराये घर में चोरी करके क्यों खाता फिरता है? मैं तो तुझे बकते झकते परेशान हो गई, पर तुझे तनिक भी लज्जा नहीं आई। तुझे यह भी ध्यान नहीं कि मेरे बाप ब्रजमण्डल के अधिपति हैं। तू चोरी कर करके उनकी निन्दा कराता है।

मुझे तो अब पता लगा कि मेरे घर में तुझ जैसा सपूत (अर्थात् कुपूत) पैदा हुआ है। पर देख ! अब तक तो मैं तुझे क्षमा करती आई हूँ, किन्तु अब क्षमा न करूँगी। तेरी शैतानी का मुझे पता लग गया है।

२—विस्तृत व्याख्या करो —

(अ) नीर-क्षीर विवेक न्याय था विश्रुत सब संसार
क्या मुँह लेकर अब यह जीवन रक्खूँ तुम्हें निहार।
निरपराध थे हृदय-खण्ड, तुम पितृ-भक्ति के दर्प
हुई पिशाची माता अब तो तव जीवन की सर्प ॥

(ब) सौंधे को अधार किसमिस जिनको अहार,
चारि को सो अंक लंक चंद सरमाती हैं।
ऐसी अरि नारी सिवराज वीर तेरे त्रास,
पायन में छाले परे कन्द मूल खाती हैं ॥
ग्रीषम तपनि ऐसी तपती न सुनी कान,
कञ्ज कैसी कली बिन पानी मुरझाती है।
तोरि तोरि आछे से पिछौरा सो निचोरि मुख
कहे अब कहाँ पानी मुकतों में पाती हैं ॥

(स) यह जिय जानि सँकोचु तजि करिय छोहु लखि नेहु।
हमहिं कृतारथ करन लगि फल तृन अंकुर लेहु ॥ १५

(अ) अन्धा करके राज्य से निकाले गये कुनाल की दुर्दशा देखकर अशोक का कथन है—

(हे बेटा !) मैं सारे संसार मे क्षीर-नीर विवेकी (पानी और दूध को पृथक् पृथक् करने का ज्ञान रखने वाले) हँस के तुल्य न्याय-परायण प्रसिद्ध था। अर्थात् सम्पूर्ण संसार यह भली भाँति जानता था कि मैं पानी और दूध को पृथक्-पृथक् करने

का ज्ञान रखने वाले हँस की तरह कार्य-अकार्य, न्याय अन्याय और उचित-अनुचित का ध्यान रखकर उसके अनुसार न्याय किया करता था। तुम्हारी इस अन्याय पूर्ण दुर्दशा को देखकर अब मैं संसार में किस मुँह से जीवन रक्खूँ? हे मेरे हृदय के टुकड़े! तुम निर्दोष थे, पिता के प्रति श्रद्धाभक्ति के शय रूप थे। हाय, अब तो तुम्हारी राक्षसी माता तुम्हारे जीवन की सर्प हो गई (साँप की तरह तुम्हारे जीवन के लिए घातक सिद्ध हुई)।

(घ) शिवाजी के शौर्य और उनके भय से शत्रु स्त्रियों की दुर्दशा का वर्णन करते हुए भूषण कहते हैं—जिनका जीवन सुगन्धि पर निर्भर था, जिनका भोजन किशमिश आदि मेवे थे, चार के अंक (४) के (मध्य भाग के) समान जिनकी बहुत पतली कमर थी, और जो (अपने सौंदर्य से) चन्द्रमा को भी लज्जित करती थीं, ऐसी शत्रु-स्त्रियों के, हे वीर शिवाजी! आपके भय के कारण भागते भागते, पैरों में छाले पड़ गये हैं, और वे अब कन्द-मूल खाकर गुजारा करती हैं। ग्रीष्म ऋतु की ऐसी तेज गर्मी से, जैसी कभी सुनी भी न गई थी, स्त्रियाँ प्यास के कारण कंज (कमल) की कलियों की भाँति कुम्हला रही हैं। वे सब बड़िया चादरों में मोती तोड़ भोग कर मुँह में निचोड़ती हुई कहती हैं कि इसमें पानी कहाँ? (आप का अर्थ पानी भी है और चमक भी, मोती में आब अर्थात् चमक होती है, परन्तु वेगमें घबराहट के कारण मोतियों को मुख में निचोड़ती हैं और कहती हैं कि इसमें पानी कहाँ?

(स) ग्रामवासी लोग और, भीलों की, अयोध्यावासियों से प्रार्थना है, जो वन में राम के दर्शनों को आये हैं—

यह समझ कर (कि राम ने निषाद पर कृपा की है) और

सकोच छोडकर तथा हम लोगों का प्रेम देख कर हम पर कृपा कीजिए। हमको कृतार्थ करने के लिए यह फल, तृण और अकुर ग्रहण कीजिए। अर्थात् हमें नीच जान कर हमसे घृणा न कीजिए।

३—प्रसग निर्देश करते हुए अर्थ लिखो —

(अ) तड़ित समान चड तेजस्वी, रत्नजटित नृप देखा
मानो रविमण्डल से उतरी दिव्य किरण की रेखा।
गुणिजन सकुल नागराज कुल कलित बाहुबलि बैठे
न्याय-नीति में, ज्ञान गीति मे हो सदेह मनु पैठे॥

(इ) भरे भुवन घोर कठोर रव रवि बाजि तजि मारग चले।
चिक्करहिं दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरम कलमले॥
सुर असुर मुनि कर कान दीन्हे सकल विकल बिचारहीं।
कोदण्ड खण्डेउ राम तुलसी जयति बचन उचारहीं॥

(उ) पितु सुर पुर सिय राम बन करन कहहु मोहि राजु।
एहि ते जानहु मोर हित कै आपन बड़ काजु॥ १५

(अ) अयोध्यापति भरत का दूत जब उनके छोटे भाई बाहुबली के दरबार में गया तो उसने वहाँ क्या देखा, यह इस पद्य में वर्णित है —

उसने देखा कि विद्युत के समान तेजस्वी राजा बाहुबली रत्नों से सुशोभित हो रहे हैं, (उसे ऐसा प्रतीत हुआ) मानो सूर्य मण्डल से अलौकिक किरण की एक रेखा (पृथ्वी पर) उतर आई हो। नागराज (तक्षक) के कुल को सुशोभित करने वाले वे बाहुबली राजा गुणियों से घिरे इस प्रकार सुशोभित हो रहे थे मानो राजनीति, न्याय तथा ज्ञानपूर्ण बातें करने मे (साक्षात) मनु भगवान् देह धारण कर आ पहुँचे हों।

(इ) स्वयंवर में राम के धनुष तोड़ने में जो भयंकर ध्वनि हुई उसका वर्णन कवि इस पद्य में करता है —

धनुष का घोर और कठोर शब्द संसार में भर गया। (उसके भय से) सूर्य के रथ के घोड़े मार्ग छोड़ कर भाग निकले। दिशाओं के हाथी चिंघाड़ने लगे, पृथिवी काँपने लगी, शेषनाग, वराह और कच्छप कलमलाने लगे। देवता, असुर तथा मुनियों ने हाथों से कान बंद कर लिये और व्याकुल होकर सब विचारने लगे कि रामचन्द्र ने क्या शिवजी के धनुष को तोड़ डाला है ? और तुलसीदास जी जय जय कहते हैं।

(उ) मन्त्रियों के समझाने पर कि तुम अब राज्य करो भरत इस पद्य में उन्हें उत्तर देते हैं—

पिता देवलोक गये और सीता और राम वन में हैं। ऐसी दशा में आप लोग मुझे राज्य करने के लिए कहते हैं ? क्या इस में आप लोग मेरा कल्याण देखते हैं या अपनी भलाई ?

४ शब्दार्थ लिखो —

अधकेटे, अरसेटे, पठनेटे, मगदन्त, सिरछाप, कमान, भरकोट चिंजी, दमकुट, गिफाद, फाछना, नेहुना, सोता, म्हैता, टोरा तथा खैयाँ। ८

अधकेटे—अधकटे, घायल।
अरसेटे—शिथिल, अशक्त
पठनेटे—युवक पठान
मगदन्त—वीर या पशु (गाँसी)
सिरछाप—सिरपेंच
कमान—तोप

भटझोट—वीरों का समूह
चिंजी—चिरजीविनी (कन्या)
दलकुड—दक्षिण का एक देश
निकाई—सुन्दरता
काछनी—घुटनों तक पहनी हुई धोती
लेडुवा—लट्टू घुमाने की डोरी
छौना—पशु का बच्चा
लडैतो—दुलारा, लाडला, धृष्ट, जो लाड प्यार के कारण बहुत इतराया हो।
ढोटा—पुत्र, बालक
ग्वैयाँ—सखा (ग्वाले)

५ इनका परिचय दो —
सम्प्रति, सुपिम, काञ्चनमाला, कमधुज, अली। १०

सम्प्रति—अशोक का पोता और कुणाल का पुत्र था। पितृ भक्ति के कारण जब कुणाल अन्धे हो गये तब अशोक ने इसे अपना उत्तराधिकारी बनाया।

सुपिम—बिन्दुसार का ज्येष्ठ पुत्र और अशोक का बड़ा भाई था। बौद्ध हो जाने के कारण वह तक्ष शिला का प्रबन्ध न कर सका और भिक्षु बन कर देशाटन को चला गया।

काञ्चनमाला—कुणाल की स्त्री थी। पति के अन्धे किये जाने और निकाले जाने पर यह सती उस का सहारा थी।

कमधुज—कबन्धज, जोधपुर के महाराजा को कहा जाता है, क्योंकि इन के पूर्वज कन्नौज नरेश का युद्ध में कबध उठा था।

अली—यह शब्द सूरदास जी ने कृष्ण के सखा और दूत उद्धव के लिये प्रयुक्त किया है। बात यह थी कि एक बार जब ये कृष्ण के कहने से गोपियों को समझाने गये तब इन पर एक भौंरा आ बैठा। गोपियों ने उस भौंर को सम्बोधित कर उद्धव जी को खूब ताने दिये। इसीलिए ये पद भ्रमर गीत के नाम से प्रसिद्ध हैं।

६ अयोध्याकाण्ड के आधार पर राम की वनयात्रा का वर्णन करो। १५

वनवासियों के वस्त्र धारण कर श्री रामचन्द्र जी माता, पिता और गुरु को प्रणाम कर सीता और लक्ष्मण समेत वन को चले। पहली रात उन्होंने तमसा नदी के किनारे बिताई। प्रात अयोध्यावासियों को सोता छोड़ कर आगे चले। दोपहर के लगभग शृङ्गवेरपुर पहुँच गये। यहाँ उन्होंने गंगा की महिमा सब को सुनाई। यहीं राम की भक्त गुह निषाद से भेंट हुई। इसी स्थान पर राम ने सुमन्त्र को भी समझा बुझा कर लौटा दिया। यहीं मल्लाह ने राम के चरण धोकर उन्हें गंगा पार किया। तब वे निषाद के साथ आगे बढ़े। चलते-चलते वे प्रयाग पहुँचे। यहाँ नदियों का संगम देख बहुत प्रसन्न हुए। फिर यहाँ से चल कर भरद्वाज मुनि के आश्रम में आए। मुनि ने उनका खूब आदर सत्कार किया। यहाँ से वे आगे बढ़े। रास्ते के ग्रामवासियों ने उनका फल फूल तथा मीठे वचनों से सत्कार किया। यहाँ से वे वन की शोभा देखते हुए श्री वाल्मीकि जी के आश्रम में आए। मुनि से आदर सत्कार पाकर, कुछ दो दिन वहाँ रहकर, उन्हीं की आज्ञा से चित्रकूट पर्वत पर रहने

के लिए आगे बढ़े। मुनि ने रास्ता दिखाने के लिए अपने कई शिष्य साथ दिये। चित्रकूट पहुँच लक्ष्मण ने एक उत्तम स्थान खोज कर नदी के किनारे एक पत्तों की कुटिया बनाई, जिसमें राम और सीता रहने लगे। लक्ष्मण सेवक की भाँति उनकी सेवा में तत्पर रहने लगे।

७ कुणाल की कथा का सविस्तर वर्णन करो। १०

जब बिन्दुसार के मरने पर अशोक मगध के राजा हुए, तो उन्होंने अपने पितृ भक्ति पुत्र कुणाल को तक्षशिला का अधिपति बनाकर भेजा। बुद्धिमान् कुणाल ने वहाँ का शासन इतनी उत्तमता से सँभाला कि प्रजा उस पर मोहित हो गई। कुणाल की एक विमाता भी थी, जिसका नाम तिष्यरक्षिता था। एक बार अशोक को रोग की अवस्था में सेवा द्वारा उसने प्रसन्न कर लिया और अपनी सेवा के बदले में एक सप्ताह राज्य करने की आज्ञा माँग ली। वह कुणाल से जलती थी और अपने पुत्र को युवराज-पद दिलाना चाहती थी। अत अवसर पाकर उसने राजा की मोहर लगा कर तक्षशिला के मन्त्री और सेनापति को एक पत्र लिखा, जिसमें कुणाल की दोनों आँखे निकाल कर उसे देश निकाले का दण्ड देने की आज्ञा दी और लिखा कि यह पितृद्रोही तथा देशद्रोही है। उस समय सारे सभासद मन्त्री तथा सेनापति कुणाल के साथ थे। कुणाल चाहते तो इस आज्ञा के विरुद्ध एक भयंकर विद्रोह खड़ा कर देते, किन्तु उन्होंने उलटा सब को शान्त किया। वे उस दण्ड को पाने के लिए तैयार हो गए। दण्ड पाकर अपनी स्त्री कांचनमाला के साथ वनों में घूमते फिरते, भिक्षा और फल-फूलों

निर्वाह करते एक दिन अशोक की राजधानी में पहुँचे। इनके भक्ति के भजन सुन बहुत से लोग इनके पीछे हो लिये। इतने में अशोक ने भी इनका शब्द सुना और तुरन्त पहचान लिया। झट दोनों को बुलाकर गले लगाया। उसे कुणाल के लिए अत्यन्त दुःख हुआ। दूसरे दिन उसने दरबार में तिष्य रक्षिता का क्रूर कर्म सारे दरबारियों को कह सुनाया और उसे कड़ा दण्ड दिया। तक्षशिला का राज्य कुणाल के पुत्र सम्प्रति को दिया तथा अपना उत्तराधिकारी भी उसे ही बनाया।

८ सूर, भूषण या तुलसीदास इनमें से किसी एक का परिचय दो। १५

सूरदास—भक्त शिरोमणि सूरदास का जन्म अनुमान से १५४० वि० तथा मृत्यु १६२० वि० में हुई। आगरा से मथुरा जाने वाली सड़क के किनारे रुणकता नामक गाँव इनकी जन्म भूमि कही जाती है। ये सारस्वत ब्राह्मण थे। इनके माता पिता दरिद्र थे। पिता का नाम रामदास था। सूरदास अन्धे थे। इनके कई भक्त इन्हें जन्म से अंधा बताते हैं। यदि ऐसा होता तो ये प्राकृतिक-विचित्रताओं तथा मानवीय हाव-भावों का ऐसा उत्कृष्ट वर्णन कभी न कर सकते। कहा जाता है कि एक बार ये एक युवती को देख कर उस पर मुग्ध हो गये। बड़ी देर तक टकटकी बाँधे उसकी ओर देखते रहे। अन्त में उस युवती ने निकट आकर पूछा—"महाराज! क्या आज्ञा है?" उस समय ये मन ही मन में बड़े लज्जित हुए। इन्होंने यह दोष अपनी आँखों का समझ कर उस युवती से विनती की कि वह सुई द्वारा इन दोनों दोषी आँखों

को फोड़ डाले। वचन बद्ध युवती ने वैसा ही किया। तभी से ये अंधे हो गये।

पीछे ये महात्मा वल्लभाचार्य के शिष्य हो गये और उनकी आज्ञा से नित्य प्रति अपने उपास्यदेव और सखा कृष्ण की स्मृति में नवीन भजन बनाने लगे। इनकी रचनाओं का बृहत् संग्रह 'सूर सागर' नाम से प्रसिद्ध है, जिसमें लगभग सवा लाख पद कहे जाते हैं, पर आजकल पाँच छ हजार ही मिलते हैं। इसमें कृष्ण की बाललीला से लेकर उनके गोकुल-त्याग और गोपियों के विरह तक की कथा फुटकर पदों में कही गई है। सभी पद गेय हैं। हिन्दुस्तान के गवैये इन पदों को बड़े चाव से गाते हैं।

इन्होंने एक ही प्रसंग पर अनेक पद लिखे हैं। भक्ति के आवेश में वीणा के साथ गाते हुए जो सरस पद इस अंध कवि के मुख से निस्सृत हुए हैं, उनमें पुनरुक्ति भले ही हो, पर वे इतने मर्मस्पर्शी तथा हृदयहारी हैं कि अरसिक को भी एक बार रसलीन कर देते हैं, विशेषत, बाललीला, गोपी-विरह तथा कृष्ण द्वारा भेजे गये उनके दूत ऊधो और गोपियो के सवाद के वर्णन में ये सरसता, स्वाभाविकता तथा उत्कृष्टता की चरम सीमा को लाँघ गये हैं। सूर सचमुच हिन्दी साहित्य के सूर्य हैं।

इन्होंने जो कुछ लिखा वह कृष्ण की भक्ति मे ही लिखा और उनको अपना मित्र तथा सखा समझ कर। सूर का कृष्ण, महाभारत का कूटनीतिज्ञ कृष्ण नहीं अपितु ब्रज-निवासी, लीला-विहारी, प्रेमी कृष्ण है, और सूर की कविता की भाषा भी कृष्ण की लीलास्थली ब्रज भूमि की ही भाषा है।

भूषण—महाकवि भूषण का जन्म यमुना नदी के किनारे कानपुर जिले में तिकवापुर नामक गाँव में संवत् १६७४ में तथा मृत्यु सं० १७७२ में हुई। इनके अन्य सब भाई—चिन्तामणि मतिराम और नीलकण्ठ भी हिन्दी के उत्कृष्ट कवि थे।

भूषण बचपन में बिलकुल निठल्ल थे। एक दिन भावज का ताना सुनकर ये घर से निकल पड़े। थोड़े ही अभ्यास के बाद ये अच्छी कविता करने लगे। तब ये कुछ दिन चित्रकूट अधिपति हृदयराम सोलंकी के पुत्र रुद्रराय के पास रहे। वहाँ से ये औरंगजेब के दरबार में गये, पर उस पराधीनता के वायुमण्डल में इस स्वाभिमानी जातीय कवि का गुजारा न हो सका। तब ये छत्रपति शिवाजी के दरबार में पहुँचे। तदनन्तर शिवाजी की मृत्यु पर्यन्त वहीं रहे।

इनके बनाये हुए चार ग्रन्थ कहे जाते हैं—शिवराज भूषण, भूषण हजारा, भूषण उल्लास और दूषण उल्लास।

ये हिन्दू जाति के जातीय कवि थे। पराधीनता इनके हृदय में चुभती थी। मृत जाति में जीवन तथा जागृति फूँकने के लिए इन्होंने वीर तथा रौद्र रस को अपनाया और इन रसों के ये सर्वोत्तम कवि हैं। इनकी कविता के नायक भी शिवाजी तथा छत्रसाल जैसे वीर हैं। कविता द्वारा जितना सम्मान तथा धन इनको मिला, उतना हिन्दी के और किसी कवि को नहीं मिला।

गोस्वामी तुलसीदास—इनका जन्म सं० १५८९वि० में बांदा जिले के राजापुर कस्बे में हुआ। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे और माता का नाम हुलसी था। इनका पहला नाम रामबोला था पर वैरागी होने पर तुलसीदास रक्खा गया।

इनका विवाह छोटी आयु में ही होगया था। कहा जाता

है कि इनका अपनी स्त्री पर बहुत अधिक प्रेम था। एक बार उसके मायके जाने पर ये भी उनके पीछे वहीं जा पहुँचे। इस पर इनकी स्त्री को लज्जा आई और उसने कहा।

"लाज न लागत आपको, दौरे आयहु साथ।
धिक् धिक् ऐसे प्रेम को, कहा कहों में नाथ॥
अस्थि-चरममय देह मम, तामे जैसी प्रीति।
तैसी जो श्रीराम महँ, होति न तौ भव-भीति॥

यह बात इन्हें ऐसी लगी कि उसी समय घर छोड़ कर चल दिए और काशी मे आकर वैरागी हो गये। गोस्वामीजी के हृदय मे प्रेम का प्रबल प्रवाह बह रहा था। अब तक उसका झुकाव स्त्री की ओर था, परन्तु इस जरा-सी बात से वह उधर से हट कर श्रीराम की ओर झुक गया और अन्त तक निरन्तर इसी दिशा में बहता रहा। इसी प्रेम प्रवाह ने इन्हें अनन्तकाल के लिए अजर अमर कर दिया। स० १६८० वि० मे इन्होंने असी और गंगा के संगम पर यह नश्वर शरीर छोड़ा।

तुलसीदास जी ने अपने समय की सब बोलियों और सब भाषाओं मे कविता की, पर इनकी सारी कविता लगभग राम पर ही आश्रित है। ये हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ और भारत जनता के प्रतिनिधि कवि थे। इनके ग्रन्थ निम्नलिखित हैं—

१—रामचरित मानस, २—विनय-पत्रिका, ३—गीतावली, ४—दोहावली, ५—कवित्त रामायण, ६—रामाज्ञा, ७—रामलला नहछू, ८—बरवै रामायण, ९—जानकी मंगल, १०—वैराग्य सदीपनी, ११—पार्वती-मगल, १२—कृष्ण गीतावली १३—राम सतसई, १४—हनुमान बाहुक।

इनमें से रामचरित मानस सबसे बड़ा और प्रसिद्ध है।

जितना यह लोकप्रिय हुआ है उतना भारत में अन्य कोई ग्रन्थ नहीं हुआ है। राजा से लेकर रंक तक प्रायः सबके घर में इसकी एक न एक प्रति मिल सकती है। जो स्थान संस्कृत में वेद और गीता का है, हिन्दी में वही स्थान इस रामचरितमानस का कहा जा सकता है।

प्रश्नपत्र ३

[प्रश्न १, २ और ३ आवश्यक हैं। शेष में से कोई चार कीजिए]

नीचे उद्धृत गद्यखण्डों के अर्थ लिखिए —

(क) नव मेघ के समान नील रंगवाले तुम्हें यहाँ बैठे देखकर मेरा हृदय व्याकुल हो जाता है। इसलिए अब तुम [illegible] के लिए आए हुए अनेक नृप सामन्त रूप भ्रमरों से गूँज रहे, [illegible] के परिजन-रूप पंखुड़ियों से अलंकृत, लक्ष्मी के निवास-भवन [illegible] सभामण्डपमय कमल के कर्णिकारूप इस सिंहासन पर बैठकर विष्णु भगवान के नाभि कमल में विराजमान ब्रह्मा की शोभा को धारण कर दो।

अथवा

अहो! संसार में ही [illegible] पुरुष दर्शन इतना [illegible] दे सकता है। [illegible] तथा स्मृति ग्रन्थों पर अंकित [illegible] प्रभाववाले दर्शनों के प्रसंग में [illegible] के उच्च महत्त्व और [illegible] पर सीताराम का प्रेम आदर्श है। इस [illegible] देखकर भी आज मुझ [illegible] की यह दुर्दशा कर दी है। [illegible]

प्राणनाथ ने पहले मेरा इतना आदर बढ़ाकर एक झूठे अपवाद के कारण मुझे कोसों दूर पटक दिया। १०

(ख) चाणक्य—मैं अविश्वास, कूटचक्र और छलनाओं का कंकाल, कठोरताओं का केन्द्र! आह! तो इस विश्व में मेरा कोई सुहृद नहीं? है, मेरा संकल्प। अब मेरा आत्माभिमान ही मेरा मित्र है। मैं अपनी प्रतिज्ञा पर आसक्त हूँ। वही सुन्दरी है! भयानक रमणीयता है। आज उस प्रतिज्ञा में जन्मभूमि के प्रति कर्त्तव्य का भी यौवन चमक रहा है। आधे पेट खाकर तृणशय्या पर सो रहने वाले के सिर पर दिव्य यश का स्वर्ण-मुकुट! और सामने सफलता का सौध!

अथवा

साम्राज्य चलाने की इच्छा न थी, चन्द्रगुप्त! मैं ब्राह्मण हूँ, मेरा साम्राज्य करुणा का था, मेरा धर्म प्रेम का था। चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र मेरे दीप थे, अनन्त आकाश वितान था, शस्य-श्यामला कोमला विश्वम्भरा मेरी शय्या थी, बौद्धिक विनोद कर्म था। उस अपना ब्राह्मण की जन्मभूमि को छोड़ कर कहाँ आ गया! सौहार्द के स्थान पर कुचक्र, फूलों के प्रतिनिधि काँटे, शास्त्रामृत के परिवर्तन में कुमन्त्रणा! शान्ति खो गई, स्वरूप विस्मृत हो गया। अभिमान-वश दुस्तर कुहेलिका समुद्र के समान संसार का संतरण करना चाहता था। १०

(ग) राजा—यह कैसे आश्चर्य्य की बात है कि मैं उस लक्ष्मण को, जिसने भ्रातृप्रेम के कारण पितृप्रेम को तिलाञ्जलि दे दी है, देखने के लिए उत्कंठित हो रहा हूँ। ❀ ❀ ❀ कहाँ है वह राज्यैश्वर्य को तृण समान समझने वाला? मेरा राम! मुझ बूढ़े को छोड़ कर झूठे में तुम्हारा इतना प्रेम! ६

(क) विदूषक राम को एकान्त में उदासीन बैठा देख, उनसे सभा में चलकर सिंहासन को सुशोभित करने के लिए प्रार्थना करता है—(हे महाराज!) नये बादलों के समान नील रंग वाले आपको यहाँ (इस तरह एकान्त में) बैठा देख कर मेरा हृदय दुखी हो जाता है, इसलिए अब आप चलिए। यह सामने सभा मण्डप रूपी कमल सुशोभित हो रहा है, इसके चारों ओर आपकी सेवा के लिए आए अनेकों राजा और सामन्त रूपी भ्रमर गूँज रहे हैं, दरबारी लोग ही इस कमल की सुन्दर पखुड़ियाँ हैं, और यह कमल लक्ष्मी (विष्णु की स्त्री) के रहने के मन्दिर की तरह सुन्दर है, इस (सभामंडप रूपी कमल) के कोश की तरह (वहाँ रक्खे) सिंहासन पर (आप) विराजिये, और अपनी शोभा से विष्णु भगवान के नाभि-कमल में बैठे ब्रह्मा की शोभा को भी फीका कर दीजिए।

अथवा

सीता के राम के प्रति ये विचार हैं —

(माना कि) मनुष्य का हृदय स्वभाव से कठोर है किन्तु आश्चर्य है कि वह इतना धोखा भी दे सकता है! अनुपम प्रेम के कारण जिनका नाम स्तूपों (मीनारों) तथा स्मृति स्तम्भों पर लिखने योग्य है ऐसे जोड़ों में दो ही आदर्श हैं—'स्वर्ग में पार्वती और महादेव तथा इस पृथ्वी पर सीता और राम'—इस उक्ति को जन्म देकर भी अर्थात् इस पृथ्वी पर आदर्श प्रेमी कहलाकर भी मुझ निरपराधिनी की आज यह दुर्दशा कर दी है। (हा) मेरे स्वामी ने पहले मेरा इतना मान बढ़ाया, फिर एक झूठी निन्दा के कारण मुझे इस तरह दूर कर दिया।

(ख) सुवासिनी के प्रेम से निराश चाणक्य अपने मन के भाव प्रकट करता है—

मैं अविश्वास, कूटनीति और धोखों का पजर (मूर्ति) और कठोरताओं का घर हूँ। ओह ! तो क्या इस ससार में मेरा कोई मित्र नहीं ? है, मेरे दृढ विचार और मेरा आत्माभिमान ही मेरा मित्र है। मैं अपनी प्रतिज्ञा पर ही मुग्ध (स्थिर) हूँ, वह बडी सुन्दरी है। इसमे डरावनी खूबसूरती है। आज मेरी उस प्रतिज्ञा में, मेरा अपनी मातृ भूमि के लिए क्या कर्तव्य है—इस बात का भी यौवन झलक रहा है। (आहा) उस ब्राह्मण (चाणक्य) के सिर पर, जो कभी आधे पेट खाकर तिनकों की शय्या पर सोजाता था, आज यश रूपी सोने का ताज शोभा पा रहा है और उसकी सफलता का महल सामने ही दिखाई दे रहा है (अर्थात् उसे शीघ्र ही सफलता मिलने वाली है)।

अथवा

चन्द्रगुप्त जब अपने माता-पिता के नाराज होकर चले जाने पर क्रुद्ध होकर चाणक्य से उसका कारण पूछता है, तो चाणक्य कहता है—

चन्द्रगुप्त ! मैं तुम्हारा राज्य चलाना नहीं चाहता था। मै ब्राह्मण हूँ। मेरा राज्य इस राज्य से बिलकुल अलग था। वह था दूसरों पर दया करना। मेरा धर्म था ससार भर के जीवों से प्रेम करना। चन्द्र, सूर्य और तारे ही मेरे दीपक थे, असीम आकाश ही मेरा तबू था, हरियाली से ढकी नर्म भूमि ही मेरी मेज थी, बुद्धि सम्बन्धी (ज्ञान की) बातों से मन को बहलाना

लिए वैसे ही अपार प्रेम है, जैसे कठोर मृणाल (भसींडे) के भीतर कोमल तार होते हैं।

(ग) हे मेरी कमजोर (दु ख भरी) आह ! तू बाहर न निकल ! (नहीं तो) तुझे लोगो की हँसी का जाडा लगेगा। (अब तो तू) शरद ऋतु के जलहीन बादलो मे भयभीत हुई बिजली की तरह अन्दर ही अन्दर छटपटाती रह।

अथवा

राक्षस को सुवासिनी के रूप की याद दिला कर भडकाने के लिए नेपथ्य से यह पद्य कहा गया है—

(स्त्री के) रूप की अग्नि बडी प्रबल है ? उसमें (कामियो का) मन भस्म होकर पतगे की तरह जा पडता है। (यह स्त्री की सुन्दरता) सन्ध्या के आकाश की तरह लाल-लाल और बहुत ही तेज शराब है। क्या यह फूलों की माला (जैसी कोमल सुन्दरता) लोहे की जजीर से भी कठोर नहीं ? (अवश्य कठोर है)।

३ (क) मगध में अपने पुराने घर का खँडहर देख चाणक्य के मुँह से ये शब्द निकले—

"मगध ! सावधान ! इतना अत्याचार ! तुझे उलट दूँगा, नया बनाऊँगा। (ठहरकर) नहीं, बस मेरी भूमि, मेरी वृत्ति, वही मिल जाय। मुझे राष्ट्र की भलाई बुराई से क्या ?"

इन शब्दों से हृदय के क्या क्या भाव टपकते हैं ?   ५

(ख) नीचे उद्धृत वाक्यों में से किन्हीं पाँच का तात्पर्य समझाइये —

(१) तामस त्याग से सात्त्विक ग्रहण उत्तम है।

(२) ब्राह्मणत्व एक सार्वभौम शाश्वत बुद्धि वैभव है।

(३) स्मृति जीवन का पुरस्कार है।

(४) नियति सुन्दरी के भवों में बल पड़ने लगा है।

(५) महत्वाकांक्षा का मोती निष्ठुरता की सीपी में रहता है।

(६) जिसके लिए प्रेमी के हृदय में तड़प है, क्या वह भी शोक करने योग्य है?

(७) सारे संसार के अभ्युदय और निःश्रेयस के कारणभूत आप-मरीचि महाराज के लिए नैमिषारण्य में भक्ति होना उचित ही है।

(८) रे पददलित ब्राह्मणत्व! अपनी ज्वाला से जल। उसकी चिनगारी से तेरे सेवक शूद्र और रक्षक क्षत्रिय उत्पन्न होंगे। ६

(ग) राम का दुपट्टा ओढ़कर अद्‌भुत सीता ने कहा था—"मेरे सौभाग्य से इसके इस दुपट्टे में इतर फुलेल की महक नहीं।" सीता ने 'सौभाग्य' शब्द जिस अभिप्राय से कहा हो, उसे स्पष्ट कीजिए। ५

(घ) प्राचीन नाटकों में 'भरतवाक्य' किस अभिप्राय से रखा जाता था। ५

(ङ) चाणक्य अपने पिता का देश निकाला, अपनी झोंपड़ी का टूटना, अपनी प्रतिमा सुवासिनी का राक्षस के पास जाना, जानकर क्रोध में भर जाता है। एक बार तो वह बदला लेने का विचार कर इस अन्यायशील राज्य को ... का विचार करता है। फिर ... होने के कारण ... है, और वह इतना ही चाहता है कि ... जीवित मिल जाय, वह ... करे

लिए वैसे ही अपार प्रेम है, जैसे कठोर मृणाल (भसींडे) के भीतर कोमल तार होते हैं।

(ग) हे मेरी कमजोर (दु ख भरी) आह ! तू बाहर न निकल ! (नहीं तो) तुझे लोगो की हँसी का जाडा लगेगा। (अब तो तू) शरद ऋतु के जलहीन बादलो मे भयभीत हुई बिजली की तरह अन्दर ही अन्दर छटपटाती रह।

अथवा

राक्षस को सुवासिनी के रूप की याद दिला कर भडकाने के लिए नेपथ्य से यह पद्य कहा गया है—

(स्त्री के) रूप की अग्नि बडी प्रबल है ? उसमें (कामियो का) मन मग्न होकर पतगे की तरह जा पडता है। (यह स्त्री की सुन्दरता) सन्ध्या के आकाश की तरह लाल-लाल और बहुत ही तेज शराब है। क्या यह फूलो की माला (जैसी कोमल सुन्दरता) लोहे की जजीर से भी कठोर नही ? (अवश्य कठोर है)।

२ (क) मगध मे अपने पुराने घर का खॅडहर देख चाणक्य के मुँह मे ये शब्द निकले—

"मगध ! सावधान ! इतना अत्याचार ! तुझे उलट दूँगा, नया बनाऊँगा। (ठहरकर) नहीं, बस मेरी भूमि, मेरी वृत्ति, वही मिल जाय। · मुझे राष्ट्र की भलाई बुराई से क्या ?"

इन शब्दों से हृदय के क्या क्या भाव टपकते है !　　५

(ख) नीचे उद्धृत वाक्यो में से किन्ही पॉच का तात्पर्य समझाइये —

(१) तामस त्याग से सात्विक ग्रहण उत्तम है।

(२) ब्राह्मणत्व एक सार्वभौम शाश्वत बुद्धि वैभव है।

५ चाणक्य चन्द्रगुप्त के इस कथन पर कि गुरुदेव ! 'इतनी क्रूरता' ! उसे उत्तर देता है—संसार में रहे बनने की—राजा बनने की—तथा नेयतके राज्य करने की कुंजी ही निर्दयता है । बिना कठोरता किये भला कभी तुम राजा बन सकते थे । अत इस निर्दयता की चिन्ता न करो ।

६ जब राम सीता को याद कर करके शोक संतप्त हो रहे हैं तो सीता कहती है—'मैं शोक करने योग्य नहीं हूँ । क्योंकि जब आप मेरे लिए इस प्रकार का प्रेम भाव रखते हैं तो मुझ जैसी तो कोई बड़भागिनी ही नहीं ।' है भी सच, प्रेमी अपनी प्रेमिका के लिए यदि सच्चा प्रेम रखता है तो वह किसी भी अवस्था में शोक करने योग्य नहीं है ।

(७) कण्व राम की तपोवन में भक्ति देख कर कहता है कि महाराज ! आप राजा हैं, संसार की उन्नति और कल्याण का कारण आप हैं, फिर संसार की उन्नति और कल्याण के मूल कारण तपोवन में आपका प्रेम होना स्वाभाविक है ।

(८) पर्वतेश्वर से अपमानित चाणक्य का कथन है—

हे दूसरों के पैरों से कुचले हुए अपमानित ! तू अपनी अग्नि को जला, अपनी शक्ति को प्रकट कर, फिर देख करोड़ों शूद्र तेरी सेवा के लिए और करोड़ों क्षत्रिय तेरी रक्षा के लिए उपस्थित हो जायेंगे ।

(ग) राजा के दुपट्टे को सुगन्धित [illegible] को जब निश्चय हो गया [illegible] गन्धर्व [illegible] लोगों से दूर है—वे [illegible] और [illegible] में [illegible] । कि [illegible]

निर्वाह कर लेगा। एक प्रकार से उसे पढे लिखे समाज से घृणा हो जाती है। तभी तो वह अपने शास्त्रों के पठन पाठन को भी छोड़ खेती करना चाहता है। राष्ट्र की भलाई बुराई से अपना कोई सम्बन्ध नहीं बताता। अथवा वह मन में दुखी होकर सोचता है कि जब मेरा कोई नहीं तो मै किसी का क्यों बनूँ?

(ख) १ चाणक्य पर्वतेश्वर के इस कथन पर कि मैंने तो राज्य दान कर दिया है उसे समझाता है कि मोह और अभिमान तथा निराशा मे, या किसी दूसरे दुख से किसी वस्तु वा राज्य को छोड़ देने की अपेक्षा शुभ कार्य के लिए उसे फिर स्वीकार कर लेना अच्छा है। अत, तुम राज्य को स्वीकार करो।

२ चाणक्य पर्वतेश्वर को ब्राह्मण की शक्ति बताता है कि ब्राह्मण वह शक्ति है, जो सारी पृथ्वी को सदा ज्ञान का भण्डार देती है। अत वह जो चाह कर सकती है। फलत मुझ मे भी वही शक्ति है, और मैं चन्द्रगुप्त को क्षत्रिय-पद दे सकता हूँ।

३ चन्द्रगुप्त कार्नेलिया से कहते हैं—

हे सुन्दरी! तुम मुझे नहीं भूलो, बस मुझे इसी में प्रसन्नता है। क्योंकि प्रेमी के जीवन का यही एक अमूल्य सुख है कि उसकी प्रेमिका उसे न भुलावे।

४ नन्द से तिरस्कृत चाणक्य का कथन है कि नन्द—अब तेरे बुरे दिन आगए हैं। अब शीघ्र ही तेरे जैसे शूद्रों को गद्दी से उतार कर सच्चे क्षत्रिय गद्दी पर बैठेंगे।

कुन्दमाला के लेखक के सीता को अदृश्य रखने के दो प्रधान कारण हैं।

(१) सीता को राम के हृदय के भावों से परिचित कराना कि वह उसे कितना चाहता है। सीता अपने स्वामी के इस व्यवहार से कि उसने एक तुच्छ और झूठी निन्दा के कारण उसे निर्जन वन में अकेला छोड़ दिया, बड़ी दुःखी है। वह अपने स्वामी को कठोर तथा अन्यायी समझती है। उसके इन भावों को दूर कर फिर से स्वामी के प्रति श्रद्धा-भाव उत्पन्न करने का काम कवि ने इसी उपाय से किया है। यदि सीता की तरह राम उसे देख पाते तो उनके हृदय के भाव सीता पर स्पष्ट न हो पाते। सीता सम्भवतः यही समझती कि ये भाव केवल दिखावे के हैं। पर अदृश्य होने के कारण सीता राम के मनोभावों को ठीक ठीक जान जाती है, उसे मालूम हो जाता है कि उसे स्मरण कर स्थान स्थान पर राम उसके लिए कितना दुःखी हो रहे हैं, अपने को कितना कोस रहे हैं, इसी बीच में दोनों का दुपट्टा बदल जाता है।

(२) सीता को अदृश्य रख कर वह अन्त में पुत्रों सहित सीता का राम से अपूर्व मिलन कराना चाहता है। यदि राम सीता को पहले ही देख ले तो नाटक के अन्तिम और आवश्यक अंक की आवश्यकता ही नहीं रह जाती। अपूर्व मिलन ने ही दर्शकों और पाठकों का मनोरंजन है। इस प्रकार पुत्रों द्वारा राम अपने जीवन का सुखान्त मुख प्राप्त करने में समर्थ होते हैं और अन्त में दोनों का सुख मिलन होता है। अतः सीता को अदृश्य रखने के ये दो कारण हैं।

लिए कहीं राम ने दूसरा विवाह न कर लिया हो। पर दुपट्टे की सुगन्धि शून्य देखकर उसका सन्देह दूर हो जाता है। इसीलिए वह "मेरे सौभाग्य " इत्यादि वाक्य में 'सौभाग्य' शब्द कहती है।

(घ) प्रवेशक रखने का अभिप्राय यही था कि जो घटनाएँ नाटक के रंगमंच पर न दिखाई गई हों, या न दिखाई जा सकती उन्हें प्रवेशक में (किसी नीच पात्र) द्वारा दर्शकों को सुना कर नाटक का सिलसिला समझा दिया जाय।

४ कल्याणी ने दो परस्पर विरोधी भावों के द्वन्द्व में पड़कर आत्महत्या की, इसे सिद्ध कीजिए।

कल्याणी कहती है 'मेरे जीवन के दो स्वप्न थे—दुर्दिन के बाद आकाश के नक्षत्र विलास-सी चन्द्रगुप्त की छवि, और पर्वतेश्वर से प्रतिशोध '। पर्वतेश्वर से प्रतिशोध तो उसे उसी दिन मिल चुका था जिस दिन पर्वतेश्वर और सिकन्दर की संधि हुई थी। और फिर उक्त कथन के थोड़ी देर बाद ही पर्वतेश्वर का वध करके वह उससे निश्चिंत हो चुकी थी। चन्द्रगुप्त को वह हृदय से चाहती थी। वह स्वयं कहती है—'कल्याणी ने वरण किया था केवल एक पुरुष को—वह था चन्द्रगुप्त।' परन्तु जब वही चन्द्रगुप्त उसके पिता के विरुद्ध खड़ा हुआ तो उसके हृदय में चन्द्रगुप्त के प्रति विरोधी भाव उत्पन्न हुए। आत्महत्या से पूर्व उसके मन में चन्द्रगुप्त के प्रति आकर्षण और पिता के विरुद्ध खड़े होने के कारण उससे विमुखता, इन दोनों विरोधी भावों का द्वन्द्व हो रहा था। इस द्वन्द्व में पड़कर उसने आत्महत्या की।

५ सीता को अदृश्य रखने में 'कुन्दमाला' के रचयिता का जो उद्देश्य हो उसे प्रकट कीजिए।

राक्षस के पूछने पर वे अपने आप को चाणक्य द्वारा नियुक्त राक्षस के शरीर-रक्षक बताते हैं। इस प्रकार चाणक्य राक्षस पर अपना पूरा विश्वास बैठा लेता है।

सिकन्दर के भारत त्याग के बाद चाणक्य राक्षस और कल्याणी को मगध जाने की अनुमति देता है। साथ ही राक्षस से कहता है 'मैं सुवासिनी से तुम्हारी भेंट भी करा देता, परन्तु वह मुझ पर विश्वास नहीं करती।' प्रेमान्ध राक्षस तुरन्त अपनी अँगूठी उतार कर दे देता है और कहता है—'यह लो मेरी अंगुलीय मुद्रा। चाणक्य! सुवासिनी को कारागार से मुक्त करा कर मुझ से भेंट करा दो।' इस प्रकार चाणक्य ने राक्षस से अँगूठी ली।

शकटार पहले ही बंदीगृह में था। उसके बाद चाणक्य ने किसी तरह नन्द को यह कहला दिया कि सेनापति मौर्य अपने विद्रोही पुत्र चन्द्रगुप्त को सहायता देता है। तब नन्द ने मौर्य को भी अन्ध-कूप में डलवा दिया। फिर सेनापति की पत्नी वररुचि को साथ लेकर नन्द से अपने पति की मुक्ति की प्रार्थना करने गई, और वे दोनों अन्धकूप में भेजे गए। चाणक्य नन्द के मन्त्रियों और सेनापति आदि को जेल में डलवा कर प्रजा को यह कह कर विद्रोह के लिए उभाड़ना चाहता था, कि जो राजा सेनापति और मंत्रियों को जेल में डालता है, वह राज्य का अधिकारी नहीं, वह अत्याचारी है। इसीलिए वह राक्षस से उसकी अँगूठी लेता है। राक्षस और सुवासिनी के विवाह के कुछ ही समय पहले एक चिट्ठी लिखवाकर उस पर राक्षस की मोहर करके वह चिट्ठी चाणक्य मालविका को दे देता है। मालविका यह चिट्ठी लेकर नन्द के महल में जाकर

६ चाणक्य ने राक्षस से मुद्रा किस उपाय से ली और अपनी नीति सफल करने में उसका क्या उपयोग किया ? संक्षेप में लिखिए । ९

जब सिकन्दर ने भारत पर आक्रमण किया, तो चाणक्य और चन्द्रगुप्त ने उस पद पद पर बाधा दी। इधर कल्याणी ने भी पर्वतेश्वर से बदला लेने के लिए उत्तरापथ की यात्रा की। पर्वतेश्वर से सिकन्दर की संधि हो जाने पर चन्द्रगुप्त, चाणक्य और कल्याणी मगध की सेना के साथ रावी नदी के इस पार आ गए। इतने में राक्षस कल्याणी को लेने वहाँ पहुँचा। कल्याणी राक्षस के साथ मगध लौटना चाहती थी, परन्तु चाणक्य ने यह कहकर कि मगध पर सिकन्दर का आक्रमण रोकने के लिए, मगध की सेना का यहाँ रहना आवश्यक है, राक्षस और कल्याणी को वहीं रोक रखा। चन्द्रगुप्त और चाणक्य ने मालवों, क्षुद्रकों और मगध की सेना की सहायता से सिकन्दर को भारत से निकाल बाहर किया। यवनों पर विजय पाने के बाद चाणक्य ने मगध की ओर ध्यान दिया। उसने पहले राक्षस से यह कहा कि नन्द को राक्षस और सुवासिनी के प्रेम का पता लग गया है, इसलिए अभी राक्षस का मगध लौटना ठीक नहीं। फिर उसने राक्षस के चर द्वारा उसे सूचना दी कि सुवासिनी पर राक्षस से मिलकर कुचक्र करने का अभियोग है, और वह कारागार में है। और प्रान्त दुर्ग पर अधिकार करके विद्रोह करने के अपराध में उसे बंदी करके ले जाने के लिए पुरस्कार की घोषणा की गई है। उसके बाद ही चाणक्य के सिखाये हुए चार व्यक्ति मागध-सैनिकों के वेश में आकर राक्षस को नन्द की आज्ञा से बंदी करते हैं और तुरन्त और आठ सैनिक आकर उन चार सैनिकों को बंदी करके राक्षस को मुक्त करते हैं।

से प्रतिशोध लेना ही उसके जीवन का एकमात्र लक्ष्य है। उसके साथ ही वह अपने देशवासियों की अधीनता स्वीकार करने में अपनी हेठी समझता है, भले ही उन यवनों के अधीन होकर रहना पड़े। चाणक्य और अलका के सतत प्रयत्न से अन्त में वह विदेशियों की अधीनता स्वीकार करने की अपेक्षा आर्यावर्त के साम्राज्य में सम्मिलित होना पसंद करता है और लड़ते-लड़ते वीरगति को पा जाता है।

सिंहरण वीर है, कर्तव्यनिष्ठ है, साहसी है। तक्षशिला गुरुकुल में शिक्षा समाप्त करते समय चंद्रगुप्त और सिंहरण के विचार थे—'हम मागध हैं और यह मालव। समझ भर की जाति और शिक्षा का अर्थ मैंने यही समझा है कि आत्म-सम्मान के लिए मर मिटना ही दिव्य जीवन है। सिंहरण मेरा आत्मीय है, मित्र है, उसका मान मेरा ही है।' इस पर चाणक्य उन्हें शिक्षा देता है—'तुम मालव हो और यह मागध, यही तुम्हारे मान का अवसान है न? परन्तु आत्म सम्मान इतने ही से सन्तुष्ट नहीं होगा। मालव और मागध को भूल कर जब तुम आर्यावर्त का नाम लोगे, तभी वह मिलेगा। क्या तुम नहीं देखते हो कि आगामी दिवसों में, आर्यावर्त के सब स्वतन्त्र राष्ट्र एक के अनंतर दूसरे विदेशी विजेता से पददलित होंगे।' बस उसी समय से सिंहरण अपने आप को और मालव को भूल जाता है, उस दिन से वह जानता है एक आर्यावर्त को। उसके लिए वह अपने प्राण को हथेली पर लिये फिरता है। सेल्यूकस जब अलका से मानचित्र छीनना चाहता है, तो सिंहरण आकर अलका से कहता है—'राजकुमारी! यह मानचित्र मुझे देकर आप निरापद हो जाँय, फिर मैं देख लूँगा।' और सेल्यूकस का [illegible]

जानबूझ
पर बता
को देने
बन्दी कर
बंदीगृह में
मगध की
होकर नन्
नन्द उत्तेजि
करता है।
नन्द का वि
मगध
चन्द्रगुप्त औ
करती है, प
साम्राज्य रहा
चन्द्रगुप्त को

(७) सिंहर

कल्याणी अ
पर्वतेश्वर ने
विश्रुत कुल की पु
अपना अपमान स
सब युद्ध करने का
लिए ही वह सिक
उसके लिए गाधार

हुए भी केवल आर्यावर्त की एकता और स्वाधीनता के लिए गण-राष्ट्र को भी साम्राज्य में सम्मिलित कर देता है। आम्भीक और सिंहरण में एक और भेद है। आम्भीक मिथ्या गर्व के कारण किसी की अधीनता स्वीकार नहीं करना चाहता तो सिंहरण मालवों का सेनापति होते हुए भी चन्द्रगुप्त के सेनापतित्व का इसलिए समर्थन करता है, कि वह जानता है कि चन्द्रगुप्त उस पद के लिए उससे अधिक उपयुक्त है और आर्यावर्त की स्वाधीनता के लिए चन्द्रगुप्त का सेनापतित्व अभिप्रेत है।

अथवा

कल्याणी को पर्वतेश्वर ने शूद्र कन्या कहा था, इस पर नाराज होकर वह पर्वतेश्वर से प्रतिशोध लेने को उद्यत होती है। उसके अपने शब्दों में उसके जीवन के दो स्वप्न थे—दुर्दिन के बाद आकाश के नक्षत्र विलास सी चन्द्रगुप्त की छवि, और पर्वतेश्वर से प्रतिशोध। बस इसके अतिरिक्त उसके जीवन का और कोई लक्ष्य न था। पर्वतेश्वर से प्रतिशोध लेने के लिए उसने आभीक के समान सिकन्दर से मिलकर पर्वतेश्वर से युद्ध करने की अपेक्षा, सिकन्दर द्वारा पराजित पर्वतेश्वर का मागध सेना द्वारा उद्धार कर मान मर्दन का जो निश्चय किया था, उस का कारण चन्द्रगुप्त ही कहा जा सकता है। वह चन्द्रगुप्त को चाहती थी, और जब चाणक्य और चन्द्रगुप्त नन्द से पर्वतेश्वर के लिए सहायता माँगने गये और नन्द ने सहायता देने से इन्कार कर दिया तो कल्याणी कहती है—"पिताजी, चन्द्रगुप्त पर ही दया कीजिये। एक बात उसकी भी मान लीजिये।" बस चन्द्रगुप्त के कारण ही उसने पर्वतेश्वर से प्रतिशोध लेने के

लिए इस उपाय का अवलम्बन किया। और अन्त में जब चन्द्रगुप्त उसके पिता के विरुद्ध खड़ा हुआ तो चन्द्रगुप्त और पिता दोनों की तरफ आकृष्ट होने के कारण उसने आत्महत्या कर ली।

अलका का जीवन आदर्श स्वार्थ-त्याग, वीरता और आर्य-साम्राज्य के एक कुशल सैनिक का जीवन है। चाणक्य की नीति की सफलता चन्द्रगुप्त के शौर्य और सिंहरण तथा अलका की अथक लगन का परिणाम है। पिता और भाई को देशद्रोह करते देख वह गांधार के राज-प्रासाद को छोड़ कर चल देती है। देश की स्वाधीनता के लिए वह पथ की भिखारिणी बनती है। सौभाग्य से उसे जीवन संगी भी सिंहरण-सा मनस्वी वीर और देश-भक्त मिल जाता है। वह देश की स्वाधीनता के लिए सब कुछ कर सकती है तो दांपत्य-प्रेम में भी अद्वितीय है। जब पर्वतेश्वर कहता है कि 'अलका के दो प्रेमी नहीं जी सकते', तो वह कैसा निर्भीक उत्तर देती है—'यदि भूपालों का सा व्यवहार न माँग कर आप सिकन्दर से द्वन्द्व-युद्ध माँगते तो अलका को विचार करने का अवसर मिलता।' वह देश के लिए आवश्यकता होने पर बंदी होती है, नटी बनती और धनुष भी हाथ में लेती है और अद्वितीय वीर [illegible] कौशल-पूर्वक युद्ध करती है। देश की स्वाधीनता [illegible] इतने कष्ट सहन [illegible] भी उसकी [illegible] कभी नहीं [illegible] स्वा[illegible] जब चाणक्य [illegible] सौंपता है तो [illegible] 'भाई!

नहीं गया ! राज्य किसी का नहीं, सुशासन का है ! जन्मभूमि के भक्तों में आज जागरण है। देखते नहीं, प्राच्य में आज सूर्योदय हुआ है ! स्वयं सम्राट् चन्द्रगुप्त तक इस महान् आर्य साम्राज्य के सेवक हैं। स्वतन्त्रता के युद्ध में सैनिक और सेनापति का भेद नहीं। जिसकी खड्ग प्रभा में विजय का आलोक चमकेगा वही वरेण्य है ! उसी की पूजा होगी। भाई ! तक्षशिला मेरी नहीं और तुम्हारी भी नहीं, तक्षशिला आर्यावर्त का एक भूभाग है, वह आर्यावर्त की होकर ही रहे, इसके लिए मर मिटो ! फिर उसके कणों में तुम्हारा ही नाम अंकित होगा। मेरे पिता स्वर्ग में इन्द्र से प्रतिस्पर्धा करेंगे। वहाँ की अप्सराएँ विजय-माला लेकर खड़ी होंगी, सूर्यमंडल मार्ग बनेगा और उज्ज्वल आलोक से मंडित होकर गांधार का राजकुल अमर हो जायगा।'

८ राम ने अपने निज के सुख दुःख का कुछ भी ध्यान न करके राजधर्म का कठोर पालन किया, यह प्रदर्शित कीजिए। १

अष्टावक्र मुनि ने राम को उपदेश दिया था—"प्रजारंजन ही मूल राजधर्म है, यही राज्य की जड़ है। राजा का कर्तव्य है कि वह प्रजा के सुख और भलाई के लिए अपने सब सुखों को तिलांजलि दे दे। अगर ज़रूरत पड़े तो बन्धु, भाई, माता और पत्नी तक का त्याग कर दे।" राम ने अक्षरशः इस उपदेश का पालन किया। उन्होंने केवल प्रजारंजन को ही अपने जीवन की साधना और ध्येय बनाया। प्रजा की संतुष्टि के लिए उन्होंने सीता को—उसी सीता को जो उन्हें प्राणों से भी प्यारी थी, जिसे वे हृदय से सती, साध्वी और पुण्यवती समझते थे—

सदा के लिए निर्वासित कर दिया और निर्वासित भी किया था गर्भिणी अवस्था में जिस समय उन्हें सब से अधिक आराम की आवश्यकता थी। क्रूर से क्रूर मनुष्य भी इतना कठोर हृदय नहीं हो सकता जितने कठोर हृदय राम अपने कर्तव्य—राजधर्म—के पालन के लिए हुए थे। और सीता को निर्वासित कर राम की अपनी दशा क्या हुई उसका आभास हमें मिलता है द्विजेन्द्र लाल राय के उन शब्दों में जो उन्होंने सीता नाटक में राम के मुख से कहलाये हैं। वे कहते हैं—"सोने के लिए लेटता हूँ, लेकिन अकस्मात् हृदय के भीतर धकधक करके आग जल उठती है, मर्मस्थल में जैसे कोई तीक्ष्ण छुरियाँ भोंकने लगता है, हजारों बिच्छुओं के काटने की ऐसी यन्त्रणा से छटपटा उठता हूँ। मैं अकेला उन्मत्त की तरह महल के भीतर, ऊपर, छतों पर इधर उधर टहलता रहता हूँ। इन बारह वर्षों में मुझे शान्ति नहीं मिली, तीव्र यन्त्रणा के मारे नींद नहीं आई।" राम ने यह अपनी दुर्दशा की थी स्वयं अपने आप, और की थी केवल प्रजारंजन के लिए—राजधर्म पालन के लिए। इस प्रकार हम देखते हैं कि राम ने निज सुख दुःख का कुछ भी ध्यान न करके कठोर राजधर्म का ही पालन किया।

९ 'प्रतिमा' नाटक में अंकित भरत के चरित्र की उज्ज्वलता दिखाइए। ९

प्रतिमा नाटक में भरत का चरित्र बिलकुल वैसा ही अंकित किया गया है जैसा रामायण में है या रामायण के आधार पर बने अन्य नाटकों आदि में है। भरत भ्रातृ प्रेम तथा त्याग का अवतार है। उसे जब यह मालूम होता है राम

के वनवास का कारण उसकी माँ है तो वह उसे प्रणाम तक नहीं करती। कौशल्या के पूछने पर कि 'शिष्टाचार जानते हुए भी तुम अपनी माता को प्रणाम क्यों नहीं करते' भरत कहता है 'मेरी माँ आप हैं।' भ्रातृ प्रेम के कारण ही वह राज्य छोड़ वन में जाता है, भाई को मनाने का यत्न करता है, उसके न मानने पर उसी की खड़ाऊँ लेकर वह राज्य चलाता है। भ्रातृ-प्रेम वश ही वह जन्म दातृ माता को कई बार कटु वचन कहता है। किन्तु जब उसे यह ज्ञात होता है कि मेरे पिता को अन्धमुनि का शाप था, तब इस सारी घटना को दैवी समझ वह माता को प्रणाम कर उससे अपने अपराध की क्षमा माँगता है। अन्त में राम के लौटने पर वह सारा राज्य धरोहर की तरह लौटाकर, आप सेवक बन कर आजन्म सेवा करता है और आदर्श भ्रातृ-प्रेम का उदाहरण स्थापित करता है। भरत के त्याग को देख कर राम तक उस पर मुग्ध हैं। राम स्वय एक स्थान पर कहते हैं—

"मैंने अति चिरकाल में पाई थी जो कीर्ति।
इसने अति लघु काल में हर ली है वह कीर्ति॥"

१० अंधमुनि ने दशरथ को जो शाप दिया था, उसका रहस्य सुनने पर कैकेई के प्रति भरत का भाव क्यों अच्छा हो गया, इसका विचार कीजिए।

जब से भरत ने यह सुना था कि राम के वनवास और पिता की मृत्यु का कारण उसकी माता कैकेयी है तब से वह उस से बहुत रुष्ट था। इसी लिए वह अपनी माता को स्थान स्थान पर व्यंग्यपूर्ण और कटु वचन कहता है तथा उस

अपनी माता कहने में भी लज्जित होता है। पर जब उसे यह विश्वास हो गया कि मेरे पिता को श्रवण के पिता अन्धमुनि का शाप था कि 'दशरथ तू मेरी तरह पुत्र-वियोग में मरो', तब उसने समझ लिया कि राम का वन-गमन और राजा की मृत्यु यह सब विधि का विधान था। जो किसी के रोके नहीं रुक सकता था। इसमें मेरी माता का कोई अपराध नहीं। इस समय भरत के हृदय में स्वाभाविक मातृ-भक्ति जागरित हुई। उसका मस्तक माँ के चरणों में झुक गया, और उसने अपने पहले कहे कुवचनों के लिए उससे क्षमा माँगी और फिर उसकी निन्दा नहीं की।

प्रश्नपत्र ४

१ महावीरचरित कथा और आदर्श महिला में दी गई सीता की कथा में कितनी साम्यता है और कितनी विषमता? महावीरचरित के लेखक भवभूति ने क्या क्या परिवर्तन किये हैं और क्यों?

अथवा

कुन्दमाला और उत्तररामचरित की कथाओं में साम्यता कितनी है और विषमता कितनी? दोनो में से कौनसी रचना श्रेष्ठ है? १३

(१) आदर्श महिला पुस्तक अब परीक्षा में नहीं, अत उसकी कथा से तुलना भी अनावश्यक है।

अथवा

इसमें शक नहीं कि 'कुन्दमाला' तथा उत्तररामचरित की

कथा वस्तु का आधार एक है और दोनों की मुख्य कहानी भी एक है। दोनों में राम लोक-निन्दा से डर कर सीता को वनवास देते हैं। लक्ष्मण अनोध सीता जी को वन मे छोड़ आते हैं। वाल्मीकि मुनि सीताजी को शरण देते हैं, उनके पुत्रों की शिक्षा का भार सिर पर लेते हैं। अश्वमेध यज्ञ होता है, सीता की सोने की मूर्ति बनवाई जाती है। राम वन में जाते हैं। वन प्राचीन परिचित स्थानों को देखकर सीता की याद उन्हें और भी दुःखित करती है वहाँ बारह वर्ष के बाद उनकी सीता से भेंट भी करायी जाती है, पर दोनों कथानकों में सीता को वरदान के प्रभाव से अदृश्य कर दिया जाता है। वियोग-सतप्त रामचन्द्र को सीता मूर्छित होते देखती है। अपने स्पर्श से उनकी मूर्छा को दूर करती है, पर राम उसे देख नहीं सकते उसकी वाणी को सुन नहीं सकते। लवकुश का दर्शन होता है उनको देखते ही रामचन्द्रजी तथा अन्य सम्बंधियों में स्वभावत पुत्र बुद्धि उत्पन्न होती है। वे दोनों वाल्मीकि प्रणीत रामायण को सुनाते हैं अन्त में राम का सीता के साथ सुखद मिलन होता है।

कथा एक होने पर भी दोनों में वर्णन करने का ढंग पृथक्-पृथक् है। कुन्दमाला में राम ही राजा हैं। राज्य का सारा प्रबंध उनके हाथों में है। वे ही सीता को निर्वासित भी करते हैं। कुन्दमाला की कथा यहाँ से प्रारम्भ होती है, जहाँ लक्ष्मण सीता को छोड़ने के लिए वन ले जा रहा है। उसमें पहले अंक में अधिकतर रथ के प्रयाण का ही वर्णन है, और यहाँ लक्ष्मण सीता को रामचन्द्र जी की आज्ञा सुनाता है। पर उत्तरराम चरित की कथा यहाँ से प्रारम्भ होती है, जहाँ रामचन्द्र का

अपनी माता कहने में भी लज्जित होता है। पर जब उसे यह विश्वास हो गया कि मेरे पिता को श्रवण के पिता अन्धमुनि का शाप था कि 'दशरथ तू मेरी तरह पुत्र-वियोग में मरो', तब उसने समझ लिया कि राम का वन-गमन और राजा की मृत्यु यह सब विधि का विधान था। जो किसी के रोके नहीं रुक सकता था। इसमें मेरी माता का कोई अपराध नहीं। इस समय भरत के हृदय में स्वाभाविक मातृ-भक्ति जागरित हुई। उसका मस्तक माँ के चरणों में झुक गया, और उसने अपने पहले कहे कुवचनों के लिए उससे क्षमा माँगी और फिर उसकी निन्दा नहीं की।

प्रश्नपत्र ४

१ महावीरचरित कथा और आदर्श महिला में दी गई सीता की कथा में कितनी साम्यता है और कितनी विषमता ? महावीरचरित के लेखक भवभूति ने क्या क्या परिवर्तन किये हैं और क्यों ?

अथवा

कुन्दमाला और उत्तररामचरित की कथाओं में साम्यता कितनी है और विषमता कितनी ? दोनो में से कौनसी रचना श्रेष्ठ है ? १३

(१) आदर्श-महिला पुस्तक अब परीक्षा में नहीं, अत उसकी कथा से तुलना भी अनावश्यक है।

अथवा

इसमें शक नहीं कि 'कुन्दमाला' तथा उत्तररामचरित की

राम के साथ उनका प्रथम मिलन बड़ा मनोहर है। राम प्रजाहित के लिए ही तपोवन में जाते हैं, वैसे नहीं। अश्वमेध में अश्व छोड़ना भी बहुत स्वाभाविक है। राम का सीता को स्वीकार करना भी एक अद्भुत ढग का है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि दोनों की कथा एक होने पर भी कहने का ढग अलग अलग है। उत्तररामचरित की कथा में स्वाभाविकता के अधिक होने के कारण तथा मानव रामचन्द्र नहीं अपितु राजा राम के चरित्र के मानसिक अन्तर्द्वंद्व का अधिक विश्लेषण होने के कारण हम उत्तररामचरित की कथा को अधिक प्रशसनीय समझते हैं।

२ "उस दुरात्मा चन्द्रगुप्त का भाग्य देखो। मेरी नीतियाँ चन्द्रगुप्त के विविध कल्याण कर रही हैं।" इस कथन पर अपना विचार प्रकट करो। १०

राक्षस और चाणक्य दो नीतिकुशल व्यक्ति अपना अपना जाल फैलाते हैं, शतरज का खेल सा खेलते हैं। पर हम देखते हैं कि चाणक्य उस खेल को जिस तरह चाहता है मोड़ देता है। वह राक्षस के प्रयत्नों को केवल विफल ही नहीं कर देता बल्कि उलटा उनसे अपने राजा चन्द्रगुप्त को लाभ पहुँचाता है। राक्षस चन्द्रगुप्त के नाश के लिए विष-कन्या भेजता है। चाणक्य उसके द्वारा मलयराज पर्वतक को मरवा डालता है। पर्वतक यदि जीता रहता तो प्रतिज्ञा के अनुसार चन्द्रगुप्त के आधे राज्य का स्वामी होता। इसी घटना से डरकर उसका पुत्र मलयकेतु भी भाग जाता है जिससे चन्द्रगुप्त को अकटक राज्य मिल जाता है।

अभिषेक हो चुका होता है। रा
सदा प्रस्तुत हैं। राजधर्म के पाल
त्याग कर सकते हैं, और ऐसा
व्यक्तिगत रूप से उचित नहीं स
रामचन्द्र के मनुष्य रूप का अभि
में राजा रूप से। इसी कारण
अंतर आगया है, कहने के ढंग
में अंतर आ गया है।

कुन्दमाला में राम का त
किन्तु उत्तररामचरित में प्रजा
हुए शूद्र के वध के लिए है।

कुन्दमाला में राम को न
प्राप्त होती है, वह झट पहच
द्वारा गुँथी है, अतः वह
लिए आगे बढ़ते हैं। तब
लना, जल में परछाईं देखना
में राजधर्म पालन करते हुए
जाती है और वह भी उसी प
सीता ने वनवास में एक साथ

कुन्दमाला के लवकुश साधारण
यण गाना जानते हैं। उत्तररामचरित
अपने पिता के समान ही वीर हैं। उन्हें
सहस्रों के साथ युद्ध करते हैं। लक्ष्मण-पु
के साथ अकेले लव का अलौकिक युद्ध

है और उस अबोध बालिका को अपने प्रेम जाल में फँसा कर उससे गन्धर्व विवाह कर लेता है। विवाह से पूर्व वह उसे न अपने गुरुजनों से अनुमति लेने का अवसर देता है न इस बात का विचार करता है कि मेरे अनेक विवाह पहले हो चुके हैं, इससे विवाह करना न्याय संगत होगा या नहीं। इस प्रकार उस अबोध बालिका को प्रेम बन्धन में बाँध कर वह प्रेम को निभाता नहीं। वहाँ से जाते ही वह शकुन्तला को भूल जाता है। यहाँ तक कि जब गर्भिणी शकुन्तला ऋषि-कुमारों के साथ दरबार में उपस्थित होती है। तब वह लोक निन्दा के भय से उसे कुलटा कह कर अपमानित करता है। यह उसके पतन की अन्तिम सीमा है और यही शकुन्तला की कथा का प्रथम भाग है।

शकुन्तला के चले जाने पर उसे अपने कर्मों पर पश्चात्ताप होने लगता है। वह उसे खोजने का प्रयत्न करता है [illegible] अपने अपराध को स्वीकार कर विलाप करता है। सुख विलास का त्याग कर मित्र के सामने शकुन्तला का गुणगान करता है। इसी बीच में एक निस्सन्तान धनी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति का क्या किया जाय मन्त्री इस विचार को उपस्थित करता है। उस समय राजा नियमानुसार उस धन को अपने कोष में नहीं ले लेता अपितु यह आदेश देता है कि यदि उसकी कोई भी पत्नी गर्भवती हो तो उसका गर्भस्थित बालक पितृधन का अधिकारी घोषित किया जाय। साथ ही यह घटना उसे इस सोच में डाल देती है कि उसकी मृत्यु के बाद पुरुवंश की क्या स्थिति होगी। दुष्यन्त शकुन्तला के लिए रूप और सोचने लगता है। उसकी यह अवस्था उसके जीवन को ऊपर उठाने की चेष्टा करती है। यही इस कथा का द्वितीय भाग है।

राक्षस ने एक बढई को द्वार सजाकर महल में प्रवेश करते हुए चन्द्रगुप्त को मारने की आज्ञा दी थी। पर उसमे पर्वतक का भाई वैरोधक मारा गया। इस युक्ति से भी चन्द्रगुप्त का ही कल्याण हुआ। राक्षस ने एक वैद्य को औषध में विष मिलाकर चन्द्रगुप्त को देने को कहा था, किन्तु चाणक्य ने उस वैद्य को ही वह औषध पिलाकर मार डाला। इस प्रकार चन्द्रगुप्त का शत्रु भी मरा और मारने का कलक भी न लगा। राक्षस ने कई विश्वासी मनुष्यों को सुरग खोद कर चन्द्रगुप्त का नाश करने की आज्ञा दी थी, किन्तु चाणक्य ने चिऊँटियों को नीचे से अन्न लेकर आते देख यह समझ लिया कि नीचे कहीं मनुष्य छिपे हैं। अत उसने महल ही जलवा डाला, जिससे वे लोग जल मरे। राक्षस ने चाणक्य और चन्द्रगुप्त में फूट डलवाई कि इस तरह वह चन्द्रगुप्त का नाश करेगा, किन्तु इसी चाल से उस मे और मलयकेतु में फूट हो गई और वह आप ही पकड़ा गया। अत दुखी राक्षस सच कहता है कि उस की कई प्रकार की नीति की चालें भाग्यशाली चन्द्रगुप्त के लिए ही हर प्रकार से लाभकारी हुई।

३ शकुन्तला की कथा के असल मे तीन भाग हैं। "प्रथम भाग में राजा का पतन, द्वितीय भाग में उठने की चेष्टा और तृतीय भाग में उत्थान दिखाया गया है। दुष्यन्त के चरित्र का महत्त्व इसी उत्थान और पतन में है।" इस कथन पर अपना विचार युक्ति सहित प्रकट करो। १२

शकुन्तला की कथा मे जब दुष्यन्त तपोवन मे जाकर शकुन्तला को देखता है, तब वह उसके रूप पर मुग्ध हो जाता

है और उस अबोध बालिका को अपने प्रेम जाल में फँसा कर उससे गन्धर्व विवाह कर लेता है। विवाह से पूर्व वह उसे न अपने गुरुजनों से अनुमति लेने का अवसर देता है न इस बात का विचार करता है कि मेरे अनेक विवाह पहले हो चुके हैं, इससे विवाह करना न्याय संगत होगा या नहीं। इस प्रकार उस अबोध बालिका को प्रेम बन्धन में बाँध कर वह प्रेम को निभाता नहीं। वहाँ से जाते ही वह शकुन्तला को भूल जाता है। यहाँ तक कि जब गर्भिणी शकुन्तला ऋषि-कुमारों के साथ दरबार में उपस्थित होती है। तब वह लोक निन्दा के भय से उसे कुलटा कह कर अपमानित करता है। यह उसके पाप की अन्तिम सीमा है और यही शकुन्तला की कथा का प्रथम भाग है।

शकुन्तला के चले जाने पर उसे अपने कर्मों पर पश्चाताप होने लगता है। वह उसे खोजने का प्रयत्न करता है मुक्तकण्ठता अपने अपराध को स्वीकार कर विलाप करता है। सुख विलास का त्याग कर मित्र के सामने शकुन्तला का गुणगान करता है। इसी बीच में एक निस्सन्तान धनी व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसकी संपत्ति का क्या किया जाय मन्त्री इस विचार को उपस्थित करता है। उस समय राजा नियमानुसार उस धन को अपने कोष में नहीं ले लेता अपितु यह आदेश देता है कि यदि उसकी कोई भी पत्नी गर्भवती हो तो उसका गर्भस्थित बालक पितृधन का अधिकारी घोषित किया जाय। साथ ही यह घटना उसे इस सोच में डाल देती है कि उसकी मृत्यु के बाद पुरुवंश की क्या स्थिति होगी। दुष्यन्त शकुन्तला के लिए अब और सोचने लगता है। उसकी यह अवस्था उसके जीवन को ऊपर उठाने की चेष्टा करती है। यही इस कथा का द्वितीय भाग है।

अन्त में तड़क-भड़क से रहित, तप के कारण कृष, एक वेणी धरा किन्तु पुत्रवती शकुन्तला को वह मानपूर्वक ग्रहण करता है। अपने अपराध की उससे क्षमा माँगता है। अपने पुत्र को राज्य का स्वामी या उत्तराधिकारी कह कर छाती से लगाता है। उसका यह विषयवासना से शून्य भाव ही उसके उन्नत जीवन को फल काता है। यही इस कथा का प्रधान तथा तीसरा भाग है।

दुष्यन्त का प्रारम्भिक पतन साधारण मनुष्य-चरित्र का वास्तविक चित्र है। और इस पतन के बाद उत्थान में ही दुष्यन्त के चरित्र का वास्तविक महत्त्व है। यदि पतन न दिखाया जाता तो दुष्यन्त का चरित्र उतना महत्त्व पूर्ण न होता। पतन के बाद भी मनुष्य अपने प्रयत्न और सच्चे पश्चात्ताप से कितना उच्च और पवित्र बन सकता है, यही आदर्श उपस्थित करने में ही दुष्यन्त के चरित्र की विशेषता है और कवि इसमें सोलह आने सफल हुआ है।

४ "जो प्रेममयी रमणी संसार के कार्य्य में आत्म समर्पण करके कर्त्तव्य और स्नेह के भीतर अपने को विलीन कर दे सकती है, वही आदर्श रमणी है।" इस कथन पर अपना विचार प्रकट करो। उत्तर म किसी आदर्श रमणी का उल्लेख हो। १३

५ ज्ञान और लक्ष्मी में कौन बलवान् है ? उत्तर मे किसी कथा का प्रमाण हो।

अथवा

दैन्या और चिन्ता की तुलना करो। दोनों में कौन बड़ी है। १२

६ "सभी कर्म सुख दुख मय तापर करो न ध्यान।
फल ईश्वर के हाथ है यह निश्चय जिय जान॥
यदि असार संसार में कारज करि निष्काम।
आत्मज्ञान उपजै जबहिं जीव होहिं सुखधाम॥ १०

उपरोक्त कथन पर अपना विचार प्रकट करो। इस कथन का प्रसग क्या है।

४, ५, ६, ये तीनों प्रश्न 'आदर्श महिला' से हैं, जो अब कोर्स में नहीं है। अत उत्तर नहीं दिया गया।

७ (क) निम्न लिखित का भाव स्पष्ट करो —

(१) *सिंहासन के ये सिंह, अधिक भार उठाने से परिश्रान्त हुए के समान, मुख द्वार से निकले मोतियों की माला के ब्याज से झाग निकाल रहे हैं। मैं समझता हूँ कि भुजाओं से पृथ्वी को और हृदय से पृथ्वी की पुत्री सीता को उठाये रहने से आप अधिक भारी हो गये हैं।*

(२) ययाति को शर्मिष्ठा के समान तू स्वामी को प्रिया हो।

(३) मुझे कामरूपधारिणी तिलोत्तमा ने पूर्णतया ठग लिया। १०

(ख) निम्नलिखित प्रसग को दिखाकर भाव स्पष्ट करो —

(१) चमेली को उष्ण जल से सींचने का साहस कौन कर सकता है।

(२) सारथी को घोड़ों की पीठ ठण्डी करने की आज्ञा दी।

(३) उसने यह नहीं समझा कि काली नागिन के दंशन से मेरे वंश भर का नाश होगा।

(४) राम राम! किसको का अग्नि से साथ विरोध!

(५) सार तो सिर पर है और बूटी पर्वत पर। १०

(क) (१) कौशिक राम का प्यारा मित्र है। वह जानना चाहता है कि राम का सीता के प्रति क्या भाव है। वह कहता है कि महाराज! आप बहुत भारी हो गये हैं, क्योंकि आप ने भुजाओं से सगरा पृथ्वी को सँभाला हुआ है और आपके मन में सदा हृदय

पुत्री सीता समाई हुई है अर्थात् रात दिन आप को उसका ध्यान रहता है तभी तो ये सिंहासन को उठाने वाले शेर थक कर लटकती हुई मोतियों की मालाओं के बहाने से झाग उगल रहे हैं। दूसरे शब्दों मे आप दिन रात सीता की ही चिन्ता किया करते हैं।

(२) राजा ययाति राजा नहुष के पुत्र थे और शर्मिष्ठा दैत्यराज वृषपर्वा की कन्या थी। दुर्भाग्यवश शर्मिष्ठा को दैत्य-राजगुरु शुक्राचार्य की पुत्री देवयानी का दासीपन स्वीकार करना पड़ा। जब देवयानी का विवाह ययाति से हुआ तब शर्मिष्ठा भी दासी रूप में राजा ययाति के यहाँ गई। वहाँ राजा ययाति और शर्मिष्ठा का गुप्त विवाह हो गया। दोनों का आपस में बहुत प्रेम था। इधर शकुंतला और ययाति के वंशज राजा दुष्यन्त का विवाह भी गुप्तरूप से हुआ था और ययाति की अनेक रानी थीं पर उसने राज्य शर्मिष्ठा के पुत्र पुरु को दिया था, दुष्यन्त की कई रानी होते हुए भी महर्षि कण्व राज्य का अधिकारी शकुन्तला के पुत्र को देखना चाहते हैं, अत वे शकुन्तला को शर्मिष्ठा की तरह ही पति की प्रीति का भाजन होने का आशीर्वाद देते हैं।

(३) राम को जब कौशिक ने बताया कि तिलोत्तमा आदि सीता की सखियाँ सीता बनकर उन्हे धोखा देने की सलाह कर रही थी, तब राम बोले सचमुच ही इच्छानुसार रूप धारण करने वाली—जैसा चाहे वैसा रूप धरने वाली—तिलोत्तमा ने मुझे खूब ठगा है, अथवा यह कैसे सभव था कि प्रिया का दुपट्टा दिखाई दे, पर प्रिया स्वयं न दिखाई दे। इस प्रकार राम वास्तविक रहस्य को न समझकर सीता के मिलन को एक धोखा समझ बैठते हैं और लज्जित होते हैं।

(ख) (१) दुर्वासा ऋषि मुनि कण्व के आश्रम मे उस समय

पहुँचे, जब महर्षि कण्व वहाँ नहीं थे। दुष्यन्त के ध्यान में मग्न शकुन्तला उनका आना न जान सकी, अतएव उनका अतिथि सत्कार न कर सकी। इस पर दुर्वासा ने उसे शाप दिया कि जिसके ध्यान में मग्न होने के कारण तूने मेरा सत्कार नहीं किया, वह समय आने पर तुझे भूल जायगा और स्मरण कराने पर भी उसे तेरी सुध न आयगी। यह कठोर शाप सुनकर प्रियंवदा की सलाह से अनुसूया ने दुर्वासा से शकुन्तला की ओर से अनुनय-विनय कर शाप में कुछ परिवर्त्तन तो करा लिया, पर शकुन्तला को इस का कुछ भी पता न दिया। प्रियंवदा ने भी अनुसूया को सलाह दी कि शकुन्तला को इस शाप का पता न देना चाहिये, नहीं तो उसकी आशालता मुरझा जायगी। तब अनुसूया बोली—सखि! मैं ऐसा कठोर काम भला क्यों करूँगी, मैं उस फूल सी शकुन्तला को शापरूप गरम जल से क्यों झुलसाऊँगी। जिस प्रकार चमेली के फूल को गर्म जल से सींचना उसे जलाना है वैसे ही शकुन्तला को यह सूचना देना उस के जीवन का अन्त करना है।

(२) शिकार को निकले हुए राजा दुष्यन्त जब कण्व मुनि के आश्रम के पास पहुँचे, तब आश्रम की मर्यादा की रक्षा के लिए वे स्वयं रथ पर से उतर पड़े और पैदल ही आश्रम वासियों से मिलने चल पड़े तथा उन्होंने सारथी को घोड़ों की थकान मिटाने और उनकी पीठ सहलाने की आज्ञा दी।

(३) यह प्रश्न आदर्श महिला से है, अतः उत्तर नहीं दिया गया।

(४) चंदनदास के घर में राक्षस का परिवार है, यह चाणक्य को पता लग चुका था। चाणक्य ने यह पूछने के लिए चन्दनदास को बुलाया, पर चन्दनदास उस बात को छिपा रहा था। इसी बात पर जब चाणक्य ने चन्दनदास से कहा कि तुमसे पहले राज-

साथ ही कंपनी के प्रबन्ध मे भी हस्तक्षेप किया। सन् १७७४ में पार्लियामेंट ने एक कानून पास किया, जिसे रेगुलेटिंग ऐक्ट कहते हैं। इस ऐक्ट के अनुसार बगाल के गवर्नर को बबई, मद्रास और बगाल का गवर्नर-जनरल बना दिया गया। उसकी सहायता के लिए चार सदस्यों की एक कौंसिल बनाई गई। उसे कौंसिल के बहुमत को मान कर चलना पड़ता था। इसके अतिरिक्त मुकदमों के फैसले के लिए कलकत्ता में बडा न्यायालय स्थापित किया गया, जिसमे चीफ जस्टिस (मुख्य न्यायाधीश) तीन अन्य जजो की सहायता से मुकदमे सुनता और न्याय करता था।

वेलोर का गदर—यह गदर सर जार्ज बोर्लो के शासन काल में सन् १८०६ में हुआ। इसका प्रधान कारण यह था कि कर्नाटक के वेलोर स्थान में टीपू सुलतान के दो बेटे तथा कोई चार हजार के लगभग दूसरे सहायक नजरबन्द थे। उनके भड़काने से सैनिक पहले ही भडके हुए थे, इतने में सरकार ने सेना के प्रबन्ध में कई परिवर्त्तन किये। उन्होंने सिपाहियों को दाढी मूँछ कटाने तथा एक सी वर्दी पहनने की आज्ञा दी, जिससे सिपाही समझे कि अब उनका धर्म ही बिगाडा जा रहा है। इस विचार से वे अंग्रेजों के शत्रु बन गये और उन्होंने विद्रोह कर दिया। विद्रोह दबा दिया गया, और टीपू के लडको को कलकत्ते भेज दिया गया।

३ यन्दाबू की सन्धि—सन १८२४ मे अंग्रेजों को बर्मा के राजा के साथ पहली लड़ाई हुई। उसमें अंग्रेजों को सफलता मिली। बर्मा का सेनापति मारा गया। सन् १८२६ में यन्दाबू के स्थान पर सन्धि होगई जिसके अनुसार अंग्रेजो को आसाम, अराकान तथा तनासरम का इलाका तथा एक करोड

रुपया युद्ध का हर्जाना मिला। इसके अतिरिक्त आवा में एक अंग्रेज रेजिडेंट के रूप में रहने लगा। कछार और जैन्तिया अंग्रेजों की रक्षा में आ गए।

स्थानीय स्वराज्य—शहर या जिले में शिक्षा प्रचार, स्वास्थ्य की देख रेख, पानी, रोशनी के प्रबन्ध तथा अन्य स्थानीय उन्नति के साधारण कार्यों का जनता के निर्वाचित प्रतिनिधियों द्वारा पर्याप्त स्वतन्त्रता से स्वयं प्रबन्ध किये जाने के लिए लार्ड रिपन आदि के समय और १९१९ के भारतीय शासन ऐक्ट के द्वारा भारतीयों को कुछ अधिक अधिकार दिये गये जो स्थानीय स्वराज्य के नाम से पुकारे जाते हैं। इन अधिकारों से स्थानीय जनता अपने प्रतिनिधि चुन कर म्युनिसिपल तथा डिस्ट्रिक्ट बोर्ड आदि सभाएँ बनाती है। क्रमशः नगर और जिले के उपर्युक्त कार्य इन संस्थाओं द्वारा संपन्न होते हैं और इन कार्यों के लिए खर्च का प्रबन्ध ये संस्थाएँ चुंगी या अन्य कर लगा कर करती हैं। कई जगह इनके कई सभासद सरकार से नामज़द भी होते हैं।

५. सहायक नीति से क्या अभिप्राय है? इसका अनुसरण किसने किया और उसका क्या परिणाम निकला? १२

सहायक नीति अंग्रेजों की वह नीति थी जिसके अनुसार वे भारतीय नरेशों को आन्तरिक अशान्ति तथा पड़ोसी राजाओं के आक्रमण के समय रक्षा का आश्वासन देकर उन्हें यूरोपीय ढंग से शिक्षा प्राप्त सहायक सेना निम्नलिखित शर्तों पर देते थे—

(क) इन सेनाओं के रखने वाले नरेश अंग्रेजों को सार्वभौम और अपने को उनका आश्रित राजा मानें।

(ख) इस संधि को मानने वाले नरेश पड़ोसी अथवा बाहरी

राजाओं से मनमाने ढग से न तो युद्ध करें और न सधि ही। उन के आपसी झगडों का जो फैसला अंग्रेज करें वही वे माने।

(ग) अंग्रेजों के यूरोपीय शत्रुओं को कोई ऐसा राजा अपने राज्य में नौकर न रक्खे और न उनके साथ किसी प्रकार का संबंध ही रक्खे।

(घ) सहायक सेना का वेतन समय पर बाँटने के लिए, तथा उसके खर्च को पूरा करने के लिए उतनी ही आमदनी का भू-भाग ये राजे अपने राज्य में से अंग्रेजों को दे।

(ड) अंग्रेजों को जरूरत पड़ने पर जहाँ और जिस समय वे चाहें, सहायक सेना दी जाय।

इस सहायक नीति का अवलम्बन पहले पहल वेलजली ने किया। इसका परिणाम यह हुआ कि भारत में अंग्रेजों का सार्वभौम राज्य स्थापित हो गया। मुगल साम्राज्य के पतन के बाद से भारत में अनेक स्वतन्त्र राजा पैदा होगये थे। देश में एक सार्वभौम ताकत न रही थी। ये राजा समय समय पर आपस में लड़ते रहते थे। उनकी लड़ाइयों में दखल देकर अंग्रेज और फ्रांसीसी अपना-अपना साम्राज्य बढ़ा रहे थे। जब वेलजली भारत में आया तब यूरोप में अंग्रेज और फ्राँसीसियों में परस्पर युद्ध हो रहा था। नैपोलियन बोनापार्ट ने भारत में पहुँचने के इरादे से मिश्र पर आक्रमण कर दिया था। टीपू आदि कई देशी नरेश उससे बातचीत कर रहे थे, और भारत के अधिकांश देशी नरेशों के पास फ्राँसीसी सेना थी।

वेलजली ने इस नीति का अवलम्बन कर एक ओर तो इस सधि को मानने वाले राजाओं के यहाँ से फ्राँसीसियों को निकाल दिया। दूसरी ओर देशी राज्य अंग्रेजों को सार्वभौम मान

कर और अपनी रक्षा का भार उन पर डालकर निश्चिन्त हो गये, और भोग विलास में लिप्त रहने लगे और धीरे धीरे अपना अस्तित्व खो बैठे। सबसे पहले निज़ाम ने टीपू आदि से डरकर इस सन्धि को माना। धीरे धीरे अन्य राजाओं ने भी इसे मान लिया। टीपू आदि जिन राजाओं ने इसे न माना उनसे लड़ाई ठान कर उनसे जबर्दस्ती इस संधि को मनवाया गया।

इस नीति का सबसे बड़ा फायदा यह था कि इस प्रकार से अंग्रेजों को अपनी सार्वभौम सत्ता स्थापित करने के लिए बिना किसी प्रकार के भारी खर्च के ही एक बड़ी भारी फौज तैयार मिल गई।

६ "१८५७ का गदर लार्ड डलहौज़ी के समय के फैले हुए असन्तोष का फल था।"

इस कथन को कहाँ तक ठीक समझते हो और क्यों?

अथवा

पिट के इण्डिया बिल से भारत के शासनप्रबन्ध में क्या परिवर्तन हुआ? १०

यह कथन सब तरह से ठीक कहा जा सकता है कि १८५७ का गदर लार्ड डलहौज़ी के समय के फैले हुए असन्तोष का फल था। उसके तात्कालिक कारण चाहे कुछ हों, पर उसका वास्तविक कारण डलहौज़ी के समय का फैला हुआ असन्तोष था। राजाओं या नवाबों में यह असन्तोष राजनीतिक कारणों से, तथा सिपाहियों और साधारण जनता में यह असन्तोष आर्थिक तथा धार्मिक कारणों से हुआ था। लार्ड वेलज़ली आदि ने सहायक नीति का आश्रय लेकर देशी नरेशों को अपने वश में कर लिया था, और कई जगह उन्होंने अपने सहायकों को कुछ भूमि-भाग देकर नई रियासतें

बना दी थीं। डलहौज़ी ने अब जाल में फँसे हुए उन सब राजाओं की रियासतों को हड़पना शुरू किया।

उसके शासन-काल में भारत में दो तरह की देशी रियासतें थीं—एक वे जिनको अंग्रेज़ों ने ही बनाया था, जैसे सतारा, नागपुर, झाँसी आदि, और दूसरी वे जो अंग्रेज़ों के आने से पहले मौजूद थीं, जैसे अवध, निज़ाम, ग्वालियर, इन्दौर आदि। लार्ड डलहौज़ी ने अंग्रेज़ों की बनाई हुई रियासतों के लिए यह नियम पास किया कि यदि उनमें से किसी राजा का पुत्र न हो तो उसे अंग्रेज़ी सरकार की आज्ञा बिना किसी को गोद लेने का अधिकार न होगा, और उसकी मृत्यु के बाद उसका राज्य अंग्रेज़ी राज्य में मिला लिया जायगा। इस नीति के अनुसार उसने झाँसी, नागपुर, सतारा आदि रियासतें अंग्रेज़ी राज्य में मिला लीं, तथा बाजीराव पेशवा के दत्तक पुत्र धोंधूपंथ अथवा नाना साहब को पेशवा की पेंशन देनी बंद कर दी। इधर अवध जैसे स्वतन्त्र राज्य को जो पहले से चला आता था, दुर्व्यवस्था का बहाना कर हड़प लिया। निज़ाम का बरार प्रांत सेना का खर्च न मिलने का बहाना करके ले लिया। शाहआलम के उत्तराधिकारी जवाँबख्त को उत्तराधिकारी स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। शिकिम आदि अन्य कई राज्य भी अंग्रेज़ी राज्य में मिला लिए। उसकी हड़पने की इस नीति को देखकर देशी नरेश डर गये कि कहीं किसी बहाने से उनका राज्य भी न छिन जाय। अतः उनमें असन्तोष [illegible] लगा। जिन राजाओं का राज्य ज़ब्त किया था वे [illegible] न [illegible] के अनुसार विद्रोह की आग [illegible]
साहब, [illegible] रानी [illegible]

साधारण जनता के मन में पादरियों के अंग्रेजी स्कूलों को देखकर सन्देह होता था, कि वह उनको ईसाई बनाने के लिए खोले जा रहे हैं। रेल और तार को देखकर भी लोग यह शक कर रहे थे कि ये सब उनको जकड़ने तथा बंधन में बाँधने के तरीके हैं। लार्ड डलहौजी के समय अनेक युद्धों के कारण सिपाहियों को भी बहुत काम करना पड़ा, पर उनके वेतन आदि की ठीक व्यवस्था न थी, अतः उनमें भी असन्तोष था। इस प्रकार राजाओं, नवाबों, जनता, तथा सिपाहियों, सबमें डलहौजी के समय से असन्तोष फैल रहा था। विद्रोह की आग भीतर ही भीतर सुलग रही थी। इसी समय फौज को जो नये प्रकार के कारतूस मिले, उन्हें मुँह से चिकना करना पड़ता था। उन्होंने इस आग को भड़काने में चिनगारी का काम किया और शीघ्र ही पंजाब को छोड़कर समस्त उत्तर भारत में गदर फैल गया। पर इसका वास्तविक कारण डलहौजी के समय का फैला हुआ असन्तोष था।

अथवा

पिट के इण्डिया बिल से भारत के शासन में बड़ा परिवर्तन हो गया। यद्यपि इसके बाद भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी भारत की शासक रही पर इस बिल से भारत का वास्तविक नियन्त्रण ब्रिटिश पार्लियामेंट के हाथ में चला गया। अंग्रेजों का भारत के जिस जिस भाग पर अधिकार था, इस कानून के अनुसार उन सबके प्रबन्ध और निरीक्षण के लिए प्रबन्धकारिणी सभा बनाई गई, जिसे 'बोर्ड आफ कन्ट्रोल' कहा जाता था। इसके कुल छः सदस्य थे, जो ब्रिटिश सरकार द्वारा इंग्लैंड में नियुक्त किये जाते थे। ब्रिटिश सरकार का प्रधान मन्त्री इन छः सदस्यों में से किसी एक को उस प्रबन्धकारिणी सभा का सभापति नियुक्त करता

किया गया। पर इससे जनता मे राजभय उतना ही हट गया। इधर महायुद्ध में टर्की के हार जाने से मुसलमान खिलाफत के प्रश्न पर असन्तुष्ट थे। म० गाँधी ने जलियाँवाला बाग के हत्याकाण्ड और खिलाफत के प्रश्न को सम्मिलित कर सारे भारत में असहयोग आन्दोलन तथा अहिंसात्मक सत्याग्रह की नींव डाली। सरकारी स्कूल, सरकारी कचहरी, सरकारी खिताब, विदेशी कपडा और कौंसिल, सबका बहिष्कार प्रारम्भ हुआ और जेलें भरी जाने लगी। इस तरह जहाँ चेम्सफोर्ड के शासनकाल में में एक ओर कुछ सुधार देकर इने गिने माडरेटो का सहयोग सरकार ने प्राप्त किया वहाँ जलियावाला बाग मे दमन का चक्र चला कर साधारण जनता को भडका दिया। इस कारण देश के राष्ट्रीय आंदोलन ने एक नया और भयंकर रूप पकडा।

चेम्सफोर्ड के शासनकाल में अफगानिस्तान के साथ भी एक लडाई हुई, जिसमें विवश हो अफगानों को संधि करनी पडी। सन् १९२१ में लार्ड चेम्सफोर्ड असहयोग आंदोलन को पूर्ण जोश में छोड कर वापिस चला गया।

अथवा

अफगानिस्तान की दूसरी लड़ाई का मुख्य कारण भारतीय पर-राष्ट्रनीति की अनिश्चितता थी। जब इग्लैंड में लिबरल मन्त्रि-मण्डल होता, तब वे अफगानिस्तान के अंदरूनी मामलों में दखल न देने की नीति का अनुकरण करते और जब कन्सर्वेटिव (अनुदार) दल का मन्त्रि मण्डल होता तब वे रूस के डर से अपने पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत की सुरक्षितता का ध्यान करते, फलत अफगानिस्तान को अपने साथ मिलाना चाहते और उस पर निरीक्षण रखना चाहते।

जब लार्ड नार्थब्रुक भारत का वायसराय था, तब अफ़गानिस्तान का विकट प्रश्न उसके सामने आया। उस समय रूस अफ़गानिस्तान की ओर बढ़ रहा था। रूस ने अफ़गानिस्तान के सीमा पर आक्रमण कर दिया था। अफ़गानिस्तान के अमीर शेर अली ने अंग्रेजों से सहायता माँगी। पर लार्ड नार्थब्रुक ने लिबरल दल के नीति के अनुसार सहायता देना अस्वीकार कर दिया। इतने में सन १८७४ में इंग्लैंड में लिबरल पार्टी हार गई और मन्त्रिमण्डल कन्सर्वेटिव दल के हाथ में आ गया। ये रूस के डर से अफ़गानिस्तान से कोई समझौता करना चाहते थे। इस पर इंग्लैंड के नये भारत सचिव लार्ड सैलिसबरी ने वायसराय को लिखा कि अफ़गानिस्तान की रक्षा का भार अंग्रेजों को अपने हाथ में ले लेना चाहिए और वहाँ एक रेजिडेंट रखना चाहिए। पर दो वर्ष पहले नार्थब्रुक अमीर से समझौता करने को इनकार कर चुका था, अतः वह अब इस नीति का पालन न कर सकता था। वह पद त्याग करके इंग्लैंड चला गया और लार्ड लिटन भारत का वायसराय हुआ। लिटन ने अफ़गानिस्तान के अमीर से काबुल में अंग्रेजी रेजीडेंट रखने को कहा। पर शेरअली अब यह मानता न था। वह सन्धि करने को तैयार था पर निरीक्षण की अपमान जनक शर्तें उसे स्वीकृत न थीं। उसके इनकार करने पर उसे शत्रु करार दिया गया। अंग्रेजों ने क्वेटा पर अधिकार कर लिया और वहाँ एक बड़ी छावनी बनायी। क्वेटा ले लेने पर अंग्रेजों के लिए बोलान के दर्रे के द्वारा कन्धार पर आक्रमण करना सुगम हो गया। अमीर शेरअली इससे चिढ़ गया। उसने रूस से मित्रता

करनी शुरू कर दी। रूस के राज-दूत को अपने यहाँ बुला लिया, और उसका बड़ा आदर-सत्कार किया। यह देख लार्ड लिटन ने भी अपना राजदूत उसके दरबार में भेजा। पर ब्रिटिश राजदूत को अफगानों ने खैबर दर्रे से आगे बढने ही न दिया। इधर रूस और अफगानिस्तान के मिल जाने से अंग्रेजों को पश्चिमोत्तर सीमा से खूब डर हो गया। इसलिए लार्ड लिटन ने लडाई की घोषणा कर दी। अफगानिस्तान की दूसरी लडाई का यही मुख्य कारण कहा जा सकता है। लडाई छिड़ते ही शेर अली रूस की सीमा में भाग गया, और उसकी मृत्यु शीघ्र ही अफगानिस्तान से बाहर हो गई। उसके लडके याकूब खाँ ने अंग्रेजों से सधि कर ली, और अंग्रेजों का रेजीडेंट अपने यहाँ रखना स्वीकृत कर लिया। पर शीघ्र ही अफगानों ने अंग्रेज रेजीडेंट को मार डाला, अत युद्ध को लबा करने में यह भी एक कारण हुआ।

८ भारत सरकार का देशी रियासतों से क्या सम्बन्ध है? सक्षेपत लिखो।   ११

देशी रियासतों का सम्बन्ध ब्रिटिश भारत से वायसराय के द्वारा है, अर्थात् यदि रियासतों के राजा या नवाब कोई ऐसा कार्य करें जिसका असर ब्रिटिश भारत की जनता पर पडे तो उन्हें वायसराय की अनुमति लेनी पड़ती है। देशी रियासतों की तीन श्रेणियाँ हैं। प्रथम श्रेणी में बडी बड़ी रियासते हैं। इन रियासतों का भारत सरकार से सीधा सम्बन्ध है। इनमे से प्रत्येक में एक रेजीडेंट रहता है। दूसरी श्रेणी में रियासतों के समूह हैं जिनको एजेन्सी कहते हैं, इनमें से प्रत्येक में वायस-

राय का एक एजेन्ट रहता है। तीसरी श्रेणी में सैकड़ों छोटी छोटी रियासतें हैं। ये अधिकतर प्रान्तीय सरकारों के अधीन हैं। इनमें से कुछ में पोलिटिकल एजेन्ट रहते हैं और शेष की देख-भाल ज़िले का कलक्टर या कमिश्नरी का कमिश्नर ही कर लेता है।

ये देशी रियासतें अपने अंदरूनी मामले में स्वतन्त्र हैं। इनके अपने ही न्यायालय और फौज आदि हैं। कहीं कहीं पर राजाओं के अपने सिक्के और डाकखाने के टिकट भी चलते हैं। परन्तु वे सिर्फ़ रियासत की हद में ही चलते हैं। परन्तु इन राजाओं के प्रजा पर अत्याचार तथा ब्रिटिश स्वार्थों के विरुद्ध कार्य देखकर इन को गद्दी से उतारा भी जा सकता है। किसी राजा को उचित फौज व धन से सहायता भी की जा सकती है। पर साधारणतया देशी रियासतों के प्रति सरकार की यह नीति है कि जब तक वे ब्रिटिश सरकार के प्रति राजभक्त बनी रहें और पुरानी सन्धियों का पूर्णतया पालन करती रहें तब तक सरकार उनकी रक्षा करेगी और उनके कार्य में अधिक हस्ताक्षेप न करेगी। प्रत्येक राजा को वायसराय की अनुमति एवं उचित परामर्श लेना आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य है। वे सरकार की अनुमति के बिना एक दूसरे से राजनैतिक व्यवहार नहीं कर सकते पर नियत फौज से ज्यादा नहीं रख सकते।

जब कभी दो रियासतों अथवा रियासत और प्रान्तीय सरकार या भारत सरकार में कोई झगड़ा होता है तो उसकी जाँच के लिए वायसराय कमीशन नियुक्त करता है जो उस झगड़े की जाँच करता है।

सन् १९२१ से एक नरेन्द्रमण्डल की स्थापना हो गई है। जो विषय सब रियासतों से सम्बन्ध रखते हैं उन पर इस संस्था की सम्मति माँगी जाती है। यह एक प्रकार की सभा है, जो वायसराय को देशी रियासतों के बारे में सलाह देती है

प्रश्नपत्र ६

१ (अ) नीचे लिखी लोकोक्तियों में से चार का सरल अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करो.—

(क) गेहू के साथ घुन भी पिस जाता है।

(ख) एक मछली सारे तालाब को गदा कर देती है।

(ग) धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।

(घ) शौकीन बुढ़िया चटाई का लहँगा।

(ङ) सूरदास यह कारी कामरि चढ़ै न दूजो रग। ८

(आ) नीचे लिखे भागों में से चार के अर्थों को प्रकट करने वाली लोकोक्तिया लिखो —

(क) बल और धन नष्ट होगया पर घमण्ड न गया।

(ख) जिसके पास कुछ न हो वह निश्चिन्त रहता है।

(ग) अपनी चीज़ की कोई बुराई नहीं करता।

(घ) किसी काम के करने से हानि और न करने से भी हानि।

(ङ) एक ही यत्न से दो कार्य सिद्ध होना। ४

(अ)—(क) गेहूँ के साथ घुन पिस जाता है—अपराधी के साथ निरपराध भी दण्ड पा जाते हैं। उस दिन मैं तुम्हारे साथ डेपुटेशन में चला भर गया। बस उन्होंने समझ लिया

कि मैं भी स्ट्राइक कराने वालों में से हूँ। मुझे भी एकदम नोटिस मिल गया—सच है आटे के साथ घुन भी पिस जाता है।

(ख) एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है—एक की बुराई से सारा समूह बदनाम हो जाता है। जापान की किसी लायब्रेरी से एक भारतीय विद्यार्थी ने एक किताब चुरा ली। अंत में वह पकड़ा गया। तब से सभी भारतीय विद्यार्थियों का वहाँ जाना निषिद्ध हो गया। सच है एक मछली सारे तालाब को गन्दा कर देती है।

(ग) धोबी का कुत्ता घर का न घाट का—जिस पुरुष का कोई स्थायी निवास न हो या जो मनुष्य दोनों तरफ की चाल चले पर न इधर का रहे न उधर का, उसे कहा जाता है। यह झोंक में आकर हड़तालियों में शामिल होगया, पर हृदय में साहस और धैर्य था नहीं, दूसरे ही दिन जाकर गिड़गिड़ाने लगा। मैनेजर के पास गया तो वह बोला—अब तो नयी भरती हो गयी है, अब जाओ घर बैठो। इधर साथियों को पता लगा तो उन्होंने भी उसको बुरा भला कहा। अब उसकी यही दशा हो गई कि धोबी का कुत्ता घर का न घाट का।

(घ) शौकीन बुढ़िया चटाई का लहँगा—बेमेल काम करना। वाह जी नए शौकीन! नीचे धोती और सिर पर टोप। तुम्हारी भी यही बात है, शौकीन बुढ़िया चटाई का लहँगा।

(ङ) सूरदास यह कारी कामरि चढ़े न दूजो रंग—दुष्ट व्यक्ति पर किसी उपदेश का असर नहीं होता। तुम समझते हो यह कहने सुनने से ठीक रास्ते पर आ जायगा पर मैं तो इसे नहीं मानता। मैं तो जानता हूँ 'सूरदास यह कारी कामरि चढ़े न दूजो रंग'।

(आ —(क) बल और धन नष्ट हो गया पर घमण्ड न गया—'रस्सी जल गई पर बल न गया।'

(ख) जिसके पास कुछ न हो वह निश्चिन्त रहता है—'कँगला सोवे पाँव पसार।'

(ग) अपनी चीज की कोई बुराई नहीं करता—'अपने पूत को कोई काना नहीं कहता'

(घ) किसी काम के करने से हानि न करने से भी हानि—'भई गति साँप छछूँदर केरी'

(ङ) एक ही यत्न में दो कार्य सिद्ध होना—'एक पन्थ दो काज।'

२ (अ) नीचे लिखे मुहाविरों में से चार का सरल अर्थ लिख कर वाक्यों में प्रयोग करो —

(क) आँखें खुलना। (ख) आँख लगाना। (ग) आँखें दिखाना। (घ) हाथ खींच लेना। (ङ) हाथ कटाना। ८

(आ) नीचे लिखे भावों में से चार के अर्थों को प्रकट करने वाले मुहाविरे लिखो —

(क) अभिमान रखना। (ख) कठिन उद्योग करना। (ग) तैयार होना। (घ) पछताना। (ङ) मरने की परवा न करना। ४

(इ) नीचे लिखे जीवों और वस्तुओं में से चार की ध्वनियों को प्रकट करने वाली क्रियाओं का वाक्यों में प्रयोग करो —

हाथी, बकरी, चिड़िया, दाँत, चारपाई, पत्ते। ४

(क) आँखें खुलना—होश आना, नींद टूटना। जब वह तुम्हारा सर्वनाश कर देगा तब तुम्हारी आँखें खुलेंगी।

(ख) आँख लगाना—टकटकी बाँध कर देखना, प्रीति

करना। जब तक वे खड़ी रहीं तुम उधर ही आँख लगाये रहे। परदेशी से आँख लगा कर दुख ही मिलता है।

(ग) आँखें दिखाना—क्रोध से घूरना। चल बे! आँखें किसी और को दिखा।

(घ) हाथ खींच लेना—सहायता बन्द कर देना। दसवीं श्रेणी तक तो रायसाहब मेरी पूरी सहायता करते रहे, पर अब न जाने उन्होंने क्यों हाथ खींच लिया है।

(घ) हाथ कटाना—प्रतिज्ञा आदि से बद्ध हो जाना। इस राजीनामे पर दस्तखत करके हम तो हाथ कटा बैठे, अब तो जो कुछ कहना है, तुम्हीं जाकर कहो।

आ—(क) अभिमान करना—दिमाग चढ़ना।

(ख) कठिन उद्योग करना—खून पसीना एक करना।

(ग) तैयार होना—कमर कसना।

(घ) पछताना—हाथ मलना।

(ङ) मरने की परवाह न करना—सिर पर कफन बाँधना।

(इ) हाथी चिंघाड़ते हैं।

बकरी मिमियाती है।

चिड़ियाँ चहकती हैं।

माघ का महीना था, जोर की ठंड पड़ रही थी, दाँत कटकटा रहे थे।

यह नई चारपाई बहुत चर्राती है।

पक्षी जल में नहा कर अपने पर फटफटाता है।

३ (अ) विदेश में विद्याध्ययन के लिये गये हुए पुत्र को पिता की ओर से पत्र लिखो जिसमें पढ़ाई में दत्तचित्त रहने, कुसंगत से बचने और मितव्ययिता से व्यवहार करने का उपदेश हो। १५

(आ) नीचे लिखे भागों में से एक पर अपने विचार लिखो—

(क) पर्वतयात्रा में मोटरकार या लारी द्वारा सफर करना पैदल या खच्चर-टट्टुओं पर सफर करना—दोनों में से तुम किसे अच्छा समझते हो

(ख) "परदेश की सारी से घर की आधी अच्छी" और "घर रहा सो आधा मानुप परदेस गया सो पूरा"— दोनों में से तुम्हारे मत में कौन सी उक्ति ठीक है?

सुशीलनिवास
चेंबरलेन रोड, लाहौर
५ दिसंबर, १९३७

प्यारे शिव,

टोकियो पहुँचने के बाद तुम्हारा पत्र कल मिला। इस युद्ध के समय तुम सकुशल वहाँ पहुँच गये, और तुम्हें समुद्र-यात्रा में कोई कष्ट न हुआ, यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई। मैं आशा करता हूँ कि इस पत्र के पहुँचने तक तुम कालिज में

दाखिल हो गये होंगे और तुमने जापानी भाषा सीखनी शुरु कर दी होगी।

बेटा, अभी तुम्हारी आयु कुल १९ वर्ष की है और तुम पहली बार ही देश से बाहर गये हो। तुम पहली बार माता-पिता से अलग रहने लगे हो। इस समय तुम्हारी देख भाल करने वाला तथा तुम्हें ठीक रास्ता बताने वाला तुम्हारे पास कोई नहीं है। तुम माता पिता और छोटे भाई बहन को छोड़कर वहाँ इतनी दूर पढ़ने के लिए गये हो। अतः मैं तुम्हें यही सीख दूँगा कि वहाँ तुम जितने दिन रहो, दत्त-चित्त होकर पढ़ो। इस समय तुम पढ़ने में जितना ध्यान लगाओगे, अपने विषय में जितने प्रवीण होकर आओगे, उतना ही तुम्हारा भविष्य उज्ज्वल होगा। जो साधन, जो शिक्षा तुम्हें यहाँ उपलब्ध न थी उसी को प्राप्त करने तुम वहाँ गये हो। यदि तुम वहाँ से उन साधनों को उस शिक्षा को ठीक तरह प्राप्त करके न आये तो तुम्हारा इतनी दूर जाना, इतने कष्ट उठाना और इतना रुपया खर्च करना व्यर्थ होगा। अतः जहाँ तक हो सके पढ़ने में ध्यान लगाओ। तुम्हारी माता को और मुझे इससे अधिक और किसी बात की खुशी न होगी, जितनी यह सुन कर होगी कि तुम अपनी पढ़ाई में पूरा ध्यान लगा रहे हो और तुम अपनी श्रेणी में अच्छे नम्बर प्राप्त कर रहे हो।

बेटा, पढ़ाई का सबसे बड़ा शत्रु कुसंगति है। कुसंग का असर सबसे भयानक होता है। यह मनुष्य नीति और सद्बुद्धि का ही नाश नहीं करता, बल्कि बुद्धि को भी शिथिल कर देता है। किसी नवयुवक की संगति अगर बुरी होगी तो वह बराबर

पैरों मे बँधी चक्की के समान होगी जो उसे दिन दिन अवनति के गढ में गिराती जायगी। अत किसी से बहुत मेल-जोल करने से पहले यह देख लेना कि उसका चरित्र कैसा है। उसका रहन-सहन कैसा है। प्राय स्कूलों कालिजों में बहुत से ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो भोले भाले अनजान लड़कों को व्यसनों के जाल में फँसाते रहते हैं, और इस तरह उन्हें धीरे धीरे अध'-पतन की ओर ढकेलते हैं। ये स्वभाव के बड़े मीठे और अपने हित चिंतक दिखाई देते हैं.पर इनकी आन्तरिक इच्छा बड़ी निन्दनीय होती है। अत किसी को मित्र बनाने या उस की सगति में आने से पहले यह देख लेना कि उस व्यक्ति में कौन-सा ऐसा सद्‌गुण है, जिससे तुम्हें उसे अपना मित्र बनाना चाहिये।

एक बात का उल्लेख मुझे यहाँ और कर देना चाहिए। जहाँ तक हो सके तुम मितव्ययता से रहो। मितव्ययता से मेरा तात्पर्य कजूसी से नहीं, न मैं यह चाहता हूँ कि तुम रुपया बचाने के लिए कोई ऐसा काम करो जिससे तुम्हारी पढाई की हानि हो, पर व्यर्थ की शान शौकत में पैसे खराब करना भी अच्छा नहीं। तुम्हें पता है कि मैं कितने कष्ट से रुपया

मा कर तुम्हें पढा रहा हूं। इस लिए तुम्हें रुपया खर्चते
मय देख लेना चाहिये कि क्या यह खर्च मेरे लिए आवश्यक
। और जहाँ तक हो सके वहाँ तक कम खर्च करो।

तुम्हारी माता तुम्हें रोज याद करती है। शशि कहता
कि बड़ा होकर मैं भी भैया के पास जापान जाऊँगा। सब
। प्यार।

तुम्हारा शुभचिंतक
मोहनलाल

पुनश्च —प्रति सप्ताह पत्र अवश्य भेजते रहना। चाहे
कितना भी काम हो पर इसमें न चूकना।

(आ) (क) पर्वत यात्रा में मुझे तो मोटर या लारी पर
ढना बिल्कुल नहीं भाता। माना, कि पैदल जाने में, या खच्चर-
टट्टुओं पर जाने मे चढाई में कुछ थकावट अवश्य आती है—
ांगें दुखने और दम फूलने लगता है और एक दिन का सफर
ांच दिन में होता है, किन्तु पहाड़ पर जाने का मुख्य उद्देश्य भी
ो यही है कि वहाँ जाकर सैर की जाय, सुन्दर दृश्य देखकर
न बहलाया जावे। पहाड़ की हरियाली मे ढकी चाटियों को
दि क्षण भर न देखा, यदि उसके ऊँचे टेढ़े-मेढ़े मार्गों पर
ल कर ठंडी वायु का सुख न लूटा, यदि स्थान स्थान पर
हने वाले कई तरह के स्वाद वाले निर्मल जल के स्रोतों का
ल न पिया तो पहाड़ जाने का क्या लाभ हुआ। मोटर या
ारी पर बैठे और झट से पर्वत के ऊपर पहुँच गये, या टेढ़े
ढ़े रास्ते में चक्कर काटते समय भयभीत होकर कपड़े में
ँह छिपा कर यात्रा की तो क्या किया। यह सब तो मारा पर

पैरों मे बँधी चक्की के समान होगी जो उसे दिन दिन अवनति के गढ़ मे गिराती जायगी। अत किसी से बहुत मेल-जोल करने से पहले यह देख लेना कि उसका चरित्र कैसा है। उसका रहन-सहन कैसा है। प्राय स्कूलों कालिजों में बहुत से ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो भोले-भाले अनजान लड़कों को व्यसनों के जाल में फँसाते रहते हैं, और इस तरह उन्हे धीरे धीरे अध-पतन की ओर ढकेलते हैं। य स्वभाव के बड़े मीठे और अपने हित चिंतक दिखाई देते हैं, पर इनकी आन्तरिक इच्छा बड़ी निन्दनीय होती है। अत किसी को मित्र बनाने या उस की सगति में आने से पहले यह देख लेना कि उस व्यक्ति में कौन सा ऐसा सद्गुण है, जिससे तुम्हे उसे अपना मित्र बनाना चाहिये।

एक बात का उल्लेख मुझे यहाँ और कर देना चाहिए। जहाँ तक हो सके तुम मितव्ययता से रहो। मितव्ययता से मेरा तात्पर्य कजूसी से नहीं, न मैं यह चाहता हूँ कि तुम रुपया बचाने के लिए कोई ऐसा काम करो जिससे तुम्हारी पढ़ाई की हानि हो, पर व्यर्थ की शान शौकत में पैसे खराब करना भी अच्छा नहीं। तुम्हे पता है कि मैं कितने कष्ट से रुपया

प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त नहीं किया वह पुरुष चाहे कितना भी शिक्षित हो पर उसका ज्ञान एकांगी होगा, वह केवल पुस्तकों पर निर्भर होगा, उसे पूरा नहीं कहा जा सकता।

यही कारण है कि चाहे हम भारतीय अपने घर से बाहर निकलना अच्छा न समझें, परन्तु अधिकांश विदेशी विद्यार्थी शिक्षाकाल में ही नाना देशों की सैर करते दिखाई देते हैं। प्रत्येक देश के रहन-सहन तथा वहाँ की वास्तविक स्थिति को देखकर प्रत्यक्ष ज्ञान को प्राप्त कर वे अपने ज्ञान की वृद्धि करते हैं। अपने अधूरे पुस्तक-ज्ञान को प्रत्यक्ष ज्ञान से पूरा करते हैं।

हम भारतीयों के लिए कुछ समय पहले विदेश-यात्रा निषिद्ध थी। तत्कालीन समाज के अग्रणी विदेश यात्रा को पाप करार देते थे, अतएव आज भारत इस अवनति की अवस्था को पहुँचा है। अगर हमारी तरह ही विदेशी साहसिक विदेश-यात्रा को पाप समझते, अगर कोलम्बस, वास्कोडिगामा तथा अन्य प्रारंभिक फ्रांसीसी तथा अंग्रेज यात्रियों ने 'परदेस की मारी से घर की आधी अच्छी' इस उक्ति के अनुसार कार्य किया होता तो आज उन देशों का साम्राज्य इतना विस्तृत और उन्नत न दिखाई देता। इन बातों को देखते हुए हम तो "घर रहा सो आधा मानुष परदेस गया सो पूरा" इस उक्ति को ठीक मानते हैं।

४ नीचे लिखे विषयों में से एक पर शुद्ध सुसम्बद्ध और भाव-पूर्ण निबन्ध लिखो —

(क) दानवीर कर्ण, (ख) ग्रामसुधार,

(ग) मेघावलि, (घ) आत्मबल,

समतल भूमि मे करते ही हैं। फिर धन खर्च करने का लाभ ही क्या ? दूसरे, मोटर या लारी की यात्रा पर्वत के रास्तों पर खतरनाक भी है। उनके उलट जाने का भी डर होता है। साथ ही जल्दी-जल्दी चक्कर काटने से सिर में चक्कर आने लगते हैं, कई बार उल्टी आदि भी आने लगती है। इस यात्रा से शरीर में इतनी थकान आ जाती है कि फिर कई दिनों तक मन खराब रहता है। भला ऐसी यात्रा जिसमे धन नष्ट हो स्वास्थ्य बिगड़े, जान का खतरा हो, सुन्दर सुन्दर दृश्य भी देखने को न मिलें, कौन बुद्धिमान करेगा ? इसलिए मैं सदा भरसक यही प्रयत्न करता हूँ कि पर्वत पर पैदल या खच्चर-टट्टू पर सफर करूँ, जिससे पर्वत-यात्रा का पूरा फल प्राप्त हो।

(ख)जो आलसी हैं, जो जीवन सग्राम से घबराते हैं, वे तो 'अजगर करे न चाकरी, पछी करे न काम, दास मलूका कह गये सबके दाता राम' अथवा 'परदेस की सारी से घर की आधी अच्छी' आदि उक्तियों का ही समर्थन करेंगे। पर जो उद्योगी हैं, जो दाम के साथ अपना नाम भी कमाना चाहते हैं, जिन्हें साहसिक कार्यों में ही आनन्द आता है तथा जिन पर 'य देश श्रयते तमेव कुरुते बाहुप्रतापार्जितम्' आदि उक्तियाँ चरितार्थ होती हैं, वे तो 'घर रहा सो आधा मानुष परदेस गया सो पूरा' इस उक्ति का ही समर्थन करेंगे। जो आदमी कभी घर से बाहर नहीं निकला, जिस आदमी ने परदेश के चप्पे चप्पे भूमि की खाक नहीं छानी, उन्नत देशों के रहन-सहन को स्वयं अपनी पैनी आँखों से नहीं देखा, उनकी राजनीतिक, सामाजिक अथवा धार्मिक अवस्थाओं का

निष्पाप—निः + पाप । यदि विसर्ग के पूर्व इ या उ हो और पीछे क्, ख्, प् या फ् हो तो विसर्ग को ष् हो जाता है । इस नियम से 'निः' के विसर्ग को 'ष्' होगया ।

दुरुपयोग—दुः + उपयोग । यदि विसर्ग से पूर्व अ या आ को छोड़कर कोई और स्वर हो और पीछे कोई स्वर हो तो विसर्ग को र् हो जाता है । इस नियम से 'दुः' के विसर्ग को 'र्' हो गया ।

(ग) सुर + ईश्वर = सुरेश्वर । तथा + एव = तथैव ।

सत् + गति = सद्गति । निः + तार = निस्तार ।

III (क) निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिङ्ग रूप लिखो—

साधु । चमार । बालक । ३

(ख) निम्नलिखित शब्दों के कर्ता में बहुवचन रूप लिखो—

बहिन । चिड़िया । गौ । ३

(ग) निम्नलिखित शब्दों के साथ लगे हुए प्रत्येक उपसर्ग को पृथक् पृथक् लिखकर उसका अर्थ करो—

अवरोप । विलाप । आजीवन । दुर्गम । ४

(क) साधु—साध्वी । चमार—चमारिन । बालक—बालिका ।

(ख) बहिन—बहिनें, बहिनों ने । चिड़िया—चिड़ियाँ, चिड़ियों ने । गौ—गौएँ, गौओं ने ।

(ग) अवरोप—इसमें 'अव' उपसर्ग है । यह अनादर, हीनता आदि का द्योतक है ।

विलाप—यहाँ 'वि' उपसर्ग है । यह हीनता, भिन्नता, विशेषता असमानता आदि अर्थों का द्योतक है ।

आजीवन—यहाँ 'आ' उपसर्ग है । यह सीमा, विरोध, ग्रहण, फैलाव, समन्तात्, विपरीत आदि के अर्थों को प्रकट करता है । यहाँ सीमा के अर्थ में आया है, अर्थात् जीवन-पर्यन्त ।

दन्त-ओष्ठ से—व ।

नासिका से—ङ, ञ, ण, न, म और अनुस्वार ।

II (क) मुनीश्वर, इत्यादि, अन्वेषण, मात्रानन्द, वाङ्मय, सज्जन, निष्पाप, दुरुपयोग—इन शब्दों में सन्धिच्छेद करो और इनके सन्धि करनेवाले नियमों को लिखो । १६

(ख) निम्नलिखित शब्दों में सन्धि करो —

सुर+ईश्वर । तथा+एव । सत्+गति । नि +तार । ४

(क) मुनीश्वर—मुनि+ईश्वर । जब दो समान स्वर (ह्रस्व अथवा दीर्घ) पास पास आते है तब दोनों के बदले एक समान दीर्घ स्वर होता है । इस नियम से मुनि की 'इ' और ईश्वर की 'ई' को मिल कर 'ई' होगया ।

इत्यादि—इति+आदि । अन्वेषण—अनु + एषण । मात्रानन्द-मातृ+आनन्द । यदि ह्रस्व अथवा दीर्घ इकार, उकार या ऋकार के परे कोई भिन्न स्वर रहे तो ह्रस्व अथवा दीर्घ इकार, उकार और ऋकार के बदले क्रम से य्, व् और र् होता है । इस नियम से इति की 'इ' को 'य्', अनु के 'उ' को 'व्' और मातृ के 'ऋ' को 'र्' होकर 'इत्यादि' 'अन्वेषण' और 'मात्रानन्द' रूप बने हैं ।

वाङ्मय—वाक्+मय । यदि किसी वर्ग के प्रथम वर्ण से परे कोई अनुनासिक वर्ण हो तो प्रथम वर्ण के स्थान मे उसी वर्ग का अनुनासिक वर्ण हो जाता है । इस नियम से वाक् के 'क्' को 'ङ्' हो गया है ।

सज्जन—सत +जन । यदि त् वा द् के परे च् या छ् हो तो त् या द् को च्, ज् या झ् हो तो ज्, ट् या ठ् हो तो ट्, और ड् या ढ् हो तो ड् हो जाता है । इस नियम से सत् के 'त्' को 'ज्' हो गया ।

है। जैसे 'मुख चन्द्रमा है', यहाँ मुख (उपमेय) को चन्द्रमा (उपमान) बना दिया गया है, अतः रूपक अलंकार है।

रूपक के भेद—'मुख चन्द्रमा है' इसमें उपमेय को उपमान बना दिया गया है, दोनों में कोई भेद नहीं रखा गया। 'मुख दूसरा चन्द्रमा है' इसमें भी उपमेय को उपमान बनाया गया है, परन्तु इसमें मुख और चन्द्रमा में कुछ कुछ भेद प्रतीत होता है। पहले को अभेदरूपक और दूसरे को तद्रूप रूपक कहते हैं। अब अभेद रूपक और तद्रूप रूपक के भी सम, अधिक और न्यून, तीन-तीन भेद हैं—

(१) सम अभेद रूपक—इसमें उपमेय और उपमान में कुछ अधिकता या न्यूनता नहीं रखी जाती। जैसे—मुख चन्द्रमा है।

(२) अधिक अभेदरूपक—इसमें उपमेय में उपमान से कुछ अधिकता बताते हुए अभेद प्रकट किया जाता है। जैसे—मुख निष्कलंक चंद्रमा है। यहाँ मुख (उपमेय) में चन्द्रमा (उपमान) की अपेक्षा निष्कलंकता अधिक है।

(३) न्यून अभेद रूपक—इसमें उपमेय में उपमान की अपेक्षा कुछ न्यूनता बताते हुए अभेद प्रकट किया जाता है। जैसे—मुख पृथ्वी पर चमकने वाला चन्द्रमा है।

चन्द्रमा आकाश और पृथ्वी दोनों पर चमकता है, पर मुख केवल पृथ्वी पर। चन्द्रमा (उपमान) की अपेक्षा मुख (उपमेय) में कुछ न्यूनता बताई गई है।

(४) सम तद्रूप रूपक—जब उपमेय और उपमान में कुछ भेद हो, पर कमी बेशी न हो। जैसे—मुख दूसरा चन्द्रमा है।

(५) अधिक तद्रूप रूपक—जब उपमेय में उपमान की अपेक्षा कुछ अधिकता बताई जाय। जैसे—मुख दूसरा निष्कलंक चन्द्रमा है।

(ख) जब ऐसे शब्द या शब्दों का प्रयोग किया जाय जिसका या जिनका एक से अधिक अर्थ लिया जाय तो वहाँ श्लेष अलंकार होता है।

कमला थिर न रहीम कह यह जानत सब कोय।
पुरुष पुरातन की वधू क्यों न चचला होय॥

इसमें पुरातन शब्द के दो अर्थ हैं। आदि और बूढा। इस दोहे का अर्थ है—

कमला (लक्ष्मी, धन) स्थिर नहीं होती, यह सब जानते हैं। पुरातन पुरुष (आदि पुरुष, विष्णु या बूढे मनुष्य) की वधू (युवती स्त्री) क्यो चचला न हो।

लक्ष्मी विष्णु भगवान् की अर्धांगिनी है। पुरातन पुरुष के विष्णु और बूढा आदमी दोनो अर्थ लिये गए हैं, इसलिए यहाँ श्लेष अलकार है।

VIII (क) अनुप्रास और लाटानुप्रास में क्या भेद है? ३

(ख) रूपक का लक्षण, उसके भेद और भेदों के लक्षण सोदाहरण लिखो। ८

(क) एक वर्ण या अनेक वर्णों की आवृत्ति को अनुप्रास कहते हैं। अनुप्रास मे केवल व्यंजनों की आवृत्ति होती है, स्वरों का मिलना आवश्यक नहीं।

लाटानुप्रास मे शब्द की आवृत्ति होती है, अर्थात् एक ही शब्द एक से अधिक बार आता है। प्रत्येक बार अर्थ वही रहता है, भिन्न नहीं होता, किंतु प्रत्येक आवृत्ति में उसका अन्वय भिन्न होने से तात्पर्य भिन्न हो जाता है।

(ख) जब उपमेय पर उपमान का आरोप किया जाय अर्थात् जब उपमेय को उपमान बना दिया जाय तब रूपक अलकार होता

जद्यपि नीति निपुन नरनाहू ।
नारि-चरित जलनिधि अवगाहू ॥

यहाँ केवल नारीचरित को जलनिधि बनाया गया है, उसके अंगों का वर्णन नहीं किया गया ।

(३) परंपरित—जब प्रधान रूपक का कारण पहले किया हुआ एक दूसरा रूपक ही अर्थात् परंपरित रूपक में दो रूपक होते हैं, एक प्रधान, दूसरा अप्रधान। प्रधान रूपक का कारण अप्रधान रूपक होता है । तात्पर्य यह है कि यदि अप्रधान रूपक न लिया जाय तो प्रधान रूपक भी नहीं होगा । जैसे—

राम कथा सुन्दर करतारी
संशय विहग उड़ावन हारी ।

यहाँ दो रूपक हैं—

(क) राम कथा सुन्दर करतारी (ताली)—प्रधान

(ख) संशय रूपी विहग (पक्षी)—अप्रधान

यहाँ राम कथा को करतारी (हाथ की ताली) इस लिए बताया है कि संशय को विहग (पक्षी) बनाया गया है । यदि संशय को विहग न बनाया जाता तो रामकथा को ताली कहने का कुछ मतलब न होता । इसलिए 'रामकथा करतारी' यह प्रधान रूपक 'संशय विहग' इस अप्रधान रूपक के आश्रित है अतः यहाँ परंपरित रूपक है ।

१. (क) सारे "रस" और उनके "स्थायीभावों" के नाम लिखो ।
प्रत्येक रस के सामने उसका स्थायीभाव लिखना चाहिए । २

(ग) यमक, वक्रोक्ति और स्वभावोक्ति अलङ्कारों के उदाहरण लिखो । २

(घ) रस स्थायीभाव
प्रेम

(६) न्यून तद्रूप रूपक—जब उपमेय में उपमान की अपेक्षा कुछ कमी बताई जाय। जैसे—मुख दूसरा चन्द्रमा है, जो पृथ्वी पर ही चमकता है।

तद्रूप रूपक मे दूसरा, अन्य, और, अपर आदि अन्यार्थ-वाचक शब्द आते हैं।

सम अभेद रूपक के तीन भेद और होते हैं—

(१) साग या सावयव—जब उपमेय मे उपमान का आरोप हो और उपमेय के अंगों में उपमान के अगो का आरोप भी साथ ही साथ हो। जैसे—

ऊधो मेरा हृदय तल था एक उद्यान न्यारा
शोभा देती अमित उसमे कल्पना क्यारियाँ थीं
प्यारे प्यारे कुसुम कितने भाव के थे अनेकों
उत्साहों के विपुल विटपी मुग्धकारी महा थे
लोनी-लोनी नवल लतिका थीं अनेकों उमगें
सद्वांछा के विहग उसमें मजुभाषी बडे थे
प्यारी आशा पवन जब थी डोलती स्निग्ध होके
तो होती थी अनुपम छटा बाग के पादपों की

यहाँ हृदय को बाग बनाया गया है और बाग के समस्त अंगों—क्यारियों, कुसुमों, पेड़ों, लताओं, पक्षियों और पवन का हृदय के सब अगों—कल्पनाओं, भावों, उत्साह, उमंगों, सदिच्छाओं और आशा पर क्रमश आरोप किया गया है।

(२) निरग या निरवयव—जब केवल उपमेय मे उपमान का आरोप हो, उपमेय के अगों में उपमान के अगों का आरोप न हो। जैसे—

जद्यपि नीति निपुन नरनाह ।
नारि चरित जलनिधि अवगाह ॥

यहाँ केवल नारीचरित को जलनिधि बनाया गया है, उसके अंगों का वर्णन नहीं किया गया ।

(३) परंपरित—जब प्रधान रूपक का कारण पहले किया हुआ एक दूसरा रूपक ही अर्थात् परंपरित रूपक में दो रूपक होते हैं एक प्रधान, दूसरा अप्रधान। प्रधान रूपक का कारण अप्रधान रूपक होता है। तात्पर्य यह है कि यदि अप्रधान रूपक न दिया जाय तो प्रधान रूपक भी नहीं होगा। जैसे—

राम कथा सुन्दर करतारी
संशय विहग उड़ावन हारी।

यहाँ दो रूपक हैं—

(क) राम कथा सुन्दर करतारी (ताली)—प्रधान

(ख) संशय रूपी विहग (पक्षी)—अप्रधान

यहाँ राम कथा को करतारी (हाथ की ताली) इस लिए बनाया है कि संशय को विहग (पक्षी) बनाया गया है। यदि संशय को विहग न बनाया जाता तो रामकथा को ताली कहने का कुछ मतलब न होता। इसलिए 'रामकथा करतारी' यह प्रधान रूपक 'संशय विहग' इस अप्रधान रूपक के आश्रित है अतः यहाँ परंपरित रूपक है।

13. (क) सारे "रस" और उनके "स्थायीभावों" के नाम लिखो। प्रत्येक रस के सामने उसका स्थायीभाव लिखना चाहिए। ६

(ख) यमक, वक्रोक्ति और स्वभावोक्ति अलङ्कारों के लक्षण लिखो। २

(क) रस स्थायीभाव

शृंगार प्रेम

(६) न्यून तद्रूप रूपक—जब उपमेय में उपमान की अपेक्षा कुछ कमी बताई जाय। जैसे—मुख दूसरा चन्द्रमा है, जो पृथ्वी पर ही चमकता है।

तद्रूप रूपक मे दूसरा, अन्य, और, अपर आदि अन्यार्थ-वाचक शब्द आते हैं।

सम अभेद रूपक के तीन भेद और होते हैं—

(१) साग या सावयव—जब उपमेय में उपमान का आरोप हो और उपमेय के अगों में उपमान के अगों का आरोप भी साथ ही साथ हो। जैसे—

ऊधो मेरा हृदय-तल था एक उद्यान न्यारा
शोभा देती अमित उसमे कल्पना क्यारियाँ थीं
प्यारे प्यारे कुसुम कितने भाव के थे अनेकों
उत्साहों के विपुल विटपी मुग्धकारी महा थे
लोनी-लोनी नवल लतिका थीं अनेको उमगें
सद्वाछा के विहग उसमे मजुभाषी बडे थे
प्यारी आशा पवन जब थी डोलती स्निग्ध होके
तो होती थी अनुपम छटा बाग के पादपों की

यहाँ हृदय को बाग बनाया गया है और बाग के समस्त अगा—क्यारियों, कुसुमों, पेड़ों, लताओं, पक्षियों और पवन का हृदय के सब अगों—कल्पनाओं, भावों, उत्साह, उमगों, सदिच्छाओं और आशा पर क्रमश आरोप किया गया है।

(२) निरग या निरवयव—जब केवल उपमेय में उपमान का आरोप हो, उपमेय के अंगों में उपमान के अगों का आरोप न हो। जैसे—

रस और अलंकार

[—पं० रामबहोरी शुक्ल, ऐम ए, साहित्यरत्न, क्राम कालेज, बनारस]

इस पुस्तक में रस और अलंकार का कठिन विषय बड़ी सरलतापूर्वक समझाया गया है। प्रत्येक अलंकार के लक्षण, उदाहरण तथा अलंकारों के पारस्परिक भेद विद्वान् लेखक ने बड़ी खूबी से समझाये हैं। सभी उदाहरण आजकल की खड़ी बोली की कविता से दिये गये हैं, जिससे विद्यार्थी अलंकार का कठिन विषय बड़ी आसानी से समझ सकते हैं। इसको पढ़कर हिन्दी भूषण के विद्यार्थियों को इस विषय की और कोई पुस्तक पढ़ने की आवश्यकता नहीं रहती। मूल्य ॥।=)

व्याकरण की प्रश्नोत्तरी

ले०—श्री मोहनप्रताप शास्त्री, बी ए और कविराज रामनाथ अग्रवाल, हिन्दी प्रभाकर, विशारद

संपादक—श्री धर्मचन्द्र विशारद

इस पुस्तक में हिन्दी का सारा व्याकरण बहुत आसान भाषा में प्रश्न और उत्तर के रूप में समझाया गया है। विद्वान संपादक ने इसे हर तरह से विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बना दिया है। पुस्तक लेते समय संपादक का नाम अवश्य देख लें। मूल्य ।=)

व्याकरण का चार्ट

इस चार्ट की सहायता से हिन्दी का सारा व्याकरण १० मिनट में दोहराया जा सकता है। ठीक परीक्षा के समय काम आने वाली चीज है। मूल्य =)

हास्य	हास
करुण	शोक
वीर	उत्साह
रौद्र	क्रोध
भयानक	भय
वीभत्स	घृणा
अद्भुत	विस्मय
शान्त	निर्वेद
वात्सल्य	स्नेह

(ख) यमक—जब शब्द या शब्दांश की आवृत्ति हो तब यमक अलकार होता है। शब्द की आवृत्ति होने पर उसका अर्थ प्रत्येक बार भिन्न होता है। शब्दाश की आवृत्ति में कोई अर्थ नहीं होता।

वक्रोक्ति—जब वक्ता के शब्दों का श्रोता द्वारा वक्ता के अर्थ से भिन्न कोई और अर्थ लगाया जाता है, तब वक्रोक्ति अलकार होता है।

व्याजस्तुति—जब निन्दा के बहाने स्तुति की जाय अर्थात् शब्दों से निन्दा जान पडे पर हो स्तुति या स्तुति के बहाने निन्दा की जाय अर्थात् शब्दों से स्तुति जान पडे पर हो निन्दा, तब व्याजस्तुति अलकार होता है।

(ख) शिवाजी ने चन्द्रराव मोरे को मार कर जावली प्रान्त जीत लिया। तब बीजापुर दरबार ने अफ़ज़लखाँ को शिवाजी को पकड़ने को भेजा। शिवाजी ने उसे भी मार दिया और फिर पन्हाले पर धावा बोल दिया। भूषण कहते हैं, उस समय बीजापुर के बादशाह आदिलशाह से उसकी बेगमें कहती हैं—

चन्द्रावल चूर करि जावली जपत कीन्हीं,
मारे सब भूप औ सँहारे पुर धाय कै।
भूषण भनत तुरकान दल-थंभ-काटि,
अफज़ल मारि डारे तबल बजाय कै॥
एदिल सों बेदिल हरम कहैं बार बार,
अब कहा सोवो सुख सिंहहिं जगाय कै।
भेजना है भेजो सो रिसालैं सिवराज जू की
बाजी करनालैं परनालैं पर आय कै॥

अर्थात् सिंह (शिवाजी) को जगाकर (छेड़ कर) अब सुख से क्या सोते हैं? पन्हाले के किले पर उसकी तोपें गरज रही हैं अगर उसे खिराज भेजना है तो शीघ्र भेजिए।

४ सूरदास और तुलसीदास की कविता में समता अथवा विषमता दिखाकर कहो कि तुम्हें किसकी कविता अधिक उत्तम प्रतीत होती है और क्यों? १५

यह प्रश्न सूर सूक्ति सुधा और रामायण से सम्बन्धित है। दोनों पुस्तकें अब कोर्स में नहीं हैं, अतः उत्तर नहीं दिया गया।

५ "रामायण की कथा से चरित्र में साधुता आजाती है" इस उक्ति की समीक्षा करो और अपने मत को युक्ति द्वारा पुष्ट करो। १५

रामायण कोर्स में नहीं है, अतः उत्तर नहीं दिया गया।

(क) यह तक्षशिला काव्य से है, जो अब कोर्स में नहीं है, अत उत्तर नहीं दिया गया।

(ख) भूषण कवि कहते हैं कि हे वीरवर शिवाजी ! आपके भय से जो शत्रु स्त्रियाँ पहले ऊँचे और बडे बडे महलों में रहती थीं, वे अब ऊँचे ऊँचे भयानक पर्वतों में छिपी रहती हैं। जो पहले बढिया मिठाई खाती थीं, वे अब कद और मूल खाती हैं। जो पहले तीन तीन वार खाती थीं, वे अब तीन बेर खाती हैं। गहनों के भार के कारण जिनके अग शिथिल थे अब वे भूख के मारे दुर्बल हो रही हैं। जो सदा पंखा झलवाया करती थीं वे अब निर्जन जगल में मारी मारी फिरती है और जो रत्नजडित गहने पहनती थीं वे अब (नग्न) बिना वस्त्र के जाडे में मरती है।

(ग) यह रामायण से है, जो अब कोर्स मे नहीं है, अत उत्तर नहीं दिया गया।

३ प्रसङ्ग निर्देशकर अर्थ लिखो —

(क) वासुदेव नृप पिता-परायण प्रजा सखा, विद्वान।

(ख) पापके पंकिल सने।

(ग) विजली जैसी स्फूर्तिमयी सेना उन्मादिनि कडकी।

(घ) जनु जलचर-गन सूखत पानी।

(ङ) बिनु जल जारि करइ सोइ छारा।

(च) धर्म पराव विपत्तें विषमारी।

(छ) मनु अहि काँचुली उतारी।

(ज) जाकौ जासौं हित, सोइ ताहि सुहात।

(झ) अब कहा सोवो सुख सिंहहिं जगायकै। १५

(क) से (ज) तक तक्षशिला, रामायण, और सूरसूक्ति सुधा में से हैं, जो अब कोर्स मेंनहीं हैं, अत उत्तर नहीं दिया गया।

बार कहता है—"शिवाजी न होतो ना सुनति होती सबकी" "राखी हिन्दुवानी हिन्दुवान को तिलक राख्यो, अस्मृति पुरान राखे वेद-विधि सुनी मैं।" इस प्रकार हम देखते हैं कि भावों की दृष्टि से भूषण बहुत ऊँचा पहुँच जाता है और उसका हिन्दी साहित्य मे निराला ही स्थान है।

भूषण वीर रस का कवि था। उसकी कविता में वीर रस तथा उसके सहायक, भयानक, रौद्र तथा वीभत्स रस का अनूठा परिपाक हुआ है। निम्नलिखित पद में शिवाजी के वीर सैनिकों का क्या ही अनूठा वर्णन है।

> छूटत कमान अरु गोली तीर बानन के
> मुसकिल होत मुरचानहू की ओट मैं।
> ताहि समै सिवराज हुकुम कै हल्ला कियो
> दावा बाँधि परा हल्ला बीरवर जोट मैं।
> भूषण भनत तेरी हिम्मति कहाँ लौं कहौं
> किम्मति इहाँ लगि है जाकी भट जोट मैं।
> ताव दै दै मूछन कँगूरन पै पाँव दै दै
> अरि मुख घाव दै दै, कूदि परैं कोट मैं।

शिवाजी के आतंक का वर्णन करते हुए भूषण ने भयानक रस को कैसा अच्छा प्रदर्शित किया है, शत्रु-स्त्रियों और शत्रु राजाओं की क्या दुर्दशा दिखाई है।

> चालि चगताउ सिवराज सैन साजत ही
> [illegible] [illegible] दौरि धुरवन की।
> तनियाँ न तिलक सुथनियाँ पगनियाँ न
> घामैं घुमराती छोड़ि सेजियाँ सुखन की।

६ भूषण को उच्चकोटि का कवि क्यों समझते हैं ? इसकी कविता के भाव, रस, अलङ्कार तथा उत्कर्षाधायक अन्यान्य गुणों के विषय में तुम्हारा क्या मत है ? १४

जिस कवि की कविता मे रस का परिपाक हो, भाषा रस के अनुरूप तथा परिपक्व हो, तथा भाव उच्च और उदार हों, वह कवि उच्च कोटि का कवि समझा जा सकता है । भूषण की कविता में ये सब गुण हैं। वीर रौद्र, भयानक तथा बीभत्स रस का ऐसा परिपाक हिन्दी के अन्य किसी कवि की कविता मे कठिनता से पाया जाता है और भाषा भी इन रसों के अनुसार ही ओजपूर्ण है जिसके पढते ही मन वीरदर्प से भर जाता है, या नायक के आतङ्क से धैर्य शत्रु का साथ छोडता प्रतीत होता है। इनके अतिरिक्त उच्च जातीय भावों की प्रधानता तो भूषण की खास विशेषता है, जो उससे पहले के किसी कवि की कविता मे नहीं पाई जाती, अतएव भूषण को उच्च कोटि का कवि समझा जाता है।

भावों की दृष्टि से हम कह चुके हैं कि भूषण का स्थान हिन्दी साहित्य मे अनूठा है, उससे पहले वीर रस के जितने कवि हुए उन्होंने अपने नायक के यश, उसकी वीरता उसके युद्ध कौशल उसके प्रेम तथा अन्य वैयक्तिक घटनाओं का ही उल्लेख किया है, उन्होंने यह नहीं दिखाया कि नायक के विजय से जाति या देश को कुछ लाभ हुआ या नहीं। जहाँ पृथ्वीराज जैसे वीरों ने राजनीतिक कारणो से युद्ध किया वहाँ भी उनके यश गान करने वाले कवियों ने लडाई का कारण किसी सुन्दर औरत को ही बताया। भूषण ही ऐसा महाकवि था जिसकी कविता में सबसे पहले हिन्दू जाति का नाम सुना गया और शिवा जी के यश का वर्णन जिसने इसी कारण किया क्योंकि वे हिन्दू जाति के रक्षक थे । वह बार

इन रसों के अतिरिक्त स्त्रियो के शोक-वर्णन मे करुण रस का आभास भी मिलता है, और 'पानी में जहाज रहे लाज के जहाज महाराज सिवराज तेरे पानिप पयोध हैं" आदि म अद्भुत रस भी खूब प्रदर्शित किया गया है। सारांश यह है कि भूषण की कविता मे रसों का खूब परिपाक हुआ है।

भूषण की रचना मे अलकार-योजना भी उच्च कोटि की हुई है। अन्य कवियों की तरह उसमें पिष्ट-पेषण नहीं है। पर इन्होंने ऐतिहासिक घटनाओ का वर्णन करते हुए उन्होंने नवीन और मौलिक ढग की अलकार योजना की है। औरगजेब ने और सब हिन्दू राजाओ को वश मे कर लिया था पर एक शिवाजी ही ऐसे थे, जिनसे वह कर वसूल न कर सका, इस ऐतिहासिक तथ्य को उसमा मिश्रित रूपक द्वारा कैसे प्रकट किया है।

> कूरम कमल कमधुज है कदम फूल
> गौर है गुलाब राना केतकी विराज है।
> पाँडर पवाँर जूही सोहन है चदावत
> सरस बुँदेला सो चमेली साज बाज है।
> भूषण भनत मुचकुन्द बड़गूजर है
> बघेले बसत सब कुसुम समाज है।
> लेइ रस एतेन को बैठि न सकत अहै
> अलि नवरंगजेब चंपा सिवराज है।

बीजापुर के सुलतान [illegible] गोलकुण्डा के सुलतान कुतुब शाह तथा मुगल सम्राट् औरगजेब जैसे वीर यद्यपि दुश्मनों को शिवाजी ने अकेले नीचा दिखाया था। इस ऐतिहासिक तथ्य को पौराणिक कथा मे [illegible] कवि ने [illegible] का अच्छा उदाहरण दिया है—

बालियाँ बिथुर जिमि आलियाँ नलिन पर
लालियाँ मलिन मुगलानियाँ मुखन की।

तथा—

चकित चकत्ता चौंकि-चौंकि उठै बार बार
दिल्ली दहसति चितै- चाह करषति है।
बिलखि बदन बिलखति बिजैपुरपति
फिरति फिरंगनि की नारि फरकति है।
थर-थर काँपत कुतुबशाह गोलकुंडा
हहरि हबस भूप भीर भरकति है।
राजा सिवराज के नगारन की धाक सुनि
केते पातसाहन की छाति दरकति है।

भूषण के रौद्र तथा बीभत्स रस के अनूठे उदाहरण दिये जाते हैं।

सबन के ऊपर ही ठाढो रहिबो के जोग
ताहि खरो कियो छ हजारिन के नियरे।
जानि गैरमिसिल गुसैल गुसा धारि उर
कीन्हो न सलाम न बचन बोले सियरे।
भूषण भनत महावीर बलकन लाग्यो
सारी पातसाही के उड़ाय गये जियरे
तमक ते लालमुख सिवा को निरखि भये
स्याह मुख नौरंग सियाह मुख पियरे।

पारावार ताहि को न पावत है पार कोऊ
सोनित समुद्र यहि भाँति रह्यो बढि कै।
नाँदिया के पूँछ गहि परि कै कपाली बचे
कालि बची माँस के पहार पर चढि कै।

घनसार = कपूर।
ठौर = स्थान।
मवास = शरणस्थान, किला।
सौंह = शपथ, कसम।
लँगराई = शरारत, ढिठाई।
उलूखल = ओखली।
गारो = बड़ाई, अभिमान, गर्व।
ऐनु = अयन, मकान, घर।
खोरि = गली।
उडुपति = चन्द्रमा।

८ इनका परिचय दो —

आलोक, दासमित्र, मिलिन्द, गाण्डीव, कलिंग तथा सात्यकि १०

८ यह प्रश्न तक्षशिलाकाव्य से है, जो अब कोर्स में नहीं है, अतः उत्तर नहीं दिया गया।

भक्त-पचरत्न की कुंजी

(टीकाकार—श्री बाबूदयाल सक्सेना साहित्यरत्न)

इसमें भक्त-पचरत्न के सब पद्यों के अर्थ पद्यों सहित भावार्थ विस्तार पूर्वक दिये गये हैं। कठिन शब्दों के अर्थ तथा प्रसंगवश आने वाली सब कहानियाँ भी दी गई हैं। मूल पुस्तक में पाठ की जितनी भूलें हैं उन सब का कुंजी में शुद्ध पाठ दिया गया है। कुंजी की सहायता से विद्यार्थी स्वयं इस पुस्तक को पढ़ सकता है। मूल्य ॥|=)

गंदिल कुतुबशाह औरग को मारिबे को
भूषण भनत को है सरजा खुमान सों।
तीन पुर त्रिपुर को मारे सिव तीन बान
तीन पातसाही हनी एक किरवान सों।

ऐसे ही औरगजेब के सरदार दिल्ली से शिवाजी पर आक्रमण करने आते है, पर वे हार कर लौट जाते हैं, तो उनकी सेना, सपत्ति, आदि सब शिवाजी को प्राप्त हो जाती है, जिससे शिवाजी का यश और गौरव अधिक बढ जाता है। भूषण इस बात को कितनी सरल उपमा से प्रकट करते हैं—

रहँट की घरी जैसे औरँग के उमराव
पानिप दिल्ली ते ल्याइ ढारि ढारि जात हैं।

भूषण की भाषा यद्यपि खिचडी है, उसमें ब्रज-भाषा तथा अन्य भाषाओं के शब्दों का मेल है, पर वह भी ओजपूर्ण है, तथा रस के अनुकूल हुई है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भाव, रस, अलकार सब की दृष्टि से भूषण खूब सफल हुए हैं, उनमें नवीनता है, सरलता है और है उच्चता तथा उदारता।

७ शब्दार्थ लिखो —

करारे, विहराने, कत्ता, बिललानियाँ, नीवी, घनसार, ठौर, मवास, सौह, उँगराई, उलूपत्र, गारो, पुनु, खोरि तथा उडपति।

(७) करारे=कठोर।
विहराने= फट गये।
कत्ता=तलवार जैसा एक शस्त्र।
बिललानियाँ=घबरा गई, व्याकुल हो गई।
नीवी=साडी का वह भाग जिसे चुन कर स्त्रियाँ नाभि के नीचे खोसती हैं

भाग भी नहीं जीता, फिर भी वह 'जगत को जीतने वाले' की उपाधि धारण कर संसार भर को धोखा देता है। मैं लालच में या आदर पाने की इच्छा से या डर से किसी के पास नहीं जा सकता।

(ख) जो देवी की आज्ञा। राजकुमार, सुनिए, एक बार ऐसा हुआ कि महाराज दशरथ किसी जंगल में शिकार खेलने के लिए गये। संयोग से उसी समय एक अन्धे तपस्वी माता पिता का इकलौता बेटा सिर पर घड़ा रख कर तालाब से पानी भरने आया। घड़ा भरते हुए जो गड़गड़ाहट हुई, शिकार के शौकीन राजा ने उसे जंगली हाथी के जल पीने की आवाज समझा और जिधर से आवाज आई थी, उधर ही शब्दवेधी बाण चला दिया। वह बाण उस मुनि-पुत्र को जाकर लगा, जो उन अन्धे तपस्वी माता पिता की आँखों के समान था और उसकी तत्काल मृत्यु हो गई।

२ (क) एकबार किसी युग में एक मजूर का दाना [illegible] के दिन किसी बहुत बूढ़े आदमी की ठीक मूँछों के ऊपर उड़कर गिर पड़ा था, उसके कारण बूढ़े के मन का पुण्य [illegible] भाग का [illegible] हो गया था इसी कारण उसी समय उस बूढ़े ने [illegible] नगर भर के मजूर के [illegible] को [illegible] दे दिया। १०

(ख) सखा! क्या आपने [illegible] किये? क्या द्वितीय रूप में [illegible] के [illegible] चरित को देखा है? क्या आपने [illegible] करने वाले [illegible] के [illegible] किये हैं? ५

(ग) एक बार किसी जमाने में [illegible] दिन मजूर का दाना था एक दाना एक बूढ़े की मूँछों पर उड़कर गिर पड़ा। जिससे उस बूढ़े का [illegible] जूठा हो गया और उस मजूर को [illegible] का

प्रश्नपत्र ३

१ नीचे लिखे गद्यभागों के अर्थ लिखो —

(क) भूमा का सुख और उसकी महत्ता का जिसको आभासमात्र हो जाता है उसको नश्वर चमकीले प्रदर्शन अभिभूत नहीं कर सकते। दूत! वह किसी की इच्छा का क्रीड़ा-कन्दुक नहीं बन सकता। तुम्हारा राजा, अभी झेलम नहीं पार कर सका, फिर भी जगद्विजेता की उपाधि लेकर जगत को वञ्चित करता है। मैं लोभ से सम्मान से भय से किसी के पास नहीं जा सकता।

अथवा

(ख) जो आर्या की आज्ञा। कुँवर जी! सुनिये, एक बार ऐसा हुआ कि महाराज किसी वन में आखेट के लिये गए। भाग्य वश उसी समय एक अन्धे तपस्वि युगल का एकमात्र सहारा, उनका लड़का सिर पर घड़ा रक्खे सरोवर मे पानी भरने आया। उस भरते घड़े की गड़गड़ाहट सुन आखेट प्रिय महाराज ने उसे जङ्गली हाथी के जल पीने का शब्द जान शब्दवेधी बाण चला दिया, जिससे उन अन्धे तपस्वि युगल का नयन रूप वह मुनि पुत्र बिन्ध गया और स्वर्ग सिधार गया। १०

(क) भूमा (ऐश्वर्यशाली प्रभु) का सुख और उसके बड़प्पन का जिसको थोड़ा सा भी ज्ञान हो जाता है, अर्थात् जिसका ध्यान वास्तविक ऐश्वर्यशाली प्रभु की ओर लग जाता है और जिसे उसकी महत्ता का थोड़ा सा भी पता लग जाता है उसको ये ससार के नष्ट होने वाले चमकीले प्रदर्शन, रुपया पैसा आदि विचलित नहीं कर सकते, वे उसे अपने पथ से नहीं हटा सकते। वह प्रभु-भक्त किसी की इच्छा का खेलने का गेंद नहीं होता, अर्थात् किसी की इच्छा के अनुसार काम नहीं करता। हे दूत, तुम्हारा राजा सिकन्दर अभी झेलम पार नहीं कर सका, अभी उसने भारत का कुछ

(ख) घन रही वनी आठों याम की—

अब तक गूँज रही है बोली प्यार भरी अभिराम की
हुए चपल मृगनैन मोह-वश बनी छिपची श्याम की,
रूप सुधा के दो दृग प्यालों ने ही मति बेसुध की।

अथवा

करुणा कादम्बिनी बरसे—

दुख से जली हुई यह धरणी प्रमुदित हो सरसे।
प्रेम प्रचार रहे जगती तल दया दान दरसे,
मिटे कलह शुभ शांति प्रकट हो अचर और चर से॥ ५

(ग) प्रतिदिन यज्ञ रचाने से हैं रहते इन्द्र यहाँ पर,

सुर तरुओं के बदले इनमें आ बसते हैं दिनकर।

ये शुभ ऊँची भीति उठाकर मेघ जिन्हें सब पाते,

ऐरावत की बन्धरज्जु से विद्युत की धारा॥

सुरपति के आवाहन-मन्त्रों का सुन सुन निनिमारी।

माला डोंड वाची रहती है बेनी विरह निपाती॥ ५

(क) सूर्य के समान रामचन्द्र जगत को गए हैं, और जिस तरह सूर्य के साथ साथ दिन चला जाता है वैसे ही लक्ष्मण भी उनके साथ वन को चले गये हैं। जब सूर्य ही चला जाय अस्त हो जाय, तब भला दिन कैसे रह सकता है, सीता जी भी उनके पीछे-पीछे वन को चली गई, वे भी उसी प्रकार दिखाई नहीं पड़ीं, जैसे सूर्य के अस्त होने पर और दिन के बीत जाने पर छाया दिखाई नहीं पड़ती।

तुम्हें प्रसन्न करने के लिए वसन्तों के वन व फूलों के रस की सुगन्धि को और हंसों के मधुर संगीत को साथ ले कर भला गहरी में पड़े हुए निर्मल और शीतल जल के कणों को लिये हुए यह शीतल वायु आ रही है।

जो फल होना था उस फल के साठ-हजारवें भाग का सौवाँ हिस्सा उस मसूर की दाल के दाने के मुँह में लग जाने के कारण कम होगया। यह देख उसी समय उस बूढे ने खडे होकर काँपते-काँपते संसार भर में जितने भी मसूर के खेत थे उन्हें शाप दे दिया कि जो मसूर के बोवेगा या जो मसूर खायेगा वह अछूत हो जायगा। इस घटना को देने का आशय यह है कि सकुचित विचार के लोगों ने बिना किसी कारण ही छोटी छोटी बात पर पाप और प्रायश्चित्त के ढोंग बनाये हुए हैं।

(ख) पूज्य, क्या अपने संसार भर में प्रसिद्ध अनूठे पितृ-भक्त (पिता की आज्ञा पर सब कुछ छोड देने वाले) रामचन्द्र के दर्शन किये हैं? क्या वसिष्ठ की पत्नी अरुन्धती के समान आदर्श-चरित्र सीता को देखा है। क्या आपने बिना किसी कारण, बिना किसी अपराध के, वनवास को स्वीकार करने वाले लक्ष्मण के पवित्र दर्शन किये हैं, जो लोकोत्तर भ्रातृस्नेही हैं, जिनके भाई से प्रेम का उदाहरण लोक में नहीं मिल सकता।

३ नीचे लिखे पद्यों के स्पष्ट अर्थ लिखो —

(क) वन में गये राम रवि-सम, दिवस-सम लक्ष्मण गए,
कैसे रहे दिन भी कहो, दिनराज ही जब चल दिए।
पीछे उन्ही के गत हुई, सीता नहीं है दीप्ती,
दिनपति दिवस-अवसान में, छाया नहीं है दीपती॥

अथवा

ले लेकर मकरन्द गन्ध अरविन्द वनों का,
सङ्ग लिये सगीत मञ्जु कलहस-गणों का।
शीत तरङ्गोच्छलित स्वच्छ छींटे छितराती,
करे तुम्हें प्रसन्न पवन गङ्गा की आती॥ १

४ लव कुश के आने की सूचना मिलने पर तथा उन्हें सम्मुख देख कर राम के मन में किन किन भावों का उदय हुआ ? ६

तापस-कुमार-वेशधारी लव कुश के आने की सूचना देते हुए विदूषक ने जब रामचन्द्र को बताया कि वे मानो तुम्हारे ही अंशावतार हैं और तेज तथा रूप सादृश्य से वे ऐसे मालूम पड़ते हैं कि जैसे महाराज दशरथ के सामने राम लक्ष्मण आया करते थे तथा वृद्ध कंचुकी भी आश्चर्य से उनसे पूछताछ कर रहे हैं, तब रामचन्द्र के मन में यही भावना उत्पन्न हो गई कि कहीं ये परित्यक्ता गर्भवती सीता के पुत्र न हों । अब उनके देखने में क्षण का भी विलंब उसे असह्य हो गया । जब रामचंद्र ने उन्हें देखा तब सहज स्नेह से उनका हृदय द्रवित हो उठा । वह सोचने लगा कि यदि प्रसव सकुशल हुआ हो और वह सन्तान आज जीवित हो तो अवश्य इन जैसी ही होगी । अतएव उनके हृदय में सीता की याद आजाने से कहीं सीता मर न गई हो यह भय, यदि ये सीता के पुत्र हैं तो पुत्र-प्राप्ति का आनन्द, गर्भवती सीता को इस प्रकार निष्ठुरता से छोड़ दिया इसका शोक तथा उनकी दयनीय दशा पर करुणा इस प्रकार अनेक भाव एक साथ राम के हृदय में उदय हुए, और वह ऐसा अनुभव करने लगा कि जिस प्रकार परदेश में गया हुआ व्यक्ति अपने मन में अपने पुत्र की वृद्धि आदि जिस जिस दशा की जैसी जैसी कल्पना करता है फिर लौट कर उस उस दशा में अपने पुत्र को देखकर स्नेह से उसका हृदय पसीज उठता है वैसे ही उसका मन भी पिघल रहा है। यद्यपि फिर एक क्षण बाद सोचता है कि तपोवन-निवासी [illegible] के [illegible] [illegible] ऐसे [illegible] सकता हूँ, पर तुम्हें ही [illegible] है—

(ख) आठो पहर की, हर समय मन मे डोलने वाली, बंसी बज रही है। सुन्दर मुख वाले उस प्यारे की बोली अब तक कानों मे गूँज रही है, जिसे देखकर नयनरूपी हिरण मोह वश चंचल हो उठे थे और कामदेव की वीणा बज उठी थी अर्थात् जिसे देख कर मन मे प्रेम-विकार पैदा हो गया था। रूप सौन्दर्य के नेत्र रूपी दो प्यालों ने ही बुद्धि को व्यर्थ कर दिया अर्थात् ज्ञान और विचार को नष्ट कर दिया।

करुणारूपी मेघमाला अब बरसे, जिससे दु ख-रूपी आग से झुलसी हुई यह पृथ्वी हरी-भरी हो जाय, फले फूले। पृथ्वी तल पर प्रेम का प्रचार हो जाय। सब ओर दया तथा दान दिखाई दे। कलह (लडाई-झगडा) मिट जाय तथा जड और चेतन से कल्याण कारी शाति प्रकट हो।

(ग) यहाँ नैमिपारण्य मे प्रतिदिन यज्ञों के होने से इन्द्र अब यहीं रहते हैं, देवताओं के वृक्षों (नदन कानन के वृक्षो) के स्थान पर अब इस जगल के वृक्षों मे ही इन्द्र का हाथी ऐरावत बाँधा जाता है, और ये ऊँचे ऊँचे वृक्ष जिन्हें लोग ऊँची आँख उठाकर ही देख पाते हैं, ऐरावत के गले की रस्सी के चिह्न बतला रहे हैं, अर्थात् इन ऊँचे ऊँचे वृक्षों मे ऐरावत के बाँधे जाने के निशान दिखाई देते हैं।(इस नैमिपारण्य मे) इन्द्र को बुलाने के लिए पढे जाते वेद-मत्रों को सुन सुनकर खिमयानो-सी (क्रुद्ध सी) इन्द्राणी माला को त्याग कर वियोग की निशानी वेणी को बाँधती है। प्राचीन समय में स्त्रियाँ पति के परदेश जाने पर जूडा आदि न बाँधती थीं, उसी का यहाँ उल्लेख है, कि इन्द्र के नित्य प्रति के वियोग के कारण इन्द्राणी फूलों की माला आदि से सजाकर जूडा नहीं बाँधती, अपितु एक वेणी ही रखती है।

को लेने के लिए दस्युओं का दल साधुओं का रूप धर कर वहाँ पहुँचा, और एकत्र होकर उलटा ने राजा और महात्मा के विरुद्ध षडयंत्र रचने लगे।

(३) जोश और कर्तव्य में बहुत भेद है। अत्याचार देखकर मनुष्य भड़क तो उठते हैं, परन्तु ऐसे समय क्या करना चाहिए, क्या कर्तव्य है इस विचार में तथा उस समय के क्षणिक जोश में बहुत अन्तर है।

(४) अज्ञान ज्ञान से अधिक प्रबल होता है, जल्दी फैलता है, और सत्य की अपेक्षा असत्य की ओर लोग अधिक झुकते हैं। अर्थात् साधारण जन ज्ञान और सत्य की अपेक्षा असत्य और अज्ञान को अधिक अपनाते हैं।

(५) मनुष्य बेमौके कितना ही प्रयत्न करता रहे, पर सफल नहीं होता। पर कभी ऐसा समय होता है जब बिना प्रयत्न के ही या थोड़े से ही यत्न से वह सफल हो जाता है, अतः यह कहा जाता है कि सफलता का भी एक क्षण होता है।

(६) फौजदार की जवानी, जयमल की अनुपम वीरता, फतह-सिंह और उसके इनेगिने साथी राजपूतों की अनूठी बहादुरी तथा चित्तौड़ के रानी के अदम्य साहस की कहानी सुनकर बादशाह अकबर का ही मन कहने लगा—या खुदा, तुमने मुसलमानों को कोई ऐसा वीर, कोई ऐसा बहादुर नहीं दिया जो ऐसा [illegible] हो तथा देश के मान के लिए अपने प्राणों को निछावर [illegible] न करे। सचमुच, राजपूतों की वीरता प्रशंसनीय है।

(७) कौशिल्या चन्द्रगुप्त से कहती है कि मैं इस दशा में रहते-रहते थकी हूँ अब मुझे किसी की भी याद [illegible] हो जाती है, थोड़ा चढ़-जाती है, इस दशा में होने पर [illegible] को सुविधा नहीं होगी, [illegible]

इन आँखो मे खींच रहे हैं स सुत-प्रिया की ये तस्वीर
देख देख कर जिसे हो रहा, मेरा हृदय अधीर अधीर।

५ नीचे लिखे किन्हीं पाँच वाक्यो के अर्थ स्पष्ट लिखो जिसमे उनका भाव स्फुट हो जाय —

(१) पराधीनता से बढ़कर और विडम्बना क्या है ?

(२) होम करते हाथ जले।

(३) आवेश से और कर्तव्य से बहुत अन्तर है।

(४) अज्ञान प्राय प्रबल हो जाता है और असत्य अधिक आकर्षक होता है।

(५) सफलता का भी एक क्षण होता है।

(६) बादशाह—(स्वगत) या खुदा, मुसलमानो को ऐसा एक भी हीरा अता न किया ! वाहरी जवा मर्दी !

(७) चन्द्र०—ऐसा है तो भूल जाओ शुभे ! इस केन्द्रच्युत जलते हुए उल्कापिण्ड की कोई कक्षा नहीं ! निर्वासित, अपमानित प्राणों की चिन्ता क्या।

(१) पर्वतेश्वर ने अलका से प्रण किया था कि मालव युद्ध में वह भाग न लेगा, पर साथ ही उसे डर था कि यूनान के अधिपति सिकदर के कहने पर यदि वह उसे युद्ध में सहायता नही देगा तो उसका राज्य चला जायगा, क्योंकि संधि के अनतर वह स्वतत्र राजा न था, अपितु यूनानियों का क्षत्रप (गवर्नर) था, अत वह अलका से कहता है कि यह बडी आफत है। अलका कहती है कि गुलामी से बढकर दुनियाँ मे और क्या विडवना (मजाक, आफत) हो सकती है, अर्थात गुलामी सब से बडी आफत है।

(२) होम करते हाथ जले का अर्थ है अच्छा काम करते हुए अनिष्ट हुआ। राजा हर्ष और राज्यश्री अपूर्व दान दे रहे थे, उस

'अनुकूल थीं, तुम सब तरह कुल मे सदृश, गुणशालिनी।
सुख दुख सम्पद् विपद् में सब काल था सहकारिणी।
यह जान कर भी छोड़ता हूँ लोक-निन्दा त्रास से।
प्यारी समझना मत कि तुमको प्रेम-रस के ह्रास से।

इससे स्पष्ट है कि रामचन्द्र ने सीता को लोक-निन्दा के भय से छोड़ा था। वे जानते थे कि सीता प्रत्येक तरह से शुद्ध है, रावण उसे जबर्दस्ती पकड़ ले गया था, उसमें सीता का पाप नहीं था। उसके बाद उसकी अग्नि-परीक्षा भी हो चुकी थी फिर भी लोक निन्दा तो चल ही रही थी, लोगों के मुँह को कौन लगाम लगा सकता था। लोगों का कहना था कि यदि राम ने रावण गृह निवासिनी सीता को स्वीकार कर लिया तो हमारी स्त्रियाँ भी यदि दूसरों के यहाँ चली जाया करेंगी तो हमें अपनी छाती पर पत्थर रख कर यह सब सहना पड़ेगा, क्योंकि जब स्वयं राजा के घर में यह अंधेर है तो वह दूसरों को कैसे रोक सकेगा। इन शब्दों में भावी अनाचार के भयकर दृश्य को राम के हृदय ने देखा तो वह काँप उठा। उसके नाम से प्रजा में अनाचार का प्रचार न हो इसके लिये एक आदर्श राजा के समान रामचन्द्र ने बड़े से बड़ा त्याग किया। रामचन्द्र जानते थे कि लोक निन्दक आचार के नाम पर जनता को तथा धर्म परायण प्रजा को भड़का कर शासन में कठिनाई पैदा कर सकते थे। ऐसे समय राम ने सीता का परित्याग कर, स्वयं अपने जीवन के आनन्द पर कुठाराघात कर, शासन का व्यवस्था तथा लोगों को यह कहने का अवसर न दिया 'समरथ को नहिं दोष गुसाईं।" यह सीता के साथ वैयक्तिक अत्याचार था, परन्तु [illegible] सकता है। फलतः रामचन्द्र ने वैयक्तिक जीवन पर भी यह अत्याचार [illegible] था जो उनकी प्रजा को, [illegible] का प्रमाण [illegible]

समय स्मृति उलटा तडपाती है। तब चन्द्रगुप्त कहता है कि हे देवी, यदि ऐसा है, यदि स्मृतियाँ तुम्हें दुख पहुँचाती हैं तो मुझे भूल जाओ, अपने स्थान से गिरते हुए-तारे की क्या गिनती, अर्थात् एक प्रकार के चमकीले पिंड जो कभी कभी रात को आकाश में एक ओर से दूसरी ओर को जाते हुए अथवा पृथ्वी पर गिरते हुए एक स्मृति की रेखा मात्र छोड देते है, जैसे उनकी गिनती नहीं हो सकती, ऐसे ही मेरे क्षणिक परिचय की क्या गिनती करता हो? अपने राज्य मगध से निकाले गये और अपमानित किये गये इस जीवन की चिन्ता भी क्या करनी है।

६ सीता का परित्याग अकारण था अथवा उसका कोई उचित कारण था इसका विचार करो।

जिस सीता का परित्याग करके रामचद्र ने अयोध्या के निज जीवन को वनवास के जीवन के समान बना लिया था, जिसके वियोग मे वे चिरदुखी रहे, उसका परित्याग अकारण तो हो ही नहीं सकता। क्योंकि विना कारण किसी का परित्याग किया जा सकता है, परन्तु बिना कारण अपने जीवन को दुखमय नहीं बनाया जाता। जब हम देखते हैं कि सीता के परित्याग से राम ने अपने जीवन को दुखमय बना लिया, और देश से निकाल देने पर भी सीता को कभी हृदय से नहीं निकाला, अपने हृदयासन पर सीता की सपत्नी को नहीं बैठाया, तब यह तो मानना पडता है कि सीता के परित्याग का कारण अवश्य था, पर क्या वह उचित था अथवा अनुचित यह विचारणीय है। रामचन्द्र के सीता के परित्याग के कारण को नाटककार ने लक्ष्मण के मुख से इस प्रकार कहलाया है—

किसी वस्तु की आवश्यकता है, वह उसे आवश्यकता पूरी करने का आश्वासन देती है, परन्तु भिक्षु अपने कलुषित विचार को प्रकट करने में असमर्थ है अत वह माँगने से इन्कार कर देता है। राज्यश्री को इसका दु ख है।

अब तक राज्यश्री रानी थी, पर अब उसके दिन फिरते हैं। उन का पति मारा जाता है, राज्य छिन जाता है वह बन्दी होती है, वन म दस्युओं द्वारा भगाई जाती है, दस्यु उससे धन माँगते हैं, राज्यश्री धन देने में असमर्थ है। दस्युओं के हाथ मे दिवाकरमित्र उसे छुड़ाते है और वह सती होना चाहती है इतने मे उसका भाई हर्षवर्द्धन आता है। वह उसे चितारोहण से रोकता है और कहता है कि मैंने तुम्हारे लिए कितना रक्तपात किया, मैंने तुम्हारे शत्रुओं का नाश कर दिया। पर उस करुणा की देवी को इससे हर्ष नहीं होता वह कहती है कि तुमने एक मेरी शान्ति के लिए अनेक बहनों को मेरे जैसी दुखिया बनाकर कितना पाप किया है। हर्ष के स्नेह-वश अन्त में वह जीवित रहना मान लेती है पर उसके जीवन का एक ही उद्देश्य रह जाता है—लोकसेवा। वह अपने भाई सम्राट् हर्षवर्द्धन के साथ लौट आती है, उसके दिन पलटते हैं और उसका दानव्रत फिर आरम्भ हो जाता है। वह अपना सर्वस्व दान कर एक वस्त्र ग्रहण करती है। साथ ही वह क्षमा की अवतार भाई राज्यवर्द्धन की हत्या करने वाले गौड़राज नरेन्द्र, दस्युराज शान्तिभिक्षु तथा उसकी भगिनी सुरमा को जीवनदान देती है। इस प्रकार अपने वास्तविक त्याग से उन्हें वश मे कर लेती है।

जयमल की रानी अपने पति के अनुरूप ही वीरांगना राज दुलारी। अपने चरित्र ... वास्तविक विरूपण कर अपने ... ... क्षत्रिय नारि है और अ...

स्वय अपने ऊपर किया । इस प्रकार रामचन्द्र ने सीता का परित्याग कर यह दिखा दिया कि प्रजा के सामने राजा और रानी का व्यक्तित्व कुछ नहीं । इसी कारण तो आज तक वे आदर्श प्रजा-पालक कहे जाते हैं ।

(७) चालुक्य पुलकेशिन् से चन्द्रगुप्त का युद्ध होता होता क्यों रुक गया? ५

चालुक्य पुलकेशिन् से चन्द्रगुप्त का युद्ध कभी नहीं हुआ, और न होता होता रुका । हाँ, चालुक्य पुलकेशिन् और हर्षवर्द्धन का युद्ध होना होता रुक गया था, जिसका वर्णन राज्यश्री नाटक मे आता है । जब दोनों का युद्ध प्रारंभ होने वाला था तब हर्षवर्द्धन को पता लगता है कि उसकी अनाथा विधवा बहिन राज्यश्री कहीं उसी स्थान के आसपास मौजूद है, अत उसका मन उसे ढूँढने के लिए विह्वल हो उठता है और वह युद्ध को रोक देता है ।

(८) राज्यश्री और जयमल की रानी के चरित्रों का विश्लेषण करो ।

अथवा

हर्षवर्द्धन और चन्द्रगुप्त के चरित्रो में किन किन अंशों में समानता है विचार कर लिखो । १०

राज्यश्री बुद्ध की सच्ची अनुयायिनी, करुणा की देवी और क्षमा का अवतार है । नाटक में जब हम पहले पहल उसका दर्शन करते हैं तब हम उसे दान मे व्यस्त पाते हैं । दान के उपकरण और भिक्षु ही वहाँ उपस्थित हैं । दूर दूर से लोग उसके दान की प्रसिद्धि को सुनकर आते हैं । भिक्षुरूपधारी दस्यु शान्तिभिक्षु इसी कारण वहाँ पहुँचा था, पर कलुषित मन के कारण राज्यश्री के रूप सौंदर्य को देखकर उसके मन में वह विकार पैदा होता है, जिसे वह प्रकट नहीं कर सकता, पर राज्यश्री यह समझती है कि उसे

का मुख उज्ज्वल किया। हर्ष को हूणों से युद्ध करना पड़ा था और चन्द्रगुप्त को ग्रीकों (यवनों) से। दोनों इस कार्य में सफल हुए। ये ही दोनों के चरित्र में समानताएँ हैं।

(९) दौलतराम बिहारी। महापकड़-गूजरगण। चतरसिंह टोडरमल। सुरमा देवगुप्त। कमला कुमारसिंह। इन पात्रों का परिचय दो और यह भी लिखो कि ये किस किस नाटक में आते हैं।

दौलतराम-बिहारी—दौलतराम महाकंजूस सेठ है, जो न स्वयं खाता पीता है और न अपनी पत्नी और संतान को खिलाता है। इसकी सूद की दर बहुत अधिक है। गरीब असामियों का घर लिखवा लेना, उन्हें राह का भिखारी बना देना आदि उसके साधारण काम है, अतएव उसके मुँह देखने को ही अपशकुन समझा जाता है।

बिहारी सेठ दौलतराम का बहनोई है, जिसकी औरत मर चुकी है। यह दौलतराम को शिक्षा देने के लिए एक नाटक रचता है। एक बड़ा भारी षड्यन्त्र रच कर वह दौलतराम को विश्वास दिला देता है कि दौलतराम मर गया। उसके मरने के बाद लोग कितने खुश होंगे, कंजूसी से इकट्ठा हुआ उसका रुपया किस तरह उसके बेटे तथा दूसरे रिश्तेदार उड़ाएँगे इसका नाटक वह दौलतराम को आँखों दिखा देता है, जिससे दौलतराम को शिक्षा मिल जाती है। ये दोनों पात्र 'सूम के घर धूम' नाटक में आते हैं।

महापकड़—गूजरगण—

अचलायतन नामक एक बहुत संकीर्ण विचार वालों मठ है, जहाँ नई हवा या नये विचारों को रोकने के लिए बड़ी बड़ी दीवारें खड़ी की गई हैं, और जहाँ कोई कोई पाप में पड़ जाता है और फिर उस पाप के लिए अनेक प्रकार प्रायश्चित्तों का

हमारा पिता। वसुधरा हमारी माँ है। आन हमारा जीवन है, पवित्रता हमारा पुण्य, बलिदान हमारा कृत्य है, और दृढता हमारा धर्म है।" क्षत्रियाणी की तरह उसे युद्ध की प्यास है। जननी जन्म भूमि की रक्षा के लिए वह पति को निछावर कर देती है, जन्म-भूमि की आन की रक्षा के लिए वह अपनी राजप्रतिष्ठा को विसार कर गायिका का रूप धारण करती है। जो गायन उसने अपन पति को मुग्ध करने के लिए सीखे थे, उन्हीं म वह मुगल-सम्राट् को रिझा कर उसका अत करना चाहती है, पर वह उस प्रयत्न में विफल होती है। तब वह नायक रहित सेना का स्वय नेतृत्व करती है, और साक्षात् चडिका की तरह शत्रु-दल का सहार करती है, पर पकडी जाती है। इस ओर से भी विफल होने पर वह राजपूत-रमणियों के सतीधर्म को स्वीकार करने को उद्यत होती है, बीच में उसकी भावी दामाद, क्षणिक कमजोरी प्रकट करता हुआ कहता है कि समय के लिए बचा रहना राजनीति है और इस तरह चितारोहण करने से उसे रोकता है। पर यह अपमान जनक बात सुनते ही रानी आग बबूला हो जाती है। अत में वह अग्नि पुत्री अनेक वीरागनाओं के साथ अग्नि की ही गोद में समा जाती है।

हर्षवर्द्धन और चन्द्रगुप्त दोनों दो भिन्न भिन्न युगों को प्रतिनिधि हैं। समय-भेद के कारण दोनों के चरित्रों में पर्याप्त विभिन्नताएँ पाई जाती हैं। हर्ष बौद्ध है, चन्द्रगुप्त हिन्दू है अतएव दोनों के आदर्श विभिन्न हैं। यदि दोनों के चरित्र में कोई समानता कही जा सकती है तो वह यही कि दोनों वीर हैं। अनेक युद्धों में जयी हो कर दोनों ने बड़े-बड़े साम्राज्य बनाये। इसके अतिरिक्त दोनों ने ही विदेशी आक्रान्ताओं को नीचा दिखाकर भारत

(ग) अकबर के दरबार में कई मन्त्री तथा रत्न थे। परन्तु अकबर को इनमें सब से अधिक बीरबल पर स्नेह था। साधारण तया बीरबल अकबर की बहुत सी गाथाएँ प्रसिद्ध हैं। इस नाटक में भी बीरबल की अन्य मन्त्रियों से उत्तमता दिखाई गई है। अपने सब सेनापतियों तथा मन्त्रियों के होते हुए भी अकबर बीरबल पर ही चित्तौड़ के घेरे का उत्तरदायित्व सौंपता है तथा हाथ जोड़कर और मित्रता के नाम पर अपील कर उसे स्वीकार करने को कहता है। आगे भी जयमल की रानी को [illegible] पर पहुँचाने का काम अकबर बीरबल को ही सौंपता है यही उसकी अन्य मन्त्रियों से उत्तमता का सब से बड़ा प्रमाण है।

प्रश्नपत्र ४

१ स्वप्न-वासवदत्ता और विक्रमोर्वशी—इन नाटकों में नायक और नायिका के चरित्र की तुलना कर इनके कवियों का संक्षिप्त परिचय दो।

अथवा

वेणीसंहार नाटक और मुद्राराक्षस इनके नामों में क्या अर्थ है? इनके नायक और प्रतिनायकों के चरित्र की तुलना करो। १०

२—यह प्रश्न नाट्यकला में से है, जो अब पाठविधि में नहीं है, अतः इसका उत्तर नहीं दिया गया।

३ (क) गान्धारी ने श्रीकृष्ण को क्या शाप दिया और क्यों दिया?

(ख) अहिल्याबाई के वैधव्य जीवन का विशेष विवेचन करते लिखो। १०

३—गान्धारी ने श्रीकृष्ण को निम्नलिखित शाप दिया था—कृष्ण, तुमने परस्पर लड़ने को तैयार कौरवों और पा

(ग) अन्य मन्त्रियों से बीरबल की उत्तमता सप्रमाण सिद्ध करो। ५

(क) कवि वाल्मीकि ने लव और कुश को सीता के परित्याग से आगे की कथा दो कारणों से नहीं बताई। एक तो वे उनको उनके जन्म का वृत्तान्त न बतलाना चाहते थे। यदि वे सीता-परित्याग के आगे की कथा बता देते, तो लव-कुश को पता लग जाता कि वे ही उस निष्ठुर की सन्तान हैं। वे शायद अपने पिता पर क्रोध करते, वे जानते थे कि सूर्यवंशी रामचन्द्र जैसा प्रतापशाली और प्रजावत्सल राजा त्रैलोक्य मे नहीं है। अतएव वास्तविकता का ज्ञान होने पर राम की निष्ठुरता के कारण उनकी भक्ति में शायद कमी आ जाती। दूसरा बड़ा कारण यह था कि वाल्मीकि का उद्देश्य किसी प्रकार कुश और लव को रामचन्द्र द्वारा स्वीकृत कराना और उन्हें उनका अधिकार दिलाना तथा सीता का पति से पुनर्मिलन कराना था। ऐसे समय यदि वे कुश लव के मुँह से ही यह कहलाते कि वे ही सीता के पुत्र हैं, तब यह विश्वसनीय न होता, और न उसमे नाटकीय गौरव ही होता। अतएव वाल्मीकि ने कुश लव को सीता के परित्याग के आगे की कथा न बताई, वरन् कण्व ऋषि द्वारा उस समय कहलाई, जब सब उसको सुनने के लिए उत्सुक थे।

(ख) मगध-निवासी ब्राह्मण चणक प्रसिद्ध मौर्य-साम्राज्य के वास्तविक संस्थापक तथा अर्थशास्त्री चाणक्य का पिता था। मगध-नरेश नन्द ने अपने ब्राह्मण मंत्री शकटार को पदच्युत करके बंदीगृह में डाल दिया था। अब ब्राह्मण चणक ने उस अत्याचार के विरुद्ध आवाज उठाई। नन्द ने उसे शकटार का सहकारी जानकर राज्य से निर्वासित कर दिया, तथा उसका सर्वस्व बौद्ध-विहार को दे दिया।

उसकी भी एक वर्ष के भीतर मृत्यु हो गई। पति, ससुर और पुत्र की मृत्यु से अहिल्याबाई का हृदय छलनी हो गया था, पर फिर भी राज्य कार्य की उसने उपेक्षा न की। इसी समय उसका वृद्ध मंत्री गंगाधरराव अपने किसी निकट सम्बंधी को गोद लेने के लिए उसे विवश करने लगा। जब अहिल्याबाई ने न माना, तब वह राघोबा से जा मिला। दोनों ने मिलकर इन्दौर की ओर प्रयाण किया। अहिल्याबाई ने भोंसिला से सहायता प्राप्त की तथा स्वयं रण-वेष धारण कर सेना के साथ आगे बढ़ी। उसको युद्ध के लिए तैयार देखकर राघोबा डर गया और उसने सन्धि कर ली।

अकेली अहिल्याबाई को राज्य पर देख कर चोर और डाकुओं ने प्रजा को सताना आरम्भ किया। तब अहिल्याबाई ने घोषणा की कि जो कोई नवयुवक चोर-डाकुओं को भगा कर राज्य में शान्ति स्थापित कर देगा, उससे मैं अपनी एक मात्र कन्या का विवाह कर दूँगी। यह सुन यशवन्त राव फाणशे नामक मराठा नवयुवक ने इस काम का बीड़ा उठाया और दो वर्ष के भीतर ही उसने चोर लुटेरों की इन्दौर से जड़ ही काट दी। प्रतिज्ञानुसार अहिल्याबाई ने उसे अपनी कन्या सौंप दी। इसके अतिरिक्त जंगली भीलों के रहन सहन तथा आजीविका का प्रबन्ध कर देवी अहिल्या ने भीलों की उद्दंडता और डाके अत्याचार का समाप्त कर दिया।

राघोबा ने संपत्ति की लालसा से एक बार इन्दौर पर फिर आक्रमण किया। इस बार अहिल्या ने महिलाओं की सेना तैयार कर उसका सामना किया। राघोबा के सरदारों ने स्त्रियों पर शस्त्र चलाना स्वीकार न किया, फलतः राघोबा को लज्जित होकर लौटना पड़ा।

राज्य की इन व्यवस्थाओं के अतिरिक्त देवी अहिल्या ने

रोका, और इस तरह उनका सर्वनाश होने दिया, इसलिए हे गोविंद, तुम भी इसी प्रकार अपने बंधु-बांधवों का नाश देखोगे। आज से छत्तीसवें वर्ष, तुम्हारे बंधु, तुम्हारे अमात्य, तुम्हारे भृत्य सब परस्पर लड़कर नष्ट हो जाँयगे, और तुम अनाथ की तरह बिल्कुल एकान्त में बिना किसी से देखे गए मरोगे, तथा तुम्हारी स्त्रियाँ भी भरत-कुल की इन स्त्रियों के समान पुत्रों और बंधु-बांधवों के नाश से व्याकुल हो भूमि पर गिरेंगी।

गांधारी ने यह शाप कृष्ण को इसलिए दिया था क्योंकि वह समझती थी कि क्रोध में आकर जब कौरव और पांडव एक दूसरे का विनाश कर रहे थे, तब कृष्ण ही ऐसे व्यक्ति थे, जो शक्त थे, समर्थ थे, और बलपूर्वक दोनों पक्षों को युद्ध से रोक सकते थे। इतने पर भी कृष्ण ने युद्ध को नहीं रोका और कौरवों का सर्वनाश होने दिया, यह उसका बड़ा भारी अपराध था।

(ख) पति की मृत्यु के बाद विधवा अहिल्या पति के शव के साथ ही सती होना चाहती थी, परन्तु उसके वृद्ध ससुर मल्हारराव ने बिलख-बिलख कर उसे रोका और विधवा अहिल्याबाई के कंधों पर राज्य के आंतरिक कार्यों का भार डाल उसने स्वयं सेना के साथ बाहर ही रहना प्रारंभ किया। घर में रह कर अहिल्याबाई ही वार्षिक कर लेती, आय-व्यय का लेखा देखती और उसे जाँचती थी। थोड़े दिन बाद मल्हारराव ने राजकीय कार्य के संपूर्ण कागज पत्र देवी अहिल्या के नाम कर दिये और पेशवा को भी सूचित कर दिया।

उत्तरी भारत की ओर आक्रमण के लिए प्रस्थान करते हुए मल्हारराव का दुर्भाग्य से रास्ते में ही देहान्त हो गया। अब अहिल्याबाई के पुत्र मालीराव को गद्दी पर बैठाया गया, पर

जो द्युलोक से ऊपर है, जो पृथिवी से नीचे है, जो इस द्युलोक और पृथिवी के बीच में है जिसको भूत, वर्तमान और भविष्यत् कहते हैं, वह किस में ओतप्रोत है। याज्ञवल्क्य ने उत्तर दिया—आकाश में। गार्गी ने फिर पूछा आकाश किस में ओतप्रोत है? याज्ञवल्क्य बोले—आकाश उस अक्षर में ओतप्रोत है, जिसका न आकार है, न रूप है, न रंग है, न गंध है, न इंद्रिय है। जो अनादि है, अविनाशी है, जिसकी आज्ञा में सूर्य और चन्द्र नियमित रूप से चलते हैं। जिसकी आज्ञा से दिन, रात, महीना, ऋतु आदि होती हैं। जो स्वयं दिखाई नहीं देता पर जो सारे संसार को देखता है। जो जाना नहीं जाता पर जो सारे संसार को जानता है, उसी अक्षर में यह आकाश कपड़े में सूत की तरह ओतप्रोत है।

गार्गी के पिता का नाम वचक्नु था, अतः वह वाचक्नवी कहलाती थी।

५ निम्नलिखित पद्यों के आधार पर दुर्गावती और चाँदबीबी की तुलनात्मक घटनाएँ लिखो — १०

(क) धन्य सती दुर्गावती गढ़मण्डल की शान।
रखा गोंडवाने तुम्हीं स्वदेश धर्म की आन॥

(ख) मुगलन पै हरती मनो [illegible] लखि [illegible]।
अकबर भर मर्दन कियो धनि सुलताना चाँद॥

दुर्गावती और चाँदबीबी दोनों ही भारतीय इतिहास के उज्ज्वल नक्षत्र हैं। दोनों को ही अपने अपने पति की मृत्यु के पश्चात् राज्य का शासन-सूत्र अपने हाथ में लेना पड़ा। दोनों ही ने इस शासन भार को कुशलता तथा सफलता से निभाया। दोनों ही [illegible] दुर्ग [illegible] ने पराधीनता स्वीकार करने या [illegible] इसके करते मृत्यु को पसन्द किया [illegible]

तीर्थ स्थानों पर मन्दिर, घाट, धर्मशालाएँ बनवाईं। परन्तु विधाता उस पर चोट पर चोट कर उसकी परीक्षा ले रहा था। उसके नाती तथा दामाद की मृत्यु हो गई, उसकी इकलौती बेटी अपने पति के शव के साथ सती हो गई। इस तरह दुखों से जर्जर होते हुए भी ३० वर्ष तक शान्ति से शासन कर सन् १७९५ में वह स्वर्ग सिधार गई।

३. चाणक्य ने राक्षस को वश में करने के लिये क्या क्या प्रयत्न किये, और वह कैसे सफल हुआ? क्या राक्षस ने भी उनका कोई उचित प्रतिकार किया था, फिर विफल क्यों रहा? १०

यह प्रश्न नाट्यसुधा में से है, जो अब कोर्स में नहीं है, अत उत्तर नहीं दिया गया।

४ गार्गी ने याज्ञवल्क्य से क्या प्रश्न किये और महर्षि ने उनका क्या उत्तर दिया? गार्गी को "वाचक्नवी" क्यों कहते थे अपनी भाषा में विस्तार से वर्णन करो। १०

गार्गी ने याज्ञवल्क्य से पूछा था—"भिन्न-भिन्न लोक क्रमश किस किस लोक में ओतप्रोत हैं" महर्षि ने उत्तर दिया था कि ससार के सब पदार्थ जल मे ओतप्रोत हैं, जल वायु में, वायु अतरिक्ष लोक में, अतरिक्ष लोक गधर्व लोक में, गधर्व लोक आदित्य लोक मे, आदित्य लोक चद्र लोक में, चद्र लोक नक्षत्र-लोक में, नक्षत्र लोक देवलोक मे, देवलोक इन्द्रलोक में, इन्द्रलोक प्रजापति लोक में और प्रजापति लोक ब्रह्मलोक में ओतप्रोत है। तब गार्गी ने प्रश्न किया कि ब्रह्मलोक किस लोक में ओतप्रोत है। इस पर महर्षि बोले—गार्गी ब्रह्म देवता में अधिक प्रश्न नहीं हो सकता, यह समाधि से जाना जाता है। यह सुन गार्गी गभीर विचार में डूब गई। पर कुछ देर के बाद गार्गी ने फिर दो प्रश्न किये।

कर उसने उसी समय वहाँ दीवार चिनवा दी। इस बीच में उसने किले की सब तोपों को उस ओर ही करा दिया जिससे असंख्य मुगल-सेना मारी गयी, मुराद यह समझ गया कि अहमदनगर को जीतना लोहे का चना चबाना है। वह बुरी तरह अपमानित हुआ। एक स्त्री ने उसे हरा दिया।

अकबर ने अपने दूसरे पुत्र दानियल को दुबारा अहमदनगर को जीतने का प्रयत्न करने को भेजा। सुलताना के पास सेना कम थी, पर उसने निश्चय किया था कि वह लड़ते-लड़ते प्राण दे देगी पर अहमदनगर को न छोड़ेगी और न आत्मसमर्पण करेगी। मुगल-सेना बढ़ती चली आ रही थी। उसने अपने तोपखाने के अध्यक्ष हामिदखाँ को सलाह के लिए बुलाया। बातचीत करते करते उस विश्वासघाती ने सुलताना की छाती में कटारी भोंक दी। बहादुर सुलताना वहीं गिर पड़ी। उसके न रहने पर अहमदनगर अकबर के हाथ आ गया, पर जीते जी उस सिंहनी ने अकबर के पुत्र को मर्दन कर अहमदनगर से मुगलों को मार भगाया था, उन्हें अहमदनगर में दूर न घुसने भी न दिया था। सचमुच ही वह धन्य थी।

दुर्गावती और चाँदबीबी इन दोनों वीरांगनाओं की वीरता की कहानियाँ सदा अजर अमर रहेंगी।

५ (क) जीमूतवाहन ने क्या अलौकिक कार्य किया, जिससे कि वह दयावीर विख्यात हुआ?

अथवा

श्रीसीता जी "आदर्श रमणी" थीं, राम ने लोकापवाद से फिर उनका निर्वासन क्यों किया, इस विषय पर दोनों [illegible] बताकर अपने विचार प्रकट करो।

शासन की देख-रेख कर रही थी। इतने में उसे पता लगा कि उसके पिता के राज्य में गृह-कलह मचा हुआ है और मुगल-सम्राट् अकबर उसे अपनी साम्राज्य-लिप्सा का शिकार बनाने की सोच रहा है तथा स्वयं शाहजादा मुराद विशाल सेना के साथ अहमदनगर को पराधीन बनाने आया है। यह सुन वह रण सिंहिनी अपनी बीजापुर की माँद से निकल कर अहमदनगर जा पहुँची और उसने मुराद को कहला भेजा कि यदि हमें पराधीन बनाने की इच्छा से आओगे तो जब तक हमारे सैनिकों में रक्त की बूँद रहेगी, तब तक हम तुम्हें अहमदनगर पर अधिकार न करने देंगे। उस सिंहनी के गर्जन को सुन कर मुराद ने असंख्य मुगल सेना के साथ अहमदनगर को चारों ओर से घेर लिया। मुराद किले को बारूद से उड़ा कर भीतर घुसना चाहता था, पर कहीं से यदि किले की दीवार टूट जाती तो सुलताना स्वयं अपने सामने उसकी मरम्मत करा देती। मुराद घबरा गया। उसने नीचे ही नीचे किले के फाटक तक सुरंग खुदवा कर बारूद भरवा दी और सुलताना को पुकार कर कहा कि या तो आत्म समर्पण कर दो नहीं तो कल सवेरे तक किला मिट्टी में मिल जायगा। परन्तु वह दृढ़ थी। कुदाल हाथ में लेकर रानी ने स्वयं अपने दल को साथ ले रात भर खोद कर बारूद को नष्ट कर दिया। अपने महीने भर का काम इस तरह बरबाद होते देख मुराद बड़ा निराश हुआ। एक और ऐसा स्थान था जहाँ बारूद भरी गई थी, पर सुलताना को जिसका पता न लगा था। शाहजादा ने तत्क्षण उसमें आग लगाने की आज्ञा दी। बारूद के फटने से एक स्थान पर दीवार फट गई। किंतु चाँदबीबी चेहरे पर नकाब डाले हाथ में नगी तलवार ले खुद वहाँ पहुँची, और सिपाहियों को प्रोत्साहन दे

(५) प्रभो! किस चिन्ता ने आपकी शान्ति का अपहरण कर लिया है?

(६) तात! असहिष्णुता भी क्षमी वीर को शोभा देती है।

(७) उसी पूर्णचन्द्र से यह वज्राघात हुआ। १४

(१) गान्धारी कृष्ण से कहती है—हे कृष्ण, समय की उलट पुलट बड़ी बलवान है, उसके बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता। मेरा बेटा दुर्योधन चार दिन पहले चक्रवर्ती सम्राट् था और आज ज़मीन पर गिरा पड़ा है।

(२), (३), (६) तथा (७) नाट्यसुधा में से हैं अतः इनका उत्तर नहीं दिया गया।

(४) वीर माता विदुला युद्ध से हार कर तथा भाग कर आते हुए अपने पुत्र संजय से कह रही है—अरे कुलघातक, कुल की कीर्ति को नष्ट करने वाले, साँप के मुँह में हाथ डाल कर उसके दाँत निकालने की कोशिश करते हुए प्राण दे देना अच्छा है अर्थात् युद्ध में लड़ते-लड़ते मर जाना अच्छा है, पर कायर की तरह बिस्तरे पर पड़े-पड़े मरना अच्छा नहीं।

(५) सीता के प्रति जनता में जो लोकापवाद फैला था, उसे सुनकर रामचन्द्र जी सोच रहे थे कि क्या किया जाय? प्रजा की प्रसन्नता के लिए सीता का परित्याग करना आवश्यक था, दूसरी ओर उन्हें सीता से प्रेम था। इसी अवसर पर राम चन्द्र जी ने सलाह के लिए अपने भाइयों को बुलाया। भाई आ गये, पर रामचन्द्र जी नीचा मुँह करके बैठे रहे तब लक्ष्मण ने उनसे पूछा—राजन किस चिन्ता ने आपको शान्तिहीन कर दिया है, अर्थात् आप किस सोच में डूबे हैं?

(ख) शकुन्तला "सर्वोत्तम नाटक" क्यों गिना जाता है ? महर्षि "कण्व" ने शकुन्तला की विदाई के समय उसे क्या उपदेश दिया ?

(क) नाट्यसुधा में से है जो अब पाठविधि में नहीं है अत उत्तर नहीं दिया गया।

(अथवा)

श्री सीता जी 'आदर्श रमणी' थीं फिर भी राम ने लोकापवाद से उनका निर्वासन कर दिया, क्योंकि वे राजा थे, वे प्रजारंजन के लिए बाध्य थे, लोकमत की अवहेलना न कर सकते थे। वे जानते थे कि जनता जिस राजा की अपकीर्ति करती है, उसका अवश्य अध पात होता है। प्रजारंजन का कार्य इक्ष्वाकु-वंशियों की पैतृक सम्पत्ति थी और प्रजा की अप्रसन्नता में ही रघुवंश की अपकीर्ति थी। जिस रघुवंश की कीर्ति के लिए महाराज दशरथ ने अपने प्राण होम दिये थे, फिर उनके पुत्र उसी रघुवंश की विमल कीर्ति पर लाञ्छन किस प्रकार सह सकते। प्रजारंजन के कठिन व्रत को पूर्ण करने के लिए ही रामचन्द्र ने निरपराधिनी आदर्श रमणी को अपने राज्य से निर्वासित किया था, फलत अपने जीवन को भी चिरदुखी बना लिया था।

(ख) यह प्रश्न नाट्यसुधा में से है अत उत्तर नहीं दिया गया।

• नीचे लिखे गद्यांशों का प्रकरण दिखाकर भाव-अर्थ स्पष्ट करो—

(१) हे मधुसूदन ! काल का विपर्यय बड़ा बलवान है।

(२) प्रजारंजन का कार्य इक्ष्वाकु-वंशियों की पैतृक सम्पत्ति है।

(३) हे सर्वदमन ! शकुन्त-लावण्य देखो।

(४) अरे कुलघातक ! सर्प के मुख में हाथ डालकर उसके दाँत निकालने के प्रयत्न में प्राण देना श्रेयस्कर है।

राजपूत वीर मारे गये, तब यह अपनी अनेक साथियों के साथ जौहर की ज्वाला में जल गई थी। इसके बारे में अनेक कथाएँ प्रचलित हैं। इतिहासकार टाड पद्मिनी को सिंहलद्वीप के राजा हम्मीरसिंह चौहान की बेटी तथा चित्तौड के राजा भीमसिंह की पत्नी मानते हैं। कहा जाता है कि वह अत्यंत सुन्दरी थी। दिल्ली के बादशाह अलाउद्दीन ने उसकी सुंदरता की कहानी सुनकर उसे पाने के लिए चित्तौड पर आक्रमण कर दिया। भयंकर युद्ध के बाद जब अलाउद्दीन उसे पा न सका तब उसने दर्पण में उसका प्रतिबिंब देखकर वापिस लौट जाने का वचन दिया। राजपूतों ने यह बात मानली। अलाउद्दीन दर्पण में पद्मिनी का प्रतिबिम्ब देखकर वापिस लौट रहा था, तब भीमसिंह उसे पहुँचाने के लिए किले के बाहर तक आए। अलाउद्दीन ने उन्हें कैद कर लिया। यह देख पद्मिनी ने भी चालाकी का उत्तर चालाकी से देना चाहा। वह सात सौ पालकियों को सजाकर सुलतान के दरबार में पहुँची, वहाँ उसने कहला भेजा कि अंतिम बार आध घंटे के लिए वह अपने पति से मिलकर उसके पास आजायगी। सुलतान ने यह मंजूर कर लिया। जब भीमसिंह पद्मिनी से मिलने आए तब पालकियों में से वीर राजपूत निकल आये और उनमें से कुछ भीमसिंह को लेकर भाग गये, शेष वहीं युद्ध करते हुए मारे गये। इस तरह अलाउद्दीन की हार हुई, और वह दिल्ली को लौट गया। कुछ दिन बाद उसने फिर चित्तौड पर आक्रमण कर उसको स्वाहा कर दिया, तब पद्मिनी ने अपनी सखियों के साथ जौहर रच डाला। इस तरह विषयी सुलतान से उसने अपनी इज्जत की रक्षा की।

विदुला [illegible] नरेश की रानी थी। उसके पति की मृत्यु के [illegible] ने सौवीर प्रान्त पर आक्रमण कर दिया।

८ निम्नलिखित पद्यों का प्रसंग दिखाकर सरल अर्थ करो —

(क) सकल-मधुप रस-पान करि, मधुप-रसिक सिरताज।
जो मधु त्यागत ताहिले, होत सबै जग काज॥

(ख) क्यों न धारिये सीस पे, वह जौहर की राख।
भव-तनु-भूषन-भस्म ते जो पुनीत लखचार॥

(ग) जयति जयति गिरिराज किशोरी ?
विकसित-अमल-कमल-केसर के सुचिपराग की डोरी,
हे प्रसन्न मन वाञ्छित फल वेगहि सिद्ध करोरी। ३

(क) और (ग) नाट्यसुधा में से हैं, जो अब पाठ विधि में नहीं है अत उत्तर नहीं दिया गया।

(ख) जब चित्तौड पर आक्रमण कर अलाउद्दीन ने उसका सर्वनाश कर दिया था, उसके सब वीर युद्ध भूमि में लड़ते लड़ते मारे गये थे, तब अनिन्द्य सुंदरी पद्मिनी तथा उसकी अनेक साथिनों ने विधर्मी शत्रुओं के हाथ से अपमानित होने से बचने के लिए जौहर की ज्वाला में अपने प्राण स्वाहा कर दिये थे। कवि उनके उस त्याग की प्रशसा करता हुआ कहता है कि जिस आग मे पद्मिनी आदि वीरांगनाओं ने अपने प्राण होम दिये थे जौहर की उस राख को सिर पर क्यो न धारा जाय, सिर पर क्यों न लगाया जाय, क्योंकि वह राख शिव के शरीर पर मली गई भस्म से भी लाखों गुणा अधिक पवित्र है।

९ निम्नलिखित व्यक्तियो का सक्षिप्त परिचय दो —
पद्मिनी, विदुला, अश्वत्थामा, चन्दनदास और कण्व। १०

पद्मिनी चित्तौड़ के राजा रत्नसेन की रानी थी। दिल्ली के सुलतान अलाउद्दीन ने जब चित्तौड को ध्वंस कर दिया और सब

योग्य सेनापति है। उसे युद्ध-कला से किसी तरह का परिचय न था, पर अरकाट की लड़ाई में उसने जो ढंग अपनाये, युद्ध विद्या के आचार्यों को भी शायद वे ही ढंग अपनाने पड़ते। उस युद्ध से अंगरेज़ों का उद्देश पूरा हो गया, और फ्रांसीसियों के हाथ में जो कुछ था, वह भी निकल गया। इसके बाद क्लाइव इंगलैंड वापिस चला गया था। १७५६ में जब वह फिर वापस आया तब बंगाल के नवाब सिराजुद्दौला और अंगरेज़ों की लड़ाई चल रही थी। आते ही उसने अपने साथी वाटसन को मिलाकर थोड़ी सी सेना के साथ कलकत्ते की ओर कूच कर दिया, और बहुत मामूली युद्ध के बाद कलकत्ते पर अधिकार कर लिया और हफ्ते भर बाद हुगली भी ले लिया। इस पर सिराजुद्दौला को अंगरेज़ों के साथ संधि करनी पड़ी, पर उसी घड़ी वह संधि टूट गई। फलस्वरूप प्लासी के मैदान में फिर युद्ध हुआ। इस युद्ध में भी क्लाइव ने विजय पाई। इसमें उसकी प्रसिद्धि बहुत बढ़ गई। इंगलैंड के महामंत्री पिट ने उसे दैवी सेनापति की उपाधि दी। सिराजुद्दौला को उतार कर मीर जाफर को बंगाल का नवाब बनाया गया, पर सारी शक्ति क्लाइव के हाथ में आगई। अंगरेज़ों को २४ परगना नाम के बड़े से इलाके पर ज़मींदारी का अधिकार मिल गया। इस प्रकार इस विजय से भारत में अंगरेज़ी राज्य की नींव पड़ गई।

इसके बाद क्लाइव के समय में ही वांडिवाश के मैदान में अंगरेज़ों और फ्रांसीसियों की ताकत का फैसला होगया और फ्रांसीसियों की शक्ति प्रायः समाप्त हो गई। स्वास्थ्य खराब होने के कारण क्लाइव फिर इंगलैंड लौट गया। इस समय नवाबों की ताकत तो मारी गई थी, पर कंपनी के अधिकारी शासन को ठीक संभाल न सके थे। इस प्रकार चारों ओर गुण्डागर्दी फैल रही

विदुला का पुत्र सजय युद्ध मे पीठ दिखाकर लौट आया। इस पर उस वीर माता ने अपने पुत्र की बहुत भर्त्सना की। उसे बहुत बुरा भला कहा, तथा युद्ध के लिए प्रोत्साहित किया। माता के तीव्र वाक्य बाणों से उत्साहित हो सजय ने फिर युद्ध किया, और विजयी हुआ।

अश्वत्थामा, चन्दनदास और कण्व का वर्णन नाट्यसुधा मे है, जो अब कोर्स में नहीं है, अत. इनका परिचय नहीं दिया गया। भारतीय महिला में एक स्थान पर अश्वत्थामा का नाम आया है। वहाँ केवल इतना लिखा है कि महाभारत युद्ध स बचे हुए तीन कौरव वीरों में वह एक था।

प्रश्नपत्र ५वाँ

१ क्लाइव की जीवनी पर एक नोट लिखो और यह बताओ कि अमीचद का उसके साथ क्या सम्बन्ध था? १२

क्लाइव भारत में अगरेजी राज्य का सस्थापक कहा ज...
वह सन् १७४८ में ईस्टइडिया कपनी के लेखक के रूप/...
में आया था। पर शीघ्र ही उसने कलम रखकर ...
... मे जब अगरेज और फ्रासीसी
पड़कर अपना अपना स्वार्थ सिद्ध कर ...
जब काट रहे थे, उस समय अग्रेजों की
क्लाइव को दिया जाता है जिसने
को जीत मे तथा फ्रासीसियों को जीत
...। करनाटक की दूसरी लड़ाई मे यह

ल्या गया। चेतसिंह एक खिड़की के रास्ते अपने महल से बाहर निकल भागा और ग्वालियर की ओर चला गया। चेतसिंह का राज्य छीन लिया गया और उसकी जगह उसका भतीजा राजा बनाया गया।

राजा राममोहन राय—ये बंगाल के रहने वाले थे। बीसवीं शताब्दी के ये बड़े प्रसिद्ध समाज-सुधारक माने जाते हैं। इन्होंने इंग्लैंड में जाकर उच्चकोटि की शिक्षा प्राप्त की। पाश्चात्य सभ्यता के ये बड़े प्रेमी थे। इन्होंने ब्रह्म समाज की नींव डाली। बंगाल में स्त्री पुरुषों में पाश्चात्य शिक्षा फैलाने सती प्रथा बन्द कराने तथा और अनेक सुधारों में इन्होंने बड़ा भाग लिया।

रौलट ऐक्ट—यूरोपीय महाभारत के समय भारत को अधिकार देने की बड़ी बड़ी घोषणाएँ की गई थी। पर युद्ध की समाप्ति पर भी भारतीय शासन में कोई बड़ा परिवर्तन होते न देखकर स्वतन्त्रता प्रेमी भारतीय उद्विग्न हो उठे। कई स्थानों में स्वतन्त्रता प्रेमी नवयुवकों ने हिंसात्मक पथ को भी अपनाया। इन आक्रमणों को रोकने के लिए भारत सरकार ने मि० रौलट की अधीनता में एक कमेटी बैठाई और इसकी सिफारिशों के आधार पर सरकार ने रौलट ऐक्ट नामक काला कानून पास किया, जिसके द्वारा सरकार को इन षड्यन्त्रों को दबाने के लिए असीमित शक्ति प्राप्त हो गई। समस्त भारतीय जनता के विरोध करने और नेताओं की सख्त आलोचनाओं पर भी यह ऐक्ट वापिस नहीं लिया गया। इस रौलट ऐक्ट का विरोध करने के लिए महात्मा गांधी ने शान्तिमय और अहिंसात्मक सत्याग्रह आन्दोलन आरम्भ [illegible] भर में ६ अप्रैल सन् १९१९ को सत्याग्रह दिवस मनाया [illegible] । उस दिन देश भर में पूर्ण हड़ताल होनी थी।

को केवल अपने धर्म, जन्मस्थान, वर्ण या जाति के कारण कम्पनी के किसी भी पद से वंचित नहीं रक्खा जायगा यह विधान बनाया गया।

सती—बहुत दिन से यह प्रथा चली आ रही थी कि हिन्दू विधवाएँ अपने मृत पति के शव के साथ चिता में जल मरती थीं। अधिकांश अवसरों पर वे खुद प्राण त्यागने को तत्पर नहीं होती थीं, परन्तु उनके कुटुम्बी उन्हें पति के शव के साथ जल मरने को बाधित करते थे। लार्ड विलियम बैंटिक ने सन् १८२९ में एक कानून बनाया जिसके अनुसार इस सती प्रथा को ग़ैर कानूनी ठहराया गया और घोषणा कर दी गई कि जो पुरुष इसमें सहायता देंगे, वे कानून की निगाह में हत्या के अपराधी समझे जायँगे।

चेतसिंह—चेतसिंह बनारस का राजा था। वह पहले अवध के अधीन था, किन्तु सन् १७७५ में उसने कम्पनी की प्रभुता स्वीकार कर ली थी। वह कम्पनी को साढ़े बाईस लाख रुपया सालाना कर दिया करता था। सन् १७७८ ई० में जब अंगरेजों और फ्राँसीसियों में लड़ाई हुई तब हेस्टिंग्ज ने उस से कर के अलावा ५ लाख रुपया और २ हजार सवार माँगे। चेतसिंह ने रुपया दे दिया। सन् १७८० ई० में फिर उससे रुपया माँगा गया। तब उसने २ लाख रुपया हेस्टिंग्ज को भेंट किया। तीसरी बार चेतसिंह से फिर रुपया माँगा गया, किन्तु इस बार उसने देने में आनाकानी की और उसे देने में देर हुई। इस पर हेस्टिंग्ज ने उस पर ५० लाख रुपया जुर्माना किया और उसे वसूल करने के लिये स्वयं बनारस गया। वहाँ जाकर उसने राजा को पकड़ने की चेष्टा की, जिससे सारे नगर में विद्रोह फैल गया। गवर्नर जनरल को भागकर चुनार में शरण लेनी पड़ी। पर शीघ्र ही विद्रोह दबा

तो राज्य में क्षीणता आने लगी। इसके विपरीत मराठा साम्राज्य का जिन अंगरेज प्रतिद्वन्द्वियों से पाला पड़ा वे राजनीतिक जोड़ तोड़ में सिद्ध हस्त थे और उनकी नीति तथा उनका मामान्य व्यक्तियों पर आश्रित न था।

४ स्थायी बन्दोबस्त पर एक नोट लिखो और यह बताओ कि इससे प्रजा को क्या लाभ और हानि हुई? १२

भारत के शासकों की आय का मुख्य भाग सदा से लगान पर रहा है। जब अँगरेजों को पहले पहल बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी मिली तो लगान उसी तरह वसूल किया जाता था जैसे कि मुगलों के जमाने में। हर साल दरबार कर के लगान का निश्चय किया जाता था। परन्तु हर साल लगान का निश्चय करना बड़ा कठिन था। अतएव जब वारेन हेस्टिंग्ज ने शासन भार अपने ऊपर लिया तब उसने पाँच साल के लिए लगान निश्चित करना शुरू किया। परन्तु उससे यह होता था कि बोली के वक्त लोग बढ़ चढ़कर बोली दे देते थे और पीछे दे न सकते थे। अतः यह प्रथा बदलकर फिर सालाना लगान निश्चित करने की प्रथा चली। परन्तु कम्पनी इस प्रथा को पसन्द न करती थी, क्योंकि इस से आय में कोई निश्चितता न रहती थी। अतः जब लार्ड कार्नवालिस गवर्नर जनरल हुआ, तब उसे कम्पनी की ओर से लगान को हमेशा के लिए निश्चित करने के लिये कहा गया। उसने कई सालों की लगान की रकम देखी और एक साल का औसत निकाला। यही औसत रकम अब स्थायी तौर पर लगान की रकम निश्चित कर दी गई और मुगलों के जमाने में जो व्यक्ति लगान वसूल करते थे, उन्हें ही जमींदार या जमीन का मालिक मान कर उनसे लगान की यह रकम हमेशा के लिए निश्चित

यह थी कि उसने पेशवा का पद बाजीराव के वंश को दे दिया। इससे वशानुगत क्रम से अबोध शिशु भी पेशवा या प्रधान मंत्री होने लगे।

राज्य के विस्तार के साथ साथ केन्द्रीय शक्ति को अधिक प्रबल होना चाहिए था। उसके विपरीत महाराष्ट्र-सरदारों पर नियन्त्रण करने वाली केन्द्रीय शक्ति तो कमजोर होती गई और सरदारों की ताकत बढ़ती गई। होलकर, सिंधिया, गायकवाड आदि सरदारों ने अपने बड़े बड़े राज्य बना लिये। ये सरदार आपस में प्रतिस्पर्द्धा कर जहाँ एक दूसरे से लड़ने लगे, वहाँ अपनी शक्ति बढाने के लिए तथा धन पाने के लिए आस पास लूट मार भी करते थे, जिससे उनकी अप्रियता बढती जा रही थी।

इधर पेशवापद के वशानुगत हो जाने के कारण उसके लिए भी वैसी ही लड़ाई होने लगी जैसी राज्य-पद के लिए होती थी। पेशवा बनने के उम्मेदवार कभी कभी ऐसी सधियाँ करते थे जो साम्राज्य के लिए घातक होती थीं। शिवाजी ने जो जहाजी बेड़ा बनवाया उसका विकास न हुआ, उलटा अगरेजों की सहायता लेकर उसका नाश किया गया। अत समुद्र तट का शासन अगरेजों के हाथ में चला गया। राघोबा और बाजीराव ने इसके अतिरिक्त अगरेजों को अपने गृह कलह में घसीटा। इस गृह कलह में व्यस्त रहने के कारण उनके राज्य के बाहर क्या हो रहा है, इस ओर भी वे ध्यान न दे सके।

दूसरा कारण मरहठा राज्य का व्यक्तियों पर आश्रित होना था। जब कभी नाना फडनवीस जैसे राजनीतिज्ञ अथवा महादजी सिंधिया जैसे कुशल सेनापति के हाथ में राज्यभार आया तब तो उसकी ताकत बढ़ती गई, पर जब उत्तरदायी पुरुष निकम्मा हुआ

अथवा

लार्ड करजन के शासन काल का वृत्तान्त लिखो। १२

महाराजा रणजीतसिंह का जन्म सन् १७८० में हुआ। ये बारह वर्ष की उम्र में ही अपने पिता की छोटी-सी जागीर के मालिक बनाये गये। अब्दाली के पुत्र जमानशाह का ध्यान इनकी ओर खिंचा। उसने सोलह वर्ष की आयु में इन्हें लाहौर का सूबेदार बना दिया। तीन वर्ष के भीतर ही ये आज़ाद हो गये। उधर अफ़ग़ानों में घरेलू युद्ध हो रहे थे, उन्हें इन की ओर ध्यान देने का अवसर न था। रणजीतसिंह ने ३०,००० सिपाहियों की एक बढ़िया सी सेना यूरोपियन ढंग पर तैयार की और उसकी सहायता से अपना राज्य सतलुज तक बढ़ा लिया।

कुछ समय तक सतलुज इनके राज्य की सीमा रही। कुछ सिक्ख सरदारों में, जिन्हें सतलुज और यमुना के बीच में जागीरें मिली हुई थीं, आपस में झगड़ा हो गया और उन्होंने महाराजा रणजीतसिंह से फैसला करने को कहा। इस पर इनके विरोधियों ने ब्रिटिश सरकार से अपील की। [illegible] को [illegible] पंजाब में भेजा गया। बहुत कुछ वाद विवाद के पश्चात् १८०९ में अमृतसर में एक सुलहनामा तैयार किया गया, जिस के अनुसार सतलुज नदी को सिक्खों के राज्य की सीमा मान लिया गया।

महाराजा रणजीतसिंह एक विलक्षण पुरुष थे, वे पढ़े लिखे न [illegible] पर राज्य का कार्य करने में बड़े कुशल थे। ईश्वर ने इन्हें स्मरणशक्ति ऐसी दी थी कि वे किसी बात को भूलते न थे।

रणजीतसिंह ने पेशावर कश्मीर आदि पर भी कब्ज़ा [illegible] [illegible] और काबुल के बादशाह को भी नीचा दिखाना [illegible]

हुआ। जमींदारो को किसानों से कर वसूल कर उतनी निश्चित रकम कपनी को अवश्य भेजनी होती थी।

इस नये वन्दोबस्त के अनुसार यह निश्चित किया गया कि चाहे फसल हो या न हो, तूफान आये या सारे वर्ष वर्षा न हो गवर्नमेंट प्रत्येक दशा में उन जमींदारों से उतनी रकम लगान की वसूल कर लेगी। क्योंकि बगाल के लिए यह वदोबस्त हमेशा के लिए होगया अतएव इसे इस्तमरारी (स्थायी) वदोबस्त कहते हैं।

इससे जमींदारों को यह लाभ हुआ कि भविष्य के लिए चाहे वह जमीन की उपज की कितनी भी वृद्धि करें पर उन्हें वही रकम सरकार को देनी पडेगी, जो एक वार निश्चित हो गई है। इससे वे हमेशा की अनिश्चितता से वच गये और जमीन पर अपनत्व अनुभव करने लगे।

परन्तु जमीन के काश्त करने वाले जमीन के असली मालिकों को इससे सब से अधिक हानि हुई। एक कलम के प्रहार से वे जमीन के मालिक से किरायेदार या काश्तकार हो गये और जो कुछ काम न करने वाले थे वे जमीन के मालिक बन बैठे। पीछे इन जमींदारो ने काश्तकारों पर बहुत अत्याचार करना प्रारंभ किया। उनको रोकने के लिए यद्यपि पीछें कई कानून बनाये गये पर वे अत्याचार रुक न सके।

इसके अतिरिक्त सन् १७९३ के वाद सरकार का खर्च तो बहुत बढ गया है, पर जमींदारों का लगान बढ नहीं सकता फलत खर्च पूरा करने के लिए प्रजा पर अन्य टैक्स लगाए गए।

५ महाराजा रणजीतसिंह का जीवन लिखो और उनके शासनकाल में सिक्खों की शक्ति वर्णन करो।

अथवा

लार्ड करजन के शासन काल का वृत्तान्त लिखो। १२

महाराजा रणजीतसिंह का जन्म सन् १७८० में हुआ। ये बारह वर्ष की उम्र में ही अपने पिता की छोटी-सी जागीर के मालिक बनाये गये। अब्दाली के पुत्र जमानशाह का ध्यान इनकी ओर खिंचा। उसने सोलह वर्ष की आयु में इन्हें लाहौर का सूबेदार बना दिया। तीन वर्ष के भीतर ही ये आजाद हो गये। उधर अफगानों में घरेलू युद्ध हो रहे थे, उन्हें इन की ओर ध्यान देने का अवसर न था। रणजीतसिंह ने ३०,००० सिपाहियों की एक बढ़िया सी सेना यूरोपियन ढंग पर तैयार की और उसकी सहायता से अपना राज्य सतलुज तक बढ़ा लिया।

कुछ समय तक सतलुज इनके राज्य की सीमा रही। कुछ सिक्ख सरदारों में, जिन्हें सतलुज और यमुना के बीच में जागीरें मिली हुई थीं, आपस में झगड़ा हो गया और उन्होंने महाराजा रणजीतसिंह से फैसला करने को कहा। इस पर इनके विरोधियों ने ब्रिटिश सरकार से अपील की। समझौते के लिए मैटकाफ को पंजाब में भेजा गया। बहुत कुछ वाद-विवाद के बाद सन् १८०६ में अमृतसर में एक सुलहनामा तैयार किया गया, जिसके अनुसार सतलुज नदी को सिक्खों के राज्य की सीमा मान लिया गया।

महाराजा रणजीतसिंह एक विलक्षण पुरुष थे, य[illegible] न थे, पर राज्य का कार्य करने में बड़े कुशल थे। ईश्वर ने [illegible] स्मरणशक्ति ऐसी दी थी कि वे किसी बात को भूलते न थे।

रणजीतसिंह ने पेशावर काश्मीर आदि पर भी [illegible] जमाया और काबुल के बादशाह को भी नीचा दिखाया। [illegible]

से उनको कोहनूर हीरा प्राप्त हुआ। रणजीतसिंह के व्यक्तित्व के कारण सिक्खों की शक्ति बहुत बढ गई। पजाब, काश्मीर, हजारा, पेशावर, डेराजात सब सिक्खों के राज्य में सम्मिलित थे।

महाराज रणजीतसिंह बडे प्रबल और कूटनीतिज्ञ शासक थे। जब तक वे जीवित रहे, तब तक उनके विरुद्ध सिर उठाने का किसी को साहस न हुआ था। सन् १८३९ के जून मास में उनकी मृत्यु हुई।

अथवा

लार्ड कर्जन सन् १८९९ में भारत का वायसराय बनकर आया। उसने सीमान्तप्रदेश विषयक नीति में पर्याप्त सलफता दिखाई। सारे सीमान्तप्रदेशों से ब्रिटिश सेना हटा कर उसकी जगह उन्हीं प्रदेशों के निवासियों को ब्रिटिश अफसरों के नीचे नियुक्त किया। सिंध नदी के आस-पास के पश्चिमोत्तर सीमा प्रदेश को एक नया सूबा बनाया और उसे पजाब से अलग कर दिया। उसके शासन की जिम्मेवारी एक चीफ कमिश्नर पर रख दी। इस प्रकार इस पश्चिमोत्तर सीमा प्रान्त का भारत सरकार से सीधा सम्बन्ध हो गया।

सन् १९०१ मे अफगानिस्तान का अमीर अब्दुररहमान मर गया। उसकी जगह उसका बडा बेटा हबीबुल्ला नया शासक हुआ। इस नये शासक क साथ भी अंग्रेजी साम्राज्य की मैत्री स्थापित की गई।

उन दिनों तिब्बत और रूस में मित्रता स्थापित हो रही थी जिस से अंगरेजों को डर था। अतएव तिब्बत में फौज भेजकर वहाँ के राजा को रूस से सबंध तोडने के लिए बाध्य किया गया।

कर्जन के शासन काल में सन् १९०० मे भयानक अकाल पडा और १९०४ मे जनमहारी प्लेग भी फैला।

२२ जनवरी १९०१ में महारानी विक्टोरिया की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र एडवर्ड सप्तम गद्दी पर बैठा। उसके उपलक्ष्य में दिल्ली में एक महान दरबार किया गया।

लार्ड कर्जन ने कई शासन सुधार किये, जिनमें पंजाब का भूमि रक्षा कानून विशेष उल्लेखनीय है। इस नियम के अनुसार कोई भी साहूकार कर्ज में किसी किसान की भूमि नहीं ले सकता। इसके अतिरिक्त उसने खेती की उन्नति के लिए सहायक पूँजी समितियाँ स्थापित कीं और भूमि कर सबंधी बहुत से सुधार किये। यूनीवर्सिटी शिक्षा में भी लार्ड कर्जन ने पर्याप्त सुधार किये तथा प्राचीन स्मारक रक्षा कानून पास किया, जिसमें प्राचीन इमारतों और शिलालेखों की रक्षा पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। साथ ही उसने सेना और पुलिस में भी सुधार किया। व्यापार और कला कौशल की तरफ भी लार्ड कर्जन का ध्यान था, और उसकी उन्नति के लिए नया विभाग बनाया गया। इनके अतिरिक्त नमक कर आधा कर दिया गया।

लार्ड कर्जन की अवधि सन् १९०४ के अप्रैल में समाप्त होती थी। परन्तु उसकी अवधि दो वर्ष के लिए और बढ़ा दी गई। इस अवधि में सबसे मुख्य घटना बंग-विच्छेद की है। लार्ड कर्जन ने १९०५ में बंगाल के टुकड़े कर डाले। पूर्वीय बंगाल तथा आसाम मिलाकर एक नया प्रान्त बनाया। इसकी राजधानी ढाका थी। इस से प्रबल राजनीतिक आन्दोलन आरम्भ हुआ। बंगालियों में एक प्रकार राष्ट्रीय जागृति पैदा हो गई। यही अशान्ति राष्ट्रीय स्वतन्त्रता का यही प्रमुख कारण था।

तत्कालीन कमाण्डर इनचीफ लार्ड किचनर से सैनिक प्रबंध के संबंध में मतभेद होने के कारण दूसरी अवधि पूरी होने से पहले ही लार्ड कर्जन इस्तीफा देकर भारत से विदा हो गए।

वर्तमान काल मे इस भाषा में किसी दो एक सुकवियों के संक्षिप्त वृत्तान्त लिखो। १२

दिल्ली तथा मेरठ के आस पास जो भाषा या बोली बोली जाती है, वह खड़ी बोली कहलाती है। इसके प्रमुख कवियों में मैथिलीशरण गुप्त तथा सुमित्रानंदन पंत का नाम उल्लेखनीय है। उनका संक्षिप्त वृत्तान्त आगे दिया जाता है।

मैथिलीशरण गुप्त जी का जन्म सं० १९४३ में चिरगाँव, झाँसी में हुआ। इनके पिता सेठ श्रीरामचरण जी कविता के बड़े प्रेमी थे और स्वयं भी अच्छे कवि थे। ये पाँच भाई हैं, जिनमें सियारामशरण गुप्त भी प्रतिभाशाली कवि हैं।

वर्तमान हिन्दी के कवियों में इनका नाम सब से अधिक प्रसिद्ध है। खड़ी बोली में जितना इनकी कविता का आदर हुआ है, जितनी इनकी रचनाएँ सर्व-प्रिय हुई हैं, उतनी अन्य किसी कवि की नहीं हुई। इनकी कविता सरस तथा मनोहारी होती है और दिन-प्रति-दिन वह और अधिक उत्कृष्ट होती जाती है। उसमें कूट कूट कर देश प्रेम भरा रहता है। कविता की भाषा सरल, व्याकरण-सम्मत और विशुद्ध होती है। इनकी लिखी पुस्तकों के नाम ये हैं—

भारत भारती, जयद्रथ-वध, रंग में भंग, किसान, शकुन्तला, विरहिणी-व्रजाङ्गना, चन्द्रहास, तिलोत्तमा, पलासी का युद्ध, पंचवटी, मेघनाद-वध, स्वदेश संगीत, त्रिपथगा, वीराङ्गना, शक्ति, गुरुकुल, हिन्दू, यशोधरा, साकेत, द्वापर, सिद्धराज।

साकेत पर इन्हें 'मंगला प्रसाद पारितोषिक' भी मिला है।

सुमित्रानन्दन पंत—पंत जी का जन्म संवत् १९५७ में कौसानी जिला अल्मोड़ा में हुआ। अभी दस-पंद्रह वर्ष से ही इन्होंने कविता लिखनी प्रारम्भ की है। पर इतने काल में ही इनकी गणना

हिन्दी कविता के नये युग-प्रवर्त्तक कवियों में की जाने लगी है। छायावादी कवियों में ये प्रमुख हैं। इनकी कविता भावपूर्ण और रहस्यमयी होती है। युवक-समाज में इनका बड़ा आदर है। ये कविता के विषय प्रायः प्रकृति में ही पाते हैं। उनकी पल्लव, वीणा, गुञ्जन, ग्रन्थि, इत्यादि कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

८ भारतेंदु हरिश्चन्द्र का वृत्तान्त लिखो और यह बताओ कि उसने हिन्दी साहित्य में क्या परिवर्तन किया? १०

भारतेन्दु का जन्म ७ सितंबर सन् १८५० को काशी के एक समृद्ध परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री गोपालचन्द्र था, वे भी हिन्दी के अच्छे कवि थे।

भारतेन्दु अभी नौ वर्ष के ही थे कि इनके पिता का देहान्त हो गया। इसलिए ये बचपन में ही लाखों की सम्पत्ति के अधिकारी हो गये। इन्होंने उस धन को लोक-सेवा और साहित्य-सेवा के कार्य में ही खर्च किया है। चौखम्भा में इन्होंने एक अंगरेजी स्कूल खोला था। १० वर्ष तक उसका खर्च ये ही उठाते रहे। यह आजकल भी 'हरिश्चन्द्र हाई स्कूल' के नाम से उन्नति को प्राप्त हो रहा है। इसके सिवाय इन्होंने 'कवि वचन सुधा' और 'हरिश्चन्द्र मैगज़ीन' नाम से दो पत्रिकाएँ भी निकाली थीं। हिन्दी और हिन्दी के दुर्भाग्य से ६ जनवरी १८८५ को यह भारतेन्दु सदा के लिए अस्त हो गया।

कुल ३५ वर्ष के छोटे से जीवन में इन्होंने छोटे बड़े कुल मिला कर १७५ ग्रन्थ लिखे और अनुवाद किये हैं। जिन में से अधिकतर नाटक और काव्य-ग्रन्थ हैं। इनकी इस साहित्य सेवा से प्रसन्न होकर हिन्दी संसार ने इन्हें 'भारतेन्दु' की पदवी से विभूषित किया, तथा

प्राप्त किए यों ही रह जाना । हम सवेरे रोज हवा खाने जाते हैं। वक्त पर तो आये नहीं, अब जाओ हवा खाओ ।'

सिर खाना—बातें पूछ पूछ कर तंग कर देना । क्यों फिजूल सिर खा रहा है, जाकर अपना काम कर ।

धक्के खाना—मारा मारा फिरना । जब अवस्था थी तो पढ़ा नहीं, माँ बाप चीखते रहे, पर उनकी कुछ सुनी नहीं, अब बच्चा दर दर धक्के खाता फिरता है ।

अँगूठा दिखाना—कोई चीज़ देने से तिरस्कार के साथ इन्कार करना । अजीब आदमी हो, कल कहते थे किताब ले जाना, आज अँगूठा दिखाते हो ।

नीचा दिखाना—हराना, घमंड तोड़ना । क्यों बच्चा, कैसा नीचा दिखाया, चले थे हम से ही ऐंठने ।

पीठ दिखाना—लड़ाई में भाग जाना । राजपूत रणभूमि में पीठ नहीं दिखाते, जान भले ही चली जाय ।

आँखें दिखाना—क्रोध से घूरना । जाओ जाओ, किसी और को आँखें दिखाना, यहाँ ऐसे कोई डरने वाला नहीं है ।

झख मारना—व्यर्थ समय गँवाना, विवश होना । आप सवेरे से यहाँ बैठे क्यों झख मार रहे हैं । वह करेगा क्यों नहीं, अपने आप झख मारकर करेगा ।

गोली मारना—तुच्छ समझकर छोड़ देना । गोली मारें ऐसी नौकरी पर, जिसमें हर एक के जूते चाटने पड़े ।

छान मारना—अच्छी तरह ढूँढना । मैं ने सारा शहर छान मारा, पर इस नाम की कोई कंपनी नहीं मिली ।

पलक मारना—इशारा करना, लाला जी तो रुपये दे रहे थे, पर मुनीम ने पलक मार दी ।

२ नीचे लिखे मुहावरों का भावार्थ लिखो और वाक्यों में प्रयोग करो —

जूता चाटना, ईंट से ईंट बजाना, हथेली पर सरसों जमाना, नाक रख लेना, लुटिया डुबोना। ५

जूता चाटना—चापलूसी करना। जाओ अफसरों के जूता चाटो, यहाँ तुम्हारा क्या काम ?

ईंट से ईंट बजाना—विध्वंस करना। महमूद जहाँ गया वहाँ उसने ईंट से ईंट बजा दी।

हथेली पर सरसों जमाना—बात कहते ही तुरन्त काम हो जाना, या असम्भव बात कर दिखाना। मैं कोई जादूगर तो नहीं जो तुम्हारे मुँह से बात निकलते ही वहाँ मन चीज जुटा दूँ, चीजों इकट्ठी करने में कम से कम एक दो दिन तो लगेंगे ही, यहाँ हथेली पर सरसों नहीं जमती।

नाक रख लेना—इज्जत रख लेना। आपने १०० रु० उधार देकर मेरी नाक रख ली, नहीं तो आज मेरा दिवाला बोल जाता।

लुटिया डुबाना—काम बिलकुल बिगाड़ देना। उसने तो मेरा पचास बारह रुपए का ही नुकसान किया था, तुमने तो लुटिया ही डुबा दी।

लोकोक्तियों और मुहावरों का ठीक ठीक प्रयोग जानने के लिये डा० बहादुरचन्द्र कृत "लोकोक्तियाँ और मुहावरे" नामक पुस्तक पढ़िये। इसमें लोकोक्तियों और मुहावरों के अर्थ तथा उनको अपने वाक्यों में किस तरह प्रयोग किया जाता है यह भली भाँति दिखाया गया है। मू० ॥।

२ अपने छोटे भाई को एक पत्र लिखो जिसमें व्यायाम की उपयोगिता बताई गई हो। १५

२५-६, निस्वत रोड,
लाहौर ८-१२-३८

प्यारे शशि,

तुम्हारा पत्र मिला। पिछले पत्र में मैंने तुम्हें यह बताया था कि सवेरे जल्दी उठने के क्या लाभ हैं। मुझे यह पढ कर प्रसन्नता हुई कि तुमने अब रोज सवेरे ५ बजे उठने का निश्चय कर लिया है। आज तुम्हे मै व्यायाम की उपयोगिता बताना चाहता हूँ, तुम्हें यह बताना चाहता हूँ कि यदि तुम सवेरे उठकर शौच आदि से निवृत्त होकर प्रतिदिन व्यायाम करो तो तुम कभी बीमार नहीं पड सकते, और तुम अपने शरीर को, अपने मन को और फलत आत्मा को बलवान बना सकते हो।

तुम्हें पता है कि स्वास्थ्य दुनिया मे सब से अनमोल वस्तु है। तुम कपडे खरीद सकते हो, जमीन जायदाद खरीद सकते हो, पर स्वास्थ्य नहीं खरीद सकते। जो आदमी स्वस्थ नहीं है, उसका जीवन अपने लिए भी और उसके परिवार के अन्य व्यक्तियों के लिए भी भार और दुखप्रद हो जाता है। अत' स्वास्थ्य दुनिया की सब से बडी नियामत है और स्वास्थ्य की कुंजी व्यायाम है। इसीसे तुम व्यायाम की उपयोगिता समझ सकते हो।

शरीर को स्वस्थ तथा बलवान रखने, बीमारियों से बचाने और भोजन को ठीक ठीक पचाने के लिए व्यायाम करना अत्यन्त आवश्यक है। व्यायाम से हृदय तथा शरीर के अंग पुष्ट होते हैं और रक्त में गति पैदा होती है। जो लोग नियम पूर्वक व्यायाम

करते हैं, उन्हें भूख खूब लगती है और नींद भी खूब आती है। व्यायाम से भोजन अच्छी तरह पच जाता है और उससे रक्त खूब बनता है। जब आदमी का शरीर नीरोग होता है तब वह प्रसन्न भी रहता है और वह काम भी अधिक कर सकता है।

जो आदमी दिन रात पढ़ने में लगे रहते हैं या दिन भर कुर्सी पर बैठे बैठे काम करते हैं, और कभी शारीरिक व्यायाम नहीं करते, उनका शरीर शीघ्र ही बीमारियों का घर हो जाता है। छोटी उम्र में चाहे मनुष्य को व्यायाम न करने की भूल न मालूम हो पर कुछ बड़ा होकर उसे अवश्य पछताना पड़ता है

तुम देखते हो कि मेहनत करके रूखा सूखा खाने वाला एक गरीब मजदूर एक दफ्तर के बाबू से या एक करोड़पति सेठ से अधिक हृष्ट पुष्ट और मजबूत होता है। तुम समझते हो इसका कारण क्या है? देखो, भाग दौड़ने में और मेहनत मजदूरी करने में उस गरीब का काफी शारीरिक व्यायाम हो जाता है पर वे मोटी तोंद वाले लालाजी या चश्माधारी दफ्तर के बाबू कभी हाथ-पैर नहीं हिलाते। वे समझते हैं कि व्यायाम में व्यर्थ समय गँवाने से बजाय वे इतनी देर में और बहुत से काम कर सकते हैं। पर याद रखो कि व्यायाम में खर्च किया गया समय कभी व्यर्थ नहीं जाता। यदि वे रोज व्यायाम करते रहें तो उनकी आयु दीर्घ होगी और वे अधिक काम कर सकेंगे।

प्यारे शशि, तुम अब व्यायाम की उपयोगिता समझ गए होगे, अतः रोज सबेरे उठकर शौच से निवृत्त होकर खुली हवा में कम से आधा घंटा रोज व्यायाम किया करो।

यदि तुम इस प्रकार एक सप्ताह भी व्यायाम करोगे तो तुम देखोगे कि तुम्हारा दिन भर आराम से कटता है तुम दिनभर खुश

रहते हो और खूब काम कर सकते हो। यदि तुमने अभी बचपन में व्यायाम न किया, तो तुम अपने शरीर को रोग का घर बना लोगे। फिर बड़े होने पर लाख परिश्रम करने पर और दिन रात दवाइयाँ खाने पर भी वह स्वास्थ्य न पा सकोगे।

मैं समझता हूँ कि तुम मेरे पहले आदेशों की तरह इसे भी मानोगे और शीघ्र ही इसकी सूचना मुझे दोगे।

तुम्हारा शुभचिंतक
देवचन्द्र

पत्रों के लिए श्री केशव प्रसाद शुक्ल लिखित 'सरल-पत्र लेखन' देखिए, जिसमें निजू कारोबारी तथा निमत्रण पत्र आदि सब तरह के पत्रों के लिखने का आधुनिक और नवीन ढग बताया गया है। मूल्य ।)

---

४ अपने पढ़े हुए काव्यों में से किसी पद्य काव्य की सक्षेप में आलोचना करो।

अथवा

क्या पञ्जाब में हिन्दीभाषा राष्ट्रभाषा बनने की योग्यता रखती है? इस प्रश्न पर अपने विचार प्रकट करो। १४

शिवाबावनी—इस काव्य में महाकवि भूषण के बनाए हुए शिवाजी सबधी ५२ स्फुट पद्यों का सग्रह है। ऐसी किंवदन्ती है कि जब भूषण और शिवाजी की प्रथम भेंट हुई थी, तब भूषण ने छद्मवेशी शिवाजी को ५२ भिन्न भिन्न कवित्त सुनाये थे, वे ही शिवाबावनी में सगृहीत हैं। पर यह किंवदन्ती सर्वथा निराधार

है । क्योंकि इस काव्य के कई पद्यों में ऐसी घटनाओं का वर्णन है, जो इस मेल के दिन तक घटी भी न थीं ।

शिवाबावनी में अधिकतर पद्य शिवाजी की सेना के प्रयाण का शत्रुओं पर प्रभाव, शिवाजी के आतंक से शत्रु स्त्रियों की दुर्दशा, शिवाजी का पराक्रम तथा शिवाजी को विजय करने में औरंगजेब की असफलता और यदि शिवाजी न होते तो हिन्दुओं की क्या दशा होती आदि विषयों पर हैं ।

जिस काव्य में रस का परिपाक हो, भाषा उसके अनुरूप हो, अलंकार योजना मनोरम और निर्दोष हो, भाव उच्च और उदार हों वह काव्य उच्च कोटि का काव्य समझा जाता है । इस काव्य में वीर रस का अनूठा परिपाक है। उसके सहायक भयानक, रौद्र तथा वीभत्स रसों के भी बढ़िया उदाहरण मिलते हैं । अलंकार योजना उच्च कोटि की है और शुष्क ऐतिहासिक घटनाओं का कवि ने बड़े आकर्षक ढंग से वर्णन किया है। भाषा यद्यपि खिचड़ी है, पर वह ओजपूर्ण तथा रस के अनुकूल हुई है । इन सब के अतिरिक्त सारा काव्य उच्च जातीय भावों से परिपूर्ण है । इन सब दृष्टियों से विचार करने से यही कहना पड़ता है कि यह छोटा सा काव्य ग्रन्थ या थोड़े से पद्यों का संग्रह अनूठा और अनमोल है ।

(विस्तृत आलोचना के लिये दूसरे प्रश्नपत्र के छठे प्र० का उत्तर पृ० ९६ से ९ तक देखिए)

व्याख्या

जो भी कोई भाषा राष्ट्र-भाषा के पद पर आसीन होगी, वह सम्पूर्ण राष्ट्र के लिए होगी । सम्पूर्ण राष्ट्र में सरकारी कार्यों के लिये अथवा अन्तर्प्रान्तीय कार्यों के लिए इसका प्रयोग होगा । हिन्दी हिन्दुस्तान की राष्ट्रभाषा है और पंजाब हिन्दुस्तान का भाग है ।

(३) ढोल गँवार-शूद्र-पशु-नारी । ये सब ताड़न के अधिकारी।
(४) प० जवाहर लाल।
(५) प्रतिमानाटक की कैकेयी।
(६) रात
(७) विद्याबल से चरित्रबल श्रेष्ठ है।

निबन्धों के लिए श्री रामदयाल सकसेना द्वारा लि "हिन्दी-भूषण निबन्धमाला" देखिए। जिसमें हिन्दी भूषण पर में आये हुए विगत कई सालों के निबन्ध दिए गये हैं। मूल्य

हिन्दी भूषण प्रश्नपत्र-संग्रह

(उत्तर सहित)

१९३९

संपादक
रामप्रसाद मिश्र

प्रकाशक
हिन्दी भवन, लाहौर

Printed and published by D C Narang at the H B Press, Lahore

हिन्दी भूषण १९३९

प्रश्नपत्र १

१ अल्प प्राण और महाप्राण किन किन अक्षरों की संज्ञा है ? घोष और अघोष किन किन वर्णों का नाम है ? ४ + २

प्रत्येक वर्ग का दूसरा तथा चौथा अक्षर (अर्थात् ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ) और श, ष, स, ह ये अक्षर महाप्राण हैं। शेष सब व्यंजन तथा सब स्वर अल्प प्राण हैं।

Printed and published by D C Narang at the H B Press, Lahore

प्रश्नपत्र १

अल्प प्राण और महाप्राण किन किन अक्षरों की संज्ञा है? घोष
ोष किन किन वर्णों का नाम है? ४+२

येक वर्ग का दूसरा तथा चौथा अक्षर (अर्थात्
छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ) और श [illegible] स, ह ये
महाप्राण हैं। शेष सब व्यंजन तथा सब स्वर अल्प
।

येक वर्ग का तीसरा, चौथा और पाँचवाँ अक्षर (अर्थात्
ङ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ण, द, ध, न, ब, भ, म), और
र य, र, ल, व, ह ये घोष हैं। वर्ग का पहला, दूसरा
ौर श, ष, स, ये अघोष हैं।

(क) नीचे लिखे शब्दों की सन्धि करो और नियम बताओ—

सत् + आचार, तत् + मय, सत् + हित, राम + अयन । ८

ख) नीचे लिखे शब्दों का सन्धिविच्छेद करो—

स्कार, स्वागत, [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible],
मनोरथ [illegible] । १०

सत् + आचार = सदाचार । त् के बाद यदि स्वर
, य, अथवा य, र, व [illegible] कोई अक्षर हो तो त् का
ता है।

तत् + मय = तन्मय। किसी वर्ग के पहले चार अक्षरों के बाद यदि किसी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर हो तो पहले चार अक्षरों के स्थान मे उसी वर्ग का पाँचवाँ अक्षर हो जाता है।

तत् + हित् = तद्धित। त् या द् के बाद ह हो तो त् या द् के स्थान में द् और ह् के स्थान मे ध् हो जाता है।

राम + अयन = रामायण। दो सवर्ण स्वर पास पास आवें तो दोनों के बदले सवर्ण दीर्घ स्वर हो जाता है। इस नियम से राम के 'म' का 'अ' और अयन का 'अ' मिलकर दीर्घ 'आ' हो गया। ऋ, र्, ष् के बाद न् को ण् हो जाता है चाहे उनके बीच मे कोई स्वर, कवर्ग या पवर्ग का कोई वर्ण अथवा य, व, ह और अनुस्वार में से कोई वर्ण क्यों न हो। इस नियम से न को ण हो गया है।

(ख) प्रत्युपकार = प्रति + उपकार। | नमस्कार = नमः + कार।
स्वागत = सु + आगत। | जगन्नाथ = जगत् + नाथ।
नयन = ने + अन। | निरर्थक = निः + अर्थक।
वाङ्मय = वाक् + मय। | मनोरथ = मनः + रथ।
सम्पूर्ण = सम् + पूर्ण। | जगदीश = जगत् + ईश।

२ तुलना किसे कहते हैं ? और उनकी कौन-कौन अवस्था होती है ? उदाहरण सहित लिखो।

वस्तुओं के गुणों के मिलान को तुलना कहते हैं। तुलना के विचार से विशेषणों की तीन अवस्थाएँ हैं—मूल उत्तर और उत्तम।

मूलावस्था में तुलना नहीं होती, जैसे—मोहन परिश्रमी लड़का है। उत्तरावस्था में दो की तुलना करके एक की अधिकता या न्यूनता दिखाई जाती है, जैसे—मोहन श्याम से छोटा

मोहन श्याम से अधिक चालाक है । उत्तरावस्था में दो
धिक वस्तुओं की तुलना करके एक को सब से बढ़ कर
ट कर बनाया जाता है । जैसे—विष्णु अपनी श्रेणी में
से छोटा है । विष्णु उन सब में चालाक है । संस्कृत
में उत्तरावस्था के लिए 'तर' और उत्तमावस्था के लिए
प्रत्यय लगाते हैं । जैसे—श्रेष्ठ, श्रेष्ठतर, श्रेष्ठतम, प्रिय
र, प्रियतम ।

(क) वाच्य कितने प्रकार का होता है ? इन भेदों के साधारण
बताओ । १

(ख) उपसर्ग और प्रत्यय किसे कहते हैं ? दोनों में अन्तर क्या
? उदाहरण देकर समझाओ । ४

(ग) निम्नलिखित शब्दों के शुद्ध रूप लिखो—

शुन्य, प्रमात्मा, स्व्य, आपरा । २

(क) वाच्य तीन प्रकार का होता है—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य
भाववाच्य । कर्तृवाच्य में क्रिया द्वारा किये गये विधान
गई बात) का मुख्य विषय कर्ता होता है, कर्मवाच्य
के विधान का मुख्य उद्देश्य कर्म तथा भाववाच्य में
अर्थ ही मुख्य होता है । जैसे— राम चिट्ठी लिखता
वाक्य में लिखना क्रिया का उद्देश्य 'राम' कर्ता है ।
लिखता है' यही मुख्य वाक्य है, चिट्ठी (कर्म) का वर्णन
। 'राम से चिट्ठी लिखी जाती है' इसमें लिखी जाती
क्रिया के विधान का विषय चिट्ठी (कर्म) है । चिट्ठी लिखी
' का मुख्य अंश है 'राम से' (कर्ता) गौण है । 'मुझ से
हीं जाता' इसमें 'जाना' भाव मुख्य है । कर्ता

इसमें है ही नहीं और कर्त्ता (मुझ से) गौण है। अत, पहले वाक्य मे 'लिखता है' क्रिया कर्तृवाच्य, दूसरे मे 'लिखी जाती है' क्रिया कर्मवाच्य और तीसरे में 'सोया नहीं जाता' क्रिया भाववाच्य है।

(ख) उपसर्ग वे शब्दांश है जो किसी शब्द के आदि में आकर उसके अर्थ मे विशेषता उत्पन्न कर देते हैं, या उसके अर्थ को सर्वथा बदल देते है। और वे अक्षर या अक्षर-समूह जो किसी धातु या मूल शब्द के अंत में जुडकर उसके अर्थ मे कोई विशेषता उत्पन्न कर देते है, प्रत्यय कहलाते हैं। उपसर्ग सदा शब्द के आदि में जुडते है और जिन शब्दों के प्रारंभ में वे आते है, कई बार उनके अर्थ को सर्वथा बदल देते हैं, और प्रत्यय सदा शब्दों के अंत मे जुडते हैं, तथा वे अर्थ में विशेषता तो उत्पन्न करते है, पर बदलते नहीं। जैसे—'बल' शब्द से पहले 'प्र' लगा दें तो 'प्रबल' शब्द का अर्थ हो जाता है अधिक बल वाला, ऐसे ही 'निर्' लगा दिया जाय तो 'निर्बल' शब्द का अर्थ होता है बल रहित। 'प्र' और 'निर्' 'बल' शब्द के पहले लगते है, और उसके अर्थ मे विशेषता पैदा करते हैं या उसके अर्थ को सर्वथा बदल देते हैं, अतः ये उपसर्ग हैं। 'वान' या 'ई' के 'बल' शब्द के अंत में जुडने से 'बलवान्' या 'बली' रूप बनते है, और इन नये बने शब्दों का अर्थ हो जाता है, बलवाला। 'ई' और 'वान्' शब्द के अंत में जुडते है, और नये बने शब्दों के अर्थ मे मूल शब्द से कुछ विशेषता पैदा कर देते है, पर सर्वथा बदलते नहीं, अतः प्रत्यय है।

(ग) शुन्य—शून्य । प्रमात्मा—परमात्मा । दृष्य—दृश्य । आचरन—आचरण ।

५ निम्नलिखित वाक्यों के कारक लिखो—

(क) भूखे को भोजन और प्यासे को जल दो ।

(ख) मोहन मुझे गीता पढ़ाता है ।

भूखे को—सम्प्रदान कारक । भोजन—कर्मकारक । प्यासे को—सम्प्रदान । जल—कर्मकारक ।

मोहन—कर्त्ता कारक । मुझे—कर्म । गीता—कर्म ।

६ निम्नलिखित पदों में जो समास हैं उनके नाम और लक्षण बताओ—

धर्मच्युत, गंगाजल, नीलगाय, चौराहा, लोकसेवी ।

धर्मच्युत—अपादान तत्पुरुष । गंगाजल—सम्बन्ध-तत्पुरुष ।

जिस समास में दूसरा पद प्रधान हो, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं, इस समास के पूर्व पद में जिस कारक की विभक्ति का लोप होता है, उसी कारक के अनुसार इस समास का नाम होता है। धर्मच्युत (धर्म से च्युत) में पहले पद में अपादान कारक है, अतः यहाँ अपादान-तत्पुरुष और गंगाजल (गंगा का जल) में पहले पद में सम्बन्ध कारक है, अतः यहाँ सम्बन्ध-तत्पुरुष है ।

नीलगाय—कर्मधारय ।

जिस तत्पुरुष समास के विग्रह में दोनों पदों के साथ एक ही कर्त्ताकारक की विभक्ति आती है उस समास को समानाधिकरण तत्पुरुष अथवा कर्मधारय कहते हैं । नीलगाय (नीली गाय)

मे दोनों पद एक ही कर्त्ता विभक्ति में हैं और उत्तर पद 'गाय' प्रधान है अत समानाधिकरण तत्पुरुष या कर्मधारय है।

चौराहा—द्विगु

जिस कर्म धारय समास मे पहला शब्द सख्या वाचक विशेषण हो जिस से किसी समुदाय का बोध हो उसे द्विगु समास कहते ह। चौराहा का अर्थ है चौ+राह अर्थात् चार राह (रास्तों) का समूह। इसलिए यह द्विगु समास है।

लोटाडोरी—द्वन्द्व

जिस समास मे सब खड प्रधान होते हैं और विग्रह करने पर जिसमे 'और' 'या' 'अथवा' आदि योजक लगते ह उसे द्वन्द्व समास कहते है। लोटाडोरी (लोटा और डोरी) में दोनों पद प्रधान ह और विग्रह में 'और' योजक जुडता है। अत द्वन्द्व समास है।

७ वीर रस का लक्षण बताओ। उसके भेदों के नाम लिखो। और उनके लक्षण भी दो। इस रस में संचारी और उद्दीपनभाव, कौन कौन हैं? शान्त रस का और वात्सल्य रस का उदाहरण दो। - १२

शत्रु का उत्कर्ष, उसकी ललकार, दीनों की दशा आदि से जो उत्साह उत्पन्न होता है, उसकी परिपुष्टि जिस रस में होती है, वह वीर रस कहाता है। वह मुख्यतया तीन प्रकार का माना जाता है—

(क) युद्धवीर—जब लडने का उत्साह हो।

जय के दृढ विश्वासयुक्त, थे दीप्तिमान जिनके मुखमंडल।
पर्वत को भी खंड खंड कर रज-कण कर देने को चंचल।

फड़क रहे थे अति प्रचण्ड भुजदण्ड शत्रुमर्दन को विह्वल।
ग्राम ग्राम से निकल निकल कर ऐसे युवक चले दल के दल।

(ख) दानवीर—जब याचक आदि का दान देने का उत्साह हो।

हाथ गह्यो प्रभु को कमला कह नाथ कहा तुमने चित धारी।
तंदुल खाय मुठी दुइ दीन किया तुमने दुइ लोक बिहारी॥
खाय मुठी तिसरी अब नाथ, कहा निज बास की आस बिसारी।
रंकहि आप समान कियो, अब चाहत आपहि होन भिखारी॥

(ग) दयावीर—जब दीनों पर दया करने का उत्साह हो।

स्वजाति की देख अतीव दुर्दशा,
विगर्हणा देख मनुष्य मात्र की।
विचार के प्राणिसमूह कष्ट को
हुए समुत्तेजित वीर-केशरी।

वीर रस के आवेग, गर्व, असूया, अमर्ष और उग्रता आदि सञ्चारी भाव होते हैं। इसके उद्दीपन भाव शत्रु का उत्कर्ष, उसकी ललकार, मारू बाजा, वीरों की हुंकार, दीन का दुःख या दारिद्र्य, याचक की प्रशंसा आदि हैं।

शान्तरस का उदाहरण—

मानुष हौं तो वही रसखान बसौं ब्रज गोकुल गाँव के ग्वारन।
जो पसु हौं तो कहा बस मेरो, चरौं नित नंद की धेनु मँझारन॥
पाहन हौं तो वही गिरि को जो धर्यो कर छत्र पुरंदर धारन।
जौ खग हौं तो बसेरो करौं मिलि कालिंदी कूल कदम्ब की डारन॥

वात्सल्यरस का उदाहरण—

मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी।
बहुत बार मोहि दूध पियत भइ यह अजहूँ है छोटी॥

काचो दूध पिवावत पचि-पचि देत न माखन-रोटी।
'सूरस्याम' चिर जिवौ दोउ भैया हरि-हलधर की जोटी॥

८ (क) भ्रान्तिमान् और सन्देह अलंकार में क्या भेद है ? २

(ख) लुप्तोपमा किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाओ। ४

(क) कभी कभी किसी वस्तु को देख कर उसमें कुछ सादृश्य के कारण हम, उसे अन्य वस्तु समझ बैठते हैं, ऐसी भूल को 'भ्रम' कहते हैं। पर जब उपमेय और उपमान में समता देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि उपमान वास्तव में उपमेय है या नहीं, दुविधा बनी रहती है, तब 'सन्देह' अलंकार होता है—"फूल समझ कर शकुंतला मुख भन मन उस पर भ्रमर करें" में मुख को कमल समझ लिया गया है। अतः भ्रम अलंकार है। पर यह "मुख है या चंद्रमा ?" इसमें दुविधा बनी रहती है अतः संदेह अलंकार है।

(ख) उपमा में उपमान, उपमेय, वाचक और धर्म ये चार अंग होते हैं, पर उपमा के इन चारों अंगों में से किसी एक या दो या तीन को लोप हो गया हो (अर्थात् वे शब्दों द्वारा न बतलाये गये हों) तो लुप्तोपमा होती है। जैसे 'मुख चन्द्रमा के समान है,' यहाँ साधारण धर्म 'सुंदर' का लोप कर दिया गया है। ऐसे ही 'माँगन मरन समान है, मत कोई माँगो भीख,' यहाँ माँगन (उपमेय) मरन (उपमा[illegible] समान (वाचक शब्द) है पर [illegible] धर्म ([illegible]
दिया गया है, अतः यहाँ [illegible] है

९ विभावनाल[illegible]

बात कही जाय, तब विभावना अलंकार होता है। यह ४ प्रकार का है—

(i) जब कारण बिना कार्य हो जाय। जैसे—

बिनु पद चलै सुनै बिनु काना,
कर बिनु करै करम बिधि नाना।

यहाँ चलने, सुनने, काम करने आदि कार्यों के कारण पैर, कान, हाथ आदि नहीं हैं, फिर भी इन कार्यों का होना दिखाया गया है।

(ii) जब अधूरे या अपर्याप्त कारण से कार्य हो जाय—

नौ सौ को सिवाजी जेहि दो सौ आदमी सों जीत्यो,
जंग सरदार सौ हजार असवार को।

यहाँ सौ हजार आदमियों को जीतने का कार्य केवल दो सौ आदमियों द्वारा दिखाया गया है। यहाँ कारण है पर वह अपर्याप्त और अधूरा है।

(iii) जब रुकावट होने पर भी कार्य हो जाय।

तेज छत्रभागीन है तदपि अति ताप करत।

तेज से ताप होता है पर छत्र (छाते) होने पर वह ताप नहीं कर सकता। पर यहाँ रुकावट (छत्र) के होने पर भी ताप करना रूपी कार्य हो जाता है।

(iv) जब कार्य ऐसे कारण से हो जो वास्तव में उसका कारण न हो।

वीणानाद तु दाम सों होत सुनो है यार

वीणा व मीठा स्वर का कारण वीणा ही हो सकती है। पर—यहाँ कपुत्री कामिनी के दाम्पत्य से होते वीणा का

काचो दूध पिवावत पचि-पचि देत न माखन-रोटी।
'सूरस्याम' चिर जिवौ दोउ भैया हरि-हलधर की जोटी॥

८ (क) भ्रान्तिमान् और सन्देह अलंकार में क्या भेद है ? २

(ख) लुप्तोपमा किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाओ। ४

(क) कभी कभी किसी वस्तु को देख कर उसमें कुछ सादृश्य के कारण हम उसे अन्य वस्तु समझ बैठते हैं, ऐसी भूल को 'भ्रम' कहते हैं। पर जब उपमेय और उपमान में समता देखकर यह निश्चय नहीं हो पाता कि उपमान वास्तव में उपमेय है या नहीं, दुविधा बनी रहती है, तब 'संदेह' अलंकार होता है—"फूल समझ कर शकुंतला-मुख भन मन उस पर भ्रमर करें" में मुख को कमल समझ लिया गया है। अतः भ्रम अलंकार है। पर यह "मुख है या चंद्रमा ?" इसमे दुविधा बनी रहती है अत संदेह अलंकार है।

(ख) उपमा मे उपमान, उपमेय, वाचक और धर्म ये चार अंग होते हैं, पर उपमा के इन चारों अंगों मे से किसी एक या दो या तीन को लोप हो गया हो ('अर्थात् वे शब्दों द्वारा न बतलाये गये हों) तो लुप्तोपमा होती है। जैसे 'मुख चंद्रमा के समान है,' यहाँ साधारण धर्म 'सुंदर' का लोप कर दिया गया है। ऐसे ही 'माँगन मरन समान है, मत कोई माँगो भीख,' यहाँ माँगन (उपमेय) मरन (उपमान) और समान (वाचक शब्द) है पर साधारण धर्म (बुरा) का लोप कर दिया गया है, अत॰ यहाँ भी लुप्तोपमा है।

९ विभावना अलंकार के भेद लक्षण और उदाहरण सहित लिखो। १२

जब किसी कार्य के कारण के संबंध में, कोई विलक्षण

बात कही जाय, तब विभावना अलंकार होता है। यह छ प्रकार का है—

(i) जब कारण बिना कार्य हो जाय। जैसे—

बिनु पद चलै सुनै बिनु काना,
कर बिनु करै करम विधि नाना।

यहाँ चलने, सुनने, काम करने आदि कार्यों के कारण पैर, कान, हाथ आदि नहीं है, फिर भी इन कार्यों का होना दिखाया गया है।

(ii) जब अधूरे या अपर्याप्त कारण से कार्य हो जाय—

सौ सौ की मिजाजी जेहि दो सौ आदमी सों जायो
अस सरदार सौ हजार असवार को।

यहाँ सौ हज़ार आदमियों को जीतने का कार्य केवल दो सौ आदमियों द्वारा दिखाया गया है। यहाँ कारण है पर वह अपर्याप्त और अधूरा है।

(iii) जब रुकावट होने पर भी कार्य हो जाय।

तेज छत्रधारी है तऊ अति ताप करत।

तेज से ताप होता है पर छत्र (छतरी) होने पर तेज ताप नहीं कर सकता। पर यहाँ रुकावट (छत्र) के होते पर भी ताप करना रूपी कार्य हो जाता है।

(iv) जब कार्य ऐसे कारण से हो जो वास्तव में उसका कारण न हो।

[illegible] तु शब्द सो होत सुनी मैं बात

वीणा के नीठा स्वर का कारण वीणा ही हो सकती है। पर—यहाँ वधूजटी कामिनी के [illegible] होने से होना का

नाद निकलना बताया गया है। शख वीणानाद का कारण नहीं ह पर कार्य उससे होता है।

(१) जब विपरीत कारण से कार्य हो जाय—

कारे कारे घन आकर अगारे बरसाते है।

काले बादल पानी बरसाते है न कि अगारे। अगारे जल बरसाने वाले बादलों से कैसे निकल सकते है। इस प्रकार विपरीत कारण से यहाँ कार्य का होना दिखाया गया है।

(११) जब कार्य से कारण उत्पन्न हो—

तव कृपान धुव धूम ते भयो प्रताप कृसानु।

यहाँ कृपाण रूपी धुएँ से प्रताप रूपी अग्नि की उत्पत्ति हुई है। वास्तव मे आग से धुआँ उत्पन्न होता है, धुएँ से आग नहीं। इस प्रकार यहाँ कार्य से कारण की उत्पत्ति दिखाई गई है।

१० (क) यति और गति किसे कहते हैं ? २

(ख) शिखरिणी, उपजाति, तोटक छदों के उदाहरण लिखो। ६

(ग) उल्लेख, स्मरण, व्याजस्तुति, दृष्टान्त अलकारों के लक्षण बताओ। ८

(घ) कुण्डलिया कैसे बनती है ? और इसके कितने चरण होते हैं ? २

(क) 'छद' को पढते समय बीच-बीच में ठहरना पडता है, इस ठहरने को यति कहते हैं, ओर छद के पढने की लय को गति कहते हैं।

प्रियपति वह मेरा, प्राण प्यारा कहाँ है।

यहाँ मेरा के बाद और पद के अत में ठहरना होता है, इन दोनों स्थानों पर यति है। ऐसे ही—

'जबते राम व्याहि घर आये'

में एक लय है, यदि इसको इस प्रकार बदल दिया जाय—

राम जब तें व्याहि घर आये

तो मात्राएँ पूरी होने पर भी गति नहीं रहती।

(ख) शिखरिणी—अनूठी आभा से सरस सुषमा से सरस से।

उपजाति—संसार है एक अरण्य भारी,

हुए जहाँ हैं हम कर्मचारी।

तोटक—

नर हो न निराश करो मन को

(ग) जब एक वस्तु का अनेक प्रकार से वर्णन (उल्लेख) किया जाय तब उल्लेख अलंकार होता है।

जब पहले देखी हुई या सुनी हुई किसी वस्तु का स्मरण उसके समान या उससे सम्बन्ध रखने वाली किसी वस्तु को देखने या सुनने से हो जावे, तब स्मरण अलंकार होता है।

जब देखने या सुनने में निंदा जान पड़े पर हो प्रशंसा अथवा प्रशंसा जान पड़े पर हो निंदा तब व्याजस्तुति अलंकार होता है।

जब पहले एक बात कह कर उसको स्पष्ट करने के लिए उससे मिलती जुलती दूसरी बात कही जाय तब उदाहरण अलंकार होता है।

(घ) दोहा और रोला के मिलने से कुंडलिया बनती है। दोहे का अन्तिम चरण रोला के आदि में रक्खा जाता है। दोहा के दो पद और रोला के चार पद के मेल से इसमें छः पद या चरण होते हैं।

व्याकरण-प्रदीप

[रामदेव एम ए]

"यह हिन्दी का पहला व्याकरण है, जिसमें व्याकरण विषय का विवेचन पर्याप्त विस्तार से और शास्त्रीय ढग से किया गया है जिसमे हिन्दी-भाषा-विज्ञान पर भी सक्षिप्त विचार प्रकट किये गये हैं और राजस्थानी, अवधी तथा ब्रजभाषा के व्याकरण पर भी प्रकाश डाला गया है। यही इसकी सबसे बडी विशेषताएँ हैं, और यही उन विद्यार्थियों की सबसे बडी माँग हैं जिन्हे प्राचीन काव्य-साहित्य का भी अध्ययन करना होता है।"

इसकी इस उत्तमता को देखकर पजाब यूनीवर्सिटी ने १९४१ से इसे भूषण के पाठ्य क्रम मे नियत किया है। विद्यार्थियों को यही व्याकरण खरीदना चाहिये। मूल्य १)

रस और अलंकार

[ले०—प० रामबहोरी शुक्ल, एम ए, साहित्यरत्न, क्वींस कालेज, बनारस]

इस पुस्तक में रस और अलकार का कठिन विषय बडी सरलता-पूर्वक समझाया गया है। प्रत्येक अलकार के लक्षण, उदाहरण तथा अलकारों क पारस्परिक भेद विद्वान् लेखक ने बडी खूबी से समझाये हैं। सभी उदाहरण आजकल की खडी बोली की कविता से दिये गये हैं, जिससे विद्यार्थी बडी आसानी से उन्हे समझ सकते हैं। इसको पढकर हिन्दी भूषण के विद्यार्थियो को इस विषय की और कोई पुस्तक पढने की आवश्यकता नहीं रहती। मू० ।||=)

पिंगल परिचय

[ले०—प० रामबहोरी शुक्ल, एम ए, साहित्य-रत्न, क्वींस कालेज, बनारस]

इसमें सरल अलकार और अलकार प्रवेशिका के सब छन्दों के लक्षण उसी छन्द मे दकर उसके उदाहरण खूब समझाकर गये हैं, जिससे विद्यार्थी बहुत आसानी से छन्दशास्त्र सकते हैं। मू० ।=)

प्रश्नपत्र २

नोट—परीक्ष्य को स्मरण रहे यह केवल पाँच प्रश्नों के उत्तर देने का प्रयत्न करे। प्रथम और द्वितीय प्रश्न आवश्यक हैं। अन्य कोई से तीन ऐच्छिक हैं। प्रत्येक प्रश्न के अंक बराबर होंगे।

१ शुद्ध हिन्दी में अर्थ लिखो—

(क) अम्बर से निकली न मन्दिर का देखा द्वार
[illegible] रथ पथ से उधार पार आता है।
[illegible] न [illegible] से [illegible] [illegible] भई
[illegible] का [illegible] [illegible] [illegible] है।
'[illegible]' [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] और [illegible] [illegible] [illegible] है॥
ऐसी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] का
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है॥

(ख) ऐसी [illegible] [illegible] [illegible], मन [illegible] न आयो।
दिन दिन अधिक दुराशा, [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥
सुनि सुनि [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥
[illegible] [illegible] ही [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
तुलसिदास प्रभु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥

(ग) सुपरि उबटि अन्हवाइकै नयन आँझि,
पिर रचि तिलक गोरोचन को कियो है।
भूपर अनूप ससिबिन्दु वारे वारे वार,
बिलसत सीस पर हेरि हरे हियो है।
मोद-भरी गोद लिये लालति सुमित्रा देखि,
देव कहे सबको सुकृति उपवियो है।
मातु, पितु, प्रिय, परिजन, पुरजन धन्य,
पुन्यपुंज पेखि पेखि प्रेमरस पियो है॥

(घ) सिर राखे सिर जात है, सिर काटे सिर सोय।
जैसी बाती दीप की कटि उजियारा होय॥ २०

(क) भाग शिवाबावनी में से है जो अब पाठविधि में नहीं है, अतः इसका उत्तर नहीं दिया गया।

(ख) ऐसे ही भटकते-भटकते अनेक जन्म गुजर गए पर कभी मन में सन्तोष नहीं आया। दिन दिन अधिक दुराशा के कारण तमाम लोकों में घूमा। स्वर्ग, पाताल और मृत्युलोक जहाँ जहाँ सुना वहाँ वहाँ उठ कर दौड पडा पर काम, क्रोध, मद और लोभ-रूपी अग्नि की जलन कहीं शान्त नहीं हुई। चन्दन की माला, और स्त्री-विनोदादि के झूठे सुख-रूपी जल से मैंने इस अग्नि की जलन को शान्त करना चाहा परन्तु अज्ञान-वश अत्यधिक अकुला करके मैंने मानो इस जलती हुई अग्नि में घी की आहुति दे दी। भटकते-भटकते मैं दिल हार बैठा पर संसार को मैंने काम, क्रोध, मद और लोभ की अग्नि में वैसा ही जलते हुए पाया। सूरदास जी कहते हैं कि हे प्रभो, आपकी दया के बिना वह अग्नि कैसे शान्त हो सकती

है। आपके कृपा-जल से ही यह बुझ सकती है नहीं तो उसके शान्त होने का कोई उपाय नहीं है।

(ग) माता सुमित्रा ने रामचन्द्र जी के उबटन लगा कर स्नान करवाया, नेत्रों में अंजन लगाया सुन्दर गोरोचन का तिलक दिया, माथे पर नजर न लगने के लिए अनूठी काली बिन्दी लगाई, इससे उनकी शोभा और अधिक बढ़ गई। श्री रामचन्द्र के सिर पर छोटे छोटे बाल शोभित हो रहे हैं जिनके देखने से ही मन हरा हो जाता है। सुमित्रा जी आनन्द पूर्वक बालकों को गोद में लेकर दुलार करते देख देवता लोग कहते हैं कि आज सबका पुण्य उदय हुआ है। माता पिता, प्यारे कुटुम्बी लोग और नगर के लोग पुण्यों के समूह श्रीराम को देख कर प्रेम रस का पान करते हैं

(घ) देह का मोह करने से मान-मर्यादा नष्ट हो जाती है। सिर काटने से ही सिर की शोभा होती है। जैसे दीपक की बत्ती का सिर कट जाने पर ही अधिक प्रकाश होता है। कबीर दास जी का कहना है कि जीना है तो मरना सीखो। जो जाति या राष्ट्र मरने से नहीं घबड़ाता वही जीवित रह सकता है। अन्यथा मान मर्यादा की रक्षा कठिन ही नहीं असम्भव है।

२ सप्रसंग व्याख्या करो—

(क) गिरा अगो बहुँ ध्यान रहती है प्यार महारा।

(ख) सागर मुक्तामयी निमि आविष्।

(ग) जड़हू है चेतन सभी, दीन कर्मोन स्पन्दन।

(घ) स्नेहोपमा मादकता मदालसा।

(ङ) हार की जिसमें पावस प्राण है।

(च) कितना अस्थिर है लीलामय पलकों का उत्थान पतन।

(छ) प्रबल है प्रबल काल की चाल। २०

(क) यह भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के एक पद्य का टुकडा है, जो उनके 'नील देवी' नाटक मे से लिया गया है। राजपूत सेना को मुसलमानों को कुचलने के लिए प्रेरित करते हुए तथा उनकी सख्या मे न घबराने का आदेश देते हुए राजकुमार सोमदत्त कहते है –"सिंह के जागने पर कहीं कुत्ते भी युद्ध मे ठहरते है" अर्थात् यदि तुम युद्ध के लिए कटिबद्ध हो जाओ तो क्या यह बडी भारी यवन सेना तुम्हारे सामने ठहर सकती है।

(ख) जगत् के मिथ्यात्व और ब्रह्म और जगत् की एकता बताते हुए कवि कहता है, कि जैसे समुद्र और समुद्र की लहर दोनों ही जल है दोनों मे कोई भेद नहीं वैसे ही जगत् और ब्रह्म दोनों एक ही हैं, और इस जगत् को ब्रह्ममय ही मानना चाहिए। माया का परदा हटते ही दोनों एक ही दिखाई देते हैं।

(ग) सखियाँ ऊधो से कह रही है कि एक कृष्ण के विरह में पलाश, अशोक, आम, माधवीलता आदि ने अपना अपना प्रफुल्लित होना छोड दिया है। सो ऐसा प्रतीत होता है मानों ये जड वृक्ष चेतन होकर दीन-मलीन दिखाई देते है।

(घ) वसत-ऋतु में वनस्थली की शोभा का वर्णन करते हुए कवि कहता है, कि प्रकृति ने, पुष्पित आम ने और पराग ने क्रमश॰ पृथ्वी को मनोज्ञता (सुदरता), कोयल को मादकता (नशीलापन) और भौरे को मदांधता (मदमस्ती) दी थी।

(ङ) उर्मिला और लक्ष्मण के परस्पर खेल और प्रणया-

लाप का वर्णन करता हुआ कवि कहता है कि प्रामयों व प्रेम का वर्णन नहीं हो सकता जिस में हारना ही एक दूसरे से जीतना है। अर्थात् प्रेम की ऐसी लीला है इसमें जो हारता है वही जीतता है।

(च) प्रभु की विचित्र लीला का वर्णन करते हुए कवि कहता है कि तुम्हारी एक आँख की पलक मारने में रात समाप्त हो जाती है, एक निमेष मात्र में दिन हो जाता है, इस प्रकार यह अस्थिर दिन रात का खेल है और लीलामय प्रभु के पलकों का खुलना और गिरना कितना अस्थिर है, इस जग में क्षण क्षण में कितने परिवर्तन होते रहते हैं।

(छ) नूरजहाँ की कब्र पर आँसू बहाता हुआ कवि कहता है एक दिन मुगल साम्राज्य तुम्हारी उँगली पर नाचता था, आज तुम्हारी कहानी मात्र रह गई है, इससे यह मालूम पड़ता है कि बलवान् काल की गति बड़ी प्रबल है। यह सब को खा जाता है।

२ 'कविता हृदय की अनुभूति है' — इस कथन का समाधान करो। [illegible]

पूर्व और पश्चिम दोनों प्रदेशों के साहित्यशास्त्री अनेक वर्षों से कविता की भिन्न भिन्न परिभाषाएँ करते आए हैं। पर अभी तक कोई सन्तोषजनक परिभाषा नहीं हो सकी। कोई कहता है कि 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' अर्थात् रसमय वाक्य ही काव्य है' तो कोई कहता है कि 'कविता कागज पर निकाल कर रख दिये जाने वाले हृदय के उद्गारों का नाम है' और कोई 'कविता को हृदय की अनुभूति' मानता है। इस ही प्रकार अनेक परिभाषाएँ की गई हैं। प्रत्येक साहित्यशास्त्री अपने-अपने मत से दोनों में [illegible]

देता है, अत यह कहना कि यह लक्षण सब पक्षों को मान्य होगा, बडा कठिन है। पर कविता की जितनी भी परिभाषाएँ की जाती हैं उनका यदि विश्लेषण करें तो हम यह पायेंगे कि उन म से अधिकाश कविता का हृदय के साथ ही सबध जोडती हैं। और अधिकाश परिभाषाओं का लक्ष्य या अन्तर्गत भाव एक ही है।

काव्य वास्तव में मानव जीवन का चित्र है, उसमें भाषा के द्वारा मानवजीवन की अभिव्यक्ति होती है। रागों या वेग स्वरूप वृत्तियों का सृष्टि के साथ उचित सामजस्य स्थापित करके कविता मानव जीवन के व्यापकत्व की अनुभूति उत्पन्न करने का प्रयास करती है। यदि इन वृत्तियों को समेट कर मनुष्य अपने अत करण के मूल रागात्मक अश की सृष्टि से किनारा कर ले तो फिर उसके जड हो जाने में क्या सदेह रहा। शरद काल की चॉदनी रात मे या वसन्त ऋतु मे कुसुमित पुष्पोद्यान में प्रिय व्यक्ति के पास होने पर प्रत्येक चेतन मानव के मन में वासना उत्पन्न हो उठती है। वर्षा ऋतु में उमडते बादलों के समय प्रिय वियोग से वह व्याकुल हो उठता है। आँगन में खेलते बालकों की लीला को देख कर पुलकित हो जाता है। हास्य की अनूठी उक्ति सुन या विनोद पूर्ण दृश्य को देख कर वह कहकहा उठता है, प्रिय की मृत्यु पर किंकर्तव्यविमूढ हो जाता है, शत्रु या विपक्षी की अविनीत चेष्टाओं को देखकर वह क्रोध से तिलमिला उठता है, दीनों पर अत्याचार देख उत्साह से क्रियाशील हो जाता है, जगल में एकान्त मे सिंह या हिंस्र जतु को देख भय से आतुर हो जाता है, श्मशान को या अन्य घृणित स्थान को देखकर उसके मन में

ग्लानि पैदा होती है, किसी असाधारण वस्तु को देखकर वह आश्चर्य-चकित हो जाता है, और संसार की असारता को देख परमपिता का आश्रय ढूँढता है। लहलहाते हुए खेतों और जंगलों की हरी घास के बीच बहने वाले नालों, काली चट्टानों पर चाँद की तरह झरते हुए झरनों, मंजरी से लदी अमराइयों और कलरव करते हुए पक्षियों को देख मानव आनंद में लीन हो जाता है। किसी यशस्वी की पुण्यगाथा सुन उसका सिर श्रद्धा से उसके चरणों पर झुक जाता है और मातृभूमि पर आपत्ति देख वह बलिदान होने को तैयार हो जाता है। इस प्रकार प्रत्येक चेतन मानव का मन इन भावों से आन्दोलित होता रहता है। प्रत्येक मानव के मन में करुणा और आनंद की अनुभूति होती है, भावुक कवि अपनी कविताओं में उन्हीं भावनाओं, अनुभूतियों का चित्रण इतना तीव्र करता है कि वे एक बार दूसरे के हृदय में उथल पुथल मचा जाती हैं। वैसी ही भावनाएँ उस दूसरे के हृदय में भी आविर्भूत हो जाती हैं। उसका सुप्त अंतरतम जाग उठता है और वह उन्हें अपनी ही अनुभूति समझने लगता है। कालिदास द्वारा वर्णित शकुन्तला की विदा हमें अपनी बहन बेटी की विदा मालूम पड़ती है। [illegible] की मृत्यु पर [illegible] विलाप हमें अपना जीवन [illegible] घटना प्रतीत होती है। इसी प्रकार [illegible] कविता [illegible] का, हृदय के गुम्फन [illegible] का, [illegible] [illegible] भावों का [illegible] वर्णन है। कविता की [illegible] [illegible] है। फलतः कविता हृदय की अनुभूति है।

'रसात्मक वाक्य का नाम काव्य है' और 'कविता हृदय की अनुभूति है' इन दोनों का वास्तविक भाव भी एक ही है।

रसात्मक वाक्य वही है जिसमें प्रबल मनोवेग हृदय में मग्न रहने वाले भावों—प्रेम, हास, शोक, क्रोध, उत्साह, भय घृणा, विस्मय और वैराग्य—की व्यंजना हो। परन्तु हृदय की कई अनुभूतियाँ साहित्य में माने हुए नौ रसों में नहीं आतीं अतः इस लक्षण में अव्याप्ति दोष कहा जाता है। साथ ही यह इतना स्पष्ट नहीं जितना "कविता हृदय की अनुभूति है।" अतः हम इसी लक्षण को अधिक पसन्द करते हैं।

२. 'कवि ब्रह्मा है'—यह उक्ति कहाँ तक सत्य है ? युक्तिपूर्वक विवेचना करो। २०

पुराणों में ब्रह्मा को सृष्टि का कर्त्ता कहा गया है, और यह दृश्यमान जगत् ब्रह्मा की रचना माना गया है। कवि भी सृष्टि रचता है, कवि का भावात्मक जगत् ब्रह्मा के बाह्य जगत् से अधिक निराला सुंदर और अमर है। कवि के भावात्मक जगत् में बाह्य इंद्रियों—आँख, कान, नाक, जिह्वा, त्वचा—से गोचर बाह्य जगत् के रंग ही नहीं होते, अपितु उनके साथ हमारे वे भाव, हमारा भय विस्मय हमारा सुख-दुख भी मिले रहते हैं। इस भावात्मक जगत को अपनी कल्पना कूँची से रँगकर कवि असुंदर को भी सुंदर बना देता है, वह सड़क पर पड़े हुए कोढ़ी में, बेबस गिरे हुओं में 'सुंदर' की—'अनंत' की स्थापना करता है। ओस में रात के आँसुओं को ढूँढता है। साधारण व्यक्ति इस बाह्य जगत् में प्रिय की मृत्यु पर रोता है। पर कवि की कूँची से चित्रित विरह और मृत्यु का वर्णन अत्यंत सुंदर और भव्य हो जाता है। कवि के दुःख-भरे उच्छ्वास और सुख-भरे गीत दोनों ही संसार का मनोरंजन करते आए हैं—अर्थात् आनंद देते आए हैं

और देते रहेंगे। कवि कुलगुरु कालिदास का अज विलाप भवभूति के विरही राम के प्रलाप और भारतेन्दु के शैव्या-विलाप को पढ़कर पत्थर भी पिघल जाते हैं पर फिर भी उसमें आनंद पाते हैं उसे बार बार पढ़ना चाहते हैं। लाखों आश्रम-कन्याएँ हुईं और मर गईं पर कालिदास की तपोवन विहारिणी शकुन्तला सदा के लिए अजर अमर है। शीरीं फरहाद, लैलामजनूँ और हीर राँझा कहाँ नहीं होते पर कवियों द्वारा रचित यह प्रेमियों का समाज तब तक अमर रहेगा जब तक इस ब्रह्मा की सृष्टि है।

जिस तरह ब्रह्मा दिन रात सृष्टि रचना को तरसा करता है, नित नई रचना में प्रवृत्त रहता है, कवि के हृदय में भी रचना के लिए वैसे ही बेचैनी होती है। जब वह किसी अनूठी वस्तु को देखता है तो रचना के लिए उत्सुक हो उठता है। उस समय प्रसव वेदना उसे बेहाल कर देती है। जब वह एक नई वस्तु की सृष्टि कर देता है, तभी उसकी बेचैनी की आग शान्त होती है। वह जगत् के भंडारों के रत्न, तारक, हीरे मोती और कमलों को अपने अंतर के रस से स्निग्ध, मधुर, उज्ज्वल और आकर्षक बना कर समाज के सामने लाता है, यही उसकी कला है, यही उसकी शक्ति है।

कवि के कृत ब्रह्मा के फूलों से अधिक सुन्दर और सजीव होते और कवि के रत्न ब्रह्मा जगत् के रत्नों से अधिक चमकीले होते हैं। इस सजीव सृष्टि की रचना के कारण ही कवि को ब्रह्मा कहा जाता है। और 'कवि ब्रह्मा है' यह उक्ति सर्वथा सत्य है।

१ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र और कविवर [illegible] के [illegible] में अपने विचार प्रकट करो।

भारतेन्दु एक निपुण लेखक तथा कुशल कवि थे। वर्त्तमान काल में हिन्दी भाषा की इतनी उन्नति अन्य किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं हुई जितनी भारतेन्दु द्वारा। इस प्रतिभा शाली व्यक्ति ने हिन्दी गद्य को अनिश्चितता के कीचड से निकाल कर एक निश्चित रूप दिया। हिन्दी भाषा को स्वदेश-प्रेम, समाज-सुधार आदि विविध विषयों तथा नये भावों से अलङ्कृत किया, नाट्य-साहित्य की नींव डाली, तथा हास्यरस की जड जमा दी।

उनकी कृतियों की सबसे मुख्य विशेषता उसमें देश तथा जातीय प्रेम का कूट कूटकर भरा होना है। चाहे कैसा अवसर हो और चाहे किसी प्रकार की रचना की आवश्यकता हो, भारतेन्दु अपने देश को नहीं भूलते, घूम फिर कर उन्हें उसके पूर्ण गौरव, वर्त्तमान दीनावस्था और भविष्य का ध्यान आ ही जाता था। भारतेन्दु के समान हिन्दुस्तान के दोषों पर आँसू बहाने वाला, उसके पूर्व गौरव पर अभिमान करने वाला कोई भी अन्य कवि उस समय तक हिन्दी साहित्य में न हुआ था। उनकी सारी कविता हिन्दी हिन्दुस्तान के लिए थी।

उनकी दूसरी विशेषता विविध विषय प्रतिपादकता है अन्य हिन्दी कवियों की तरह उन्होंने केवल भक्ति या शृंगार को ही नहीं अपनाया, अपितु प्रेम, भक्ति प्रकृति वर्णन स्वदेश प्रेम, इतिहास आदि सभी विषयों पर और हास्य वीर, वीभत्स तथा करुण आदि सभी रसों में अनूठी कविता की। उन जैसा प्रकृति वर्णन तो अब तक बहुत कम ने किया है। इसके पहले हास्यरस पर बहुत कम रचना की गई, और भारतेन्दु जैसा सभ्यजनोचित हास्य और गम्भीरता के रंग में रंगा चुटीला व्यंग्य बहुत कम की कृतियों में मिलता है।

उनकी तीसरी विशेषता उनके द्वारा किया गया भाषा का परिष्कार था। भारतेन्दु ने जब नये विषयों पर अपनी कलम उठाई तब उन्हें नये भावों को प्रकट करने के लिए भाषा की नयी शैली नये शब्दों और नये मुहावरों की आवश्यकता पड़ी। प्राचीन ब्रज भाषा में एक तो इन भावों का प्रकट करना कठिन था, दूसरा उनके पूर्ववर्ती कवियों ने शब्दों को तोड़ मोड़ कर ब्रजभाषा को वह रूप दे दिया था, जो [illegible] की भाषा से बहुत दूर हो गया था। यह देखकर भारतेन्दु ने

अनुवाद हैं जो उच्च कोटि के हैं पर कहीं कहीं जहाँ इन्होंने श्लोकों का पूरा भाव लाने का प्रयत्न किया है, वहाँ भाषा कठिन और अव्यवस्थित हो गई है। जो सफलता भारतेन्दु को मुद्राराक्षस आदि नाटकों के अनुवाद में मिली है, वह सफलता इन्हें न मिल सकी, साथ ही इनकी कृतियों ने हिन्दी साहित्य में कुछ नवीनता न दी।

६. छायावाद तथा रहस्यवाद पर प्रकाश डालते हुए लिखो कि कबीर, मीरा, सत्यनारायण और हरिऔध ने किस शैली का आश्रय लिया है? २०

प्रकृति में जो कुछ दिखाई देता है उसकी सीमा वहीं तक न समझ कर उसमें आत्मीयता स्थापित करने तथा कौन सी वस्तु कितनी उपयोगी है, केवल इसका विचार न कर उस वस्तु को भावुकता की कसौटी पर कसने की प्रवृत्ति छायावाद कहलाती है। यह प्रकृति विस्तारोन्मुखी है। यह प्रवृत्ति प्रकृति के बंधनों से आत्मा के मुक्त होने की घोषणा है। इस प्रकार छायावाद एक स्थिति है जिसमें हृदय को अनंत के साथ अपने संबंध की अनुभूति होती है। भावुक हृदय को डालों की फरफराहट में एक गीत सुनाई देता है, गुलाब के फूल में मानव यौवन का विकास दिखाई देता है सूर्य की सुनहली किरणें, उसके लिए आशा का सन्देश लाती हैं कलियाँ खिल कर प्रकृति के हृदय के उल्लास को प्रकट करती हैं, हिमकण उसकी वेदना के साथ रोते दिखाई देते हैं, समस्त प्रकृति उस भावुक हृदय के साथ सहृदय आलाप करती दिखाई देती है, प्रकृति की छोटी छोटी सीमाओं को पार कर वह प्रकृति में परमात्मा का दर्शन करने लगता है।

बोलचाल की ही भाषा को अपनाया। गद्य तो उन्होंने बिलकुल खड़ी बोली में लिखा। उनका पद्य ब्रजभाषा में था, पर वह भी खड़ी बोली का रंग लिये था, तथा पूर्ववर्त्ती कवियों की भाषा से अधिक सरल और ओजपूर्ण था। इस प्रकार उन्होंने जनता के जीवन और साहित्य में भिन्नता दूर कर सामंजस्य स्थापित किया।

कविरत्न सत्यनारायण सचमुच ब्रजवासी थे, ब्रजनायक कृष्ण के अनन्य उपासक और ब्रजभाषा के माधुर्य पर मिटने वाले। नंददास आदि ब्रज के कवियों के ढंग पर उन्होंने भ्रमर-गीत इत्यादि रचनाएँ की हैं। पर समय के फेर ने और उनके देश प्रेम ने उनकी इन रचनाओं में राष्ट्रीयता का रंग डाल दिया था। उसमें नये विचार सम्मिलित हो गये थे, कृष्ण को संदेशा भेजते हुए भी वे कह बैठते हैं—

> नहिं देशीय भेष भावुन को आशा कोऊ
> लखियत जो ब्रजभाषा जाति हिरानी सोऊ
> आस्तिक बुधि बधनन से, बिगरी सर्व मरजाद
> सब काऊ के मन बसें, न्यारे न्यारे स्वाद
> अनोखे ढंग के।

उनके दुखी जीवन ने उनकी कविता में करुणरस का प्रवाह बहा दिया था। उनकी कविता अत्यंत श्रवण सुखद और मर्मस्पर्शिनी है। भाषा भी मीठी और सरस है, पर ठेठ है, और उसमें साहित्यिक शब्दों के साथ कई ऐसे शब्दों का भी प्रयोग हुआ है जिनका प्रयोग साहित्यिक ब्रजभाषा में नहीं होता था और जो ब्रजमंडल में ही सीमित हैं। उनके विशेष उल्लेखनीय ग्रंथ भवभूति के उत्तररामचरित और मालती माधव के

अनुवाद है जो उच्च कोटि के हैं पर कहीं कहीं जहाँ इन्होंने श्लोकों का पूरा भाव लाने का प्रयत्न किया है, वहाँ भाषा कठिन और अव्यवस्थित हो गई है। जो सफलता भारतेन्दु को मुद्राराक्षस आदि नाटकों के अनुवाद में मिली है वह सफलता इन्हें न मिल सकी, साथ ही इनकी कृतियों ने हिन्दी साहित्य में कुछ नवीनता न दी।

६ छायावाद तथा रहस्यवाद पर प्रकाश डालते हुए लिखो कि कबीर, मीरा, सत्यनारायण और हरिश्चंद्र ने किस शैली का अवलम्बन किया है ? २०

प्रकृति में जो कुछ दिखाई देता है उसकी सीमा यहीं तक न समझ कर उसमें आत्मीयता स्थापन करने तथा कौन-सी वस्तु कितनी उपयोगी है, केवल इसका विचार न कर उस वस्तु को भावुकता की कसौटी पर कसने की प्रवृत्ति छायावाद कहलाती है। यह प्रवृत्ति विस्तारोन्मुखी है। यह प्रकृति प्रवृत्ति के बन्धनों से आत्मा के मुक्त होने की घोषणा है। इस प्रकार छायावाद वह स्थिति है जिसमें हृदय का चेतन के साथ अपने सम्बन्ध की अनुभूति होती है। भावुक हृदय को झरने की कल-कल में एक गीत सुनाई पड़ता है गुलाब के फूल में मानव यौवन का विकास दिखाई देता है सूर्य की सुनहली किरणें, उसके लिए आशा का संदेश लाती हैं कलियाँ खिल कर प्रकृति के हृदय के उल्लास को प्रकट करती हैं, हिमकण उसकी वेदना के साथ रोते दिखाई देते हैं, समस्त प्रकृति उस भावुक हृदय के साथ सम्बन्ध जोड़ती या जुड़ती दिखाई देता है, प्रकृति की कड़ी इन सीमाओं को पार कर यह प्रकृति में व्यापकता का दर्शन करने लगता है।

प्रकृति के साथ सामजस्य स्थापित करने के साथ साथ वह प्रकृति और मनुष्य दोनों का ही एक इंद्रियातीत सत्ता में समन्वय—संयोग—करना चाहता है, वह फूल मे अपने यौवन का ही प्रतिबिंब नहीं देखता वरन् वह बिंब और प्रतिबिंब के मूल स्रोत तक पहुँच कर उससे सबंध स्थापित करने की इच्छा करता है।

जिस प्रकार प्रकृति की गोचर (इंद्रियों द्वारा दिखाई देने वाली) सीमाओं को पार कर—उसमे दिखाई देने वाले इतिवृत्तात्मक भौतिकता की अपेक्षा एक अलौकिक अगोचर (इंद्रियों से न दिखाई देने वाली) भावुकता के दर्शन करने की प्रवृत्ति को छायावाद कहते हैं, उसी प्रकार दृश्य-सबध के अतिरिक्त एक लोकोत्तर सत्ता के साथ संबध स्थापन की प्रवृत्ति को रहस्यवाद कहते हैं। छायावाद जिस प्रकार प्रकृति को मनुष्य के सबध मे लाता है रहस्यवाद उसी प्रकार मनुष्य तथा मनुष्यों के अतिरिक्त शेष जगत् को उससे अतीत करने वाली श्रेष्ठतम सत्ता के साथ सबधित करता है। व ससीम और असीम का एक प्रकार से समन्वय करता है छायावाद और रहस्यवाद दोनों ही दृश्य की सकुचित सीमाओं को पार करने को अग्रसर होते हैं। वर्त्तमान की अपूर्णता अस्थायित्व उसका सूनापन, मनुष्य को वर्त्तमान को अतीत करने वाली सत्ता की ओर ले जाता है। वह सत्ता चाहे अप ही आध्यात्मिक आनद में मिल जाय, चाहे वह अपने पृथक ईश्वर की हो। रहस्यवाद छायावाद के बाद की स्थि है और अधिक मगलमयी है। छायावाद में कवि सीमि वस्तुओं में असीम या आत्मा के दर्शन करता है, और रहस्

बाद में असीम के साथ अपने संबंध की अनुभूति करता है। यह सम्मिलन तभी हो सकता है, जब आत्मा उसी मादक प्रेम का राग अलापने लगे जिस से हृदय में एक बार हल-चल मच जाये और वह आराध्य से मिलने के लिए ऐसा विह्वल हो उठे जैसे—प्रियतमा अपने प्रेमी के लिए होती है। इसी कारण बड़े से बड़े रहस्यवादियों ने आत्मा और अनन्त के संबंध को पति-पत्नी के संबंध द्वारा व्यक्त किया है जब तक संयोग नहीं होता तब तक आत्मा विरहिणी बनकर परमात्मा के वियोग में तड़पा करती है। इस विरह में वासना का चित्र होते हुए भी प्रेम की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति होती है। विरह वर्णन की अधिकता के कारण रहस्यवादी कविता अधिकतर वेदनापूर्ण होती है। इसमें वियोग जन्य विह्वलता के जितने दर्शन होते हैं उतने संयोग जन्य आह्लाद के नहीं। छायावादी और रहस्यवादी कवि अज्ञात और अगोचर का चित्रण करने का प्रयत्न करते हैं, अतः उनकी कविता में अस्पष्टता का आधिक्य होता है।

कबीर हिन्दी के सर्वप्रथम रहस्यवादी कवि हैं। भारतीय अद्वैतवाद के मतानुसार वे आत्मा को अनन्त का ही, जीव को परमात्मा का ही रूप मानते हैं। यह तत्व ही भिन्न भिन्न रूप में सब जगह विद्यमान है। माया का पर्दा बीच में पड़ कर उनको विलग करता है, जब वह हट जाता है तो एक मात्र ही रहता है—

मैं सबनि औरनि मैं हूँ सब
मेरी बिलगि बिलगि बिलगाई हो।

× × ×

जल मे कुंभ कुंभ मे जल है, बाहर भीतर पानी
फूटा कुंभ जल जलहिं समाना, यह तत कथो गियानी।

आत्मा को स्त्री और परमात्मा को पुरुष मानने की रहस्य-वादी कल्पना को व्यक्त करने वाली अनेक उक्तियाँ उनकी कविता मे मिलती हैं। जैसे—

"हरि मोर पीव मैं राम की बहुरिया"

"दुलहिन गावो मंगलचार
हम घर आये हो राजा राम भरतार।"

कहहि कबीर सब नारी राम की,
अविचल पुरुष भतार"

जब उपासक का लक्ष्य साकार होता है, तब उसकी उपासना भी स्पष्ट होती है, पर जब उपासक आकार का परित्याग कर अगोचर की ओर अग्रसर होता है, तब उसे रहस्यात्मक शैली को ग्रहण करना पड़ता है। अतएव निर्गुण पंथी कवियों के काव्य मे ही रहस्यवाद दिखाई देता है। सगुणोपासक कवियों की कविता में रहस्यमय उक्ति नहीं होती। मीरा, भारतेंदु हरिश्चन्द्र और सत्यनारायण तीनों ही साकारोपासक हैं, अत: उनकी कविता में न छायावाद है और न रहस्यवाद। पर इन में से मीरा की कविता में कुछ रहस्यवाद की उक्तियाँ अवश्य मिलती हैं। जैसे—

त्रिकुटी महल में बना है झरोखा, तहाँ से झाँकी लगाऊँ री
सुन्न महल में सुरति जगाऊँ, सुख की सेज बिछाऊँ री।

× × ×

ऊँची अटरिया लाल किवड़ियाँ निरगुण सेज बिछी
पँचरंगी झालर सुभ सोहैं, फूलन फूल कली

× × ×

सेज सुखमणा मीरा सोवे सुभ है आज घरी।

पर ये उक्तियाँ मीरा में स्वाभाविक नहीं, अपितु निर्गुण-संत कवियों की प्रचलित परंपरा का संस्कार मात्र है।

७ 'भारतेंदु ने हिंदी कविता को बंधन मुक्त किया'—इस कथन की विवेचना करो। २०

जिस हिन्दी कविता की श्रीवृद्धि चन्द आदि वीर कवियों ने अपने मारू राग द्वारा, कबीर जैसे संत कवियों ने अपनी ज्ञान मयी और जीवन-स्पर्शी वाणी द्वारा, जायसी जैसे प्रेम मार्गी कवियों ने अलौकिक को लक्ष्य करने वाले लौकिक काल्पनिक आख्यानों द्वारा तथा सूर और तुलसी ने भावमयी भक्ति धारा द्वारा की थी, उसी हिन्दी-कविता की निर्मल या ओजमयी धारा को केशव, मतिराम, देव, आदि रीतिकाल के कवियों ने रीतिग्रन्थों के बंधन में जकड़ दिया।

यह बंधन इतना सख्त था कि बिना लक्षण ग्रंथ लिखे कवि-कर्म अधूरा समझे जाने लगा। रीतिग्रंथों को इतना महत्व दिया जाने लगा कि कवि कहलाने के लिए उसी परिपाटी पर ग्रंथ रचना करना प्रायः अनिवार्य हो गया। इसमें शृंगाररस को ही प्रधानता मिली। भक्त कवियों के कृष्ण तथा राधिका में लीला वर्णन में वासना के कीड़े ने प्रवेश किया। शृंगार में आलंबन नायक-नायिकाओं के अनेक भेद विभेद किये गए। रसग्रंथ प्रायः नायिका भेद के ही ग्रंथ थे। उद्दीपन के लिए षट् ऋतु वर्णन की प्रथा चली। सूर और तुलसीदास जैसे महाकवियों ने काव्य-कला का साधन न मानकर अलंकारों को सहायक समझ कर उनका उपयोग किया था, पर रीतिकाल

के कवियों ने काव्य कला को ही साध्य समझा, और अलकारों को ही कविता का सौंदर्य। उन्होंने काव्यकला को ही प्रधान मान कर शेष सब बातों की उपेक्षा की और मुक्तकों द्वारा एक एक अलकार, एक-एक नायिका अथवा एक-एक ऋतु का वर्णन किया। यहाँ तक कि भूषण जैसा निर्बंध और ओजस्वी कवि भी इस बधन की उपेक्षा न कर सका उसे भी अलकारों के लक्षण देने पडे जो अधूरे और भद्दे होने के कारण उसकी कीर्ति चद्रमा में कलक के समान है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तक इन्हीं रीतिग्रथों का ताँता चलता रहा। सैंकडों बरसों से नायक-नायिकाओं के नखशिख वर्णन पर फिदा होने वाले कवियों को अपनी देश प्रेममयी कविता द्वारा मुक्तकेशिनी, शुभ्रवसना परवशगता भारत माता की आधुनिक करुणोज्वल छवि के दर्शन करा कर तथा उसके पूर्व गौरव का स्मरण कराकर भारतेन्दु ने उन्हें नये पथ पर चलने का आदेश दिया। साथ ही प्रकृति-वर्णन, स्वदेश-प्रेम तथा हास्य, वीर, वीभत्स और करुण आदि अनेक रसों मे अनूठी कविता कर दूसरे कवियों को भी नये भावों और नये विषयों पर कविता लिखने को प्रवृत्त किया। इस प्रकार उन्होंने हिन्दी साहित्य को शताब्दियों से सडी हुई रीतिकाल की गदी गली से निकाल कर शुद्ध तथा जीवन-प्रद वायु में विचरण करने का पथ प्रदर्शन करा कर हमारे जीवन और साहित्य के बीच जो विच्छेद पड रहा था, उसे दूर किया। फलत् हम यह कह सकते है कि प्राचीन परिपाटियो की जजीरों को तोड कर भारतेन्दु ने हिन्दी कविता को बधन-मुक्त किया।

८ मैथिलीशरण गुप्त और उदयशकर भट्ट की कविता में समता

अथवा विषमता की बातें बतलाकर अपनी सम्मति दो कि इनमें से किसको तुम अधिक प्यार करते हो और क्यों ?

मैथिलीशरण जी गुप्त युग-निर्माण वाले कवि हैं, उन्होंने हिन्दी काव्य कानन में आमूलचूल युगान्तर उपस्थित कर दिया है, उन्होंने हिन्दी को उस समय से सजाना प्रारंभ किया जिस समय ब्रजभाषा और खड़ी बोली में विरोध चल रहा था। श्रीधर पाठक और नाथूराम शर्मा शंकर जैसे प्रतिभाशाली कवि भी कभी ब्रजभाषा के ओर झुकते थे तो कभी खड़ी बोली की ओर। उस समय से गुप्त जी ने राष्ट्रीय भावना से ओत प्रोत हो राष्ट्रवाणी को राष्ट्र की बोली—खड़ी बोली—में रचना करना प्रारंभ किया। वर्षों के अध्यवसाय और अनवरत तपस्या के बाद वे युगनिर्माण कर सके हैं और राष्ट्र-कवि के पद को सुशोभित कर पाये हैं। गुप्त जी की कविता में उपदेश, माधुर्य, मर्म-स्पर्शिता, तल्लीनता आदि अनेक गुण विद्यमान रहते हैं। उनकी रचनाओं से सर्व साधारण में राष्ट्रीय भावनाएँ जागृत होती हैं, प्राचीन संस्कृति के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है धार्मिक प्रवृत्ति विकसित होती है और अपरिमित शान्ति मिलती है। प्रसाद गुण का उनमें सदा एक सा प्रवाह रहता है। सच पूछिए तो उनकी काव्य शैली का प्रधान गुण है। समय के साथ साथ उनकी रचनाओं में सरसता और गांभीर्य की मात्रा बढ़ती गई है। वे लोग भी, जो 'भारत भारती' को साधारण जनता की राष्ट्रीय भावना को जागरित करने वाली तुकबन्दी कहा करते थे, 'साकेत' और 'यशोधरा' आदि उनकी नयी रचनाओं की सरसता और भाव गांभीर्य को देखकर दंग रह गये हैं। गुप्त जी की कविता की

व्याकरण-सम्मत और विशुद्ध होती है और शब्द-योजना सुगठित तथा परिमार्जित। उसमें प्रयास नाम-मात्र का नहीं मालूम होता। स्पष्ट अभिव्यंजना में तो उनका कोई सानी नहीं है। इन्हीं कारणों से उनकी कविताएँ संपूर्ण भारत में आदर के साथ पढ़ी जाती हैं, और खड़ी बोली में जितनी उनकी कविताओं का आदर हुआ है, जितनी उनकी रचनाएँ सर्वप्रिय हुई हैं उतनी अन्य किसी की नहीं हुई। वे इस समय के सब से अधिक यशस्वी एवं लोक-प्रिय कवि हैं।

श्री उदयशंकर जी भट्ट ने कुछ थोड़े वर्षों से ही हिन्दी में लिखना प्रारंभ किया है। वे हिन्दी और संस्कृत के विद्वान् हैं। उनकी तक्षशिला आदि प्रारंभिक रचनाओं में कवित्व के स्थान पर पांडित्य ही अधिक दिखाई देता था। उसकी भाषा इतनी जटिल और संस्कृतमयी थी कि कई स्थानों में वह केशव की कठिनता से टक्कर खाती थी। परन्तु युगप्रवाह के अनुसार उनकी कविता ने भी रूप बदला है, संस्कृत के कठिन शब्दों के स्थान पर जहाँ उसमें अब सहल उर्दू शब्दों का प्रयोग सफलता के साथ होने लगा है वहाँ सर्वसाधारण के हृदय को व्याकुल रखने वाला असंतोष अब उनकी कविताओं में हाहाकार करने लगा है। आजकल के छायावादी कहलाने वाले कवियों की तरह उसमें भी उलझी हुई पीड़ा है, कसक और वेदना है, जो पढ़ने वाले को शान्ति देने के बजाय और अशान्त कर देती है। साथ ही संकेतों में अस्पष्टता है, और भाव भी उलझे हुए हैं। भट्ट जी की वही पुस्तकें अधिक प्रचलित हुई हैं, जो पाठ विधि में स्थान पा सकी हैं।

गुप्त जी और भट्टजी में इतनी विषमताओं के होते हुए भी अगर कोई समता कही जा सकती है तो वह यही कि दोनों एक ही पथ के पथिक हैं, एक ही गगन को प्रकाशित करते हैं। अगर गुप्त जी आधुनिक काव्य गगन के पूर्णोदित इन्दु हैं तो भट्ट जी अभी क्षीण ज्योति से टिमटिमाने वाले सितारे हैं। गुप्तजी जिस काव्य-प्रासाद की अन्तिम सीढ़ी पर पहुँच चुके हैं भट्ट जी ने अभी उस की सीढ़ी पर पग रखा है।

समाज चढ़े हुओं को ही पूजता है, अतः हम भी गुप्त जी को ही अधिक पसन्द करते हैं।

९ निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखो—

हिमचूड़ा, सोपान, त्राण, परिधि, विजन, अनुसंधान, आलोक, निर्वाण, घनसार, पारावार, क्रन्दन, रश्मि, अनिल, अनवद्य, प्रसून, दुकूल, अदभ्र, क्षितिज, मेहर, मिस, खोटी, कोल और गोल। १०

हिमचूड़ा = बर्फीली चोटी। सोपान = सीढ़ी। त्राण = रक्षा। परिधि = घेरा। विजन = जनरहित एकान्त। अनुसंधान = खोज। आलोक = प्रकाश। निर्वाण = मुक्ति। घनसार = कपूर। पारावार = समुद्र। क्रन्दन = रोना चिल्लाना। रश्मि = किरण। अनिल = वायु। अनवद्य = निर्दोष। प्रसून = पुष्प। दुकूल = वस्त्र, दुपट्टा। अदभ्र = महान् अत्यधिक। क्षितिज = दृष्टि की पहुँच पर वह वृत्ताकार स्थान जहाँ आकाश और पृथ्वी दोनों मिलते जान पड़ते हैं। मेहर = दया, कृपा। मिस = बहाना। खोटी = बुरी। कोल = सूकर आदि। गोल = झुण्ड, समूह।

प्रश्नपत्र ३

१ नीचे लिखे प्रथम प्रश्न के क-ख भागों का और द्वितीय प्रश्न के घ ङ ज भागों का सरल हिन्दी में अर्थ लिखो —

(क) कार्नो०—नहीं चन्द्रगुप्त, मुझे इस देश से जन्मभूमि के समान स्नेह होता जा रहा है। यहाँ के श्यामल कुञ्ज, घने जंगल, सरिताओं की माला पहने हुए शैलश्रेणी, हरी-भरी वर्षा, गर्मी की चान्दनी शीत काल की धूप, और भोले कृषक तथा सरल कृषक बालिकायें, बाल्यकाल की सुनी हुई कहानियों की जीवित प्रतिमायें हैं। यह स्वप्नों का देश, यह त्याग और ज्ञान का पालना, यह प्रेम की रंगभूमि भारतभूमि क्या भुलाई जा सकती है? कदापि नहीं। अन्य देश मनुष्यों की जन्मभूमि हैं, यह भारत मानवता की जन्मभूमि है। १२

(ख) वेदवती—सुनो—आज सात दिन हुए कि इकट्ठी हुई सब तपोवन-वासिनियों ने भगवान् वाल्मीकि से प्रार्थना की कि "आज-कल महाराज रामचन्द्र जी के यहाँ आये रहने के कारण आश्रम की इस पुष्करिणी पर सदा ही सब तरह के लोगों की दृष्टि पडती रहती है इस लिये कमल फूल तोड़ने तथा स्नानादि कार्य के लिये यह हमारे योग्य नहीं रही" तब ध्यान से निश्चल नेत्रवाले महर्षि ने थोडी देर तक कुछ सोचकर कहा "इस पुष्करिणी पर आई स्त्रियाँ पुरुषों के लिये अदृश्य रहेंगी" सब श्रीराम की दृष्टि से बची हुई सीता सारा दिन इस पुष्करिणी के तट पर ही व्यतीत करती है। १३

२ (च) निकल मत बाहर दुर्बल आह
  लगेगा तुझे हँसी का शीत।
 शारद नीरद माला के बीच
  तड़प ले चपला सी भय भीत॥ ६

(छ) अति कीर्तिशाली राम यह जो सत्य की ही मूर्ति है,
  सीता सती यह शीलता की पुण्य मानो स्फूर्ति है।
 निज पूज्य-जन सेवा परायण जो निरन्तर सिद्ध है,
  यह भक्त लक्ष्मण भक्ति का मानो स्वरूप प्रसिद्ध है॥ ९

(ज) सजल दृगों से मुझको प्राणों का देता जो दान,
  उसकी भक्ति और श्रद्धा का रखता हूँ मैं मान।
 जिसकी दया-पूर्ण सेवा में होता नहीं विचार
  निश्छल प्रेम देखकर उसका लेता हूँ मैं भार॥ ९

पहले प्रश्न के (क) और (ख) भाग तथा दूसरे प्रश्न का (च) भाग चन्द्रगुप्त और कुन्दमाला नामक नाटकों में से हैं जो अब पाठविधि में नहीं हैं, अतः उत्तर नहीं दिया गया।

(छ) राम जो अत्यधिक यश वाले हैं और जो सत्य की मूर्ति हैं, सती सीता जो शील की मानों पवित्र स्फूर्ति हैं - जो मानों उत्तम आचरण की प्रेरणा हैं, तथा लक्ष्मण जो सदा निज पूज्य (भाई और भाभी) की सेवा में लगा हुआ है, जो सिद्ध (यति) है और भक्ति का मानो स्वरूप है, ये तीनों इस आश्रम में रहते हैं।

(ज) जो अश्रुपूर्ण नेत्रों से मुझे प्राणों का दान देता है उसकी भक्ति और श्रद्धा का मैं सदा मान रखता हूँ। जिसकी दयापूर्ण सेवा में कोई वासना नहीं होती उसके अटल प्रेम को देखकर मैं उसके पाप का भार अपने ऊपर ले लेता हूँ।

३ नीचे लिखे चार वाक्यों का ही तात्पर्य स्फुट करो और प्रत्येक वाक्य का कौन वक्ता और कौन श्रोता है लिखो —

(ट) विजयों की सीमा है परन्तु अभिलाषाओं की नहीं ।

(ठ) उसका पथ कुटिल है, गन्धर्व नगर की-सी सफलता उसे अपने पीछे दौड़ा रही है ।

(ड) मेरा भाग्य ही खोटा है जो सहस्रार्जुन के समान मेरी हजार भुजाएँ न हुई ।

(ढ) इन कुमारों का सारा वृत्तान्त क्या हमारे कुल की घटनाओं से मेल नहीं खाता ।

(ण) उसके अधिकारी का निर्वाचन खड्ग करेगा ।

(ट), (ठ), (ढ), (ण) भाग चन्द्रगुप्त और कुन्दमाला नामक नाटकों में से हैं, अत: उनका उत्तर नहीं दिया गया ।

(ड) मूर्त्ति-मन्दिर का सेवक सुधाकार अपना काम समाप्त कर सो रहा था, इतने में एक सिपाही आकर उसे मारने लगता है । तब सुधाकार कहता है मेरा भाग्य ही खराब है जो सहस्रार्जुन कार्तिकेय के समान मेरी हजार भुजाएँ नहीं हैं । (यदि हजार भुजाएँ होती तो मैं इस मारने वाले सिपाही को खूब पीट सकता) ।

४ अलका और कार्नेलिया के चरित्रों अथवा सोमदेव और जयमल के चरित्रों की तुलनात्मक विवेचना करो ।

अलका और कार्नेलिया सबंधी प्रश्न चन्द्रगुप्त नाटक में से है, जो अब पाठविधि मे नहीं है अत उत्तर नही दिया गया ।

सोमदेव, पजाब के एक छोटे से राजा का पुत्र है, उसका पिता मुसलमान अमीर के साथ युद्ध करते हुए मारा जाता है । पिता के बाद सोमदेव को उस अमीर से मुकाबला करना

पड़ता है। सोमदेव और उसके साथी वीर राजपूत अमीर के सामने सिर झुकाना स्वीकार नहीं करते, और युद्ध जारी रखना चाहते हैं। पर सोमदेव की माता रानी कलावती शत्रु को सामने की लड़ाई में जीतना असम्भव समझती है। वह काँटे को काँटे से निकालना चाहती है। [illegible] करना चाहती है। अतएव वह सोमदेव को सामने की लड़ाई से रोक देती है, और स्वयं गायिका का रूप धारण कर शत्रु के खेमे में उस समय पहुँचती है, जब कि वहाँ विजय की खुशी में जश्न हो रहा था। अमीर उसके रूप को देख, उसके गाने को सुन तथा मदिरा के पीने से मद मस्त हो जाता है। उस समय मौका पाकर रानी उसकी छाती में कटार भोंक कर उसका अंत कर देती है। इस समय सोमदेव मुसलमानों के खेमों को घेर कर कइयों को मार डालते हैं, कइयों को बाँध लेते हैं। इस तरह शत्रु का नाश कर विजय प्राप्त करते हैं।

जयमल चित्तौड़ दुर्ग का अधिपति है। दिल्ली के बादशाह अकबर ने बड़ी भारी सेना के साथ चित्तौड़ को घेर लिया था। विजय की कोई आशा न थी। [illegible] चित्तौड़ के महाराणा दुर्ग छोड़ कर अपना भी दुर्गम गढ़ में चले गये थे। दुर्ग की रक्षा का भार जयमल पर आ पड़ा। अकबर ने संधि का पैगाम भेजा पर आन पर मिटने वाले राजपूत वीर ने उसे ठुकरा दिया। अकबर वीरवर मानसिंह आदि अनेक बड़े बड़े सेनापतियों और असंख्य सेना के साथ दुर्ग को घेरे पड़ा था। घोर युद्ध का प्रारंभ हुए [illegible] मास बीत गये थे। अचानक दिन म [illegible] दुर्ग की दीवार की मरम्मत [illegible] दुर्ग पर

रक्षा। इतने मे उसकी पत्नी उससे मुगलों के डेरे मे जाने की अनुमति लेन आई। देश के हित में उसने इसकी भी स्वीकृति दे दी। रानी उधर जा न पाई थी कि इसी बीच युद्ध-भूमि म अकबर की गोली से जयमल का अत हो जाता है। पर मरते समय भी उसे देश की रक्षा का ध्यान है।

सोमदेवसिंह छोटा सा जागीरदार है, उसका मुकाबिला एक साधारण मुसलमान अमीर से है। पिता के मरने तक उसे युद्ध का भार उठाना नहीं पडा। पिता की मृत्यु पर वह शोक से विह्वल हो जाता है, उसे कुछ सूझता नहीं। वह युद्ध का निश्चय करता है। पर माता की युक्ति से उसे युद्ध मे भाग नहीं लेना पडता। उसकी वीरता का परिचय इस छोटे से नाटक मे नहीं मिलता। नायक हीन असावधान मुगल-सेना पर ही उसे आक्रमण करना होता है और उस वह भगा देता है। पर जयमल पर सर्व-श्रेष्ठ दुर्ग चित्तौडगढ का भार है। मुकाबिला भी भारत-सम्राट् अकबर से है। राणा युद्ध-क्षेत्र छोड चुके थे, वह भी छोड सकता था या अकबर से सन्धि कर सकता था, पर वह सच्चा राजपूत था। आन पर मर मिटने वाला था। छ हफ्ते तक उसने विशाल मुगल सेना को रोक कर अपनी वीरता और अपनी रण-कुशलता का परिचय दिया। अत में लडते-लडते वह वीर गति को प्राप्त हुआ। इस प्रकार जयमल का चरित्र सोमदेव से कहीं अधिक उज्ज्वल है।

५ (ख) सीता-हरण के लिए रावण का संन्यासी वेष में आना किस अभिप्राय से था? ५

(थ) चाणक्य की सुवासिनी से अति प्रीति होने पर भी उससे ब्याह क्यों नहीं हुआ ? ५

(द) वाल्मीकि के आश्रम में पुष्करिणी में राम को सीता की छाया मात्र दीखती है सीता नहीं दीखती इसका क्या कारण है ? ५

(ध) राज्यवर्धन की हत्या किसने की और उसे उचित दण्ड क्यों नहीं दिया गया ? विचार कर लिखो। ५

(न) रावण जानता था कि रामचन्द्र से प्रत्यक्ष युद्ध में विजय पाना कठिन था। साथ ही उसे यह भी पता था कि इस निर्जन वन में राम सीता को कभी अकेला छोड़ कर नहीं जायेंगे, फिर साध्वी सीता के पास और किसी रूप में वह पहुँच भी न सकता था। ऐसी अवस्था में वह छल के द्वारा ही सीता हरण में समर्थ हो सकता था। इसी कारण वह सन्यासी का वेष धारण करके आया था। उसे सच्चा सन्यासी समझ कर ही रामचन्द्र उसकी सेवा के लिए सीता को आज्ञा देकर और सीता को अकेला उसके पास छोड़कर चले गये थे।

(थ) तथा (द) भाग चन्द्रगुप्त और कुन्दमाला से हैं अतः इनका उत्तर नहीं दिया गया।

(ध) राज्यवर्धन की हत्या शान्तिभिक्षु अथवा विकटभट ने की थी। जब वह पकड़ा गया और महाराज हर्षवर्धन के सामने पेश किया गया तब राज्यश्री और सम्राट् हर्षवर्धन बुद्ध की प्रतिमा के सम्मुख खड़े कषाय वस्त्र धारण कर सर्वस्व दान कर रहे थे। राज्यश्री उसे देखते ही पहचान गई कि यह भिक्षु के रूप में उनका [illegible] था। राज्यश्री उस पुण्य के समय पाप का बदला पाप से न लेना चाहती थी, जिससे प्रतिहिंसा का भाव [illegible] शान्ति

शान्ति और क्षमा द्वारा वह शत्रु पर विजय पाना चाहती थ
अत उसने ऐसे शुभ अवसर पर उसे प्राणदान देने के लि
अपने भाई हर्षवर्द्धन से कहा, जिसके अनुसार ही उसने किय
इस प्रकार यद्यपि उस दुष्ट को लोक मे प्रचलित उचित द
तो नहीं दिया, पर उसे हमेशा के लिए वश में कर लि
गया।

६ नीचे लिखे शब्दों के अर्थ सरल हिन्दी के पर्याय देकर स्पष्ट क
प्रतिपत्ति, विभूति, परिषद्, पितृव्य, सूत्रपात, कारागार, मुतसि
जहूर, मकसद दमामा।

प्रतिपत्ति—ज्ञान, अनुमान। विभूति—ऐश्वर्य। परिषद्
सभा। पितृव्य—चाचा। सूत्रपात—प्रारभ। कारागार—जे
खाना। जहूर—प्रकाशन उत्पन्न या प्रारभ होना। मकसद
उद्देश्य। दमामा—दमामा, नगाडा, डका।

७ नीचे लिखे पात्रों का पूर्ण परिचय दो और इनमें से कौन
नाटक में आया है यह भी सावधानी से लिखो —

वेदवती, दादाठाकुर, विशाखा, सूर्यदेव, सलारस, सुमन्त्र, वि
कात्यायन, शकटार, सिल्यूकस।

वेदवती, कात्यायन, शकटार, और सिल्यूकस ये च
पात्र चन्द्रगुप्त तथा कुन्दमाला नामक नाटकों से हैं, जो
पाठविधि में नहीं हैं, अत. इनका परिचय नहीं दिया गया

दादाठाकुर अचलायतन नामक नगरी के प्रतिष्ठा
और वहाँ के निवासियों के गुरुदेव थे। पर उनके वहाँ से
आने पर वहाँ संकीर्णता का राज्य हो गया। लोग लकीर
फकीर हो गये। नये विचारों के प्रकाश को रोकने के लिए
ऊँची ऊँची दीवारें बनाई गईं। दादाठाकुर उस अचलायतन

बाहर रहने वाली अछूत जातियाँ में रहने लग गए थे। वे उनमें से ही एक बन गए थे। गुनके ज्ञान भी उन का गुरुदेव कहती थी। उनके विचार बहुत स्वतन्त्र थे। अतम अचलायतन से बहिष्कृत कुछ शिष्यों के साथ फिर अचलायतन पहुँचे। उनके आते ही फिर संकीर्णता की दीवार टूट गई, पाप प्रायश्चित्त का प्रपन्च टूट गया, और नए विचारों का उजेला सब तरफ छा गया। दादाठाकुर का उल्लेख अचलायतन नामक नाटक में है।

बिहारी महाकंजूस सेठ दौलतराम का विपरीत स्वभाव था। सेठ दौलतराम न खुद खाता था न अपनी पत्नी और संतान को खिलाता था। उसकी मद की दर बहुत अधिक है। गरीब असामियों से चार चार गिरवा लेना आदि उसके प्रतिदिन के काम थे। दौलतराम को शिक्षा देने के लिए बिहारी एक नाटक रचता है। एक बड़ा भारी षड्यंत्र रच कर वह दौलतराम को विश्वास दिलाता है कि दौलतराम मर गया। उसके मरने से आप लोग कितने खुश होते हैं, उसका इकट्ठा हुआ उसका रुपया किस तरह उसके पुत्र और दूसरे रिश्तेदार उड़ायेंगे, इसका नाटक वह दौलतराम को नीचे ही दिखा देता है, जिससे दौलतराम को शिक्षा मिल जाती है। यह पात्र 'धूम के घर धूम' नामक नाटक में आता है।

गुर्वंश पंजाब का एक छोटा-सा राजा था जिस पर एक मुसलमान अमीर ने आक्रमण किया था। अमीर ने एक दिन रात को सोते हुए हिन्दुओं पर आक्रमण किया, और राजा को कैद कर एक पिंजड़े में बंद कर दिया। राजा से कहा कि यदि वह मुसलमान हो जाय तो उसे छोड़ दिया जायगा।

राजा ने यह सुन पास खडे अमीर के मुँह पर थूक दिया, और मोनपर्चेन कहा कि परवश होने पर भी क्षत्रिय प्राण के भय से झुकना नहीं स्वीकार करता। फिर पिंजडे की लोहे की छड को तोड कर राजा ने उसी छड से कइयों को मारा और स्वयं भी लडते लडते वहीं मारा गया।

मलावतखाँ चित्तोड के आक्रमण मे अकबर का सेनापति था जिसने जयमल के उत्तराधिकारी फतहसिंह के साथ युद्ध किया था, और जो फतहसिंह के युद्ध-कौशल को देख कर दग रह गया था और बडी मुश्किल से फतहसिंह पर फतह पा सका था। पीछे जब युद्ध करते करते चित्तोड की रानी पकडी गई थी, तो यही पहरे पर था। रानी ने इसे बादशाह को बुलाने का आदेश दिया था, इतने में स्वय बादशाह पहुँच गये थे। इसका उल्लेख 'उत्सर्ग' नामक नाटक में है।

सुमंत्र महाराज दशरथ का साथी और मन्त्री था। वही राम, सीता और लक्ष्मण को वन मे छोड कर आया था, वही भरत को राम के पास ले गया था। महाराज दशरथ की मृत्यु के बाद वह भरत की सेवा करता रहा। महाराज दशरथ का समकालीन होने के कारण सारे रघुवशी उसका आदर करते थे। अतमें उसने ही भरत को सीता-हरण का समाचार लाकर तथा कैकेयी के कहने से दशरथ के शाप का वृत्तान्त सुनाया था, जिसे सुनकर भरत को विश्वास हो गया था कि उसकी माता कैकेयी का कोई दोष न था।

सुमन्त्र का उल्लेख प्रतिमा नाटक में आता है।

विजया कैकेयी की परिचारिका है। कैकेयी ने राज्य के

लोभ से राम को वन मिला [illegible] फलत वह राजा दशरथ की मृत्यु का कारण हुई थी अन्य प्रजाजनों की तरह [illegible] के इस कृत्य को वह बुरा भी समझती है।

विजया प्रतिमा नाटक में आती है।

६

प्रश्नपत्र ४

१ विदुला ने अपने परास्त पुत्र संजय को युद्ध के लिये कैसे उद्यत किया और उसका क्या फल हुआ ? यह "प्रसंग" किसने किसको क्यों सुनाया ? यह भी स्पष्ट करो। १०

विदुला ने अपने परास्त पुत्र संजय को रण छोड कर भाग आने पर बहुत धिक्कारा और उसे पुन रण में जाने के लिए प्रेरित किया। क्रुद्ध हो विदुला ने कहा कि तूने रण से भाग कर अपने कुल को कलंक लगा दिया है। युद्ध से कायरों के समान भाग आने के स्थान पर यदि तू रण क्षेत्र मे ही मर जाता तो मेरे लिए अधिक प्रसन्नता की बात होती। तू पुरुष नहीं नपुंसक है। सॉप के मुँह में हाथ डाल कर उसके दॉत निकालने के प्रयत्न मे प्राण दे देना अच्छा है पर कायर की तरह लेटे लेटे मरना अच्छा नहीं। जिसके पराक्रम की गाथा सुनकर शत्रु कॉप नहीं उठते, उसकी गणना न स्त्रियों मे हो सकती है न पुरुषों में। तू रूप, गुण, विद्या, यश और प्रतिष्ठा से युक्त नवयुवक है, औरों को अधीन होकर जीना तेरे लिए उचित नहीं। यश ही जीवन है और अपयश ही मृत्यु। इसलिए, उठ, जा, युद्ध कर। जब तू सिंधुराज का सर्वनाश कर विजय प्राप्त कर लेगा, तब मैं तेरा अभिनंदन करूँगी, तुझे आलिंगन कर मेरी छाती ठंढी होगी। सेना आदि की कमी की चिंता न कर, बलशालियों का शौर्य ही उन्हें विजय दिलाता है। जब शत्रु समझ लेता है

कि मेरा विपक्षी मरने मारने को प्रस्तुत है तब वह स्वयं भयभीत हो जाता है।

संजय क्षणिक कायरता-वश शत्रु से पराजय को [illegible] भयभीत हो गया था। माता के उत्साह वर्द्धक वचनों को सुन कर वह लड़ने को तैयार हो गया, और अन्त में शत्रु पर आक्रमण कर उसने विजय प्राप्त की।

यह प्रसंग माता कुन्ती ने कृष्ण को इसलिये सुनाया था कि युधिष्ठिर में भी युद्ध के लिए जोश पैदा हो सके। और वह सन्धि का विचार छोड़ युद्ध के लिए प्रेरित हो सके, और क्षात्र धर्म को पहचान कर, मोह का परित्याग कर युद्ध के मार्ग को स्वीकार करे।

२ शिक्षा किसे कहते हैं? उसके प्रधान चार आदर्श कौन से हैं? उनका पुस्तक के आधार पर विस्तार से वर्णन करो। १०

शिक्षा का जिसका जैसा उद्देश्य होता है, वह उसकी परिभाषा भी वैसे ही करता है। साधारणतया शिक्षा का अर्थ आजकल अक्षर ज्ञान से लिया जा रहा है, जो जितना पढ़ा लिखा है, वह उतना ही शिक्षित कहाता है। पर वास्तव में उन नये संस्कारों का जिन के द्वारा मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्तियां और शक्तियों को पूर्ण रूप से विकसित कर मनुष्य को जीवन संग्राम के योग्य बनाया जाता है, शिक्षा कहते हैं, या वह ज्ञान अथवा संस्कार जो व्यक्ति को उसके निज अपने कुटुम्ब के लिए अपने समाज के लिए यथासम्भव अधिकतम उपयोगी बना सके और समाज में उसे उपयुक्त स्थान दिला सके शिक्षा कहाता है।

शिक्षा का सब से पहला उद्देश्य है [illegible]

अधिश लोग इसी उद्देश्य को सामने रखकर ही शिक्षा प्राप्त करते हैं, और जो शिक्षा धन कमाने में सबसे अधिक सफलता दे सकती है, इस आदर्श को मानने वाले उसी शिक्षा को सर्वोत्तम समझते हैं। यह आदर्श नितान्त स्वार्थपूर्ण होता है। इस आदर्श पर चलने वालों में सामाजिक सद्गुणों का विकास नहीं होता।

शिक्षा का दूसरा उद्देश्य संस्कारिता है। संस्कारिता का अर्थ है हर तरह की कुलीनता। आजकल संस्कारिता का अर्थ ललित कलाओं—संगीत, चित्र, काव्य आदि—में दिलचस्पी लेना या उनमें कुशलता प्राप्त करना समझा जाता है। जब मनुष्य खाने-पीने की चिंता से निवृत्त होता है, उसके पास पर्याप्त धन होता है, तब ही उसे यह उद्देश्य सूझता है। अतएव साधारण जन का यद्यपि यह उद्देश्य नहीं हो सकता पर यह उद्देश्य धनवालों को कई बार कुमार्ग में जाने से रोकता है। तथा संस्कारिता के द्वारा मध्यम श्रेणी के गुणवान लोगों और अमीर वर्ग के कला-रसिक लोगों के बीच एक सुंदर संबंध स्थापित होता है।

शिक्षा का तीसरा उद्देश्य है—सत्ता, सामर्थ्य और ऐश्वर्य। इस उद्देश्य को मानने वालों की आँख सदा बड़प्पन और ऐश्वर्य की ओर रहती है। महत्त्वाकांक्षा, अविरत उद्योग, हर समय चैतन्य रहना इस आदर्श के मुख्य लक्षण हैं। पहले और तीसरे उद्देश्य में एक समान स्वार्थ भावना रहती है। दोनों ही के लिए शिक्षा एक साधन है, संस्कारितावादी यह कहते हैं कि शिक्षा तो शिक्षा के लिए होनी चाहिए।

शिक्षा का चौथा आदर्श सेवा है। जीवन का सर्वोच्च

आनन्द सेवा मे है। इस आदर्श का धनी साधन जुटाता शक्ति का सग्रह करता, सत्ता का अनुभव करता तथा प्रतिष्ठा पाता है मगर उन्हें उसी हद तक इष्ट मानता है जब तक व उसके सेवा कार्य में मदद पहुंचाते है। वह जानता है कि साधन की अत्यधिकता सेवा कार्य में सब से अधिक बाधक है, उसे यह भी विश्वास होता है कि किसी व्यक्ति में यदि सत्य संकल्प और अविरत एकाग्र प्रयत्न हो तो साधन, सत्ता, सहकारिता और तमाम चीजें अपने आप उसके पास चली आवेंगी। सेवा के आदर्श का पुजारी जब शिक्षा का क्रम तैयार करता है, तो बडी सूक्ष्म दृष्टि से विचार करके। ऐसी कोई वस्तु छूटती नहीं जो आवश्यक हो, ऐसी कोई चीज ध्यान बंटाती नहीं जो अनावश्यक हो।

३ (क) श्रीराम को वन मे भरत कहाँ मिले ? उन्होंने भरत को कैसे सान्त्वना दी ? क्या राम वनवास में भरत का भी हाथ था, या नहीं ? अपनी सरल भाषा में लिखो।

(ख) बाली को राम ने छुपकर क्यों मारा ? बाली के वध का भी औचित्य करो।

(क) श्रीराम को वन मे भरत चित्रकूट में मिले थे। श्रीराम को पिता की मृत्यु तथा भाई (?) पितृशोक से कातर तथा अपने को पिता की मृत्यु तथा [illegible] के वनवास का कारण समझते थे। भरत ने जब राम से चार [illegible] बार वापिस लौट कर राज्य भार सँभालने की प्रार्थना की तब रामचन्द्र ने उन्हें यह कह कर समझाया कि यदि मैं तुम्हारे कहने से अयोध्या को लौट चलूँ और अपनी प्रतिज्ञा पूरी न करूँ तो मुझे सब अधर्मात्मा कहेंगे। यदि मैं [illegible] भी मेरी इच्छानुसार सभी मनमानी करेंगे। [illegible]

सत्य से गह कर कुछ नहीं। जिस सत्य के पीछे पिताजी ने अपने प्राण छोड़ दिये, उसी सत्य से मैं हट जाऊँ, यह उचित नहीं, पिताजी की आज्ञा पालना हमारा धर्म है।

इतना पर भी जब भरत न माने तो भरत की प्रार्थना पर रामचन्द्र ने उसे अपनी खड़ाऊँ दे दीं और वचन दिया कि जिस दिन चौदह वर्ष व्यतीत होंगे ठीक उसी दिन मैं अयोध्या में पहुँच जाऊँगा। इस प्रकार रामचन्द्र ने भरत को सांत्वना दी।

राम के वनवास का समाचार पाकर भरत की जो दशा हुई, उसने माता की जो भर्त्सना की, कौशल्या आदि माताओं के सामने जो शपथें खाईं, स्वय राज्य पर बैठने से जो इनकार किया, रामचन्द्र को वन से लौटाने का जो प्रयत्न किया, और उनके न मानने पर चौदह वर्ष तक जो तपस्वी जीवन व्यतीत किया, उन सबको देखते हुए यह सदेह करना भी पाप है कि राम को वन भेजने में भरत का हाथ था। अत हम यही कहेंगे कि राम को वन भेजने मे भरत का हाथ न था, वरन् उसे इसका स्वप्न में भी खयाल न था।

(ख) बाली के बारे मे प्रसिद्ध था कि जो उसके सामने लड़ने को जाता था उसका आधा बल उसे मिल जाता था। रामचन्द्र इस बात को जानते थे, अत रामचन्द्र ने उसे छिप कर मारा था। जब बाली ने उन से पूछा कि रामचन्द्र जी ने उसे छिपकर क्यों मारा, तो राम ने जवाब दिया था— "छोटे भाई की स्त्री, बहन और पुत्र की स्त्री ये सब कन्याओं के समान है। इन्हें जो कुदृष्टि से देखे उसे मारने मे कुछ दोष नहीं होता।"

बाली के बल के बारे में कहा जाता है कि वह कभी किसी से न हारा था। उसकी गदा का प्रहार बड़ा से बड़ा शूरवीर भी नहीं सह सकता था। गोलचक्कर में खड़े सात ताल के पेड़ों को जब वह एक एक को या एक साथ सब को हिलाता था तो उनके पत्ते झड़ जाते थे।

४ निम्नलिखित पद्यों के आधार पर चूड़ावत और हाड़ा रानी का इतिहास लिखो —

(ख) प्राण प्रिया को मांसु दै परम प्रेम उपहार
चल्यौ हुलसि रण मत्त ह्वै चूड़ावत सरदार।

(ग) पावौ प्रणय प्रमाण में निज प्यारी प्रिय सीस
चूड़ावत उर धारि सो ह्वै हो समर गिरीस। १२

रूपनगर की अद्वितीय सुन्दरी राजकुमारी प्रभावती की माधुर्य-गाथा सुन औरंगजेब ने रूपनगर के राजा के पास सन्देश भेजा कि राजकुमारी को तत्क्षण दिल्ली भेज दिया जाय। छोटी सी रियासत का राजा दिल्ली के सम्राट् की आज्ञा का उल्लंघन कैसे कर सकता था। पर एक राजपूतनी एक विधर्मी के साथ विवाह करने को कैसे राजी हो सकती थी। उसने मेवाड़ के महाराणा को पत्र द्वारा वरण किया। राणा जानते थे कि आज राज-कुल कन्या उन्हें वर चुकी है उसकी रक्षा न करना अपनी कीर्ति पर कलंक लगाना है। दूसरी ओर सम्राट् औरंगजेब के मुकाबले की तथा विवाह की घड़ी से पहले प्रभावती का मिलने की बात थी। निश्चय हुआ कि राणा कुछ चुने हुए सरदारों को साथ लेकर सीधा रूपनगर पहुँचें, और कुछ राजपूत सरदारों को साथ लेकर सीधा रूपनगर की ओर जाते हुए औरंगजेब का जान पर खेलकर रूपनगर की ओर जाते हुए औरंगजेब का रास्ता रोक रखें। परन्तु इस काम पर कौन जाने योग्य

नायक कौन हो, यह कठिन प्रश्न था। सारी सभा चुप थी। इतने में ग्रास वर्ष का एक सरदार खड़ा हुआ और बोला— महाराणा एकलिंगदेव की साक्षी रखकर प्रतिज्ञा करता हूँ कि जब तक आप विवाह कर रूपनगर से उदयपुर न पहुँच जायेंगे, तब तक औरंगजेब का मार्ग रोके रहूँगा। उसे एक पग भी न बढ़ने दूँगा। यह युवक चूडावत था जिसका विवाह अभी अभी हुआ था, जिसकी नवविवाहिता पत्नी हाडी रानी के कंकण भी अभी नहीं खुले थे।

राणा अपने साथियों को लेकर रूपनगर रवाना हुए और चूडावत अपने सरदारों के साथ आगरा और रूपनगर के बीच औरंगजेब का रास्ता रोकने को प्रस्तुत हुए। इतने में उनकी दृष्टि उस राजप्रासाद की ओर पड़ी जहाँ उनकी नव-विवाहिता पत्नी खड़ी थी। सेना को कुछ देर ठहरने का आदेश दे राणा प्रासाद की ओर चल पड़े। रानी उनकी प्रतिज्ञा की बात सुन चुकी थी, वह खुश थी, कि उसका पति एक बहन के सतीत्व की रक्षा के लिए जान पर खेलने को तैयार है। परन्तु सरदार के उदास चेहरे को देख उसने उसका कारण पूछा। चूडावत ने उत्तर दिया मुझे मृत्यु से भय नहीं है, मुझे यदि कोई चिंता है तो तुम्हारी है। तुम अभी ब्याही आयी हो तुम्हारे कंकण भी अभी नहीं खुले, और मैं मरने जा रहा हूँ। घोड़े पर चढ़ते ही मैंने ज्यों ही तुम्हारी ओर देखा मेरे हृदय का आनंद काफूर हो गया। वीरांगना हाडी रानी ने चूडावत को प्रोत्साहित करते हुए कहा—ऐसे शुभ समय में चिंता को मन में घर करने देना क्षत्रिय-कुमार के लिए उचित नहीं है, तथा आश्वासन दिया कि यदि आप रण

स्थल में विजय पाकर लौटेंगे तो मेरे लिए बड़े गौरव की बात होगी, यदि आपने क्षत्रियों की तरह वीर-गति प्राप्त की तो यह दासी भी आपका अनुगमन करेगी।

चूड़ावत सरदार रानी को आलिंगन कर विदा हुए। परन्तु उनके मन में सदेह बना था कि रानी उनके पीछे धर्म का पालन करेगी या नहीं। इधर रानी जानती थी कि प्राणनाथ का मन जब तक उसकी ओर लगेगा तब तक वे युद्ध में भाग न ले सकेंगे। इतने में सरदार ने एक सेवक द्वारा सदेश भेजा —चूड़ावत जी चिह्न चाहते हैं, दृढ़ आशा और अटल विश्वास का, सन्तोष होने योग्य प्यारी वस्तु दीजिए। और कहा है कि मेरे मरने के बाद अपने कर्त्तव्य पथ पर डटे रहना। रानी का विश्वास दृढ़ हो गया। वह सेवक से बोली—अच्छा मेरा सिर लिए जा और उनसे कहना मैंने अपना कर्त्तव्य पालन किया अब आप अपना कर्त्तव्य का पालन करें। ऐसा कह 'न न' करते करते रानी ने तलवार से अपना सिर काट दिया। विस्मित सेवक ने वह सिर लाकर काँपते हुए हाथों से ले जा कर चूड़ावत को दिया। प्राणप्रिया द्वारा भेजे हुए पर दृढ़ आशा और अटल विश्वास के चिह्न तथा प्रेम उपहार [illegible] पाकर चूड़ावत पागल हो उठे। सुगन्ध से मिले हुए [illegible] मुलायम बालों के गुच्छों को [illegible] [illegible] कर इस प्रकार प्राणप्यारी के सीस को माला की तरह पहन कर [illegible] प धारण कर चूड़ावत सरदार हो युद्ध की ओर चल दिए। [illegible] पनी सेना के साथ औरंगजेब के मार्ग में [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] में भीषण युद्ध हुआ। तीन दिन तक औरंगजेब की [illegible] एक पग भी आगे न बढ़ सकी। [illegible] दिन [illegible]

रूपरूप तो शत्रु सेना के लिए असह्य था। चूडावन का घोडा बादशाह के हाथी पर चढ गया, तब बादशाह गिड़गिडा कर बोला—मेरी जान क्यों लेते हो, विवाह की घडी तो यहीं बीत गई। बादशाह ने जब प्रतिज्ञा की कि वह दस साल तक मेवाड पर आक्रमण न करेगा तो चूडावन ने अपना घोडा लोटाया पर इसी बीच एक मुगल सेनापति ने उनका सिर धड से अलग कर दिया। भाटों का कहना है कि सिर कट जाने के बाद भी उस रात भर चूडावत सरदार लडते रहे। पूर्णिमा की रात समाप्त होने पर सरदार का धड घोडे से नीचे गिरा।

५ हिन्दी साहित्य में कबीर—रहीम और-रसखान, इन कवियों का कैसा स्थान है? इनका समय और कार्य दिखाकर कविता के उदाहरण दो। १२

कबीर हिन्दी साहित्य के तीन सर्वश्रेष्ठ कवियों में गिने जाते हैं। जनता अपने इस विश्वास को "सत्य सत्य सूरा कही, तुलसी कही अनूठी, बची-खुची कबिरा कही बाकी कहीं सब झूठी" आदि उक्तियों द्वारा सैंकडो बरसों से प्रका- ...ी आई है। सूर और तुलसी के बाद हिन्दी ... यदि कोई विश्व कवि कहा जा सकता है, तो वे ...। संत कवियों में तो कबीर का स्थान सर्वोच्च ... ही हिन्दी के पहले रहस्यवादी कवि हुए हैं। ... जनता को इनकी कविता जैसी प्रिय है, विद्वान वैसा ही रस लेते हैं यहाँ तक कि विश्व वद्य ...नाथ टाकुर ने इनके पद्यों का अंग्रेजी में भी ... है।

अनुभवपूर्ण मार्मिक सूक्तियों के निर्माण के कारण रहीम का हिन्दी साहित्य में बड़ा ऊँचा स्थान है। अन्य नीति-कवियों की तरह उनके पद्य कोरी नीति के नहीं हैं, पर उनमें [illegible] है, उनके जीवन [illegible] हृदय की झाँकी मिलती है। इन्हें भाषा पर भी महाकवि तुलसीदास जैसा अधिकार प्राप्त था। ब्रज और अवधी — पश्चिमी और पूर्वी — दोनों काव्य-भाषाओं में ये समान [illegible] थे।

[illegible] हिन्दी के मुसलमान प्रेमी कवियों में रसखान का विशिष्ट [illegible] है। इनके कवित्त सवैयों में प्रेम के ऐसे सुन्दर उद्गार [illegible] जनसाधारण प्रेम या शृंगार सम्बन्धी कवित्त सवैया

रुद्ररूप तो शत्रु-सेना के लिए असह्य था। चूडावत का घोडा बादशाह के हाथी पर चढ गया, तब बादशाह गिडगिडा कर बोला—मेरी जान क्यों लेते हो, विवाह की घडी तो यहीं बीत गई। बादशाह ने जब प्रतिज्ञा की कि वह दस साल तक मेवाड पर आक्रमण न करेगा तो चूडावत ने अपना घोडा लौटाया पर इसी बीच एक मुगल सेनापति ने उनका सिर धड से अलग कर दिया। भाटों का कहना है कि सिर कट जाने के बाद भी उस रात भर चूडावत सरदार लडते रहे। पूर्णिमा की रात समाप्त होने पर सरदार का धड घोडे से नीचे गिरा।

५ हिन्दी साहित्य में कबीर—रहीम और रसखान, इन कवियों का कैसा स्थान है? इनका समय और कार्य दिखाकर कविता के उदाहरण दो। १२

कबीर हिन्दी साहित्य के तीन सर्वश्रेष्ठ कवियों में गिने आते हैं। जनता अपने इस विश्वास को "सत्य सत्य सूरा कही, तुलसी कही अनूठी, बची-खुची कबिरा कही बाकी कही सब झूठी" आदि उक्तियों द्वारा सैकडों बरसों से प्रकाशित करती आई है। सूर और तुलसी के बाद हिन्दी साहित्य में यदि कोई विश्व-कवि कहा जा सकता है, तो वे कबीर हैं। संत कवियों में तो कबीर का स्थान सर्वोच्च है और कबीर ही हिन्दी के पहले रहस्यवादी कवि हुए हैं। साधारण जनता को इनकी कविता जैसी प्रिय है, विद्वान भी उसमें वैसा ही रस लेते हैं यहाँ तक कि विश्व-वंद्य कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इनके पदों का अंग्रेजी में भी अनुवाद है।

अधिक नहीं जितनो सूर को। [illegible] महाकवि तुलसीदास की दृष्टि जीवन के सब अंगों [illegible] है पर तुलसीदास ने भी जो वात्सल्य रस लिखा है वह अनुपम है। बाल-रति लीला का वर्णन पर लिखा तुलसीदास का यह [illegible] दर्शनीय है—

"माता ले उछंग गोविंद मुख [illegible] बार निरखै।
पुलकित तनु आनंद [illegible] छन मन हरखै
पूछत तोतरात बात मातहिं जदुराई।
अतिशय सुख जाते तोहि मोहि कहु समझाई।
देखत तव बदन कमल मन आनन्द होई
कहै कौन! रसन मौन जाने कोई कोई
सुन्दर मुख मोहि दिखाउ इच्छा अति मोरे
मम समान पुन्य पुंज बालक नहीं तोरे
तुलसी प्रभु प्रेमवश्य मनुज रूप धारी
बाल-केलि-लीला रस ब्रज जन हितकारी।"

* आख्यायिका किसे कहते हैं? उसका विषय कैसा होना चाहिए? बड़े [illegible] से इसका क्या अन्तर है? इसे [illegible] कब का [illegible] किया? इस विषय पर एक विवेचनात्मक निबन्ध लिखो। १०

अथवा

"काव्य" और "नाटक" इनमें क्या भेद है? दोनों का [illegible] किस प्रकार विकास हो सकता है और इनमें क्या क्या गुण होने चाहिये? यह अपनी भाषा में लिखो।

ऐसा गद्य कथात्मक जो घंटे दो घंटे के बीच में पढ़कर समाप्त किया जा सके, तथा जिसमें जीवन के किसी एक अंग या किसी एक मनोभाव को प्रकाशित करना ही लेखक का

इसमें अपत्य (संतान) स्नेह स्थायीभाव है। बालकों की चेष्टाएँ—तोतली बोली, गिरते पड़ते चलना, हठ करना उनकी शूरता, विद्या आदि उद्दीपन विभाव हैं। हँसना, पुलकित होना, सिर चूमना, गोद मे लेना, रोमाच आदि अनुभाव हैं। अनिष्ट की आशंका, हर्ष गर्व, आदि संचारीभाव है।

हिन्दी के दोनों महाकवियों—सूर और तुलसीदास—ने वात्सल्य रस की पर्याप्त और उत्कृष्ट रचना की है। वात्सल्य रस का जैसा स्रोत सूर की कविता मे बहा है, वैसा शायद विश्व के किसी भी कवि की कविता मे नही पाया जाता।

सूर द्वारा किया गया बाललीला, बालकों की अनुकरणशीलता, स्पर्द्धा और महत्त्वाकांक्षा तथा माँ की अभिलाषा आदि का चित्रण इतना स्वाभाविक और उत्कृष्ट है जो देखते ही बनता है—

हों बलि जाऊँ छबीले लाल की

धूसर धूरि घुटरुवनि रेंगनि बोलन वचन रसाल की
छिटक रहीं चहुँ दिसि जु लटुरिया लटकन लटकत भाल की।
मोतिन सहित नासिका नथुनी कंठ कमल बनमाल की
कछु कै हाथ कछू मुख माखन चितवनि नैन बिसाल की
सूर सुप्रभु के प्रेम मगन भई ढिग न तजनि ब्रज बाल की।

इसी प्रकार "मैया मैं नाहीं दधि खायो" में बाल चापल्य तथा "मैया कबहिं बढ़ैगी चोटी" आदि पदों मे बालस्पर्द्धा "मैया मोहि दाऊ बहुत खिझायो" मे बालकपन मे रूठने का बड़ा ही अच्छा चित्र है।

महाकवि तुलसीदास की कविता वात्सल्य रस की इतनी

कठिन हो जाता है। उपन्यास एक वृक्ष के समान है, जिसमें नाना शाखा-प्रशाखाएँ होती हैं और वहीं उनकी विभिन्न परिणति होती है। आख्यायिका के छोटे क्षेत्र में जीवन की उतनी अधिक विवेचना हो ही नहीं सकती, जितनी उपन्यास में होती है। यही आख्यायिका और उपन्यास का मुख्य अंतर है।

आख्यायिका या कहानी का अस्तित्व बहुत प्राचीन काल में भी पाया जाता है। यहाँ तक भी कहा जा सकता है कि जब से मानव संसार की उत्पत्ति हुई तब से कहानी का भी उद्गम हुआ था। पर पशुओं और पक्षियों की प्राचीन कहानियों में केवल मन-बहलाव था, कला न थी। धीरे धीरे जब उसमें मानव जीवन या मनोभाव की अभिव्यक्ति अनिवार्य मानी जाने लगी तब उसमें काव्यत्व का प्रवेश होने लगा। जब उसमें उद्देश्य और परिणाम की एकता पर ध्यान दिया जाने लगा, तब से आख्यायिका लिखना भी एक कला समझी जाने लगा, और कहानी को भी एक कला का रूप मिला। कई लोग तो यह भी मानने लगे कि बड़े-बड़े उपन्यासों की अपेक्षा छोटी छोटी आख्यायिकाएँ लिखना अधिक कठिन काम है। क्योंकि कहानी लेखक को सारी कहानी में एक ही परिणाम अथवा भाव रखना होता है, और वही कहानी लेखक सिद्ध हस्त माना जाता है जिसकी रचना में एक भी ऐसा शब्द न हो जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से पाठकों को अभीष्ट परिणाम अथवा प्रभाव की ओर अग्रसर न करता हो।

काव्य और नाटक दोनों की रचना मनुष्य करता है। इन दोनों में परस्पर बहुत भेद है। सब

उद्देश्य होता है, आख्यायिका कहाता है । आख्यायिका अनेक विषय हो सकते हैं । उससे पाठकों को हँसाया भी सकता है, रुलाया भी जा सकता है चक्कर में डाला सकता है, उसमें अपना अनुभव बताया जा सकता है, अ देश या समाज की अवस्था का चित्रण किया जा स है। इस प्रकार सैकड़ों हजारों विषयों पर आख्यायिकाएँ लि जा सकती हैं। पर उसका विषय ऐसा होना चाहिए, जिस उसकी संकुचित सीमा के अंदर भली-भाँति विकास अ निर्वाह हो सके । आख्यायिका को समाप्त करने के बाद प वाले की यह सम्मति होनी चाहिए कि यदि इस आख्यायि का और अधिक विस्तार किया जाता तो उससे कोई ल न होता और उसमें जो कुछ कहा गया है वह ठीक अ पर्याप्त है ।

आख्यायिका छोटी होती है, वह घंटे दो घंटे में समाप्त जाती है। उसमें जीवन के किसी एक अंग या एक मनोभ का ही प्रदर्शन होता है। आख्यायिका के चरित्र उसकी शै उसका कथा-विन्यास सब उसी एक भाव की पुष्टिकरण क हैं। आदि से अंत तक उसी एक आधार-भूत तत्त्व की प पुष्टि करना ही लेखक का उद्देश्य होता है। आख्यायि में मुख्य विचार केवल एक ही होता है और वह बहुत ही प्रत्यक्ष या स्पष्ट होना चाहिए । पर उपन्या निर्बंध होता है, उसमें न समय का, न एक भाव का, न अ किसी का बन्धन है । उपन्यास में इतनी अधिक बातें हो हैं, जीवन के इतने अधिक अंगों का चित्रण होता है, कि उ से कोई एक मुख्य सिद्धान्त या परिणाम निकालना

छोटे छोटे मेघ खंडों जैसी होती हैं । उन सब की गति एक ही ओर होती है पर एक दूसरे के अधीन नहीं होती। पर नाटक में कथा-भाग का ऐक्य आवश्यक है।

जिस विषय या आधारभूत घटना को लेकर नाटक का प्रारंभ किया जाय, उसी विषय या घटना का अन्य आवश्यक प्रकार से विस्तार कर अंत में उसी विषय या घटना की परिपक्वता पर नाटक की समाप्ति होनी चाहिए। जिस प्रकार उद्गम स्थान से निकली हुई नदी को क्षीणधारा में अन्य अनेक नदियाँ मिलकर उसे परिपुष्ट करती हैं इसी प्रकार— नाटक में यदि किसी अवान्तर घटना का उल्लेख होता तो वह तो मुख्य घटना को परिपुष्ट करने के लिए। ये अवान्तर घटनाएँ या तो मुख्य घटना को आगे बढ़ा देती हैं या पीछे हटा देती हैं। इस प्रकार घात प्रतिघात से नाटक की कथा का विकास होता है। नाटक का यह कठोर बंधन काव्य में नहीं पाया जाता। कविता नाटक का एक अंग है। नाटक में चरित्र चित्रण कहानी की मनोहरता और कवित्व सब चाहिएँ, पर काव्य में चरित्रचित्रण की या कथोपकथन की आवश्यकता नहीं होती और कहानी की मनोहरता की ओर भी अधिक ध्यान नहीं दिया जाता।

काव्य और नाटक दोनों में मानव जीवन का चित्र होता है। जिस काव्य और नाटक में मानवीय सद्वृत्तियों और सद्भावनाओं का [illegible] और कुप्रवृत्तियों की अवनति का प्रदर्शन हो वह [illegible] ही मानव समाज के लिए उपकारी [illegible] [illegible] [illegible]

से बडा भेद इनमें यह है कि काव्य का प्रयोग प्राय श्रव्य काव्य के लिए होता ही है, जिसके पढने सुनने मे आनन्द होता है, और नाटक दृश्य काव्य है, वह अधिकतर अभिनय के लिए तैयार किया जाता है। इसी भेद के कारण दोनों मे अन्य अनेक भेद होगए है। काव्य के श्रव्य होने से उसमें कवि स्वय वक्ता का रूप ले लेता है। वह घटनाओं को, पात्रों के हार्दिक अतर्द्वंद्व को, भावों ओर विचारों को प्रत्यक्ष खोलकर रख देता है। परन्तु नाटककार स्वय जनता के सामने नही आ पाता, उसे जो कुछ कहलाना होता है, वह अपने पात्रों द्वारा ही कहलाता है। किसी अतर्द्वंद्व को, भले बुरे विचारो को प्रकट करने के लिए उसे पात्र का वैसा ही चरित्र चित्रण करना होता है। अतः नाटक मे जहाँ चरित्र-चित्रण की ओर बहुत अधिक ध्यान देना होता है, और नाटक की सफलता कुशल चरित्रचित्रण में मानी जाती है, वहाँ काव्य में चरित्रचित्रण की इतनी महत्ता नहीं, वहाँ चरित्र तो बहाने मात्र होते है, कवि का लक्ष्य वर्णन की ओर ही अधिकतर होता है। वह अपने कवित्व का परिचय देने के लिए स्थान स्थान पर ऐसे अवसर ढूंढता है, जब वह कोई मनोरजक वर्णन कर पाठक के मन को मोहित कर सके।

काव्य में कथा का विकास कवि स्वय कर लेता है पर नाटक में यह नहीं हो सकता। वहाँ तो कथा का विकास भी पात्रों के कथोपकथन द्वारा अथवा घटनाओं के घात-प्रतिघात से ही हो सकता है। इस कारण काव्य में घटनाओं की एकाग्रता, या सार्थकता का कुछ प्रयोजन नहीं। कथात्मक काव्य में भी भिन्न भिन्न कथाओं की गति आकाश में दौडते

दिखाई जायँ, अथवा कवित्व का अभाव हो तो वह भी कोरा वार्त्तालाप या स्वाँग हो जायगा।

काव्य में घटना का ऐक्य और घटना की सार्थकता इतनी आवश्यक नहीं। पर काव्य में भी घटनाओं के घात प्रतिघात अथवा नाटकीय भावों का समावेश होने से उसकी मनोरंजकता अवश्य बढ़ जाती है। काव्य में चरित्रचित्रण की अपेक्षा वर्णन को तथा जीवन के विविध चित्रों के प्रदर्शन को अधिक महत्ता दी जाती है। स्वाभाविकता और कवित्व नाटक तथा काव्य दोनों में आवश्यक है।

नीचे दिये पद्यों और गद्यों का सरल अर्थ करो (क) और (ख) भाग का प्रसंग भी बताओ —

(क) पुर तें निकसी रघुबीर बधू
धरि धीर दये मग में डग द्वै
झलकीं भरि भाल कनी जल की
पुट सूखि गये मधुराधर वै
फिरि बूझति हैं चलनो अब केतिक
पियं पर्नकुटी करिहौ कित ह्वै।
तिय की लखि आतुरता पिय की
अँखियाँ अति चारु चलीं जल च्वै॥

(ख) बिन्दु मों सिन्धु समान को अचरज कासों कहै
हेरनहार हिरान रहिमन आपने आप में।

(ग) इन पात्रों के भाव विश्लेषण से जो चित्र [illegible]
[illegible] मन के प्रतिबिंब कदापि नहीं, वे [illegible]
के प्रतिबिंब हैं।

अतएव काव्य की अपेक्षा नाटक से अधिक उपकार हो सकता है।

नाटक में घटना का ऐक्य, घटना की सार्थकता, घटनाओं के घात प्रतिघात की गति, कवित्व, चरित्रचित्रण और सामाजिकता ये छः गुण आवश्यक हैं।

हम देख चुके हैं, घटना का ऐक्य, घटनाओं की सार्थकता और घटनाओं की घात प्रतिघात गति अर्थात् भिन्न भिन्न विमुख प्रवृत्तियों का संघर्ष नाटक की रोचकता को बढ़ा देता है। कालिदास की शकुंतला में दुष्यंत के साथ शकुन्तला का विवाह कराना ही उद्देश्य है। शकुंतला और दुष्यंत एक दूसरे को देखते ही मोहित हो जाते हैं, उन में प्रेम हो जाता है। यदि उनका विवाह कराकर शकुन्तला को दुष्यंत के राज भवन में वहीं भेज दिया जाता और घटना की समाप्ति कर दी जाती तो वह इतना मनोरंजक और अमर न हो सकता। पर दुष्यंत की विदा, दुर्वासा का शाप, दुष्यंत का शकुंतला को भूल जाना, दुष्यंत द्वारा दी गई अँगूठी का गिर जाना याद दिलाने पर भी दुष्यंत को शकुंतला की याद न आना, फलतः शकुंतला का परित्याग, अँगूठी मिलने पर दुष्यंत को शकुंतला का ध्यान, फलत पश्चात्ताप और विरह ताप, अंत में इंद्र का दुष्यंत को बुलाना, वहाँ अचानक दुष्यंत-शकुन्तला-मिलन इस प्रकार घटनाओं का ऐक्य और सार्थकता होने पर भी उनमें घात-प्रतिघात नाटक की मनोरंजकता को बढ़ाता है। इनके साथ कवित्व चरित्रचित्रण और स्वाभाविकता भी नाटक के आवश्यक गुण हैं। यदि नाटक में चरित्रचित्रण न हो, या अस्वाभाविक घटनाएँ

है। अर्थात् उपन्यास लिखने वालों का जो अपने भाव होते हैं, वही वे अपने पात्रों के चित्रित करते हैं।

(ख) अशोक वाटिका में दुखी सीता को बार बार भय देकर तथा राक्षसियों को उसे और सताने के लिए कह कर जब रावण चला गया उस समय त्रिजटा तथा विभीषण की पत्नी सरमा राक्षसियों को वाटिका विहार के बहाने अलग ले गई और सीताजी अकेली रह गई। तब सीताजी पृथ्वी की ओर ताक रही थीं, आँखें खुले होने पर भी चिन्ता के मारे उन्हें कुछ नहीं दिखता था और वे लगातार आंसू बहाने लगीं।

(घ) सीताजी अन्ध दृष्टि से पृथ्वी की ओर देखती हुई अनवरत अश्रुधारा बहाने लगीं। ५

(क) वनवास के समय पहली बार ही सीताजी को कण्टकाकीर्ण पथ पर पैदल यात्रा करनी पड़ी, थोड़ी दूर चलते ही वे थक गईं, उसी का वर्णन करते हुए कवि तुलसीदास कहते हैं। सीताजी (पहले पहल इस प्रकार पैदल) नगर से बाहर निकली थीं और (रामचन्द्र जी के समान वीर पुरुष की पत्नी होने के गर्व से) दो चार कदम धैर्य धारण करके चलीं। इतने परिश्रम से उनके सारे ललाट पर पसीने की बूँदें झलकने लगीं, और अति कोमल दोनों अधर पुट (होंठ) सूख गये। अतः पूछने लगीं कि अब कितनी दूर और चलना है? प्यारे, पर्णकुटी कहाँ पर बनाओगे? सीताजी की ऐसी व्याकुलता देख कर रामचन्द्रजी की अतीव सुन्दर आँखों से आँसू टपकने लगे।

(ख) बिन्दु में, शून्य में, निराकार में समुद्र समा गया है, अर्थात् उस निराकार परमात्मा में यह चराचर जीव जगत् समा गया है, यह क्या आश्चर्य है, और इस आश्चर्य का वर्णन किससे करें, क्योंकि देखने वाला ज्ञानी ही स्वयं अपने आप लोप हो गया है, उस परमात्मा में लीन हो गया है। अर्थात् नारायण में नर विलीन होगया है। या नर में ही नारायण की उपलब्धि हो जाती है।

(ग) उपन्यासों में पात्रों के भावों का जो विश्लेषण दिखाया जाता है, उनके मन का जो अन्तर्द्वंद्व दिखाया जाता है, वह पात्रों के अपने मन के चित्र नहीं होते, वे तो उपन्यास लिखने वालों के मन के भावों की परछाईं होती

प्रश्नपत्र ५

१ बाजीराव पेशवा के शासन-काल का वृत्तान्त लिखो और यह बताओ कि उसके समय मरहठा साम्राज्य की क्या दशा था। १२

१ बाजीराव पेशवा का शासनकाल सन् १७२० से १७४० तक था। वह सब पेशवाओं में योग्य और वीर था। उसके समय मराठे दूर दूर तक धावा मारने लगे। बाजीराव का सारा समय लड़ाई में बीता। उसने लगातार १५ वर्ष लड़ाई कर पुर्तगाल वालों से बसीन आदि कई बस्तियाँ छीन लीं। उसके समय मराठा सरदारों ने गुजरात पर पूर्ण अधिकार कर लिया और बुंदेलखंड से पठानों को निकाल बाहर किया। इस सेवा के बदले बुंदेल नरेश महाराज छत्रसाल ने जालोन, झाँसी और भोपाल के पास के कई स्थान पेशवा को दिये। पीछे पूरे मालवा पर भी होल्कर, सिंधिया आदि मराठा सरदारों का अधिकार हो गया। इधर गोंडवाना और उड़ीसा की ओर भी मराठे बढ़ने लगे। सन् १७३६ में मराठे दिल्ली भी पहुँच गये। दिल्ली के बादशाह मुहम्मदशाह ने उन को रोकने के लिए निजाम को बुलाया। निजाम आया और परास्त हो गया। ~~~ को बाजीराव को बहुत सा धन देकर सधि की ... ७४० में इस यशस्वी पेशवा की मृत्यु हुई

साम्राज्य खूब बढ़ना प्रारभ हुआ। ...छत्रछाया में मराठों के चार राज्य ...गुजरात में, होल्कर का इंदौर में, सिंधिया

ग्वालियर में, और राघोजी भोंसले का मध्य भाग में—स्थापित हुए।

२ निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखो —

पिट्स इण्डिया ऐक्ट। [illegible]। [illegible]। [illegible]। काँग्रेस। इल्बर्ट बिल। १८

२ पिट्स इंडिया ऐक्ट—१७७३ के रेगुलेटिंग ऐक्ट की त्रुटियों को दूर करने के लिए १७८४ में पिट्स इंडिया ऐक्ट पास किया गया। इसके अनुसार राजनीतिक शासन की बागडोर अप्रत्यक्ष तौर पर ब्रिटिश सरकार के हाथ में आ गई। व्यापार के काम में ईस्ट इंडिया कम्पनी के सञ्चालकों को पूरी स्वतन्त्रता रही, पर राजनीतिक कार्यों का भार—दीवानी, सेना और कर सम्बन्धी कार्य—एक प्रबन्धकारिणी सभा के हाथ में दिया गया, जिसे बोर्ड ऑफ कन्ट्रोल कहते थे।

इसके कुल छः सदस्य थे जो ब्रिटिश सरकार द्वारा इंग्लैंड में नियुक्त किये जाते थे। ब्रिटिश सरकार का प्रधान मंत्री इन छः सदस्यों में से किसी एक को उस प्रबन्धकारिणी सभा का सभापति नियुक्त करता था। साथ ही यह नियम बना दिया गया कि पार्लियामेंट की आज्ञा के बिना गवर्नर जनरल को किसी देशी राज्य से संधि या लड़ाई करने का अधिकार न होगा। इंग्लैंड में तीन आदमियों की एक गुप्त कमेटी भी बनाई गई जो जरूरी कामों को कर सकती थी। इसके अतिरिक्त गवर्नर जनरल का बम्बई और मद्रास के गवर्नरों पर अधिकार भी बढ़ा दिया गया और गवर्नर जनरल की कौंसिल के सदस्यों की संख्या ४ से घटा कर ३ कर दी गई।

जनरल को यह भी अधिकार दे दिया गया कि वह खास मौकों पर कौंसिल के फैसले का उल्लंघन भी कर सकता था।

बंग-विच्छेद—लार्ड कर्जन का विश्वास था कि बंगाल बहुत बड़ा मुल्क है, जिसका शासन प्रबंध एक प्रांतीय सरकार के लिए कठिन है। शासन की सुविधा के लिए उसने अक्टूबर १९०५ में बंगाल के दो विभाग किये और नये बने प्रान्त का नाम आसाम और बंगाल रखा, इसमें सारा आसाम और बंगाल के १५ जिले शामिल किये गये। बंगालियों ने समझा कि यह कार्य उनके राष्ट्रीय संगठन को तोड़ने के लिये किया गया है। सारे देश में इससे अशान्ति फैल गई और इसके विरुद्ध घोर आन्दोलन हुआ, जो सशस्त्र क्रान्ति की अवस्था तक पहुँच गया। नेताओं ने ब्रिटिश माल के बहिष्कार और स्वदेशी के प्रचार का आन्दोलन शुरू किया।

महात्मागांधी—आपका पूरा नाम मोहनदास कर्मचन्द गांधी है। आपका जन्म सन १८६९ में पोरबन्दर में हुआ। बैरिस्टरी पास करके आप दक्षिण अफ्रीका गये। वहाँ आपने सत्याग्रह करके भारतीयों के अनेक कष्टों और अपमानों को दूर किया। वहाँ से विजय प्राप्त कर आप भारत लौटे। भारत में उन दिनों भारतीयों के दमन के लिए रौलट ऐक्ट नामक काला कानून पास किया जा रहा था। आपने यहाँ आकर सत्याग्रह और असहयोग आन्दोलन प्रारम्भ किया। सन् १९१९ से भारत की आजादी की लड़ाई की बागडोर आप के ही हाथ में है। आपके इशारे पर हजारों भारतीय जेलों में गये। सन् १९३० में भारत के तत्कालीन वायसराय लार्ड अरविन को आपसे समझौता करना पड़ा। उसके बाद आप कांग्रेस के एक मात्र

प्रतिनिधि हो कर विलायत गये, पर वहाँ से आते ही आपको फिर आंदोलन प्रारंभ करना पड़ा। १९३७ में जब नया प्रान्तीय शासन विधान प्रारंभ हुआ, तब आपके आदेश से आठ प्रांतों में कांग्रेसी मन्त्रिमंडल बने। आज भी ब्रिटिश सरकार को कोई बात तय करनी होती है, तो वह आपको बुलाती है। कांग्रेस के अतिरिक्त अन्य भी देश की अनेक अग्रगामी संस्थाएँ—हरिजन सेवक संघ, अखिल भारतीय चरखा संघ, ग्रामोद्योग संघ तथा राष्ट्रभाषा आंदोलन आदि आपकी ही देख रेख में चल रहे हैं। आप भारत की सबसे बड़ी विभूति हैं। देश का शायद ही कोई कोना होगा जो एक बार महात्मा गांधी के नाम से न गूँजा हो।

महात्मा कबीर—कबीर हिन्दी के तीन सर्व श्रेष्ठ कवियों में कहे जाते हैं। इनका जन्म संवत् १४५६ में तथा मृत्यु १५७५ में हुई। कई इनको विधवा ब्राह्मणी का पुत्र मानते हैं, पर इनका पालन पोषण मुसलमान जुलाहे के हाथ में हुआ है। कइयों के मत में ये मुसलमान जुलाहे के ही पुत्र थे।

कबीर निरक्षर थे, पर थे स्वाभाविक कवि। सीधी सादी भाषा में इन्होंने अनूठे हृदयग्राही भाव भर दिए हैं। साधारण जनता को इनकी कविता जैसी प्रिय है विद्वज्जन भी उससे वैसा ही रस लेते हैं यहाँ तक कि विश्व कवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने इनके पदों का अंग्रेजी में अनुवाद भी किया है।

कबीर साहब एक ही ईश्वर को मानते थे। बहुदेववाद के घोर विरोधी थे। अवतार, मूर्ति, तीर्थ, व्रत, मस्जिद, मंदिर आदि को नहीं मानते थे। अहिंसा, [illegible] का [illegible] सभा संसार की [illegible] बार-बार कहा है। [illegible]

उपनिषदों के विचार वाले ईश्वर को मानते थे और साफ कहते थे कि वही शुद्ध ईश्वर है, चाहे उसे राम कहो चाहे अल्ला। हिन्दू और मुसलमान दोनों पर ही इनका प्रभाव था। इनके जीवन-काल में ही इनके बहुत से शिष्य हो गये थे। अब भी भारत मे ८-९ लाख कबीरपथी हैं, जिनमे हिन्दू मुसलमान दोनों हैं।

कांग्रेस—भारतीयों को राजनीतिक अधिकार दिलाने के लिए सन् १८८५ मे भारत मे स्वतन्त्रता आंदोलन के लिए इंडियन नेशनल कांग्रेस का सूत्रपात हुआ और बबई में उसका पहला अधिवेशन हुआ। प्रारभ में काग्रेस की मॉग केवल यह थी कि भारतीयों को सरकारी नौकरी मे अधिक जगह मिले, धारा सभाओं मे भारतीयों की सख्या बढाई जाय। समय के साथ कांग्रेस के उद्देश्यों मे परिवर्त्तन होता गया। सन् १९२९ में कांग्रेस ने लाहौर के अधिवेशन मे प० जवाहरलाल नेहरू के सभापतित्व मे अपना ध्येय पूर्ण स्वतन्त्रता बनाया। सन् १९३६ मे जब नया भारतीय-शासन विधान जारी हुआ, तब आठ प्रांतों में काग्रेस का बहुमत हुआ जहाँ काग्रेसी मन्त्रि-मडल बने। अब जब यूरोप में युद्ध प्रारभ हुआ, और ब्रिटिश सरकार ने भारतीयों के इच्छा के बिना ही भारत को भी लडाकू जातियों मे सम्मिलित कर लिया, तब उसके विरोध-स्वरूप काग्रेस मत्रीमडलों ने त्याग-पत्र दे दिया। कांग्रेस ही एक ऐसी संस्था है, जो जाति और धर्म के भेद भाव के बिना समूचे भारत का प्रतिनिधित्व कर सकती है।

इलबर्ट बिल—लार्ड रिपन के समय तक देशी जजों को अगरेज अपराधियों के अपराधों को विचार करने का अधि

नहीं था। लार्ड रिपन ने तत्कालीन कानूनी सदस्य मि०
ई द्वारा एक बिल पेश करवाया जिससे देशी मेजिस्ट्रेटों
जजों को भी योरोपियन लोगों के अपराधों का फैसला
का हक मिल जाता था। इंगलैंड में और ऐंग्लो इंडियन
में इस बिल की कड़ी आलोचना हुई। इस आन्दोलन से
कर लार्ड रिपन को बिल में कुछ संशोधन कर देना पड़ा,
के अनुसार योरोपियन लोगों का अपराध निर्णय ज्यूरी
द्वारा होने लगा, जिसमें आधे यूरोपियन अवश्य
थे।

राजा गुलाबसिंह जम्मू के राजा की जीवनी लिखो और यह
भी कि उनका सिक्खों के राज्य में क्या संबंध था?

राजा गुलाबसिंह जम्मू के राजा [illegible] के
जोरावरसिंह का पोता था। इसके दो और भाई थे
[illegible]सिंह और सुचेतसिंह। इन तीनों भाइयों ने सन् १८१८
[illegible] केसरी रणजीतसिंह के दरबार में नौकरी कर ली।
राजा रणजीतसिंह इन तीनों भाइयों की [illegible]
[illegible] से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने सन् १८२४ में
[illegible]सिंह को जम्मू का राजा बना दिया। [illegible]सिंह महा
[illegible] रणजीतसिंह का मंत्री नियुक्त हुआ। सन् १८४६ में [illegible]
[illegible] और अंगरेजों का अन्तिम युद्ध हुआ, तब गुलाबसिंह
[illegible] रहा। लाहौर की संधि के [illegible]
[illegible] से [illegible] [illegible] रुपया माँगा [illegible]
[illegible] राजकोष में [illegible] [illegible] रुपया ही [illegible]
[illegible] और जम्मू के [illegible] गुलाबसिंह [illegible] [illegible] किया।

कि यदि उसे अपने प्रदेश का स्वतन्त्र शासक मान लिया जाय तो बाकी रकम वह अदा कर देगा। यह बात स्वीकार कर ली गई, और उस समय से गुलाबसिंह काश्मीर के स्वतन्त्र महाराजा होगये। इससे पूर्व वे सिक्ख-साम्राज्य के अधीन थे।

४ १८५७ क गदर के कारण लिखो और इसका भारतवर्ष के इतिहास पर क्या परिणाम हुआ। १२

गदर के कारण तीन भागों मे बाँटे जा सकते है।

१ (क राजनीतिक अशान्ति—राजनीतिक अशान्ति का कारण लार्ड डलहौजी की रियासतों के प्रति लैप्स नीति थी। मुगल-सम्राट, नाना साहिब, झाँसी की रानी आदि अनेक नरेश इस नीति के शिकार हो चुके थे। फलत वे अंग्रेजों के शत्रु बने हुए थे और शेष राजाओं में सदेह फैला हुआ था कि वे भी इस नीति का शिकार न बनाए जायँ। वे प्रजा को भडका रहे थे।

(ख) जो राज्य अंग्रेजों के अधिकार में आता था, उसमें उच्चपद अंग्रेजों को ही मिलते थे, फलत. रियासत के उच्च कर्मचारी भी असतुष्ट थे।

२ सामाजिक अशान्ति—पश्चिमी तरीकों का प्रयोग शुरू हो जाने से लोगों को सन्देह होगया कि अगरेज उनको धर्म-भ्रष्ट करना चाहते हैं। रेल, तार और पाश्चात्य शिक्षा आदि से भ्रम की पुष्टि होगई।

३ सैनिक अशान्ति—(क) जनरल सर्विस एनलिस्टमेंट नामक विधान पास किया गया, जिससे प्रत्येक सैनिक को आवश्यकता पड़ने पर कहीं भी भेजा जा सकता था। इस

विधान को सिपाहियों ने अच्छा न समझा विशेष कर ब्राह्मणों ने जो समुद्र-यात्रा को धर्म विरुद्ध समझते थे। (ख) सेना में हिन्दुस्तानी सिपाहियों की संख्या अंगरेजी सिपाहियों से पाँच-गुणा थी, जिससे उनको अपनी शक्ति पर विश्वास था। (ग) अफगान युद्धों सिक्खों के युद्ध और क्रीमियन युद्ध से अंगरेजों के पुराने सैनिक गौरव को धक्का लगा। (घ) नये ढँग की बन्दूक का प्रयोग किया गया। इस बन्दूक के कारतूस के कागजी सिरे पर चिकनाहट (चर्बी) होती थी, जिसे प्रयोग से पहले दाँतों से फाड़ना पड़ता था। यह धर्म भ्रष्ट करने का ढँग समझा गया।

इस गदर का यह-परिणाम हुआ कि गदर के पश्चात् भारत का शासन सूत्र ईस्टइण्डिया कंपनी से महारानी विक्टोरिया ने अपने हाथ में ले लिया। १ नवंबर १८५८ को महारानी ने प्रसिद्ध घोषणा पत्र निकाला, जिसमें देशी नरेशों के अधिकारों की रक्षा का वचन दिया, सन्तान न होने की हालत में उन्हें गोद लेने का अधिकार दिया और यह घोषित किया कि भारतीय प्रजा के धार्मिक विश्वासों में किसी प्रकार का हस्ताक्षेप न किया जायगा। हत्या के अपराधियों को छोड़ कर सबको क्षमा कर दिया। यह भी कहा गया कि प्रत्येक मनुष्य चाहे किसी वर्ण का हो अपनी योग्यता के बल पर किसी भी पद को प्राप्त कर सकता है इसमें किसी प्रकार का पक्षपात न होगा।

१ लार्ड डैल्हौजी के शासन काल का वृत्तान्त लिखो

अथवा

धर्मनिरपेक्ष की मामली मदाई के कारण लिखो। ११

जब वेल्जली भारत मे आया, उस समय इग्लैंड का फ्रांस से युद्ध हो रहा था। नैपोलियन बोनापार्ट स्थल-मार्ग द्वारा भारत पर आक्रमण करने की योजना तैयार कर रहा था। टीपू सुलतान कई देशी शक्तियों को मिलाकर अगरेजों के विरुद्ध लडाई करने की सोच रहा था। अत वेलजली ने निश्चय किया कि फ्रांसीसियों को भारत से निकाल दिया जाय, और भारत के देशी राज्यों ओर नवाबों को ब्रिटिश-सरकार की संरक्षता में केवल अधीन राज्य बना दिया जाय। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए उसने एक योजना अपनाई जो सहायता सबधी व्यवस्था के नाम से प्रसिद्ध है। इसका उद्देश्य यह था कि भारत में देशी-नरेश अगरेजों की सर्व श्रेष्ठ सत्ता को स्वीकार करें और अपनी रक्षा का भार अगरेजों को सौप दे। अपने अपने राज्य मे एक अगरेजी सेना रखें और उसका खर्च स्वय उठावें या सेना के खर्च के लिए अपने राज्य का कोई भाग निश्चित कर दें। देशी-नरेश एक दूसरे के साथ अंगरेजों की सम्मति के बिना कोई सन्धि न करें। प्रत्येक देशी-नरेश अपने दरबार में एक अगरेज रेजीडेंट रखे।

सब से पहले हैदराबाद के निजाम को इस नीति को मानने को विवश किया गया। उसके बाद टीपू की बारी आई, परन्तु सुलतान टीपू ने साफ जवाब दे दिया। फलत. मैसूर की चौथी लडाई हुई जिसमें टीपू सुलतान की हार हुई और वह युद्ध म मारा गया। उसके स्थान पर प्राचीन हिन्दू राज-वश का प्रतिनिधि मैसूर की गद्दी पर बिठाया गया, जिसने इस प्रकार की अधीनता स्वीकार कर ली थी।

इसके बाद अवध के नवाब की बारी आई। उससे भी वही शर्त्तें मनवाई गईं और सेना के खर्च के लिए गोरखपुर इलाहाबाद और रुहेलखंड के इलाके ब्रिटिश सरकार को मिले।

उसके बाद तंजौर, अर्काट और सूरत भी किसी न किसी बहाने से ब्रिटिश साम्राज्य में मिला लिये गये। इस प्रकार दक्षिण और उत्तर से निश्चिंत हो वेलज़ली ने मराठों की बड़ी भारी शक्ति की ओर ध्यान दिया। महान मराठा राजनीतिज्ञ नानाफड़नवीस का स्वर्गवास हो चुका था। मराठों में गृह-कलह जारी था। केन्द्रीय मराठा शक्ति क्षीण हो चुकी थी। होल्कर और सिंधिया दोनों पेशवा बाजीराव को अपने वश में करना चाहते थे। होल्कर ने सिंधिया और बाजीराव की सम्मिलित सेना को पूना में हरा दिया। बाजीराव ने सहायक सम्बन्धी व्यवस्था स्वीकार कर अंगरेज़ों से संधि कर ली। सिंधिया और भोंसला ने इस संधि को अपमान जनक समझा, और अंगरेज़ों से युद्ध प्रारम्भ कर दिया। पर अंत में सिंधिया और भोंसला दोनों की हार हुई और उन्हें भी उसी प्रकार की शर्तों पर संधि करनी पड़ी। उसके बाद अंगरेज़ों का होल्कर से युद्ध हुआ। तीन महीने के युद्ध से तंग आकर होल्कर ने भी संधि कर ली।

होल्कर के साथ युद्ध में कम्पनी का बहुत खर्च हुआ, जिस से डायरेक्टरों के मुनाफ़े में कमी हुई। फलतः उन्होंने वेलज़ली को वापिस बुला लिया। वेलज़ली के पहले भारत में ब्रिटिश भी एक शक्ति थी, पर वेलज़ली ने भारत की अन्य सब शक्तियाँ निजाम, मैसूर, अवध, मराठा आदि प्रायः नष्ट कर दीं और ब्रिटिश शक्ति को भारत में प्रधान कर दिया।

बना दिया। बादशाह शाहआलम भी ब्रिटिश सरकार का पेंशनिया बन गया। केवल पंजाब, काश्मीर और उत्तर पश्चिमी सीमा-प्रान्त ही ब्रिटिश साम्राज्य के बाहर रहे।

अफगानिस्तान की दूसरी लडाई के बाद अफगानिस्तान पूर्ण स्वतंत्र न था। वह ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन था। पर स्वतंत्र अफगान यह सह न सकते थे। १६१६ मे जब भारत मे असहयोग और खिलाफत आंदोलन प्रारभ हुआ, भारत मे चारों ओर अशान्ति मच गई थी, उस समय अफगानों ने स्वतंत्रता प्राप्त करने का अच्छा मौका पाया। तत्कालीन अमीर हबीबुल्ला यह न चाहता था, यहाँ तक कि यूरोपीय महायुद्ध के अवसर पर जब कि ब्रिटिश सरकार आपत्ति में थी, तब जर्मनी और तुर्की वालों के समझाने पर भी उसने कोई प्रयत्न न किया था। इससे अफगान असंतुष्ट थे। इस समय भारत मे अशाति देखकर वे किसी प्रकार अवसर न खोना चाहते थे। अत उन्होंने अमीर की हत्या कर उसके तीसरे पुत्र अमानुल्ला को गद्दी पर बिठाया, और नये शासक को अफगानों ने भारत पर हमला करने को प्रेरित किया। इधर ब्रिटिश राज्य मे स्थित कुछ लोगों ने भारतीय जनता की अशाति की सूचना अमीर को दी और उसे आश्वासन दिया कि एक बार सीमाप्रांत पर हमला कर देने से सारे भारत में विद्रोह मच जायगा। फलत १६१६ में अमीर की सेना ने भारत पर हमला कर दिया। अफगानिस्तान की तीसरी लडाई का यही मुख्य कारण था।

६ बर्मा की दूसरी लडाई के कारण लिखो।

अथवा

मान्टेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार द्वारा भारतवर्ष के शासन प्रबन्ध में क्या परिवर्तन हुआ ? १०

बर्मा की लड़ाई के बाद कई अंगरेज व्यापारियों ने रंगून में व्यापारी कोठियाँ बनवा ली थी। पर बर्मा निवासियों या बर्मा के सम्राट् को यह पराजय सदा शूल की तरह चुभती थी। घृणा और बदला लेने के भाव उनमें बढ़ रहे थे। इसी कारण अंग्रेज व्यापारियों के साथ रंगून के बंदरगाह पर बुरा बरताव किया जाता था। इस पर जब अंगरेज-दूत बर्मा के राजदरबार में क्षतिपूर्ति के लिए भेजा गया तब बर्मा के राजा ने इस सम्बन्ध में कुछ करने से इनकार कर दिया। इसी आधार पर लार्ड डलहौजी ने सन् १८५२ में बर्मा की दूसरी लड़ाई की घोषणा की थी।

मांटेग्यू चेम्सफोर्ड सुधार द्वारा भारतीय शासन-प्रबन्ध में निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए—भारतमंत्री की कौंसिल में एक के स्थान पर तीन भारतीय सदस्य होने लगे। भारत निवासी गवर्नर के पद पर नियुक्त होने लगे। केन्द्रीय व्यवस्थापिका सभाएँ दो बनी—एक कौंसिल आफ स्टेट (राज्यपरिषद्) तथा दूसरी लेजिस्लेटिव असेम्बली (व्यवस्थापिका सभा), राज्यपरिषद् में ६० सदस्य होते थे जिनमें से २७ सरकार द्वारा नियत और बाकी ३३ जनता द्वारा निर्वाचित होते थे। इन [illegible] १४ हर पाँच वर्ष के बाद होता था। [illegible] सदस्य थे, जिनमें से ४० नामजद [illegible] थे, [illegible]। इसका चुनाव हर [illegible] होता था। [illegible]

चुनती थीं। इस शासन-सुधार के अनुसार सरकार को अपना सारा बजट मॉग के रूप मे इन सभाओं मे पेश करना पडता था। विदेशीय, राजनीतिक और सैनिक व्यय आदि कुछ खर्चों को छोडकर बाकी सारा आय-व्यय का लेखा (बजट) दोनों सभाओं में पेश होना आवश्यक था। प्रत्येक कानून दोनों सभाओं में पास होने के बाद ही व्यवहार में लाया जाता था। परन्तु विशेष अवस्थाओं में वायसराय उन बिलों के निषेध अथवा स्वीकृति की सामर्थ्य रखता था। प्रान्तीय और स्थानीय शासन में तो इस ऐक्ट के कारण पहले से मौलिक परिवर्तन हो गए। प्रान्तीय शासन विभाग दो विभागों में बॉटा गया। कुछ विभाग तो प्रान्तीय गवर्नर तथा उसकी कौन्सिल के अधिकार में रहे और कुछ विभाग (शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, कलाकौशल) प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा द्वारा निर्वाचित मन्त्रियों के हाथों में आगए। जो विभाग कौंसिलों ने सुरक्षित रखे गये थे, उनमे सरकार को अधिकार था कि कौंसिल के निर्णय के विरुद्ध भी कर सके, परन्तु आय व्यय के बजटों का प्रान्तीय कौंसिल मे पास होना आवश्यक हो गया। प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभाओं के अधिकांश सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित होते थे। मिनिस्टर व्यवस्थापिका सभा के निर्वाचित सदस्यों मे से गवर्नर द्वारा नियत किये जाते थे। यदि मिनिस्टरों की बात को व्यवस्थापिका सभा स्वीकार न करे तो उन्हें अपना पद छोडना पडता था। केन्द्रीय तथा प्रान्तीय शासन सुधारों के साथ साथ केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों की आमदनी के भी पूर्णतया विभाग कर दिये गये। इसके अतिरिक्त नगरों में तथा गाँवों के स्थानीय शासन मे,

नगरों में म्युनिसिपल कमेटियों तथा गाँवों में डिस्ट्रिक्टबोर्ड के कार्य क्रम तथा अधिकारों में बहुत से परिवर्तन हुए। सारांश यह कि इस कानून द्वारा भारत के शासन में मौलिक परिवर्तन हुए।

भारतवर्ष के इतिहास का प्रश्नोत्तर

(दूसरा भाग)

---

७ कवि सूरदास की जीवनी लिखो। और यह बताओ कि उसने हिन्दी साहित्य की क्या सेवा की? १२

कवि सूरदास हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ कवियों में से हैं। इनके जन्म तथा मरण के काल का निश्चित पता नहीं। पर जन्म अनुमान से १५८० वि० तथा मृत्यु १६४० वि० में कहा जाता है। इनका जन्मस्थान कुछ लोग दिल्ली के पास सीही ग्राम कहते हैं और कुछ लोग रेणुका ग्राम। कई लोग इनको जन्म से अन्धा मानते हैं, कइयों के मतानुसार ये एक बार एक सुन्दरी पर मोहित हो गये, पीछे ज्ञान होने पर इसमें इन्हें अपने नेत्रों का दोष लगा, अतः इन्होंने अपने नेत्र फोड़ लिए। ये महाप्रभु वल्लभाचार्य के शिष्य थे, और उनकी आज्ञा से नित्यप्रति अपने उपास्यदेव श्रीनाथ कृष्ण की मूर्ति के सामने भजन बनाते थे। इनके मधुर पदों के कारण गोस्वामी विट्ठलनाथ जी ने इन्हें अष्टछाप के कवियों में सम्मिलित किया।

इस अंध कवि ने हिन्दी साहित्य में सूरसागर नामक अनूठा ग्रन्थ लिखा जिसमें लगभग सवा लाख पद कहे जाते हैं। पर आजकल केवल पाँच छः हजार ही मिलते है। इनमें कृष्ण की बाल लीला से लेकर उनके गोकुल त्याग और गोपियों के विरह तक ही कथा फुटकर पदों में कही गई है पर उन पदों में कथा कहने की प्रवृत्ति बिलकुल नहीं दीख पडती। प्रेम, विरह आदि विभिन्न भावों की वेगपूर्ण व्यंजना उनमें बडे सुंदर रूप मे की गई है।

इन्होंने एक ही प्रसग पर अनेक पद लिखे हैं। भक्ति के आवेश में वीणा के साथ गाते हुए जो सरस पद इस अंध कवि के मुख से निकले है उसमें पुनरुक्ति भले ही हो पर वे इतने ममस्पर्शी तथा हृदयहारी है, कि अरसिक को भी एक बार रसलीन कर देते हैं विशेषत बाल लीला, गोपी-विरह, तथा कृष्ण द्वारा भेजे हुए उनके दूत ऊधो और गोपियों के सवाद के वर्णन मे ये सरसता, स्वाभाविकता तथा उत्कृष्टता की चरम सीमा को लॉघ गये हैं।

इस अनूठे ग्रन्थ को लिख कर सूर ने हिन्दी साहित्य में कृष्ण-भक्ति की ऐसी प्रबल लहर चला दी कि क्या हिन्दू क्या मुसलमान हिन्दी के सब कवियों की कविता का सदियों तक कृष्ण भक्ति ही विषय रहा और ब्रज भाषा ही काव्य भाषा होगई।

८ पश्चिमी हिन्दी की कितनी शाखायें हैं। यह कहाँ कहाँ बोली जाती है? विस्तार पूर्वक लिखो। १२

पश्चिमी हिन्दी की मुख्य चार शाखाएँ हैं—

१ हिन्दी या खड़ी बोली, २ ब्रजभाषा, ३ कन्नौजी ४ बुंदेली।

हिन्दी या खड़ी बोली दिल्ली तथा मेरठ के आसपास बोली जाती थी, पर अब यह भारत की राष्ट्रभाषा समझी जाती है और इसका प्रचार भारत भर में फैल रहा है। जब इसमें कठिन अरबी फारसी के शब्दों का मेल कर दिया जाता है, तब यही उर्दू कहाती है और जब इसमें आम प्रचलित उर्दू और संस्कृत शब्दों का ही मेल रहता है, तब यह हिन्दी या हिन्दुस्तानी कहाती है। ब्रजभाषा का मुख्य स्थान ब्रज है। पर दक्षिण में करौली राज्य, पश्चिम में जयपुर तक, पूर्व में बरेली, बदायूँ, एटा आदि स्थानों तक तथा उत्तर में गुड़गाँवा तक इसका प्रचार है। यह बहुत दिन तक हिन्दी की काव्य-भाषा रही है।

बुंदेली ब्रज भाषा की ही शाखा है, जो बुंदेलखंड, ग्वालियर और मध्य प्रदेश के कुछ जिलों में बोली जाती है।

कन्नौजी भी ब्रजभाषा से बहुत मिलती जुलती है। इसका केंद्र फर्रुखाबाद है। किन्तु उत्तर में यह हरदोई, शाहजहाँपुर, तथा पीलीभीत तक और दक्षिण में इटावा तथा कानपुर के पश्चिमी भाग तक बोली जाती है।

१ निम्नलिखित लोकोक्तियों का अभिप्राय लिखकर स्वरचित वाक्य में प्रयोग करो —

(१) देखें ऊँट किस करवट बैठता है।

(२) थोथा चना बाजे घना।

(३) दाल में कुछ काला है।

(४) बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी।

(५) मन चंगा तो कठोती में गंगा। १५

लोकोक्तियों और मुहावरों का ठीक-ठीक प्रयोग जानने के लिए डा० बहादुरचंद्र कृत "लोकोक्तियाँ और मुहावरे" नामक पुस्तक देखिए। इसमें लोकोक्तियों और मुहावरों के अर्थ तथा उनको अपने वाक्यों में किस तरह प्रयोग किया जाता है यह सब भली-भाँति दिखाया गया है। प्रश्न संख्या १ और २ में जो भी लोकोक्तियाँ और मुहावरे पूछे गये हैं, वे सब उसी पुस्तक में से हैं और यहाँ उसी पुस्तक में से उठा कर रख दिये गये हैं। साथ ही पुस्तक की पृष्ठ संख्या भी दे दी गई है। पुस्तक लेते समय 'हिन्दी भवन' और डा० बहादुरचंद का नाम देख लें।

देखें ऊँट किस करवट बैठता है—किसी घटना का फल जब अनिश्चित होता है और उसकी प्रतीक्षा की जा रही हो

...नर रहते हैं। कांग्रेसी मंत्री मंडल पद त्याग कर चुके हैं। ...वायसराय महात्मा गांधी, राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू और जिन्ना ...साहब को बार-बार बुला रहे हैं, देखें ऊँट किस करवट ...बैठता है. भारत को कुछ मिलता मिलता है या नहीं। (लोकोक्तियाँ मुहावरे—पृ० १८७)

थोथा चना बाजे घना—ओछे आदमी दिखावट बहुत ...करते हैं। पाँच चार हिन्दी भाषा में [illegible] हुए हैं और लेक्चर ...देते हैं मानो बड़े पण्डित हों। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे ...३)

...में कुछ काला है—कुछ सन्देह या संशय की बात ...। दाल में कुछ काला ज़रूर है नहीं तो यह किताब तुम पुरानी किताब क्यों लेना चाहते। (लोकोक्तियाँ ...रे—पृ० ५५)

...और समायणी—[illegible] ...। [illegible] ... ...न यहाँ [illegible] ... ...। (लोक[illegible]

... ...गुन है ...मुनी, ...मानें ...की है

भूषण प्रश्नपत्र ६

१ निम्नलिखित लोकोक्तियों का अभिप्राय लिखकर स्वरचित वाक्य में प्रयोग करो —

(१) देखें ऊँट किस करवट बैठता है।

(२) थोथा चना बाजे घना।

(३) दाल में कुछ काला है।

(४) बकरे की माँ कब तक खैर मनायेगी।

(५) मन चंगा तो कठौती में गंगा। १५

लोकोक्तियों और मुहावरों का ठीक-ठीक प्रयोग जानने के लिए डा० बहादुरचंद्र कृत "लोकोक्तियाँ और मुहावरे" नामक पुस्तक देखिए। इसमें लोकोक्तियों और मुहावरों के अर्थ तथा उनको अपने वाक्यों में किस तरह प्रयोग किया जाता है यह सब भली-भाँति दिखाया गया है। प्रश्न संख्या १ और २ में जो भी लोकोक्तियाँ और मुहावरे पूछे गये हैं, वे सब उसी पुस्तक में से हैं और यहाँ उसी पुस्तक में से उठा कर रख दिये गये हैं। साथ ही पुस्तक की पृष्ठ संख्या भी दे दी गई है। पुस्तक लेते समय 'हिन्दी भवन' और डा० बहादुरचंद का नाम देख लें।

देखें ऊँट किस करवट बैठता है—किसी घटना का फल जब अनिश्चित होता है और उसकी प्रतीक्षा की जा रही हो-

प्रेमगली अति साँकरी तामें दो न समाहि
जब मैं था तब गुरु नहीं अब गुरु है मैं नाहि।

भौंरे की तरह आज एक फूल पर कल दूसरे फूल पर मँडराने वाले वासना सागर में डूबे व्यक्ति लालसा को प्रेम के नाम से पुकारा करते हैं। पर सन्त कबीर कहते हैं कि क्षण में उतरने वाला और क्षण में चढ़ने वाला प्रेम, प्रेम नहीं, वासना है। प्रेम का पथ बड़ा कठिन है। कायर और विषयी प्रेम का मर्म नहीं जानते। यदि अपने हाथों अपना सिर काट कर पृथ्वी पर रखने और फिर उसके ऊपर पैर रखकर चलने की हिम्मत हो तभी इस मार्ग के पथिक बनो अन्यथा इससे दूर ही रहो। सूली की सीढ़ी पर पाँव रखने हुए प्रेमी मन्सूर ही इस प्रेम के महत्व को समझ पाया था। विष का प्याला पीने वाली मतवाली मीरा ही प्रेम के पीर को समझ सकी थी। कुदाल लेकर पर्वत का खनन करने वाले फरहाद ने प्रेम का नशा पिया था।

प्रेम का मार्ग कठिन होने के साथ साथ [illegible] [illegible] है। उसमें [illegible] का [illegible] नहीं। [illegible] [illegible] है। उसमें द्वितभाव का [illegible] [illegible] [illegible] सम्भावना ही रह सकती है। जब तक प्रेम में अहंभाव की प्रतीति रहती है, तब तक गुरु या प्रियतम के दर्शन नहीं हो पाते। और जब प्रेमी अपने को प्रियतम में [illegible] [illegible] [illegible] है, मिटा देता है, तब अहंभाव नहीं [illegible] [illegible] [illegible] अलग सत्ता नहीं रह पाती। उसमें और प्रियतम में [illegible] [illegible] नहीं रहता, दोनों एक हो जाते हैं [illegible]

यहाँ मैं कवि ने उपकार [illegible]
अहिंसा की भावना -

विमला कालिज, मैकलोड रोड तथा आदर्श महिला विद्यालय, रेलवे रोड विशेष उल्लेखनीय है। गतवर्ष मैंने 'रत्न' परीक्षा आदर्श महिला विद्यालय से दी थी, पर इस बार मैं 'विमला कालिज' में दाखिल हुई हूँ। इसकी सञ्चालिका श्रीमती नारायण देवी, बी० ए०, हिन्दी प्रभाकर है। विद्यालय में हिन्दी भूषण आदि के अतिरिक्त सगीत, मैट्रिक तथा एफ० ए० की पढ़ाई का भी प्रबध है। मै इस वर्ष भूषण और मैट्रिक दोनों दे रही हूँ। सवेरे १०-१२ तक हिन्दी-भूषण की पढ़ाई होती है। और १ से ३ तक मैट्रिक की अंग्रेजी की पढ़ाई। ३ बजे के बाद एक घटा सगीत के लिए होता है। बहन नारायण देवी जी प्रभाकर और भूषण को कुछ घटे पढ़ाती है। उनके अतिरिक्त विद्यालय मे दो और अध्यापिकाएँ और एक पडित तथा एक अगरेज़ी के प्रोफेसर है। सब ही अच्छे अनुभवी हैं।

विद्यार्थिनियों के लाभ के लिए परीक्षा के निकट आने पर कई बडे बडे साहित्यिकों के व्याख्यान भी कराये जाते हैं। मैं समझती हूँ कि तुम भी इसी विद्यालय मे दाखिल हो जाओ तो अच्छा होगा।

लिखो, कब तक तुम्हारी प्रतीक्षा करूँ। अपने माता पिता जी को मेरा नमस्कार कहना।

तुम्हारी सखी
इन्दुशोभा

४ अपनी पाठ्य-पुस्तकों में से कोई भी ऐसे दो पद्य लिखो जो तुम्हें प्रिय हों। लगभग २० पंक्तियों में उनकी समालोचना करो। १५

सीस उतारे भुईं धरे, ता पर राखे पाँव
दास कबीरा यों कहै ऐसा होय तो आव

हिन्दी भूषण प्रश्नपत्र संग्रह

[उत्तर सहित]

१९४०

सम्पादक

रामप्रसाद मिश्र

प्रकाशक

हिन्दी भवन, लाहौर

मूल्य ।=)

प्रकार सीधी-सादी भाषा में कवि ने इतने अनूठे हृदयग्राही भाव भरे हैं जिनकी छाप हृदय से नहीं मिटती।

५ निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर सरल और शुद्ध हिन्दी भाषा में अपने विचार प्रकट करो —

(१) पुस्तकालय।
(२) प्रात काल का भ्रमण।
(३) महात्मा गान्धी।
(४) पराधीनता।
(५) अपने यहाँ का कोई मेला। ३५

हिंदी भूषण प्रश्नपत्र—१९४०

प्रश्नपत्र पहला

१. (क) व्याकरण पढने से तुम्हें क्या लाभ होता है ? २

(ख) वर्ण, शब्द, और वाक्य में क्या भेद है ? ३

(क) व्याकरण पढने से हमें भाषा को शुद्ध रूप में प्रयोग करने के नियमों का ज्ञान हो जाता है। साधारणतया लोग बिना व्याकरण पढे भी शुद्ध लिख और बोल लेते हैं और अशुद्ध बोलने पर टोक भी देते हैं, परन्तु क्या अशुद्धि है और क्यों इस बात का ज्ञान व्याकरण पढे बिना नहीं हो सकता। अत भाषा के पूर्ण ज्ञान के लिए व्याकरण पढना आवश्यक है।

(ख) वर्ण उस मूलध्वनि को कहते हैं जिसके खंड न हो सकें, जैसे अ, इ, क्, ख्, आदि।

एक या अनेक वर्णों से बनी हुई स्वतन्त्र सार्थक ध्वनि को शब्द कहते हैं, जैसे, लडका, जा, छोटा, मैं, धीरे, परन्तु इत्यादि।

एक विचार को पूर्णता से प्रकट करने वाले शब्द समूह को वाक्य कहते हैं।

सारांश यह है कि वर्ण मूल ध्वनि है, वर्णों के जुड़ने से शब्द बनते हैं और शब्दों के जुड़ने से वाक्य।

२ नीचे लिखे शब्दों में सन्धि करो। और नियम भी बताओ —

(क) दु + प्रकृति, पद + आगम, नि + क्रम, षट् + मास

(ख) नीचे लिखे शब्दों का सन्धिविच्छेद करो —

Printed and published by
D C *Narang at the* H B *Press, Lahore.*

मात्रानन्द—मातृ + आनद ।

३ (क) द्वन्द्व समास किसे कहते हैं ? उसके भेदों के नाम लिखो ।
उनके लक्षण और उदाहरण भी दो । ६

(ख) निम्नलिखित पदों में जो जो समास हैं उनके नाम और
लक्षण बताओ ।

निडर, चौमासा, पर्णशाला पत्रदह । ४

जिस समास में दोनों संज्ञाएँ अथवा उनका समाहार प्रधान रहता है उसे द्वंद्व समास कहते हैं । इसके तीन भेद हैं—

१ इतरेतर द्वंद्व—जिस द्वंद्व समास के दोनों पद 'और' समुच्चयबोधक से जुड़े हुए हों और उस समुच्चयबोधक का लोप होगया हो, उसे इतरेतर द्वंद्व कहते हैं, जैसे, राधाकृष्ण, (राधा और कृष्ण) रामलक्ष्मण, (राम और लक्ष्मण) भाईबहन, (भाई और बहन) ।

२ समाहार द्वंद्व—जिस द्वंद्व समास से उसके पदों के अर्थ के अतिरिक्त उसी प्रकार का और भी अर्थ सूचित हो उसे समाहार द्वंद्व कहते हैं,—जैसे सेठ-साहूकार (सेठ और साहूकारों के अतिरिक्त और भी दूसरे धनी लोग) रुपया-पैसा ।

३ वैकल्पिक द्वंद्व—जिस समास में दोनों पद विकल्पसूचक समुच्चयबोधक द्वारा मिले हों और उस समुच्चयबोधक का लोप हो गया हो, उसे वैकल्पिक द्वंद्व कहते हैं, जैसे पाप पुण्य (पाप या पुण्य) धर्माधर्म (धर्म या अधर्म) ।

(ख) निडर—अव्ययीभाव समास । जिस समास में पहला शब्द प्रधान होता है और जो समूचा शब्द क्रिया विशेषण अव्यय होता है उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं ।

चौमासा—द्विगु । जिस समास में दूसरा पद प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते हैं । जिस तत्पुरुष समास के पहले में

पुनरक्ति, पुनरंचना, निश्चल, निषिद्ध, सन्तोष, उद्धार, मात्रानन्द ।

(क) दुः + प्रकृति = दुष्प्रकृति ।

यदि विसर्ग से पहले इ या उ हो और पीछे क्, ख्, या प्, फ् में से कोई वर्ण तो विसर्ग के बदले ष् हो जाता है । इस नियम से विसर्ग को ष् हो गया ।

पयः + पानम् = पयःपानम् ।

विसर्ग के बाद क्, ख्, या प्, फ् हो तो विसर्ग को कोई विकार नहीं होता । इस नियम से विसर्ग ज्यो का त्यों रहा ।

नि + ऊन = न्यून ।

ह्रस्व या दीर्घ इकार, उकार या ऋकार के बाद कोई असवर्ण (विजातीय) स्वर आये तो इ, ई के बदले य्, उ, ऊ के बदले व् और ऋ के बदले र् हो जाता है । इस नियम से इ को य् होकर न्यून बना ।

षट + मास = षण्मास

किसी वर्ग के प्रथम अक्षर से परे कोई अनुनासिक वर्ण हो तो प्रथम वर्ण के बदले उसी वर्ग का अनुनासिक वर्ण हो जाता है । इस नियम से ट् को ण् हुआ ।

(ख) पुनरुक्ति—पुनर् + उक्ति ।

पुनरंचना—अशुद्ध रूप है । पुनर् + रचना की संधि होने पर शुद्ध रूप पुनारचना होगा ।

निश्चल—निः + चल ।

निषिद्ध—नि + सिद्ध ।

सन्तोष—सम् + तोष ।

उद्धार—उत् + हार ।

(ख) कथा—कथाएँ
रानी—रानियाँ
दादा—दादा
बहू—बहुएँ

(ग)—धातुओं के अन्त में प्रत्यय लगा कर जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त कहते हैं और धातुओं को छोड़कर शेष शब्दों के आगे प्रत्यय लगाने से जो शब्द बनते हैं उन्हें तद्धित कहते हैं।

५ (क) अन्वय, अधिकार और पदक्रम किसे कहते हैं? ३

(ख) रूढ़ और यौगिक शब्दों के लक्षण और उदाहरण बताओ। ४

(क) अन्वय—दो शब्दों में लिंग, वचन, पुरुष, कारक अथवा काल की जो समानता रहती है, उसे अन्वय कहते हैं, जैसे—'छोटा लड़का रोता है' इस वाक्य में 'छोटा' शब्द का 'लड़का' शब्द से लिंग और वचन का अन्वय है, और 'रोता है' शब्द का 'लड़का' शब्द से लिंग वचन और पुरुष में अन्वय है।

अधिकार—अधिकार उस संबंध को कहते हैं जिसके कारण किसी एक शब्द के प्रयोग से दूसरी संज्ञा या सर्वनाम किसी विशेष कारक में आता है, जैसे, 'लड़का बन्दर से डरता है' इस वाक्य में 'डरता है' क्रिया के योग से 'बन्दर' शब्द अपादान कारक में आया है।

पदक्रम—शब्दों को उनके अर्थ और संबंध की प्रधानता के अनुसार वाक्य में यथास्थान रखना क्रम कहलाता है। वाक्य में पदक्रम का सबसे साधारण नियम यह है कि पहले कर्ता या उद्देश्य फिर कर्म या पूर्ति और अन्त में क्रिया रहती है, जैसे, लड़का पुस्तक पढ़ता है।

(ख) रूढ़—रूढ़ उन शब्दों को कहते हैं जो दूसरे शब्दों के योग से नहीं बने होते, जैसे, नाक, कान, पीला, [illegible], घर।

दोनों पदों के साथ एक ही कर्ता कारक की विभक्ति आती है उसे कर्मधारय कहते हैं । जिस कर्मधारय समास में पहला पद सख्या-वाचक होता है और जिससे समुदाय का बोध होता है उसे द्विगु कहते हैं ।

पर्णशाला—लुप्तपद कर्मधारय या मध्यमपदलोपी कर्मधारय । जिस कर्मधारय समास में पहले पद का दूसरे पद से सबध बताने वाला शब्द समास में अध्याहृत रहता है, उस समास को मध्यमपदलोपी या लुप्तपद कर्मधारय समास कहते हैं ।

पर्णं निर्मित शाला = पर्णशाला ।

वज्रदेह—उपमानपूर्वपद कर्मधारय । जिस वस्तु से उपमा दी जाती है उसका वाचक शब्द जब कर्मधारय समास के आरभ में आता है तब उसे उपमान पूर्वपद कर्मधारय समास कहते हैं । वज्रदेह—वज्र के समान कठोर देह ।

४ नीचे लिखे शब्दों का लिङ्ग निर्णय करो —

(क) गेंद, मणि, मटर, विनय, दुकान, बूँद ।

(ख) नीचे लिखे एकवचन शब्दों के बहुवचन लिखो —

कथा, रानी, दादा, बहू ।

(ग) कृदन्त और तद्धित में क्या भेद है ?

४ (क) गेंद—उभयलिंग

मणि—स्त्रीलिंग

मटर—पुल्लिंग

विनय—उभयलिंग

दुकान—स्त्रीलिंग

बूँद—स्त्रीलिंग

(ख) कथा—कथाएँ
रानी—रानियाँ
दादा—दादा
बहू—बहुएँ

(ग)—धातुओं के अन्त में प्रत्यय लगा कर जो शब्द बनते हैं उन्हें कृदन्त कहते हैं और धातुओं को छोड़कर शेष शब्दों के आगे प्रत्यय लगाने से जो शब्द बनते हैं उन्हें तद्धित कहते हैं।

५ (क) अन्वय, अधिकार और पदक्रम किसे कहते हैं ? २

(ख) रूढ़ और यौगिक शब्दों के लक्षण और उदाहरण बताओ। २

(क) अन्वय—दो शब्दों में लिंग, वचन, पुरुष, कारक अथवा काल की जो समानता रहती है, उसे अन्वय कहते हैं, जैसे—'छोटा लड़का रोता है' इस वाक्य में 'छोटा' शब्द का 'लड़का' शब्द से लिंग और वचन का अन्वय है, और 'रोता है' शब्द का 'लड़का' शब्द से लिंग, वचन और पुरुष का अन्वय है।

अधिकार—अधिकार उस सम्बन्ध को कहते हैं जिसके कारण किसी एक शब्द के प्रयोग से दूसरी संज्ञा या सर्वनाम किसी विशेष कारक में आता है, जैसे, 'लड़का बन्दर से डरता है' इस वाक्य में 'डरता है' क्रिया के योग से 'बन्दर' शब्द अपादान कारक में आया है।

पदक्रम—शब्दों को उनके अर्थ और सम्बन्ध की प्रधानता के अनुसार वाक्य में यथास्थान रखना क्रम कहलाता है। वाक्य में पदक्रम का सबसे साधारण नियम यह है कि पहले कर्ता या उद्देश्य फिर कर्म या पूर्ति और अन्त में क्रिया रखते हैं, जैसे, लड़का पुस्तक पढ़ता है।

(ख) रूढ़—रूढ़ उन शब्दों को कहते हैं जो दूसरे शब्दों के योग से नहीं बने होते, जैसे, नाक, कान, पीला, झट, पर।

यौगिक—यौगिक उन शब्दों को कहते हैं जो दूसरे शब्दों के योग से बनते हैं, जैसे, कतरनी, पीला पन, दूध वाला, झट-पट, घुड़-साल।

६ (क) संयुक्त क्रियाएँ किसे कहते हैं ? उनमें कौन कौन सी क्रियाएँ आती हैं ? ४

(ख) "मैं चला हूँ" यह किस काल का उदाहरण है ? २

(क) धातुओं के कुछ कृदंतों के आगे (विशेष अर्थ में) कोई कोई क्रियाएँ जोड़ने से जो क्रियाएँ बनती हैं, उन्हें संयुक्त क्रियाएँ कहते हैं, जैसे, करने लगना, जा सकना, मार देना। इन उदाहरणों में करने, जा और मार कृदंत हैं और इनके आगे लगना, सकना और देना क्रियाएँ जोड़ी गई हैं। संयुक्त क्रियाओं में मुख्य क्रिया का कृदंत रहता है और सहायक क्रिया के भिन्न-भिन्न काल के रूप रहते हैं।

संयुक्त क्रियाओं में नीचे लिखी क्रियाएँ आती हैं—

आना, उठना, करना, चाहना, चुकना, जाना, देना, डालना, पड़ना, पाना, बनना, रहना, लगना, लेना, सकना, होना। इनमें से प्राय सकना और चुकना को छोड़ शेष क्रियाएँ स्वतंत्र भी हैं और अर्थ के अनुसार दूसरी सहकारी क्रियाओं से मिलकर स्वयं संयुक्त क्रियाएँ भी हो सकती हैं।

(ख) मैं चला हूँ—यह आसन्नभूतकाल का उदाहरण है।

७ (क) शब्दालङ्कार को अर्थालङ्कार से भिन्न कैसे पहचानोगे ? २

(ख) छेकानुप्रास और वृत्यनुप्रास में क्या अन्तर है ? ४

(क) यदि वाक्य में चमत्कार लाने वाले शब्द या शब्दों को निकाल कर उस शब्द या उन शब्दों के स्थान पर उसी अर्थ वाले दूसरे शब्द रख दिए जाँय और अलंकार स्थिर रहे तो

अर्थालंकार होगा और यदि अलंकार नष्ट हो जाय तो शब्दालंकार।

(ख) जब एक या अनेक व्यंजन वर्णों की एक बार आवृत्ति हो तो छेकानुप्रास होता है और यदि एक से अधिक बार आवृत्ति हो तो वृत्त्यनुप्रास।

८ (क) एकधर्मा मालोपमा, समुच्चयोपमा, परम्परितरूपक, वस्तूत्प्रेक्षा, व्याजनिन्दा, छेकापह्नुति, तृतीय-प्रतीप।

इन अलङ्कारों के लक्षण और उदाहरण बताओ। १४

(ख) नीचे लिखे पद्यों में कौन कौन अलङ्कार हैं उनके नाम और लक्षण लिखो :—

(क) सबै सहायक सबल के, कोउ न निबल सहाय।
पवन जगावत आग को, दीपहि देत बुझाय॥ १

(ख) जपत एक हरिनाम के, पातक कोटि बिलाय।
लघु चिनगारी एक तें, घास ढेर जरि जाय॥ २

(ग) सोहत भानु प्रताप सों, लसत सूर धनुधार। २

(क) एकधर्मा मालोपमा—जब एक ही उपमेय की अनेक उपमानों से उपमा दी जाय और सब उपमानों में एक ही समान धर्म बताया जाय तब एकधर्मा मालोपमा अलंकार होता है। जैसे

कहीं वहीं था विमलांशु भी भरा।
महद्जनों के उर सा विधूप-सा॥

इसमें एक ही उपमेय [illegible] को महज्जनों के हृदय और विधूप इन दो उपमानों से उपमा दी गई है और दोनों में समान धर्म विमल एक ही है।

समुच्चयोपमा—जब एक उपमेय की एक ही उपमान से अनेक साधारण धर्मों से समानता बताई जाय तब समुच्चयोपमा अलंकार होता है। जैसे —

राधा-मुख जलजात ज्यों कोमल सुरभित मंजु।

यहाँ राधा-मुख एक उपमेय है, जलजात एक उपमान है, परन्तु कोमल, सुरभित और मंजु तीन समानधर्म हैं।

परंपरितरूपक—परंपरित रूपक तब होता है जब प्रधान रूपक का कारण एक और रूपक हो। इसमें दो रूपक होते हैं एक प्रधान दूसरा अप्रधान। प्रधान रूपक का कारण अप्रधान रूपक होता है अर्थात् यदि अप्रधान रूपक न रहे तो प्रधान रूपक भी न रहेगा। जैसे,

तुम्ह बिनु रघुकुल-कुमुद-बिधु सुरपुर नरक समान।

यहाँ दो रूपक हैं—

१ रघुकुल रूपी कुमुद—अप्रधान रूपक

२ तुम्ह (राम) रूपी चंद्रमा—प्रधान रूपक

राम को चंद्रमा इसलिए कहा गया है कि रघुकुल को कुमुद उससे पहले कहा गया है। यदि रघुकुल को कुमुद न कहा जाय तो रामचंद्र को चंद्रमा भी न कहा जा सकेगा। इस प्रकार अप्रधान रूपक प्रधान रूपक का कारण है।

वस्तूत्प्रेक्षा—जहाँ उपमेय में उपमान की या अकार्य में कार्य की संभावना की जाय वहाँ वस्तूत्प्रेक्षा अलंकार होता है। जैसे—

उस काल मारे क्रोध के तनु काँपने उनका लगा,
मानो हवा के जोर से सोता हुआ सागर जगा।

यहाँ क्रोध से काँपते हुए शरीरवाले अर्जुन में हवा से क्षुब्ध सागर की संभावना की गई है।

व्याजनिन्दा—जब स्तुति के बहाने निन्दा की जाय अर्थात् जब जान तो यह पड़े कि स्तुति की जा रही है पर वास्तव में निन्दा की गई हो, तो व्याजनिन्दा अलंकार होता है। जैसे—

राम साधु तुम साधु सुजाना, राममातु भलि मैं पहिचाना।

यहाँ देखने में तो कैकेयी ने राम, राममाता और दशरथ को साधु कहा है, परन्तु उसका यह कहने से अभिप्राय यह है कि तुम सब खराब हो।

छेकापह्नुति—जब पहले किसी बात को प्रकट करके फिर उसे छिपाने के लिए उसका निषेध किया जाय और चतुराई से दूसरी बात बना दी जाय तब छेकापह्नुति अलंकार होता है। जैसे,

सोभा सदा बढ़ावनहारा, आँखिन ते छिन करूँ न न्यारा।
आठ पहर मेरा मन-रंजन, क्यों सखि साजन? ना सखि अंजन।

यहाँ पहले प्रियतम की बात कह कर फिर उसे छिपाने के लिए उसका निषेध करके अंजन की बात कही है।

तृतीय प्रतीप—जब उपमान को उपमेय मान कर उपमेय द्वारा उपमान का अनादर कराया जाय तब तृतीय प्रतीप होता है। जैसे,

पाहन, जिय जनि गर्ब कर, हौ ही कठिन अपार।
चित दुरजन के पुनियत सौ सो लाख हजार।

साधारणतया दुर्जन का चित्त पत्थर होता है और पत्थर ...। यहाँ पत्थर उपमान को उपमेय मान कर उससे कहा कि तुम इस बात का गर्व मत करो कि तुम्हीं कठोर ... दुर्जन का चित्त भी होता है। इस प्रकार ... उपमान का अनादर कराया

... बात का निषेध
... में किया जाय
... से पहले ...

सचारी भाव—मोह, [illegible], जड़ता, उन्माद, व्याधि, ग्लानि, निर्वेद,

आलबन—प्रिय वस्तु का नाश, प्रिय व्यक्ति की मृत्यु या [illegible],

उद्दीपन—मृत शरीर, दाह-क्रिया, आलंबन के गुणों का स्मरण, उससे संबंध रखने वाली वस्तुओं का दर्शन.

अनुभाव—छाती पीटना, पछाड़ खाना रुदन, विलाप, निःश्वास आदि हैं।

उदाहरण—

शैव्या—(आगे शव देख कर) हाय-हाय रे ! अरे मेरे लाल को साँप ने सचमुच डस लिया ? हाय लाल ! मेरी आँखों के उजियाले को कौन ले गया ! हाय ! मेरा बोलता हुआ सुग्गा कहाँ उड़ गया ? बेटा ! अभी तो बोल रहे थे, अभी क्या हो गया ? हाय, मेरा बसा घर आज किसने उजाड़ दिया ? हाय ! मेरी कोख में किसने आग लगा दी ? हाय, मेरा कलेजा किस ने निकाल लिया ? (चिल्ला-चिल्ला कर रोती है) हाय लाल ! कहाँ गये ? अरे ! अब मैं किसका मुँह देख कर जीऊँगी रे ? हाय ! अब माँ कह कर मुझको कौन पुकारेगा ? अरे आज किस बैरी की छाती ठंढी हुई रे ? अरे, तेरे सुकुँआर अंगों पर भी काल को तनिक दया न आई। अरे बेटा ! आँख खोलो ! हाय ! मैं सब विपत तुम्हारा ही मुँह देख कर सहती थी, सो अब कैसे जीती रहूँगी ? अरे लाल एक बार तो बोलो ! (रोती है)।

१०. वसन्ततिलका, इन्द्रवज्रा, मालिनी, इन छन्दों के लक्षण लिखो। २

"सवैया" किसे कहते हैं ? १

साधारण बात कही है कि सभी बलवान के सहायक होते हैं, निर्बल का कोई सहायक नहीं होता और फिर इसका यह विशेष बात कह कर, कि वायु आग को तो जलाती है परन्तु दीपक को बुझा देती है, समर्थन किया गया है, इसलिए अर्थान्तरन्यास अलंकार है।

(ख) दृष्टान्त। जब पहले एक बात कह कर उसको स्पष्ट करने के लिए उससे मिलती जुलती दूसरी बात कही जाय और दोनों का साधारण धर्म एक न हो तब दृष्टान्त अलंकार होता है।

यहाँ पहले एक बात कही गई है कि एक हरिनाम को जपने से करोड़ों पाप नष्ट होते हैं फिर उसका उदाहरण ही वैसी एक बात से दिया गया है कि एक छोटी सी चिनगारी से घास का ढेर जल जाता है। दोनों का समान धर्म एक नहीं है।

(ग) प्रतिवस्तूपमा। जब दो उपमेय और उपमान वाक्यों का एकार्थवाची भिन्न भिन्न शब्दों द्वारा एक ही साधारण धर्म कहा जाय तब प्रतिवस्तूपमा अलंकार होता है।

यहाँ भानु प्रताप से शोभित होता है यह उपमान वाक्य है और शूर धनुषबाण से शोभित होता है यह उपमेय वाक्य है। दोनों का समान धर्म शोभित होना एक ही है, परन्तु पहले वाक्य में उसे 'सोहत' शब्द से प्रकट किया गया है और दूसरे में 'लसत' शब्द से।

९ करुण रस का लक्षण लिखकर उदाहरण दो। और इस रस के स्थायीभाव, सञ्चारी, आलम्बन, उद्दीपन और अनुभाव बताओ। १२

करुण रस में शोक का वर्णन होता है। इस रस का स्थायीभाव—शोक;

सञ्चारी भाव—मोह, [illegible], जड़ता, उन्माद, व्याधि, ग्लानि, निर्वेद,

आलंबन—प्रिय वस्तु का नाश, प्रिय व्यक्ति की मृत्यु या क्लेश,

उद्दीपन—मृत शरीर, दाह-क्रिया, आलंबन के गुणों का स्मरण, उससे सम्बन्ध रखने वाली वस्तुओं का दर्शन,

अनुभाव—छाती पीटना, पछाड़ खाना, रुदन, विलाप, निःश्वास आदि हैं।

उदाहरण—

शैव्या—(आगे शव देख कर) हाय हाय रे! अरे मेरे लाल को साँप ने सचमुच डस लिया? हाय लाल! अरे आँखों के उजियाले को कौन ले गया? हाय! मेरा बोलता हुआ सुग्गा कहाँ उड़ गया? बेटा! अभी तो बोल रहे थे, अभी क्या हो गया? हाय, मेरा बसा घर आज किसने उजाड़ दिया? हाय! मेरी कोख में किसने आग लगा दी? हाय, मेरा कलेजा किसने निकाल लिया? (चिल्ला-चिल्ला कर रोती है) हाय लाल! कहाँ गये? हाय! अब माँ कहके अब मैं किसका मुँह देख कर जीऊँगी रे? हाय! अब माँ कहके मुझको कौन पुकारेगा? अरे आज किस बैरी की छाती ठंढी भई रे? अरे, तेरे सुकुमार अंगों पर भी काल को तनिक दया न आई। अरे बेटा! आँख खोलो। हाय! मैं सब विपत्ति सह के तुम्हारा ही मुँह देख कर जीती थी, सो अब कैसे जीती रहूँगी? अरे लाल एक बार तो बोलो! (रोती है)।

१. [illegible], [illegible], मार्मिकी, इन शब्दों के [illegible] लिखो। ६

"[illegible]" किसे कहते हैं? १

वसन्ततिलका—इसमें तगण, भगण, जगण, जगण और दो गुरु इस क्रम से १४ वर्ण होते हैं।

उपजाति—इसमें इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा का मिश्रण होता है। इन्द्रवज्रा में तगण, तगण, जगण और दो गुरु इस क्रम ११ वर्ण होते हैं और उपेन्द्रवज्रा में जगण, तगण, जगण और दो गुरु इस क्रम से ११ वर्ण। अर्थात् इन्द्रवज्रा के पहले गुरु वर्ण को लघु कर देने से उपेन्द्रवज्रा हो जाता है। उपजाति इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के मेल से बनता है। यह मेल कई तरह हो सकता है। सबसे सरल मेल में पहला और तीसरा चरण इन्द्रवज्रा का और दूसरा तथा चौथा उपेन्द्रवज्रा का होता है।

मालिनी—नगण, नगण, मगण, यगण और यगण इस क्रम से १५ वर्णों का मालिनी छन्द होता है।

सवैया—२२ से लेकर २६ वर्णों तक के वृत्त सवैया कहलाते हैं।

प्रश्नपत्र दूसरा

नोट—केवल पाँच प्रश्नों का उत्तर दो। प्रथम प्रश्न का उत्तर आवश्यक है। अन्य प्रश्न ऐच्छिक हैं। अङ्क सब प्रश्नों के समान हैं।

१. शुद्ध हिन्दी में अर्थ लिखो —

(क) बज्जिय घोर निसान राज चहुआन चहौं दिस।
सकल सूर सामन्त समरिबल जंत्र मंत्र तस।
उट्ठि राज पृथिराज बाग लग मनो वीर नट।
कढ़त तेग मनो बेग लगत मनो बीज झट्ट घट।
थकि रहे सूरकौ तिग गगन रगन मगन भई श्रोन धर।
हर हरषि वीर जग्गे हुलस हुरव रंगि नव रत्त वर।

(ख) 'पानी पानी पानी' सब रानी अकुलानी कहैं,
जाति हैं परानी, गति जानि गज चालि है।
बसन बिसारैं, मनिभूषन सभारत न,
आनन सुखाने कहैं "क्यों हू कोऊ पालि है?"
तुलसी मँदोवै मींजि हाथ धुनि माथ कहैं,
"काहू कान कियो न मैं कह्यौ केतो कालि हैं॥"
बापुरो बिभीषन पुकारि बारबार कह्यो,
"बानर बडी बलाइ घने घर घालि है॥"

(ग) जीति लई बसुधा सिगरी
घम सान घमण्ड के बीरन हू की।
भूषण भोंसिला छीन लई
जगती उमराव अमीरन हू की॥

साहितनै सिवराज की पादनि
छूट गईं एसि धीन्न छू की।
मीरन के उर पीर बढ़ी यों
जू भूलि गई सुधि पीन्न छू की॥ १०

(क) महाराज पृथ्वीराज चौहान के युद्ध के घनघोर बाज चारों ओर बजने लगे। उन के सब शूर-सामन्त भी उन्हीं की भांति अपने जंत्र मंत्र और बल का स्मरण करके तय्यार होने लगे अर्थात् सब शूर-सामन्त अपने सब प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होने लगे। जिस प्रकार रस्सी पे बँध जाने पर नट अपना कौशल दिखाने के लिए तुरन्त तय्यार हो जाता है, उसी प्रकार महाराज पृथ्वीराज घोड़े पर लगाम पड़ते ही अपना युद्ध-कौशल दिखाने के लिए तैयार हो गये। म्यान से खींची गई तलवार ऐसी प्रतीत हुई, मानो बादलों की घटा में बिजली की कौंध हो। आकाश से सूर्य स्तब्ध हो कर देखने लगा कि पृथ्वी पर कैसी सनसनी घटना होने वाली है। इधर पृथ्वी देखते देखते शोणित से लाल हो गई। (मुंडमाला पाने से) शिवजी हर्षित हुए, स्वर्ग में हूरों (सुर सुन्दरियों) को पाने की आशा से वीर गण प्रमुदित हुए और सदा प्रेमरत रहने वाली अप्सराएँ नवीन वरों को वरण करने में आनन्द से हर्षित हुईं।

(ख) गजगामिनी रानियाँ व्याकुल होकर भागी भागी फिरती हुईं भागती आ रही हैं। उन्हें न अपने वस्त्रों की खबर है, न मणियों से जड़े गहनों की। वे मुँह से कहती हैं कि कोई किस तरह हमारी रक्षा करेगा। तुलसीदास जी कहते हैं कि मंदोदरी हाथ जोड़ कर और माथा झुका कर कहती है कि मैंने बहुत समझाया लेकिन किसी ने मेरे कहने पर ध्यान न दिया।

विभीषण ने भी बार बार पुकार करके कहा कि यह बन्दर बडी बला है, बडी आफत है, यह बहुत से घरों को नष्ट कर देगा। (लेकिन उसकी भी बात किसी ने न मानी।)

(ग) घोर युद्ध करके शिवाजी भोसिला ने बडे बडे घमंडी (अभिमानी) वीरों की भी समस्त पृथ्वी को जीत लिया। भूषण कहते हैं कि उन्होंने अमीर उमराओं की ज़मीनों को भी छीन लिया (छोडा नहीं)। शाहजी के पुत्र शिवाजी की धाक से बडे बडे धैर्यवानों का भी धीरज जाता रहा और मीरों के हृदयों में ऐसी पीडा बढी कि वे अपने पीर (पैगंबरों) की भी सुध भूल गये।

२ सप्रसंग व्याख्या करो —

(क) कबिरा सोया क्या करै, जागन की कर चौंप।
ए दम हीरालाल हैं, गिनि-गिनि हरि को सौंप।

(ख) बदौं चरण सरोज तुम्हारे॥
सुन्दर श्याम कमल दल लोचन,
ललित त्रिभंगी प्रानपति प्यारे।
जे पदपद्म सदा शिव के धन,
सिंधुसुता उर ते नहिं टारे।
जे पद कमल तात रिस त्रासत,
मन बच क्रम प्रहलाद सँभारे॥

(ग) होता था जब समर-भूमि में कोई सैनिक लड़कर आहत।

(घ) किरण तुम क्यों बिखरी हो आज,
रंगी हो तुम किसके अनुराग,

(ङ) "न्याय दया का दानी ? तूने गुनी कहानी।" २०

(क) चोप—उत्साह । मौर—सुपुर्द कर ।

यह कबीरदास का दोहा है । कबीरदास कहते हैं कि मायां क्यों पड़ा है ? जागने को उत्साहित हो । ये तेरे सांस नहीं हैं, वे तो बहुमूल्य लाल और हीरे हैं । इन्हें गिन गिन कर परमात्मा को समर्पण कर दे । अर्थात् हर घड़ी उसी का स्मरण कर और एक साँस भी व्यर्थ न जाने दे ।

(ख) चरण सरोज—चरण कमल । दल—पत्ते । त्रिभंगी—तीन ओर से तिरछे । पदपद्म—चरण-कमल । सिंधु सुता—लक्ष्मी । उर ते—हृदय से । नहिं टार—नहीं हटाती । तात रिस त्रासत—पिता के क्रोध से भयभीत ।

यह पद सूरदासजी का है । सूरदासजी कहते हैं—सुन्दर मोरपंख, कमल-पत्र सदृश नेत्र वाले, ललित, त्रिभंगी, प्राण प्रिय भगवान के उन चरण कमलों की मैं वन्दना करता हूँ, जो चरण कमल सदा शिव के परम धन हैं, लक्ष्मी जी जिन्हें कभी अपने हृदय से दूर नहीं करती, तथा जिन चरण कमलों का पिता के भय से भयभीत प्रह्लाद भी न मन, वचन और कर्म से [illegible] किया ।

(ग) यह प० रामनरेश त्रिपाठी के 'स्वप्न' नामक [illegible] लिये गये एक पद का प्रथम चरण है । इसका अर्थ है युद्ध भूमि [illegible] जब कोई सैनिक लड़कर घायल होता था [illegible]

(घ) यह जयशंकर प्रसाद की [illegible] [illegible] है तुम [illegible] हो । [illegible] क्यों भीग रही हो, किसके प्रेम में [illegible] हो ?

(ङ) यह [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है । [illegible]

सुना रही है। कहानी सुनाने के बाद उसका परिणाम निकालती हुई वह कहती है न्याय दया का देने वाला है। राहुल बाल-सुलभ-जिज्ञासा-भाव से इसी को दोहरा कर पूछता है—क्या न्याय दया का देने वाला है ? माँ तूने अच्छी कहानी कही है।

३ तुलसीदास जी का हिन्दी कविता के क्षेत्र में क्या स्थान है ? इस पर अपने विचार प्रगट करो। २०

तुलसीदास हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ और भारतीय जनता के प्रतिनिधि कवि हैं। इस विषय में तो प्राय सब साहित्यिक सहमत हैं कि सूरदास को छोड़ कर अन्य सब हिन्दी के कवियों से तुलसीदास का स्थान ऊँचा है। तुलसीदास तथा सूरदास में से किस कवि को उच्च स्थान देना चाहिए, इस विषय में अवश्य मतभेद है, अत सूर से उनकी तुलना कर उनके स्थान का निर्णय कर सकेंगे।

महाकवि सूरदास की सारी कविता भगवान कृष्ण पर आश्रित है, पर उन्होंने द्वारकाधीश कृष्ण के लोक-संग्रह-कारी रूप को नहीं लिया, अपितु गोपिकाओं से घिरे हुए गोकुल के प्रेम-मय भगवान की ही उपासना की है। उनके वर्ण्य विषय कृष्ण की बाल लीला, रासलीला, गोपिका-विरह, कृष्ण के दूत का गोकुल-गमन, और गोपियों के उपालंभ आदि ही हैं। उनकी सारी कविता गेय है और उसमें शृंगार तथा वात्सल्य रस का अनूठा परिपाक है। भगवद्भक्ति में लीन इस अंध-कवि के मुख से निःसृत पदों में पुनरुक्ति भले ही हो, पर वे इतने सरल हैं, कि एक बार अरसिक को भी रस-लीन कर देते हैं। इस संकीर्ण क्षेत्र को लेकर उसमें अपनी प्रतिभा का पूर्ण चमत्कार दिखा देने

में सूर की सफलता अद्वितीय है। सूक्ष्मदर्शिता में भी सूर अपना सानी नहीं रखते। परन्तु तुलसी का क्षेत्र सूर की अपेक्षा बहुत विस्तृत है। उन्होंने अपने प्रभु रामचन्द्र के लोक-संकट-कारी रूप का चित्रण किया है। मानव-रूप धारण कर प्रभु ने मर्यादा के स्थापन के लिए जो जो कार्य किये, जो जो कष्ट उठाये, उनका विशद वर्णन तुलसी ने किया है। साथ ही दशरथ की आत्म-बलिदान करने वाली सत्यपरायणता, भरत के सन्यास, लक्ष्मण की भ्रातृभक्ति, हनुमान के सेवाभाव, सीता के सतीत्व, मंथरा की कुटिलता, कैकयी के तिरियाहठ आदि के अनूठे चित्र भी इनके ग्रन्थों में मिलते हैं। जीवन के इन चित्रों द्वारा एक ओर लोक पक्ष को लाकर तुलसीदास ने पारिवारिक और सामाजिक कर्तव्यों का सौन्दर्य दिखाया है, दूसरी ओर व्यक्तिगत साधना के मार्ग में उन्होंने विराग-पूर्ण शुद्ध भगवद्भक्ति का उपदेश दिया है। इस प्रकार उनके ग्रन्थों में व्यक्तिगत साधना के साथ ही साथ लोक-धर्म की अत्यन्त उज्ज्वल छटा दिखाई देती है और हिन्दू-आदर्शों, हिन्दू मार्गों, हिन्दू-संस्कृति तथा हिन्दू-धर्म के भिन्न भिन्न अंगों [illegible] अनूठा सामंजस्य स्थापित किया गया है। इसी कारण तुलसी [illegible]नता आदर है। विशेषतः उनका रामचरित मानस इतना [illegible] है कि आज गाँव में एक घर के घर में रामचरित-[illegible]राम रहा है। जो स्थान संस्कृत में वेद, गीता आदि का [illegible] "स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथ-गाथा" [illegible]

[illegible] है।

[illegible]

समान रूप से अधिकार था। दोनों में इन्हों ने रचना की है और उस समय की सभी शैलियों और सभी छंदों को इन्हों ने अपनाया है। प्रबन्ध काव्य, मुक्तक और गीति-काव्य सभी इन्होंने लिखे हैं। इस प्रकार वर्ण्य-विषय के विस्तृत होने के कारण तथा तत्कालीन प्रत्येक शैली में रचना करने के कारण सूरदास से तुलसीदास का पलड़ा अधिक भारी कहा जा सकता है और हम तुलसीदास को हिन्दी कवियों में सर्वोच्च स्थान दे सकते हैं।

४ आधुनिक कवियों में से किसकी कविता तुम्हें अच्छी लगती है और क्यों ?　　　　　　　　　　　　　　　　　　२०

आधुनिक कवियों में किस की कविता सबसे अच्छी है यह निर्णय करना यद्यपि बहुत कठिन कार्य है तो भी सब दृष्टियों से विचार करते हुए हम श्रीयुत मैथिलीशरण गुप्त को प्रथम स्थान दे सकते हैं। गुप्त जी की रचना में मर्म-स्पर्शिता, तल्लीनता आदि अनेक गुण विद्यमान रहते हैं। उनकी रचनाओं से सर्व साधारण में राष्ट्रीय भावनाएँ जाग्रत होती हैं, प्राचीन संस्कृति के प्रति प्रेम उत्पन्न होता है, धार्मिक प्रवृत्ति विकसित होती है और अत्यधिक शान्ति मिलती है। प्रसाद गुण का उसमें सदा एक सा प्रवाह बहा है। रस-परिपाक उनकी काव्य-शैली का प्रधान गुण है। समय के साथ साथ उनकी रचनाओं मे सरसता और मार्मिकता की मात्रा बढ़ती गई है। वे लोग भी, जो उनकी भारत-भारती को साधारण जनता की राष्ट्रीय भावना को जागरित करने वाली तुकबंदी कहा करते थे, 'साकेत' और 'यशोधरा' आदि उनकी नयी रचनाओं की सरसता और भव्य कवित्व को देखकर दंग रह गये हैं। गुप्त जी की कविता की भाषा सरल, व्याकरण-सम्मत और विशुद्ध होती है और शब्द-योजना सुगठित तथा परिमार्जित होती

है। उसमें प्रयास नाम-मात्र को भी नहीं मालूम होता। स्पष्ट भाभि-व्यंजना में तो उनका कोई सानी नहीं है। इन्हीं कारणों से उनकी कविताएँ संपूर्ण भारत में आदर के साथ पढ़ी जाती हैं, और खड़ी बोली में जितनी उनकी कविताओं का आदर हुआ है, जितनी उनकी रचनाएँ सर्वप्रिय हुई हैं उतनी अन्य किसी की नहीं हुई। वे इस समय के सब से अधिक यशस्वी एवं लोकप्रिय कवि हैं।

५ "रसात्मक वाक्य को कविता कहते हैं"—इस कथन की समीक्षा करो। १०

यह साहित्य-दर्पणकार विश्वनाथ की की हुई काव्य की परिभाषा है। विश्वनाथ से पहले भी वामन, मम्मट, वाग्भट और जयदेव आदि संस्कृत के कई आचार्य हुए हैं। उन्होंने अपनी अपनी समझ के अनुसार काव्य की भिन्न-भिन्न परिभाषाएँ की हैं। किसी ने 'सौंदर्ययुक्त वर्णन' को काव्य कहा, किसी ने 'गुणों और अलंकारों से युक्त शब्द और अर्थ' को काव्य माना, किसी ने 'दोष रहित और गुण सहित शब्द और अर्थ' को काव्य कहा, किसी ने 'गुण, अलंकार, रीति और रस सहित तथा दोष रहित शब्द और अर्थ' को काव्य स्वीकार किया, किसी ने 'दोष रहित एवं लक्षणा, रीति, गुण, अलंकार रस और वृत्ति—इन सब से सहित वाणी' को काव्य ग्रहण किया। इस तरह काव्य का लक्षण क्रमशः लम्बा ही होता जाता था। प्रत्येक परिभाषा में कोई न कोई [illegible] थी। इन सबके बाद साहित्य-दर्पण के रचयिता विश्वनाथ आये। उन्होंने इन सभी [illegible] को [illegible] किया। [illegible] को [illegible] कर [illegible] कर दिया और [illegible] है। [illegible]

उत्कर्षाधायक वस्तु न हो और दोष भी हों तथापि यदि उसमें रस, भाव और उनके आभासों की अभिव्यक्ति होती हो तो उसे काव्य कहा जा सकता है। भाव यह है कि काव्य में रस ही प्रधान तथा सारभूत वस्तु है, उसी को काव्य की आत्मा मानना उचित है। विश्वनाथ कृत काव्य का यह लक्षण विद्वानों को बहुत पसंद आया और बहुत देर तक प्राय सर्व-मान्य रहा। पीछे रस गंगाधर के प्रणेता पं० जगन्नाथ ने काव्य के लक्षण को बदलने का फिर यत्न किया। उन्होंने कहा 'रमणीय अर्थ प्रतिपादक—अर्थात जिससे रमणीय अर्थ का बोध हो उस—शब्द को काव्य कहते हैं। 'रमणीय' का अर्थ उन्होंने किया 'लोकोत्तर आल्हाद को देने वाला'। पर इस लक्षण में स्पष्टता की अपेक्षा जटिलता अधिक आ गई है। साहित्य शास्त्र के विद्यार्थियों के लिए साहित्य-दर्पणकार का लक्षण—रसात्मक वाक्य को कविता कहते हैं—अधिक सरल और सुबोध है।

६ "कवि स्वभावत: होता है और बनावट से नहीं" इस लोकोक्ति की समीक्षा करो और अपने विचारों का उल्लेख करो। २०

यह लोकोक्ति बहुत कुछ ठीक है। कवि विश्व का प्रतिनिधि होता है। उसमें प्रत्येक वस्तु के आर पार देखने की अद्भुत क्षमता होती है। इसी क्षमता को दूसरे शब्दों में कल्पना शक्ति या प्रतिभा कहते हैं। यह कल्पना शक्ति या प्रतिभा जिसके पर्खों पर चढ़कर कवि संपूर्ण विश्व के कण कण में विचरण कर सकता है मनुष्य को प्रयत्न द्वारा प्राप्त नहीं हो सकती। यह तो किसी-किसी मनुष्य में सहज (जन्मजात) ही होती है और पूर्वजन्म के संस्कारों या पुण्यों का फल होती है। इसलिए कवि स्वभावत: होता है बनावट से नहीं यह कहना ठीक है।

पर इसका यह मतलब नहीं कि कवि को किसी प्रयत्न—अध्ययन या अभ्यास की—आवश्यकता नहीं होती। जिस तरह हीरा पैदा होता है, बनाया नहीं जाता पर तब तक उसमें वह मोहक चमक नहीं आती, जो उसकी जान है, जब तक उसे सान पर नहीं चढ़ाया जाता, इसी प्रकार कवि में स्वाभाविक प्रतिभा होने पर भी उसे विविध कलाओं के ज्ञान, प्रकृति के अध्ययन और अभ्यास की आवश्यकता होती है। तभी उसकी प्रतिभा सफल हो सकती है। पर स्वाभाविक प्रतिभा के कारण इनको वह बहुत जल्दी ग्रहण कर लेता है।

७ "भूषण" की कविता को उत्कृष्ट क्यों समझते हैं? २०

काव्य की आत्मा रस है। जिस कविता में जितना अधिक रस परिपाक होगा वह उतनी ही उत्कृष्ट होगी। इस दृष्टि से देखने से भूषण की कविता बहुत ही उत्कृष्ट ठहरती है। भूषण ने वैसे तो किसी रस को अछूता नहीं छोड़ा, शृंगार और शान्त के अच्छे [illegible] उदाहरण भी हमें भूषणग्रन्थावली में मिलते हैं पर वीर, रौद्र और भयानक रस का जैसा प्रवाह भूषण की कविता में है वैसा हिन्दी के अन्य किसी कवि की कविता में नहीं है। वीर रस के कवियों की गणना में निर्विवाद रूप से पहला स्थान भूषण का है।

केवल रस ही नहीं अलंकारों का प्रयोग भी भूषण की कविता में बड़ा ललित और स्वाभाविक रीति से हुआ है। अनुप्रास तो प्रायः सर्वत्र है ही, यमक और श्लेषानुप्रास का भी मनोहर विधान है, जैसे—

पच्छी परछीने ऐसे परे पर छीने बीर
तेरी बरछी ने बर छीने हैं खलन के।

भूषण की कविता में शब्दालंकार केवल चमत्कार या काव्य की सौंदर्य-वृद्धि के लिए ही नहीं हैं वे अर्थ को भी प्रेरित करते हैं। "मीरन के उर पीर बढ़ी यों जु भूल गई सुधि पीरन हू की" में 'ईर' और 'अन' की आवृत्ति केवल शब्दों का खिलवाड़ ही नहीं है उस से अमीरों के हृदय की सच्ची पीड़ा का स्वरूप भी झलकता है।

अर्थालंकारों का प्रयोग भी कहीं अस्वाभाविक नहीं हुआ। बहुत स्थानों पर तो अलंकारों के अस्तित्व का ज्ञान तक नहीं होता। "तारा सो तरनि धूरि धारा में लगत जिमि थारा पर पारा पारावार यों हलत है" में क्या ही सुहावनी और मौलिक कल्पना की गई है कि समुद्र के हिलने का दृश्य तो आँखों के सामने आ जाता है परन्तु तुलना के प्रयत्न का हमको संदेह भी नहीं होता। इस प्रकार रस अलंकार आदि की दृष्टि से तो भूषण की कविता उत्कृष्ट है ही पर उसकी उत्कृष्टता का एक कारण यह भी है कि उस में मौलिकता है और वह जातीय भावना में रँगी हुई है। इसलिए वह सदा आदर से पढ़ी जाती रहेगी।

८ निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखो—

जम्भ, उर्मि, रतिनाह, पारावार, वितुण्ड, व्याध, अनङ्ग, रविसुत, रौलव, गिमिराज, शंकर, सिन्धुसुता, विरंचि, कोल, खिलातरी, उत्तानपादसुत, निमिष, चकित, सेतु, त्रिगुण और चन्द्रिका। २०

जम्भ—एक राक्षस का नाम है जिसे इन्द्र ने मारा था।
उर्मि—ऊर्मि, लहर।
रतिनाह—कामदेव।

पारावार—समुद्र।
वितुण्ड—हाथी।
अनंग—कामदेव।
रविसुत—यमराज।

रोलंब—भ्रमर, भौंरा।
निमिराज—राजा जनक।
रंकिन—अशुद्ध छपा है। इस की जगह 'रंकन' होना चाहिए जिसका अर्थ है भिखारी।
सिंधुसुता—लक्ष्मी।
विरंचि—ब्रह्मा।
कोल—सूअर।
शिलातरी—पत्थर तर गये, अथवा पत्थर रूप हुई हुई अहल्या तर गई।
उत्तानपादसुत—उत्तानपाद का लड़का अर्थात् ध्रुव।
निमिष—पलकों के गिरने में जितना समय लगता है उतना समय, क्षण।
चकित—हैरान
सेतु—पुल
निगुण—तीनगुण अर्थात् सत, रज, तम।
चन्द्रिका—चाँदनी।

कहती है—देखो मालती, मै आज बदल गई हूँ, अब तुम यहाँ किसी दुखित, व्यथित, अपने भाग्य को कोसने वाली हंसा को न देखोगी, तुम्हें अब बदली हुई हंसा दिखाई देगी। इसके उत्तर में मालती कहती है—यही आपका कर्त्तव्य है। इसी मार्ग में सुख और शान्ति है। अर्थात् स्वामी चाहे बूढ़े हैं, उन्हीं की सेवा करना आपका धर्म है। मनुष्य को पग पग पर परिस्थितियों से समझौता करना पड़ता है, परिस्थितियों के अनुसार अपने जीवन को ढालना पड़ता है। यदि अपने आपको परिस्थितियों के अनुकूल बनाया जाय तो मनुष्य सुखी रहता है और जो मनुष्य अपने आपको परिस्थितियों के अनुकूल नहीं बना सकता वह सदा दुखी रहता है।

(ङ) यह संदर्भ हिन्दी नाटक साहित्य में से है, जो अब पाठ्य-क्रम में नहीं है। अत उत्तर नहीं दिया गया।

२ नीचे लिखे पद्यों की ऐसी व्याख्या करो जिसमें कवियों का पूरा पूरा भाव पाठकों की समझ में आ जाय —

(क) आँखों का यह कालापन,
बरसे बन आँसू के कण।
करदे जग का मन पावन,
बरसो ओ सावन के घन!
मन मयूर करता नर्तन,
घिर आए हैं जीवन-घन!
कहती चातक की चितवन,
बरसो शीघ्र स्वाति के कण! १०

(ख) जा के रुचिर पात नहिं तोड़े सुमुखि मदोदरि रानी।
जहाँ सभय मलय मारुत हूँ त्यागत वेग निसानी॥

जा के विटप सुमन नहिं कोउक अनि मनोहर मनजानी ।
सो असोक फुलवारि मेघ की जा पयोस मे भारी ॥ १०

(ग) तुम को मरने का गम है
मुझ को जीने का खटका
तुम को जीने की धुन है
मुझ को मरने का खटका
तुम मर मर चाहो जीना
मैं जी जी चाहूँ मरना
तुम सुख ही लेना चाहो
मैं दुख से [illegible] मरना ॥ १०

(घ) कवि ने इस गीत में आँसुओं की आकाश में उमड़ने वाले नीर से तुलना की है। वह कहता है—

आँखों का यह कालापन, आँसू के कण बरसाकर धो दे अर्थात् जिस आकाश में काले-काले बादल पानी बरसाकर धवल बन गए, उसी तरह आँखों में जो कालापन है वह भी आँसू बरसाकर धुल जाए। आँखों का यह पानी जीवन के मन को पवित्र कर दे (जिस तरह वर्षा के जल से पृथ्वी का कण-कण धुल जाता है, उसी तरह आँसू मनुष्य के मन को साफ कर देते हैं)। ओ सावन के बादल तुम बरसो।

मन रूपी मोर नाच रहा है, क्योंकि जीवन के [illegible] [illegible] है। चातक की पिपासा भी कह रही है कि हे [illegible] तुम स्वाति के कण बरसाओ। (जिस तरह बादलों को देखकर [illegible] मोर [illegible] होते हैं, चातक को भी स्वाति-बूँद [illegible] की [illegible] से [illegible] होती है उसी तरह आँखों से जब [illegible] आँसू [illegible] हैं तो [illegible] मन [illegible] होता है।)

मदालसा अनेक दुखों को सहकर सुख के आँगन में आई है, इसलिए कवि ने उसके इस गीत में दुख के आँसू नहीं दिखाए बल्कि प्रसन्नता का जल दिखाया है।

(ख) अशोक वाटिका का माली रावण के द्वारपाल से कहता है कि महाराज से कह दो कि एक बंदर ने मेघनाद की उस अशोक वाटिका को उजाड़ दिया है जिसके सुन्दर पत्तों को रानी मंदोदरी भी नहीं तोड़ती, जहाँ पर मलय पर्वत की वायु भी डर कर अपने वेग को छोड़ देती है, अर्थात् धीरे-धीरे चलती है और जिसके वृक्षों को अत्यंत स्नेह की वस्तु जानकर कोई छूता भी नहीं है, अर्थात् जिस अशोक-वाटिका की निरंतर रक्षा की जाती है उसे बंदर (हनुमान) ने नष्ट कर दिया।

(ग) राघव की हत्या के बाद रणमल की सेना भारमली को कैद करके चित्तौड़ लाती है। भारमली राघव की हत्या का बदला लेने के लिए रणमल की सेवा करने लगती है। चंड जब चित्तौड़ पर आक्रमण करता है तो भारमली एक बंद कमरे में रणमल को शराब पिला रही है। रणमल उसे गाना गाने को कहता है। तब वह गाती है—तुमको मरने का दुख है, और मुझे जीने में खटका है अर्थात् तुम्हें मौत से डर लगता है और मुझे जीने में डर लगता है। तुमको जीने की धुन लगी हुई है, तुम अनन्त काल तक जीना चाहते हो और मैं मरना चाहती हूँ। इतने में दुर्ग पर आक्रमण होने की आवाज़ आती है और भारमली गाना बंद कर देती है। रणमल फिर उसे गाने को कहता है। तब वह फिर गाती है कि तुम मर कर भी जीना चाहते हो और मैं जीती रह कर भी मरना चाहती हूँ। तुम केवल सुख लेना चाहते हो और मैं दुख से अपना आँचल भरना चाहती हूँ।

३ नीचे लिखे शब्दों का प्रयोग किन किन अर्थों में होता है लिखो—

नाटक, अङ्क, नान्दी, पारिपार्श्विक, सूत्रधार, कञ्चुकी, प्रतिहारी, नेपथ्य, विष्कम्भक, स्थापना ।   १०

नाटक—नाटक में अभिनेता किसी विख्यात नायक का स्वरूप धारण कर उसी के कार्यों का अनुकरण करता है । वेष भूषा, कर्म आदि भी अनुकरणीय व्यक्ति के सदृश ही बनाए जाते हैं । नाटक में मुख्य तो एक रस की ही प्रधानता होती है, चाहे वह वीर हो या शृङ्गार, परन्तु उसके सहायक अन्य रस भी यथावसर आते जाते रहते हैं । इसमें ५ से १० तक अङ्क होते हैं ।

अङ्क—नाटक में वर्णित वस्तु विभाग का नाम अङ्क है । इस में सरलता पूर्वक रमणीय भावों का प्रदर्शन होता है ।

नान्दी—नाटक के आरम्भ में सूत्रधार के द्वारा देव, द्विज, आदि की जो स्तुति की जाती है उसे नान्दी कहते हैं ।

पारिपार्श्विक—सूत्रधार के साथ वार्तालाप करने वाला उसका सहचर मुख्य नट पारिपार्श्विक कहलाता है । यह सूत्रधार को 'भाव' कह कर पुकारता है ।

सूत्रधार—नाटक का प्रधान नट । इसी के द्वारा नाटक का प्रसङ्ग चलाया जाता है ।

कञ्चुकी—अन्तःपुरचारी वृद्ध ब्राह्मण का नाम कञ्चुकी है जो सर्व गुणी और कार्यकुशल होता है ।

प्रतिहारी—द्वारपाल । यही सारे संदेश राजा के समीप पहुँचाता है ।

नेपथ्य—पर्दे का भीतरी स्थान, जहाँ अभिनेता स्वरूप बनाते हैं ।

विष्कम्भक—अङ्क में आगे होने वाले वृत्तान्त का पहले ही संक्षेप से दिग्दर्शन करा देता है उसको विष्कम्भक कहते हैं ।

मदालसा अनेक दुखों को सहकर सुख के आँगन में आई है, इसलिए कवि ने उसके इस गीत में दुख के आँसू नहीं दिखाए बल्कि प्रसन्नता का जल दिखाया है।

(ख) अशोक वाटिका का माली रावण के द्वारपाल से कहता है कि महाराज से कह दो कि एक बंदर ने मेघनाद की उस अशोक वाटिका को उजाड़ दिया है जिसके सुन्दर पत्तों को रानी मंदोदरी भी नहीं तोड़ती, जहाँ पर मलय पर्वत की वायु भी डर कर अपने वेग को छोड़ देती है, अर्थात् धीरे-धीरे चलती है और जिसके वृक्षों को अत्यंत स्नेह की वस्तु जानकर कोई छूता भी नहीं है, अर्थात् जिस अशोक वाटिका की निरंतर रक्षा की जाती है उसे बंदर (हनुमान) ने नष्ट कर दिया।

(ग) राघव की हत्या के बाद रणमल की सेना भारमली को कैद करके चित्तौड़ लाती है। भारमली राघव की हत्या का बदला लेने के लिए रणमल की सेवा करने लगती है। चंड जब चित्तौड़ पर आक्रमण करता है तो भारमली एक बंद कमरे में रणमल को शराब पिला रही है। रणमल उसे गाना गाने को कहता है। तब वह गाती है—तुमको मरने का दुख है, और मुझे जीने में खटका है अर्थात् तुम्हें मौत से डर लगता है और मुझे जीने में डर लगता है। तुमको जीने की धुन लगी हुई है, तुम अनन्त काल तक जीना चाहते हो और मैं मरना चाहती हूँ। इतने में दुर्ग पर आक्रमण होने की आवाज़ आती है और भारमली गाना बंद कर देती है। रणमल फिर उसे गाने को कहता है। तब वह फिर गाती है कि तुम मर कर भी जीना चाहते हो और मैं जीती रह कर भी मरना चाहती हूँ। तुम केवल सुख लेना चाहते हो और मैं दुख से अपना आँचल भरना चाहती हूँ।

३ नीचे लिखे शब्दों का प्रयोग किन किन अर्थों में होता है लिखो—

नाटक, अङ्क, नान्दी, पारिपार्श्विक, सूत्रधार, कञ्चुकी, प्रतिहारी, नेपथ्य, विष्कम्भक, स्थापना। १०

नाटक—नाटक में अभिनेता किसी विख्यात नायक का स्वरूप धारण कर उसी के कार्यों का अनुकरण करता है। वेष भूषा, कर्म आदि भी अनुकरणीय व्यक्ति के सदृश ही बनाए जाते हैं। नाटक में मुख्य तो एक रस की ही प्रधानता होती है, चाहे वह वीर हो या शृङ्गार, परन्तु उसके सहायक अन्य रस भी यथावसर आते जाते रहते हैं। इसमें ५ से १० तक अङ्क होते हैं।

अङ्क—नाटक में वर्णित वस्तु विभाग का नाम अङ्क है। इस में सरसता पूर्वक रमणीय बातों का प्रदर्शन होता है।

नान्दी—नाटक के आरम्भ में सूत्रधार के द्वारा देव, द्विज, आदि की जो स्तुति की जाती है उसे नान्दी कहते हैं।

पारिपार्श्विक—सूत्रधार के साथ वार्तालाप करने वाला उसका सदृश मुख्य नट पारिपार्श्विक कहलाता है। यह सूत्रधार को 'भाव' कह कर पुकारता है।

सूत्रधार—नाटक का प्रधान नट। इसी के द्वारा नाटक का प्रसङ्ग उठाया जाता है।

कञ्चुकी—अन्त पुर-चारी वृद्ध ब्राह्मण का नाम कञ्चुकी है जो परम गुणी और कार्यकुशल होता है।

प्रतिहारी—द्वारपाल। यही सारे सन्देश राजा के समीप पहुँचाता है।

नेपथ्य—पर्दे का पिछला स्थान, जहाँ अभिनेता स्वरूप बनाते हैं।

विष्कम्भक—अङ्क में आगे होने वाले वृत्तान्त का पहले ही संक्षेप से दिग्दर्शन करा देने वाले प्रकरण को विष्कम्भक कहते हैं।

स्थापना—वर्णनीय वस्तु से पूर्व जो थोडी सी भूमिका दी जाती है उसे स्थापना कहते हैं।

७ नीचे लिखे पात्रों का पूर्ण परिचय लिखो और ये किस किस नाटक में आते हैं यह भी लिखो —

नरेन्द्रगुप्त, राज्यवर्धन, पुलकेशिन, झोटिंग भट्ट, रावलचूडावत, हंसाबाई, ऋतुध्वज, विश्वावसु, शङ्कुकर्ण, तारा। १०

नरेंद्रगुप्त, राज्यवर्धन और पुलकेशिन हिन्दी नाटक साहित्य में आए राज्यश्री नाटक के पात्र हैं जो अब पाठ्य क्रम में नहीं है।

झोटिंग भट्ट—यह जय पराजय नाटक का पात्र है। मेवाड का विख्यात पंडित है। यह मेवाड पर आने वाली विपत्तियों की भविष्यवाणी करता है।

रावल चूंडावत—यह भी जय-पराजय का पात्र है। यह मडोवर का राजा है। श्यामल और हंसाबाई इसी के पुत्र और कन्या हैं।

हंसाबाई—यह जय-पराजय की स्त्री-पात्र है। यह मडोवर के अधिपति रावल चूँडावत की कन्या है। मेवाड के राणा लाखसिंह से इसका विवाह होता है। मोकल इसका पुत्र है।

ऋतुध्वज—यह पाताल-विजय नाटक का प्रधान पात्र है। यह अयोध्या का राजकुमार है। पाताल के राजा पातालकेतु और तालकेतु को मारकर पाताल देश को विजय करता है।

विश्वावसु—यह भी पाताल विजय नाटक का पात्र है। यह गंधर्वदेश का राजा है। इसकी कन्या मदालसा को पातालकेतु हर ले जाता है। ऋतुध्वज पातालकेतु को मारकर मदालसा का उद्धार कर उससे विवाह करता है।

शंकुकर्ण—यह अभिषेक नाटक का पात्र है। रावण की अशोक-वाटिका का माली है।

तारा—इसका वर्णन भी अभिषेक नाटक में है। यह बाली की पत्नी है।

५ हंसाबाई का विवाह युवराज चण्ड से न हुआ और उसके वृद्ध पिता लक्षसिंह से क्यों हुआ स्पष्ट लिखो। ५

चण्ड के लिए मँडोवर की राजकुमारी हंसाबाई का नारियल लेकर जब ब्राह्मण मेवाड़ की राजसभा में पहुँचता है तो महाराज लक्षसिंह हँसी में कह बैठते हैं—'युवराज के लिए लाये हो न ? मैंने पहले ही कहा था कि हमारे लिए अब नारियल कौन लायगा ?' यह कह वे युवराज के लिए नारियल स्वीकार कर लेते हैं। परन्तु युवराज पिता की हँसी की बात को उनकी इच्छा समझ कर हंसाबाई को अपनी माँ कह कर तिलक कराना अस्वीकृत करते हैं और ब्राह्मण से राणा लक्षसिंह का तिलक करने को कहते हैं। महाराणा लक्षसिंह और सभी दरबारी युवराज को समझाते हैं कि वह तो हँसी की बात थी। परन्तु युवराज कहते हैं कि मैंने उसे हँसी नहीं समझा। इस तरह वह अपनी बात पर दृढ़ रहते हैं। मेवाड़ और मारवाड़ में बहुत दिन में वैमनस्य कम हुआ था, नारियल लौटाने से मारवाड़ का अपमान होता और वैमनस्य की आग फिर भड़क उठती, साथ ही आए हुए नारियल को लौटाना मेवाड़ के लिए भी अपमान की बात थी, इसलिए महाराणा लक्ष-सिंह को विवश होकर हंसाबाई से विवाह करना पड़ा।

६ [illegible] का [illegible] में क्या [illegible] था और वह किस प्रकार हुआ था ?

[illegible]

[illegible]

[illegible]

स्थापना—वर्णनीय वस्तु से पूर्व जो थोड़ी सी भूमिका दी जाती है उसे स्थापना कहते हैं।

४ नीचे लिखे पात्रों का पूर्ण परिचय लिखो और ये किस किस नाटक में आते हैं यह भी लिखो—

नरेन्द्रगुप्त, राज्यवर्धन, पुलकेशिन, झोटिंग भट्ट, रावलचूंडावत, हंसाबाई ऋतुध्वज, विश्वावसु, शङ्कुकर्ण, तारा। १०

नरेंद्रगुप्त, राज्यवर्धन और पुलकेशिन हिन्दी नाटक साहित्य में आए राज्यश्री नाटक के पात्र हैं जो अब पाठ्य-क्रम में नहीं है।

झोटिंग भट्ट—यह जय पराजय नाटक का पात्र है। मेवाड़ का विख्यात पंडित है। यह मेवाड़ पर आने वाली विपत्तियों की भविष्यवाणी करता है।

रावल चूँडावत—यह भी जय-पराजय का पात्र है। यह मंडोवर का राजा है। रणमल और हंसाबाई इसी के पुत्र और कन्या हैं।

हंसाबाई—यह जय-पराजय की स्त्री-पात्र है। यह मंडोवर के अधिपति रावल चूँडावत की कन्या है। मेवाड़ के राणा लक्षसिंह से इसका विवाह होता है। मोकल इसका पुत्र है।

ऋतुध्वज—यह पाताल-विजय नाटक का प्रधान पात्र है। यह अयोध्या का राजकुमार है। पाताल के राजा पातालकेतु और तालकेतु को मारकर पाताल देश को विजय करता है।

विश्वावसु—यह भी पाताल-विजय नाटक का पात्र है। यह गधर्वदेश का राजा है। इसकी कन्या मदालसा को पातालकेतु हर ले जाता है। ऋतुध्वज पातालकेतु को मारकर मदालसा का उद्धार कर उससे विवाह करता है।

शङ्कुकर्ण—यह अभिषेक नाटक का पात्र है। रावण की अशोक-वाटिका का माली है।

तारा—इसका वर्णन भी अभिषेक नाटक में है। यह बाली की पत्नी है।

५ हंसाबाई का विवाह युवराज चण्ड से न हुआ और उसके वृद्ध पिता लक्षसिंह से क्यों हुआ स्पष्ट लिखो। ५

चण्ड के लिए मंडोवर की राजकुमारी हंसाबाई का नारियल लेकर जब ब्राह्मण मेवाड की राजसभा में पहुँचता है तो महाराणा लक्षसिंह हँसी में कह बैठते हैं—'युवराज के लिए लाये हो न? मैंने पहले ही कहा था कि हमारे लिए अब नारियल कौन लायगा?' यह कह वे युवराज के लिए नारियल स्वीकार कर लेते हैं। परन्तु युवराज पिता की हँसी की बात को उनकी इच्छा समझ कर हंसाबाई को अपनी माँ कह कर तिलक कराना अस्वीकृत करते हैं और ब्राह्मण से राणा लक्षसिंह को तिलक करने को कहते हैं। महाराणा लक्षसिंह और सभी दरबारी युवराज को समझाते हैं कि यह तो हँसी की बात थी। परन्तु युवराज कहते हैं कि मैंने उसे हँसी नहीं समझा। इस तरह वह अपनी बात पर डटे रहते हैं। मेवाड और मारवाड में बहुत दिन से वैमनस्य चला आ रहा था, नारियल लौटाने से मारवाड का अपमान होता और वैमनस्य की आग फिर भड़क उठती, साथ ही आए हुए नारियल को लौटाना मेवाड के लिए भी अपमान की बात थी, इसलिए महाराणा लक्ष-सिंह को विवश होकर हंसाबाई से विवाह करना पड़ा।

६ [illegible] का महात्मा से क्या नाता था और वह किस प्रकार हुआ था?

[illegible] का पति था। कुमारी [illegible] को [illegible] पिता के [illegible] [illegible] दूर ले गया था। [illegible] मुनि के यज्ञ की रक्षा [illegible] [illegible]

हुआ। हार कर पातालकेतु पाताल से भाग गया। उसका पीछा करते हुए ऋतुध्वज उसके महलों में पहुँचा, जहाँ मदालसा कैद थी। वहीं दोनों की भेंट हुई। दोनों एक दूसरे की ओर आकर्षित हुए। पातालकेतु को मारकर ऋतुध्वज फिर मदालसा के पास आया। उन दोनों के परस्पर आकर्षण को देखकर मदालसा की सखी कुण्डला ने उनके विवाह का प्रस्ताव किया। ऋतुध्वज ने पिता की आज्ञा प्राप्त करना आवश्यक बताया। इस पर नारद ने आकर कहा कि विवाह तुम अपना कर रहे हो या अपने पिता का? यह कहकर उन्होंने उन दोनों के हाथ मिला कर उनका विवाह करवा दिया।

प्रश्नपत्र चौथा

१ वाल्मीकि जी ने लवकुश को कैसी शिक्षा दी, फिर कब और कैसे उन्हें श्रीरामचन्द्र जी को सौंपा, सब प्रसङ्ग विस्तार से लिखो । १०

२ वैशम्पायन कौन थे ? वह याज्ञवल्क्य पर क्यों क्रुद्ध हुए ? इस प्रकरण को यथावत् दिखाकर याज्ञवल्क्य की योग्यता का उदाहरण दो । १०

३ "चरित्र" क्या वस्तु है ? और चरित्र पालन के अङ्ग कौन कौन हैं ? चरित्र और शील का अन्तर दिखाकर दो चरित्रवान् महापुरुषों का संक्षिप्त परिचय दो । १०

४ सम्पादक के विशेष गुणों का वर्णन कर समालोचक और लेखक के विषय में श्री द्विवेदी जी के विचार प्रकट करो । १०

५ महाराणा [illegible] प्रताप को क्या क्या गुण दिये, इस पर इतिहासज्ञों की सम्मति दिखाकर उसकी चातुरी का वर्णन करो । १२

६ निम्नलिखित पद्यों का अर्थ करो, और (क) अन्त का भावार्थ और (ख) [illegible] प्रसङ्ग भी दिखाओ—

(क) [illegible] लिए न [illegible] कहि [illegible] होय ।
[illegible] कौ [illegible] क्यों न [illegible] होय ॥ ५

(ख) [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

७ मोलियर ने अपने नाटकों में किन किन नियमों का पालन किया है, इसे लिखकर उसके देश और योग्यता का भी ज्ञान कराओ। १०

अथवा

पुस्तकों का अध्ययन क्यों आवश्यक माना गया है, और पुस्तकें कैसी पढ़नी चाहिये, इस पर अपने विचार प्रकट करो, परन्तु वर्मा जी के लेख के अनुसार हों।

८ "अहिल्याबाई ने स्त्री होकर भी जिस न्यायपरायणता से राज्य किया, वैसा विरले ही किसी राजा ने किया होगा" लेखक महोदय के इस वचन को इतिहास द्वारा सगत करो। १०

९ शकुनि, मुहम्मद तुगलक, शकुन्तला और भीष्मपितामह इन पर संक्षिप्त नोट लिखो। १६

ये सब प्रश्न 'भारतीय-महिला' और 'गद्य-प्रसून' नामक पुस्तकों में से हैं जो अब पाठ्य-क्रम में नहीं हैं। अत उत्तर नहीं दिया गया।

प्रश्नपत्र पाँचवाँ

१ डूपले की जीवनी पर एक नोट लिखो। यह बताओ कि साम्राज्य स्थापित करने में उसे सफलता क्यों नहीं प्राप्त हुई? १०

डूप्ले भारतवर्ष में फ्रांसीसी बस्तियों का पहला गवर्नर था। वह बडा चतुर और दूरदर्शी राजनीतिज्ञ था। भारतीय राज्यों के प्रतिदिन के झगडों को देख कर उसने भारत में फ्रांसीसी राज्य स्थापित करने की कल्पना की। भारत में अंगरेजों और फ्रांसीसियों के संघर्ष में उसका विशेष स्थान है। यद्यपि उस में छल, मिथ्यागर्व और रुपये पैसे के मामले में अनैतिक आचरण आदि अनेक दुर्बलतायें कही जाती हैं, तथापि वह वीर, साहसी और सुयोग्य शासक था। दक्षिण में कुछ समय के लिये वह फ्रांसीसियों को उच्च स्थान देने में सफल हुआ, परन्तु साधनों के अभाव से वह उस प्रभुत्व को देर तक कायम न रख सका। उसकी उत्साह-शक्ति की जितनी प्रशंसा की जाय उतनी थोड़ी है। अपने देश के हित के लिए उसने अपनी संपत्ति को भी खर्च करने में संकोच नहीं किया। उस ने अपनी जाति को समृद्ध बनाने में अपना यौवन, अपनी संपत्ति और अपने जीवन को अर्पण कर दिया। पर उस के स्वदेश में उसकी इस भक्ति और आत्म-त्याग की प्रशंसा नहीं हुई। फ्रांस के वीरों में उसका स्थान असाधारण है।

भारत में फ्रांसीसी साम्राज्य स्थापित करने में उसकी असफलता के निम्नलिखित कारण थे—

(१) अंगरेज कम्पनी को फ्रेंच कम्पनी की अपेक्षा अधिक सुविधायें प्राप्त थीं। फ्रेंच कम्पनी के हिस्सेदार अपनी कम्पनी के कामों में बहुत कम दिलचस्पी लेते थे। उसका शासन सब [illegible] फ्रेंच सरकार की मुट्ठी में रहती होने के कारण [illegible]

न कर सके । डूप्ले की योजनाओं का असफल होने का मुख्य कारण धनाभाव ही था ।

(२) अंगरेज युद्ध के साथ साथ व्यापार भी करते रहे जिस से उनका धन बढ़ता गया । डूप्ले ने राज्यविस्तार के उत्साह में व्यापार की ओर ध्यान न दिया जिस से फ्रांस सरकार लाभ के स्थान पर कंपनी को एक व्यर्थ भार समझने लगी ।

(३) अंगरेजों का सामुद्रिक बेड़ा फ्रांस से कहीं बलवान था । सम्पूर्ण सामुद्रिक मार्ग उसके अधिकार में थे, इसलिए वह ब्रिटिश कंपनी को हर जगह सहायता पहुँचा सकता था ।

२ निम्नलिखित पर संक्षिप्त नोट लिखो —

चार्टर एक्ट १८५३, पिंडारी, अमीचंद, गोखले, रौलट एक्ट, स्थानीय स्वराज्य । १८

चार्टर ऐक्ट १८५३—यह कंपनी का अंतिम अधिकार पत्र था । इसके अनुसार भारत के प्रदेशों को कंपनी के शासन में उस समय तक रहने की बात लिखी गई थी 'जब तक पार्लियामेंट कुछ और प्रबन्ध न करे।' इससे पहले सिविलसर्विस की नियुक्ति डाइरेक्टरों का संघ करता था, इस चार्टर के अनुसार उन से यह अधिकार छीन लिया गया । इंगलैंड में सिविलसर्विस के लिए प्रतियोगिता की परीक्षा होने लगी । गवर्नरजनरल को बंगाल के शासन-भार से मुक्त कर दिया गया । बंगाल के शासन प्रबन्ध के लिए एक लैफ्टिनैंट गवर्नर नियत किया गया । प्रत्येक प्रांत से एक सदस्य को गवर्नर जनरल की कौंसिल में नामज़द किया जाने लगा ।

पिंडारी—इनका काम लूट मार करना था । ये किसी खास जाति या श्रेणी के नहीं थे । इन में तुर्क, पठान, मराठे इत्यादि सब

सम्मिलित थे। वर्षा ऋतु के पश्चात् अपने घोड़ों पर चढ़ कर ये जिधर निकलते उधर बरबादी के सिवाय कुछ नज़र न आता था। लोग इनके डर से अपने घरों को आग लगा देते या कुओं में कूद पड़ते थे। इनमें से कुछ मराठों की सेना में भी भरती थे। जब ये लोग ब्रिटिश राज्य में लूट-मार मचाने लगे तो हेस्टिंग्ज़ ने १२०००० मनुष्यों की एक विशाल सेना एकत्र की और सन् १८१७ में इनको चारों ओर से घेर लिया। एक वर्ष की मारकाट के पश्चात् पिंडारियों का अंत हो गया। इनके मुखिया करीम ने आत्म समर्पण करके शान्ति से एक जागीर में रहना स्वीकार किया, वासिल ने आत्म हत्या कर ली, चीतू जंगल में भाग गया। कहा जाता है वहाँ एक चीते ने उसे मार डाला। इसी प्रकार सबसे बड़े सरदार अमीरखाँ ने भी अधीनता स्वीकार कर ली। उसे टोंक का नवाब बना दिया गया।

अमीचन्द—यह नवाब सिराजुद्दौला का महाजन था। जब मीरजाफर और क्लाइव ने नवाब सिराजुद्दौला के विरुद्ध षड्यन्त्र किया तो इसने मध्यस्थ का काम किया था। बाद में इसने धमकी दी कि यदि इसे ३० लाख रुपया न दिया गया तो वह भंडा फोड़ देगा। इस पर क्लाइव ने दो प्रतिज्ञा पत्र तैयार किए—एक सफेद कागज पर और दूसरा लाल कागज पर। सफेद कागज का प्रतिज्ञा पत्र असली था, इसमें अमीचन्द को रुपया देने की बात नहीं लिखी गई थी। लाल कागज वाला प्रतिज्ञा पत्र नकली था, इस में अमीचन्द को तीस लाख रुपया देने की बात थी। प्लासी की लड़ाई में सिराजुद्दौला मारा गया। और मीरजाफर बंगाल का नवाब बना, पर अमीचन्द को कुछ न मिला।

गोखले—गोपालकृष्ण गोखले का जन्म

१८६६ में हुआ। ये पहले फरग्युसन कालेज में प्रोफेसर थे, फिर बवई की कौंसिल के मेंबर बने और अंत में वायसराय की कौंसिल के मेंबर। ये बडे विद्वान्, सदाचारी, देशभक्त और प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ थे। बजट पर इनकी वक्तृताएँ अद्वितीय होती थीं। १८६६ मे इगलैंड मे हिन्दुस्तान के खर्चे की जाँच के लिए वेलबी कमीशन बैठा था, उसके सामने गवाही देने के लिए ये भी और नेताओ के साथ गए थे। मिंटो-मारले सुधार में भी इनका बडा हाथ था। १९१२ के पब्लिक सर्विस कमीशन के तीन भारतीय सदस्यों मे गोखले एक थे। इन्होंने सर्वेंटस आफ इडिया सोसाइटी की स्थापना की। कांग्रेस के सभापति-पद को भी सुशोभित किया। फरवरी १६१५ मे इनकी मृत्यु हुई।

रौलट ऐक्ट—बग-विच्छेद के समय से ही बगाल मे क्रांतिकारी दल का प्रादुर्भाव हो गया था। धीरे धीरे यह दल सारे उत्तर भारत में फैल गया। ये लोग सरकारी अफसरो की हत्या करने और डकैती द्वारा धन-सग्रह करने में बुराई न समझते थे। गत महायुद्ध के समय इन लोगों ने जर्मनी से मिलकर भारतीय सेनाओं में क्रांति कराने का उद्योग किया। मि० रौलट की अधीनता में एक कमेटी इन षड्यत्रों की जाँच करने के लिए बैठाई गई। कमेटी ने जाँच के बाद एक रिपोर्ट पेश की जिसे रौलट-रिपोर्ट या सिडीशन कमेटी की रिपोर्ट कहते हैं। उस रिपोर्ट के आधार पर दो ऐसे ऐक्ट पास किये गये जिनके द्वारा सरकार को इन षड्यन्त्रों को दबाने के लिए असीमित अधिकार मिल गये। भारतीयों को युद्ध में की हुई सेवाओं के बदले में बहुत से सुधारों की आशा थी, परन्तु मिला रौलट ऐक्ट। सारे देश में इन ऐक्टों का विरोध किया गया। महात्मा गाँधी ने अहिंसात्मक सत्याग्रह

की योजना जनता के सम्मुख रखी और ६ अप्रैल १९१९ को सत्याग्रह दिवस मनाया गया।

स्थानीय स्वराज्य—लार्ड रिपन के समय में सन् १८८३ में जिलाबोर्ड ऐक्ट और १८८४ में म्युनिसिपल ऐक्ट पास हुआ। इन ऐक्टों के द्वारा प्रत्येक जिले में जिला बोर्ड और शहरों में म्युनिसिपैलिटियाँ बनीं। इनके कुछ सदस्य जनता द्वारा निर्वाचित और कुछ सरकार द्वारा नामजद होते हैं। इनका काम सड़कों, हस्पतालों, स्कूलों आदि की स्थापना और प्रबन्ध करना और सफाई रखना है। अपना खर्च चलाने के लिए इनको अपने अपने शहर और जिले की सीमाओं में कुछ कर लगाने का अधिकार दिया गया है।

३. सिक्ख राज्य के पतन के कारण लिखो। १२

सिक्ख साम्राज्य के पतन के निम्नलिखित कारण थे—

(१) योग्य उत्तराधिकारी का अभाव—महाराजा रणजीतसिंह अत्यन्त चतुर और बुद्धिमान व्यक्ति था। उसकी सेना सुशिक्षित और सुसज्जित थी। वह शासन प्रबन्ध में अत्यन्त निपुण था। उसने अफगानों को परास्त करके उनसे काश्मीर छीन लिया और पश्चिम में अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उसकी मृत्यु के बाद [illegible] कोई व्यक्ति न था जो उसकी प्रबल सेना को काबू में रख सकता, शासन की सुव्यवस्था कर सरदारों में एकता [illegible] और देश में शान्ति स्थापित कर सकता। योग्य उत्तराधिकारी के अभाव में राज्याधिकार को हस्तगत करने के लिए सरदारों में [illegible] के लिए [illegible]

(२) सिक्ख सेना की [illegible]

शक्तिशाली हो गई थी कि वह शासन की परवाह नहीं करती थी। सैनिकों ने अपने पंच नियुक्त कर रक्खे थे और वे उन्हीं की आज्ञा मानते थे। सैनिक जिस के विरुद्ध होते थे उसे ही मार डालते थे। तीन चार वरस में ही कई मंत्री बने और मारे गये। अन्त में यह हालत हो गई कि कोई मंत्री पद स्वीकार करने के लिए तैयार न होता था। सेना की इस बढ़ती शक्ति को कम करने का रानी झिंदा और उसके सलाहकारों न यही उपाय सोचा कि उसे अंग्रेज़ों से लड़ा दिया जाय। उकसाने में आकर सिक्ख सेना ने सतलुज पार कर अंग्रेज़ी इलाके पर हमला कर दिया। यद्यपि सिक्ख सेना बड़ी वीरता से लड़ी तो भी क्योंकि उन के नायक ही अंग्रेजों की जीत चाहते थे इस लिए प्राय सारी सना लड कर नष्ट हो गई। अन्त को सन् १८४६ मे रणजीतसिंह का साम्राज्य दो भागों में विभक्त हुआ। जम्मू कश्मीर का इलाका गुलाबसिंह को दिया गया और शेष पंजाब में दिलीपसिंह को अंग्रेज़ी साम्राज्य के अधीन राजा माना गया। परन्तु यह शेष पंजाब भी १८४८ में मूलराज के विद्रोह के कारण साम्राज्य में मिला लिया गया।

४ लार्ड विलियम बैंटिक के शासनकाल का वृत्तान्त लिखो।

अथवा

मैसूर की तीसरी लड़ाई के कारण लिखो। १२

लार्ड विलियम बैंटिक का शासनकाल १८२८ से १८३५ तक है। इस समय की मुख्य मुख्य घटनाएँ निम्नलिखित हैं—

हिन्दुस्तानियों को ऊँची सरकारी नौकरियाँ मिलने लगीं। फौजी अफसरों के भत्तों में कमी की गई। उत्तर पश्चिमी प्रान्त (आजकल का संयुक्त प्रांत) में तीन साल का लगान का पट्टा तय हुआ। सती-प्रथा को नियम-विरुद्ध ठहराया गया। ठगों का

मूलोच्छेदन किया गया। लड़कियों को मार डालने की प्रथा को कम करने का प्रयत्न किया गया। अंगरेज़ी को शिक्षा का माध्यम बनाया गया। शिक्षा की पुरानी व्यवस्था बदली गई। कुर्ग और मैसूर के राज्य अंगरेज़ी राज्य में मिलाये गये। ने महाराजा रणजीतसिंह से भेंट कर सिक्खों से किया। सिंध में ब्रिटिश माल का व्यापार होने लगा। अधिकार पत्र बदला गया। कंपनी को व्यापार करने का अधिकार न रहा, उसका काम शासन करना रह गया। कौंसिल में कानूनी सदस्य की वृद्धि की गई।

अथवा

मैसूर की तीसरी लड़ाई—सन १७८९ में टीपू ने ट्रावनकोर पर आक्रमण किया। ट्रावनकोर का राजा संरक्षण में था। उसने अंगरेज़ों से सहायता मांगी। निजाम भी जिनको उससे हमेशा डर बना रहता था हुए प्रदेश में हिस्सा बाँटने के लिए अंगरेज़ों के साथ १७९० से १७९२ तक यह लड़ाई हुई। टीपू हार गया अपना आधा राज्य और तीन करोड़ रुपया देना राज्य को मराठों, निज़ाम और अंगरेज़ों ने आपस में

५ [illegible] सुधार द्वारा भारतवर्ष के शासन [illegible] परिवर्तन हुआ ?

[illegible] सुधारों के अनुसार भारत [illegible] कौंसिल तथा [illegible] और गवर्नरों की [illegible] में भारतीय सदस्यों की नियुक्ति होने लगी। [illegible] व्यवस्थापिका सभाओं में गैर सरकारी [illegible] प्रांतीय व्यवस्थापिका सभाओं में गैर सरकारी [illegible]

सरकारी मेंबरों से अधिक हो गई। इन सभाओं के अधिकारों में भी वृद्धि हुई। साम्प्रदायिक निर्वाचन भी इसी समय आरम्भ हुआ।

६ बालीराओ पेशवा के शासनकाल का वृत्तान्त लिखो और बताओ इस समय मुगल साम्राज्य की क्या दशा थी ? १२

सन् १७२० में बालाजी विश्वनाथ की मृत्यु होने पर उसका पुत्र बाजीराव पेशवा बना। इस समय दिल्ली के तख्त पर मुहम्मद शाह बैठा था। मुगल साम्राज्य इस समय बहुत कमज़ोर हो चुका था। मुगल बादशाह दरबारियों के हाथ के खिलौने बन गए थे। १७१६ में साहू को स्वतंत्र राजा स्वीकार कर लिया गया था और दक्षिण के ६ मुगल सूबों में चौथ और सरदेशमुखी वसूल करने के अतिरिक्त इन सूबों के सैनिक अधिकार भी उसे मिल गए थे। आसफ़खाँ निज़ाम-उल-मुल्क मालवा का सूबेदार बना था जो १७२४ मे स्वतंत्र हो गया।

बाजीराव का सारा शासन काल लड़ाइयों में बीता। उसके शासन काल में मुगल साम्राज्य की केन्द्रीय शक्ति बिलकुल छिन्न भिन्न हो गई। बाजीराव ने पश्चिमी समुद्रतट पर पुर्तगाल वालों को हराकर उनकी बहुत सी बस्तियाँ छीन लीं और उन्होंने उससे संधि करली। १७२६ में गुजरात-काठियावाड के मुगल सूबेदारों ने बाजीराव को चौथ और सरदेशमुखी देना स्वीकार किया। १७३५ में इस प्रांत को मराठों ने पूर्णरूप से जीत लिया। दामाजी गायकवाड़ ने मुगलों की राजधानी अहमदाबाद पर अधिकार करके बड़ौदा में अपनी राजधानी बनाई। १७३२ में बाजीराव ने पठानों को बुंदेलखंड से निकाल कर राजा छत्रसाल से बहुत सा इलाका प्राप्त किया। १७३६ में मालवा जीता गया और १७३८ में ग्वालियर। निजाम-उल-मुल्क से भी बाजीराव की लड़ाई होती रही।

१७२८ में हार कर निज़ाम ने अपने इलाके में चौथ और सरदेशमुखी वसूल करने का अधिकार मराठों को दे दिया। बाजीराव के समय में मराठे पूर्व में उड़ीसा तक जा पहुँचे। इस प्रकार बाजीराव ने मध्य भारत में पूर्ण रूप से मराठा अधिकार स्थापित कर दिया। उसका ध्यान महाराष्ट्र और उत्तर की तरफ ही रहा, दक्षिण भारत की ओर उसने ध्यान न दिया। १७३९ में नादिरशाह के आक्रमण से मुगल साम्राज्य जड़ से हिल गया और मुगल सम्राट् का प्रभाव दिल्ली के आसपास ही रह गया। बाजीराव ने नादिरशाह का मुकाबला करने के लिए नर्मदा और चंबल के बीच में सेनाएँ एकत्र कीं, परन्तु नादिरशाह मुहम्मदशाह को फिर दिल्ली के तख्त पर बैठाकर ईरान लौट गया। सन् १७४० में बाजीराव की मृत्यु हुई। उसकी मृत्यु के समय मुगल सम्राट् नाममात्र का सम्राट् रह गया था और मराठा-साम्राज्य भारत में सबसे अधिक शक्तिशाली साम्राज्य बन गया था।

४ पश्चिमी हिन्दी की कितनी शाखायें हैं ? हर एक शाखा का नाम लिखो और यह बताओ इनमें क्या भेद है ? १०

पश्चिमी हिंदी की चार शाखाएँ हैं—

१ खडी बोली हिंदी। २ बुन्देली।
२. ब्रज भाषा। ४ कन्नौजी।

खडी बोली हिंदी दिल्ली और मेरठ के आस पास बोली जाती है। यही हिंदी की आज कल की साहित्य की भाषा है और यही भारत की राष्ट्र-भाषा मानी गई है।

ब्रजभाषा का मुख्य स्थान ब्रज है परन्तु दक्षिण में करौली राज्य तक, पश्चिम में जयपुर तक, पूर्व में बरेली, बदायूँ, एटा आदि स्थानों तक तथा उत्तर में गुडगावाँ तक इसका प्रचार है। यह शौरसेनी प्राकृत तथा अपभ्रंश से विकसित हुई है। हिंदी की पुरानी कविता अधिकतर इसी में हुई है।

बुन्देली ब्रजभाषा की ही एक शाखा है। इसकी छाया ब्रजभाषा की कविता में बराबर मिलती हैं। यह बुंदेलखंड, ग्वालियर और मध्य प्रदेश के कुछ जिलों में बोली जाती है। इसका साहित्यिक नमूना आल्हखंड में मिलता है।

कन्नौजी गंगा के मध्य दोआब की बोली है। इसके और ब्रजभाषा के साहित्य में कोई विशेष अंतर नहीं है, इसलिए इसका साहित्य ब्रजभाषा का साहित्य ही माना जाता है।

८ भारतेन्दु हरिश्चन्द्र की जीवनी लिखो। १०

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म संवत् १६०७ में काशी में हुआ। इनकी माता का देहान्त पहले ही हो चुका था, पिता भी इन्हें नौ ही वर्ष का छोड़ कर चल बसे, अत इन्हे अंगरेजी और संस्कृत की सामान्य शिक्षा ही मिली। तेरह-चौदह वर्ष की अवस्था में ये सपरिवार जगन्नाथजी गए और मार्ग में इन्होंने बँगला सीखी। इन की शिक्षा अवश्य अधूरी थी, परन्तु ईश्वर-प्रदत्त प्रतिभा का इन में

अभाव न था। संवत् १९२५ में इन्होंने विद्या सुन्दर नाटक का बंगला से अनुवाद किया और कवि-वचन-सुधा नामक पत्रिका निकाली। पाँच वर्ष बाद चौखम्भा स्कूल खोला जो आजकल हरिश्चन्द्र हाई स्कूल कहलाता है और हरिश्चन्द्र मैगज़ीन नामक मासिक पत्रिका निकाली जो पीछे हरिश्चन्द्र चन्द्रिका कहलाई। हिन्दी गद्य का ठीक परिष्कृत रूप पहले पहल इसी पत्रिका में प्रकट हुआ। भारतेन्दु जी ने धर्म, इतिहास, भक्ति आदि विषयों पर गद्य और पद्य में स्वयं भी पुस्तकें लिखीं और दूसरे लेखकों से भी लिखवाईं। इनके द्वारा लिखित, अनुवादित और सम्पादित पुस्तकों की संख्या १७५ के लगभग है। भारतेन्दु का प्रभाव भाषा और साहित्य दोनों पर बड़ा गहरा पड़ा। इन्होंने गद्य की भाषा को परिमार्जित करके उसे बहुत ही मधुर और स्वच्छ रूप दिया, हिन्दी साहित्य को नये मार्ग पर खड़ा किया, और हिन्दी-कविता की धारा को नये नये विषयों की ओर मोड़ा। भारतेन्दु स्वयं गुणी थे और गुणी मंडली के बड़े दानवीर थे। कोई भी विद्वान्, सुकवि, कला-कुशल इनके द्वार से सम्मानित हुए बिना न जाता था। कोई कभी इनके द्वार से विमुख न लौटता था। सं॰ १९४१ में केवल ३५ वर्ष की अवस्था में इनका देहान्त हुआ।

प्रश्नपत्र छठा

१ निम्नलिखित लोकोक्तियों का अभिप्राय लिखकर स्वरचित वाक्यों में प्रयोग करो—

(१) जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि।

(२) बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

(३) सहज पके सो मीठा होय।

(४) करघा छोड़ तमाशे जाय नाहक चोट जुलाहा खाय।

(५) खूँटे के सिर बछड़ा नाचे। १५

(१) जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि—जहाँ सूर्य की किरणें भी नहीं पहुँच पातीं वहाँ कवि की कल्पना पहुँच जाती है। वाह! कैसी कमाल की बात कही है। आखिर कवि जो हैं। तभी तो कहा है जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृष्ठ १७१)।

(२) बदर क्या जाने अदरक का स्वाद—उस के विषय में कहते हैं जो किसी वस्तु-विशेष या व्यक्ति-विशेष की कदर न जानता हो। सुरेश! तुम तो नारायण राव व्यास के गाने की प्रशंसा करते न थकते थे पर मैंने तो देखा वह सिवाय आ-आ के कुछ जानता ही नहीं।

सुरेश—हाँ भाई, बदर क्या जाने अदरक का स्वाद। तुम तो गजल को ही गाना समझते हो, तुम्हें संगीत का क्या पता? (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृष्ठ १४३)।

(३) सहज पके सो मीठा होय—जो काम आहिस्ता आहिस्ता हो वह संतोषप्रद और दृढ़ होता है। भाई, जो तुम तस्वीर अच्छी बनवाना चाहते हो तो, जल्दी मत करो, मुझे अपनी मर्जी

मे धीरे धीरे बनाने दो। ... तो कुछ जरूर होगी पर यह याद रक्खो सहज पके सो मीठा होय। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे पृ० १६१)

(४) करघा छोड़ तमाशे जाय नाहक चोट जुलाहा खाय—जो मनुष्य अपना काम छोड़ व्यर्थ के झगड़े में पड़ता है और उससे हानि उठाता है उस को कहते हैं। मदनगोपाल को तो देखो, अच्छा भला प्रोफेसर लगा था, न जाने कहाँ से शौक चढ़ा लीडर बनने बैठा, अब १०-१५ हजार के नीचे आगया है। दूसरा—हाँ भाई, यह तो वही बात हुई करघा छोड़ ।

(५) खूँट के सिर बछड़ा नाचे—दूसरे की शक्ति और सहारा के सहारे काम करना। आप रायसाहब हाथ खींच लें तो इनको कैसी भीगी बिल्ली बन जाता है। पर तब वे इसकी गर्दन पर हैं यह किसी को कुछ समझता ही नहीं। दूसरा—हाँ भाई, खूँटे के बल बछड़ा नाचे। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० १०६)

२ निम्नलिखित मुहावरों का अभिप्राय लिखकर स्वरचित वाक्यों में प्रयोग करो—

धाक जमाना। नमक मिर्च लगाना। नौ दो ग्यारह होना। ... दिये जलाना। आग पर लोटना। गाँठ में बाँधना। ... ।

धाक जमाना—रोब बैठा देना। थोड़े ही दिनों में ... ने अपनी धाक जमा ली है। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० ४६)

नमक मिर्च लगाना—बात को बढ़ा चढ़ा कर कहना। ... न समाचार वाले जरा सी बात को नमक-मिर्च ... क्या से क्या बना देते हैं। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे पृ० ५०)

नौ दो ग्यारह होना—एक दम चम्पत हो जाना ... भाग जाना। मेरे चोर चोर चिल्लाने ही और ...

प्रश्नपत्र छठा

१ निम्नलिखित लोकोक्तियों का अभिप्राय लिखकर स्वरचित वाक्यों में प्रयोग करो—

(१) जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि ।

(२) बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद ।

(३) सहज पके सो मीठा होय ।

(४) करघा छोड़ तमासे जाय नाहक चोट जुलाहा खाय ।

(५) खूँट के सिर बछड़ा नाचे । १५

(१) जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि—जहाँ सूर्य की किरणें भी नहीं पहुँच पातीं वहाँ कवि की कल्पना पहुँच जाती है। वाह ! कैसी कमाल की बात कही है। आखिर कवि जो हैं। तभी तो कहा है जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृष्ठ १७१)।

(२) बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद—उस के विषय में कहते हैं जो किसी वस्तु-विशेष या व्यक्ति-विशेष की कदर न जानता हो। सुरेश ! तुम तो नारायण राव व्यास के गाने की प्रशंसा करते न थकते थे पर मैंने तो देखा वह सिवाय आ-आ के कुछ जानता ही नहीं।

सुरेश—हाँ भाई, बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद। तुम तो गज़ल को ही गाना समझते हो, तुम्हें संगीत का क्या पता ? (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृष्ठ १४३)।

(३) सहज पके सो मीठा होय—जो काम आहिस्ता आहिस्ता हो वह संतोष प्रद और दृढ होता है। भाई, जो तुम तस्वीर अच्छी बनवाना चाहते हो तो जल्दी मत करो, मुझे अपनी मर्ज़ी

मे धीरे धीरे बनाने दो। देर तो कुछ जरूर लगी पर यह बात रक्खो सहज पके सो मीठा होय। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे पृ० १६१)

(४) करघा छोड तमासे जाय नाहक चोट जुलाहा खाय—जो मनुष्य अपना काम छोड के व्यर्थ के झगड़े में पड़ता है और उससे हानि उठाता है उस को कहते हैं। मदनगोपाल को तो देखो, अच्छा भला प्रोफेसर लगा था, न जाने कहाँ से शौक चढा शेयर खरीद बैठा, अब १०-१५ हज़ार के नीचे आगया है। दूसरा—हाँ भाई, यह तो वही बात हुई करघा छोड ।

(५) खूँटे के सिर बछड़ा नाचे—दूसरे की शक्ति और साहस के सहारे काम करना। आज रायसाहब हाथ खींच लें तो देखो कैसी भीगी बिल्ली बन जाता है। जब तक वे इसकी मदद पर हैं यह किसी को कुछ समझता ही नहीं। दूसरा—हाँ भाई, खूँटे के बल बछड़ा नाचे। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० १०६)

२ निम्नलिखित मुहावरों का अभिप्राय लिखकर स्वरचित वाक्यों में प्रयोग करो—

धाक जमाना। नमक मिर्च लगाना। नौ दो ग्यारह होना। घी के दिये जलाना। जान पर खेलना। गाँठ में बाँधना। देर करना। २१

धाक जमाना—रोब बैठा लेना। थोड़े ही दिनों में सारे शहर में उस ने अपनी धाक जमा ली है। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे पृ० ४६)

नमक मिर्च लगाना—छोटी सी बात को बढ़ाकर वर्णन करना। इनको न अखबार वाले जरा सी बात को नमक-मिर्च लगा कर क्या से क्या बना देते हैं। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० ५०)

नौ दो ग्यारह होना—एक दम चम्पत हो जाना देखते देखते भाग जाना। मैं चोर चोर चिल्लाता ही और सारा सामान लेकर,

प्रश्नपत्र छठा

१ निम्नलिखित लोकोक्तियों का अभिप्राय लिखकर स्वरचित वाक्यों में प्रयोग करो—

(१) जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि।

(२) बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद।

(३) सहज पके सो मीठा होय।

(४) काम छोड़ तमाशे जाय नाहक चोट जुलाहा खाय।

(५) खूँटे के सिर बछड़ा नाचे। १५

(१) जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि—जहाँ सूर्य की किरणें भी नहीं पहुँच पातीं वहाँ कवि की कल्पना पहुँच जाती है। वाह! कैसी कमाल की बात कही है। आखिर कवि जो हैं। तभी तो कहा है जहाँ न पहुँचे रवि वहाँ पहुँचे कवि। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृष्ठ १२१)।

(२) बन्दर क्या जाने अदरक का स्वाद—उस के विषय में कहते हैं जो किसी वस्तु-विशेष या व्यक्ति-विशेष की कदर न जानता हो। सुरेश! तुम तो नारायण राव व्यास के गाने की प्रशंसा करते न थकते थे पर मैंने तो देखा वह सिवाय आ-आ के कुछ जानता ही नहीं।

सुरेश—हाँ भाई, बंदर क्या जाने अदरक का स्वाद। तुम तो गजल को ही गाना समझते हो, तुम्हें संगीत का क्या पता? (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृष्ठ १४३)।

(३) सहज पके सो मीठा होय—जो काम आहिस्ता आहिस्ता हो वह संतोष प्रद और दृढ़ होता है। भाई, जो तुम तस्वीर अच्छी बनवाना चाहते हो तो जल्दी मत करो, मुझे अपनी मर्जी

ही छोड कर नौ-दो ग्यारह हो गया । (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० ५५)

घी के दिये जलाना—खुशी मनाना । समृद्ध होना या सुख-चैन से रहना। उसके मरने पर आप तो घी के दिये जलायेंगे। कहाँ वे दाने-दाने के मुहताज थे, कहां अब घी के दीये जलाते हैं। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० २४)

जान पर खेलना—खुशी से प्राण देना, प्राणों को संकट में डालना। हल्दी घाटी के मैदान में हजारों राजपूत अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए जान पर खेल गये । 'चौथे दिन पंडित जी ने मानों जान पर खेल कर उस कुंजी को उठा लिया।' लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० ३१)

गाँठ में बाँधना—अच्छी तरह याद रखना । मेरी बात बाँध लो, यह लड़का अवश्य किसी दिन ऊँचे पद पर पहुँच (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० २१)

ढेर करना—मार कर गिरा देना । जरा भी हूँ यहीं ढेर कर दूँगा । (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० ३

लोकोक्तियाँ और मुहावरे

[ले०—डा० बहादुरचंद शास्त्री ऐम ए, ऐम ओ एल

इसमें लोकोक्तियो और मुहावरो के अर्थ तथा वाक्यों में किस तरह प्रयोग किया जाता है, यह दिखाया गया है । हिन्दी रत्न और भूषण के अत्यावश्यक पुस्तक। मू० ।।) मात्र ।

३ किसी दैनिक समाचार पत्र के सम्पादक को जिसमें उसे आपके भेजे हुए समाचार को न छापने गया हो ।

ही छोड कर नौ दो ग्यारह हो गया । (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० ५५)

घी के दिये जलाना—खुशी मनाना । समृद्ध होना या सुख-चैन से रहना। उसके मरने पर आप तो घी के दिये जलायेंगे। कहाँ वे दाने-दाने के मुहताज थे, कहाँ अब घी के दीये जलाते हैं। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० २४)

जान पर खेलना—खुशी से प्राण देना, प्राणों को सकट में डालना। हल्दी घाटी के मैदान में हज़ारों राजपूत अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए जान पर खेल गये । 'चौथे दिन पडित जी ने मानो जान पर खेल कर उस कुजी को उठा लिया।' लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० २१)

गाँठ में बाँधना—अच्छी तरह याद रखना। मेरी बात गाँठ में बाँध लो, यह लडका अवश्य किसी दिन ऊँचे पद पर पहुँच जायगा। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० २१)

ढेर करना—मार कर गिरा देना । ज़रा भी चूँ-चपड की तो यहीं ढेर कर दूँगा। (लोकोक्तियाँ और मुहावरे, पृ० ३९)

२ किसी दैनिक समाचार पत्र के सम्पादक को एक पत्र लिखो जिसमें उसे आपके भेजे हुए समाचार को न छापने का उलहना दिया गया हो । १०